CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भारतीय-वाङ्मयेषु रामकथावर्णनम्

द्वितीय-खण्डम्

लेखकः
आचार्य आद्याचरण झा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीः।

परमप्रिय साहित्य सेवी -
श्री विनय कुमार अवस्थी
मोक्ष न्यासी
ज्ञानवापी क्षेत्र
लखनऊ-20 - को -
सस्नेह समर्पित -

श्रीमती ... - आशा चौहान
लखनऊ
24.3.94

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कम्बरामायणम्

(संस्कृतगद्यमयं रूपान्तरम्)

ग्रन्थविमोचनसमायोजनम्

श्रीमता कम्बन्-कविना तामिलभाषायां निवद्धस्य कम्वरामायणस्य राष्ट्रपतिसम्मानितेनाचार्यप्रवरेण झोपाह्वेन आद्याचरणशर्मणा कृतस्य हृद्यानवद्यसंस्कृतगद्यरूपान्तरस्य ग्रन्थस्य विमोचनं २८-५-१९९२ दिनाङ्के महामहिम्ना भारतगणतन्त्रस्य उपराष्ट्रपतिना डॉ शङ्करदयालशर्मणा सामन्दानन्दं विहितम्। अस्मिन् पावनतमे सारस्वतसमायोजने विद्वांसः प्रथितयशसम् आचार्यवर्यं ग्रन्थ-लेखकं स्वकीयैर्वाङ्मयैः शुभाशंसनैः समभिनन्दन्। माननीयो-पराष्ट्रपतिमहाभागः गाङ्गपयसेव स्वाशीर्वचसा झामहाभागं समभ्यषिञ्चत्, संस्कृतमयं कम्वरामायणञ्च भूरिशः प्राशंसत्।

अस्मिन्नवसरे कृतार्थः प्रश्रितो झा महानुभावः कृतज्ञतां ज्ञापयन् आत्मानं विद्वद्वशंवदं स्वीकृतवान्।

प्रकाशकः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्राप्ति स्थान

(१) श्री घूरन झा
ग्राम-पोस्ट-मंगरौनी
जिला-मधुवनी (विहार) ८४७२११

(२) श्री सुशील कुमार झा
५३, पाटिलपुत्र कालोनी
पटना (विहार) ८०००१३

मूल्य : दो सौ पचीस रुपये

© सर्वाधिकारः लेखकाधीनः

प्रथम संस्करणम्—१०००
प्रकाशन वर्ष—१९९२

मुद्रकः
शाकुन्तल मुद्रणालयः
३४, बलरामपुर हाउस
इलाहाबाद—२११००२

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

BHĀRTĪYA VĀNMAYESHU RĀM KATHĀ VARNANAM

Vol II

•

Achārya Pt. ADYĀCHARAN JHA

Publisher

INDRA KALA JHA NYAS SAMITI

MANGARAUNI MADHUBANI

(BIHAR) 847211

1992

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

AVAILABLE FROM

1. **Sri Ghuran Jha**
P. O. Mangarauni
Madhubani (Bihar) 847211

2. **Sri Sushil Kumar Jha**
53, Patilputra Coloney
Patana (Bihar) 800013

© All Rights Reserved by Author

Price : Rs. 225

First Edition 1000

Printer :
SHAKUNTAL MUDRANALYA
34, Balrampur House
Allahabad-2

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गोलोकवासिनी–श्रीमती इन्द्र कला झा

(धर्मपत्नी–आद्याचरण झा)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"समर्पणम्"

(१)

नो रक्षां व्यदधात् **भगवती तारा** समाराधिता,
नो वा पूजाविधानं विविधविधियुतं **शारदं** सर्वकालम्
नो वा विद्याप्रदानं समधिकशतें जीविकासंप्रदानम्,
नो जाने सर्वमेतत् कथमिव सहसा शेषमायान्मदीयम्,

(२)

दैवेनाभिहतो विपित्तपरिधौ दुर्भाग्यपूर्णो गतः,
श्री आद्याचरणोऽधुनाऽतिविमनाः व्यापन्नखिन्नो जनः
श्री **नित्येन्द्र कला** विहाय यं सुगृहिणी गोलोकमासेविता
तस्या एव सुकोमलस्मृतिपथे **श्री रामकाव्यं** भजे ।

(३)

वज्राधातेन सन्तप्तः **'कला'** **हीनो** निराश्रयः
'सीता-राम'-कथां वक्ष्ये ध्यात्वा **रामपदाम्बुजम्** ।

शोकसन्तप्तस्वान्तः

आद्याचरणः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उप-राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र

VICE-PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

दिनांक 8 अप्रैल, 1992

तत्रभवता पण्डितप्रवरेण श्रीमता आद्याचरण-झामहाशयेन तमिलभाषानिबद्धस्य कम्बरामायणाख्यस्य महाकाव्यस्य समस्तमपि कथावस्तु सरलेन भावपूर्णेन च संस्कृतगद्येन प्रस्तुतमिति विज्ञायाहं भृशं प्रसीदामि ।

अस्माकं भारतराष्ट्र कामपि विलक्षणां वर्णनातीतां च साहित्यसम्पद बिभर्ति । अस्य विभिन्नेषु भागेषु भाषाणां, वेषाणां, लोकाचाराणां च विभिन्नता विलोक्यते तथाप्यस्य राष्ट्रस्येदमस्ति वैशिष्ट्यं यदत्रत्ये विशाले वाङ्मये सर्वत्रैव सत्यस्य शिवस्य सुन्दरस्य च प्रतिष्ठा समानरूपेण परिलक्ष्यते, तेन चेतद्राष्ट्रं भावनात्मकमैक्यं धारयतीति सम्यक सिद्ध्यति । यद्यपि बहवो भारतीयाः साहित्यकाराः मातृभाषातिरिक्तानां भारतीयभाषाणां साहित्येन सर्वथाऽपरिचिता अवर्तन्त, तथापि तैः प्रस्तुतानां काव्यानामध्ययनेनेदं सुस्पष्टं विज्ञायते - यत् तेषु काव्येष्वपि भारतीयभाषान्तरसाहित्येन सह महत् साम्यमस्ति । यदि विभिन्नानां भाषाणां साहित्यस्य तदितरासु भाषास्वनुवादाः विहिताः स्युस्तर्हि भारतराष्ट्रस्य भावनात्मकं सांस्कृतिकं चैक्यं सुप्रकाशित स्यात् । प्रस्तुतोऽयं प्रयास एतद्दृष्ट्या प्रशंसनीयो विद्यते ।

श्रीझामहानुभावेनेतः प्राग् "भारतीयवाङ्मये रामकथावर्णनम्" इति शीर्षकवत्याः परियोजनायाः प्रथमखण्डरूपेण महत्वपूर्णं साहित्यं प्रकाशितम् । तमिलमहाकाव्यस्य कम्बरामायणस्य संस्कृतगद्यानुवादेन रामकथासाहित्यभाण्डागारस्यानुपमा शोभावृद्धिः समपद्यत । तमिलभाषा साहित्यिकदिशा सविशेषं समृद्धिशालिनी विद्यते । तस्यां लिखितं कम्बरामायण रामकथाकाव्येषु सुप्रतिष्ठितमस्ति । तमिलनाडू-प्रदेशस्य ग्रामे ग्रामेऽस्य महाकाव्यस्य कथा गीयन्ते । एतावतो महत्वपूर्णस्य काव्यस्य संस्कृतभाषायामनुवादः संस्कृतसाहित्यस्य विशिष्ट-श्रीवृद्धये नूनं कल्पिष्यन्ते ।

मया समये समये संस्कृतविद्वांसो निवेदिता यद्धि संस्कृतभाषा-साहित्यस्य प्रादेशिकभाषासु प्रादेशिकभाषासाहित्यस्य च संस्कृतभाषायामनुवादाः कर्तव्या इति । परामर्शमिमं स्वीकृत्य तमिलभाषालिखितं कम्बरामायणं संस्कृतभाषायां समुपस्थापयता रामकथाकोविदेन श्रीमता आद्याचरणझा-महाशयेन संस्कृतसाहित्यस्य श्रीवृद्धये तथा च भारतराष्ट्रस्य भावनात्मकैक्य-प्रकाशनार्थं महदवदानं विहितम् । एतदर्थं तस्मै भूयांसि वर्धापनानि समर्पयामि ।

शंकर दयाल शर्मा
(शंकर दयाल शर्मा)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भारत गणतंत्र के महामहिम उपराष्ट्रपति की प्रस्तावना का हिन्दी रूपान्तर

दिनांक : ८ अप्रैल, १९९२

मान्य पण्डितप्रवर श्री आद्याचरण झा ने तमिल भाषा में रचित कम्ब रामायण-महाकाव्य की सभी कथा वस्तुओं को सरल भावपूर्ण संस्कृत गद्य में प्रस्तुत किया है, यह जानकर मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।

हमारा भारतवर्ष किसी विलक्षण वर्णन से परे साहित्य सम्पदा को धारण किये हुए है। इसके विभिन्न भागों में भाषाओं, वेषों एवं लोकाचारों की विभिन्नता देखी जाती है; तथापि इस राष्ट्र की यह विशिष्टता है कि यहाँ के विशाल वाङ्मय में सर्वत्र सत्य की, शिव की एवं सुन्दरता की प्रतिष्ठा समान रूप से देखी जाती है जिससे यह राष्ट्र भावनात्मक एकता को धारण करता है। यह अच्छी तरह सिद्ध होता है।

यद्यपि बहुत से भारतीय साहित्यकार मातृभाषा से अतिरिक्त भारतीय भाषाओं के साहित्य से सर्वथा अपरिचित रहे; तथापि उनके द्वारा प्रस्तुत काव्यों के अध्ययन से यह सर्वथा स्पष्ट ज्ञात होता है कि उनके काव्यों में भी अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य के साथ बहुत समानता है। यदि विभिन्न भाषाओं के साहित्य का उनसे भिन्न भाषाओं में अनुवाद हो तो भारत की भावनात्मक एवं सांस्कृतिक एकता स्पष्ट प्रकाशित होगी। प्रस्तुत प्रयास इस दृष्टि से प्रशंसनीय है।

श्री झा ने इससे पहले "भारतीय वाङ्मयेषु रामकथावर्णनम्" इस शीर्षक वाली परियोजना के प्रथम खण्ड रूप में महत्वपूर्ण साहित्य का प्रकाशन किया है। तमिल भाषा महाकाव्य कम्बरामायण के संस्कृत गद्यानुवाद से रामकथा साहित्य भण्डार की अनुपम शोभावृद्धि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हुई है। तमिल भाषा साहित्यिक दिशा में विशेष रूप से समृद्धिशालिनी है। उस भाषा में लिखित कम्बरामायण काव्य में अत्यन्त प्रतिष्ठित है। तमिलनाडु प्रदेश के गांव-गांव में इस महाकाव्य की कथा गायी जाती है। ऐसे महत्वपूर्ण काव्य का संस्कृत भाषा में अनुवाद निश्चित ही संस्कृत साहित्य की विशिष्ट श्रीवृद्धिकारक होगा।

मैंने समय-समय पर संस्कृत विद्वानों से निवेदन किया है कि संस्कृत भाषा साहित्य का प्रादेशिक भाषाओं में और प्रादेशिक भाषा साहित्य का संस्कृत भाषा में अनुवाद किया जाना चाहिए। इस परामर्श को स्वीकार कर रामकथा के विद्वान् श्री आद्याचरण झा ने तमिल भाषा में लिखित कम्बरामायण को संस्कृत भाषा में उपस्थापित करके संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए तथा भारत राष्ट्र की भावनात्मक एकता प्रकाशन के लिए बहुत बड़ा योगदान किया है। इसके लिए इन्हें बहुत-बहुत वर्धापन देता हूँ।

शंकरदयाल शर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ENGLISH VERSION OF THE PREFACE WRITTEN BY HIS EXCELLENCY THE VICE-PRESIDENT OF INDIA

Dated April, 8, 1992

I am extremely happy to learn that the renowned scholar Pt. Adya Charan Jha has presented the Sanskrit prose form of the entire great-KAMB-RAMAYAN in a very lucid and heart-touching style.

Our India retainsaunique treasure of litterateurs which is beyond any extraordinary description. Although a diversity of languages. dresses and customs is witnessed in different parts of the country, the speciality of this Nation has been that in the vast realm of literatures, the principles of **"Truth, Bliss and Beauty"** have been propounded with equal emphasis everywhere and that has enabled this Nation to maintain emotional integrity. This has been well established

Though many of our Indian litterateurs have remained out of touch with the literatures of Indian languages other than that of their own mother-toungue, yet the study of their works clearly reveal that there is much similarity between their own writings and those of other Indian languages. If the literatures of different Indian languages are translated into other Indian languages, the cultural unity and emotional integrity will get sharply focussed. With this viewpoint, the present effort (of Sri Jha) is highly commendable.

Sri Jha has, already, to his credit a valuable literary contribution in the first part of the scheme "BHARTIYA VANGMAYESHU RAMKATHA VARNANAM". The Sanskrit

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

translation of great Tamil epic KAMB-RAMAYANA in prose form has incomparably added to the glamour and has enormously enriched the literary treasure of Ramkatha. From literary point of view, Tamil language is extremely rich. KAMBRAMAYANA written in Tamil verse is a masterpiece of literature and has a special place of honour in the field of learning. The storfes of this Tamil epic is sung in each and every village of Tamil Nadu. Sanskrit translation of such a valuable piece of literature will definitely add to the glamour of Sanskrit literature.

From time to time, I have requested the learned Sanskrit scholars that literary works appearing in Sanskrit should be transla*ted into regional languages and vice-versa. Acting upon my advice, Sri Adya Charan Jha, so well versed in Ramkatha has contributed to the great extent for the enrichment of Sanskrit literary treasure and for the emotional integrity of the Nation by translating and presenting the Tamil KAMB-RAMAYANA in Sanskrit prose for which I offer him many many congratulations.

(Shankar Dayal Sharma)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

।। श्री सीताराम ।।

स्वामी सीतारामशरण

लक्ष्मण किलाधीश

श्री अयोध्याजी
२२४१२३
उत्तर प्रदेश

राष्ट्रपति पुरस्कार-सम्मान सम्मानितानां पण्डितप्रवराणामाचार्य श्री आद्याचरण झा महाभागानां **'कम्बरामायणस्य'** संस्कृत व्याख्यानं दृष्टम् । महत्त्वपूर्णमिदं व्याख्यानम् । विशाल तमिल कम्बरामायणस्य संस्कृत गद्यानुवादस्यैतिहासिकोऽयं **प्रथमः प्रयासश्चेतः चमत्करोति** ।

"मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेय" मित्यापस्तम्ववचनेन आस्तिक-मण्डले वेदः प्रमाण कोटिमाटीकते । "इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्" इति भारतवचनेन "इतिहासपुराणादीनामपि वेदार्थ-विस्तारकत्वेन प्रामाण्यम् । पुराणापेक्षयेतिहासस्याभ्यर्हितत्वमपि सर्वैः स्वीकृतम् । श्रीमद्वाल्मीकिरामायणं वेदावताररूपेण प्रथितम् । **"वेद वेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे, वेदः प्राचेतसादासीत्साक्षात् रामायणात्मना" परं कवीनामाधारम्,** इति वचनेन रामायणं समस्त भारतीयवाङ्मयस्य मूलं स्रोतः इति विदित चरम् ।

भवभूति-कालिदासादयः रामायणमाश्रित्यैव स्वकाव्यानि रचयामासुः ।

आचार्य आद्याचरण झा महाभागा अपितामेव सरणिमनुसृत्य श्रीरामकथां रचयामासुः । **एषां महाभागानां रचनायां शताधिक रामायण काव्यानां सारभागो दृश्यते । सम्प्रति एतादृशी रचना दुर्लभा ।** झा महाभागाः नूनं धन्यवादार्हाः । भगवन्तं श्रीरामं प्रार्थये यदस्य योजना सफलाभवेत् । विद्वत्समाजे भक्तसमाजे च समादरो भवेदस्य ग्रन्थस्येति मङ्गलकामना मदीया ।

अस्याभ्युदयं कामयते ।

सीतारामशरणः

अध्ययोध्यम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

॥ श्रीः ॥

डॉ० रामकरण शर्मा

वर्धापनाः

वर्धापयाम वयं विपश्चिदपश्चिमान् कामेश्वर सिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालय पूर्व समकुलपति महोदयान् पण्डितप्रवरान् आचार्य आद्याचरण झा महोदयान् अनुपमाया अस्याः कृतेः प्रकाशनाय।

अनन्यसामान्या विलक्षण परम्पराऽस्ति सनातनी भारतीया। तत्रापि **"रामकथा" "पुनः पुनर्जायमाना पुराणी"** तु सर्वातिशायिनी "शीलशक्ति सौन्दर्य" प्रसारिणी निर्मल जीवनाधायिनी मन्दाकिनी पुनाति भुवनत्रयमद्यापि।

न केवलमत्र कथा वस्तुनो वेषान् विविधान् दधानस्य विश्व-व्यापकताऽपितु कथा शब्दावलीनामपि सर्वतः प्रसारिता। यथा वाल्मीकि रामायणे तथैवसेतु हिमांचल व्याप्तेषु प्रायः सर्वेष्वपि संस्कृत भाषानिवद्धेषु भाषान्तर निबद्धेषु वा रामकथाश्रितेषु काव्येषु जगज्जननी जानकी **"तृणमन्तरतः कृत्वा"** भर्त्सयति रावणम्। रामचरितमानसे कम्बरामायणे च वाक्यमिदमनुवर्तते तथैव।

इमामेव विश्वव्यापकतां रामकथाया सुव्यनक्ति कृतिरियम्। **आदिकविर्व्यनक्ति विश्वं रामचरित चित्रणेन। युनक्ति चोत्तरां दिश-माद्याचरणो दक्षिणया दिशा सुकृतया कृत्याऽनया।**

वर्धतां सनातनी भारतीया परम्परा। वर्धतां धारा उपधाराश्च सहस्रशो रामकथापरम्परायाः। **वर्धतामेकसूत्रता "शीलशक्ति सौन्दर्य शालिनी" भारतस्य। वर्धतामाद्याचरणः।**

इत्याशास्ते

महाशिवरात्रिः
२०४८

विदुषां वशंवदः
रामकरण शर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

॥ श्रीः ॥

उद्गाराः

१. जगज्जनन्याः सीतायाः भगवतो रामचन्द्रस्यासीमानुकम्पामात्रेणैव "भारतीय वाङ्मयेषु रामकथा वर्णनम्-द्वितीय खण्डम्"-संस्कृत गद्यमयं **"तमिल-कम्बरामायणम्"** प्रथमखण्डप्रकाशनस्य वर्षत्रयाभ्यन्तरे एव प्रकाशितम्। "स्वान्तः सुखाय"—प्रारब्धा मिमां परियोजनां स्वान्तःप्रविष्टः—**"सीतारामः"** एव प्रकाशतामानीतवान्। यस्मिन् **"सीताराम"** इति शब्दे वाक्शक्तिरूपा **"तारा"** विराजते।

२. अस्य खण्डस्य-कम्बरामायणस्य प्रकाशने भारतगणतन्त्रस्य महामहिमशालिनामुपराष्ट्रपति महाभागानां डॉ० शङ्करदयाल शर्मणामनुकम्पा पारावारः प्रमुखतां भजते। येषां संस्कृत-वाङ्मयी प्रस्तावना स्वयं सर्वं प्रचक्षते। विषयेऽस्मिन् **स्फोटरूपा मम मध्यमा वाक्** केवलमर्थमनुभवति, **वैखरीवाक्** न किमपि वक्तुमीहते। सबहुमानं सादरं तेषामग्रे समानतोऽस्मि।

३. प्रकाशन यज्ञेऽस्मिन् प्रधानपुरोधा पद्मभूषण डॉ० विन्देश्वर पाठको विराजतेतरां सफलसाधनैः। महामहिम-उपराष्ट्रपति डॉ० शङ्करदयाल शर्मा महाभागद्वारा उपराष्ट्रपति-भवने ६-८-१९८९ दिनाङ्के प्रथम-खण्डस्य विमोचनावसरे स्वागताध्यक्षत्वेन डॉ० पाठकस्य रामकथाऽनुराग एवास्य खण्डस्य त्वरित प्रकाशनार्थं प्रेरणाप्रदायकः। तं प्रति नाधिकं किमपि वक्तव्यं—केवलं तमाशीर्वचोभिः संयोज्यते। **'रामभद्रः'** तस्मै भद्रं वितरिष्यति।

४. एकादशसहस्रप्राय-पद्यात्मकस्य विशाल **तमिल कम्बरामायणस्य** महिमा गरिमा च सर्वथा वर्णनातीतः। तत्र भावपक्षकलापक्षोभय्च दृष्टया स्थाने स्थानेऽद्भुतापूर्व घटनाविवरणं कवेरुत्कृष्ट पाण्डित्यं भक्तिं च प्रदर्शयति। तस्य सरल संक्षिप्त संस्कृतगद्यानुवादकार्यं न केवलं कठिनतममपि तु दुरुहः **प्रथमः प्रयासो भारते।** इत्थं च संस्कृतरूपान्तरे तत्र तत्र समागतानां नूतनघटनानां संकेतः कृतस्तथा च कामिनीकेशपाशवर्णने कवेरतिशयिता च प्रदर्शिता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५. महति यज्ञेऽस्मिन् श्री अयोध्यास्थित लक्ष्मण किलाधीशस्य विद्यावैदुष्यप्रतिमूर्तेः तपः पूतस्य **स्वामिनः सीतारामशरणस्याशीर्वचनं** पुस्तकमिदं पवित्रीकृतवान् । तान् प्रति साष्टाङ्ग प्रणिपातेन सम्मानं प्रदर्शयामि ।

६. भारतस्य प्रख्यात शिक्षाशास्त्रिणा **डॉ० रामकरणशर्मणा** स्वकीय गुरुगभीरवर्धापनैः पुस्तकं मां च गौरवान्वितः कृतः । तं निकषा सस्नेहं सविनयं च प्रणतोऽस्मि ।

७. पुस्तकस्य श्रुतिलिपि-पाण्डुलिपि सदृश कठिनकार्ये संलग्नौ ममात्मजतुल्यः **श्री महेन्द्र शास्त्री,** ममानुजात्मजः मम प्रियोभक्तः शिष्यः आयुष्यमान् **अशोककुमारश्च** सर्वथा प्रशंसनीयौ । उभौ बालकौ मङ्गलमय शुभाशीर्वचोभिः संयोज्येते ।

८. प्रयागस्य **शाकुन्तल मुद्रणालय** संस्थापकः आचार्य डॉ० चन्द्रभानु त्रिपाठी महोदयः स्वकीयेवार्धक्येऽपि मुद्रण संशोधनादि-कार्ये महतीं तत्परतां प्रदर्शितवान् तथा तस्यात्मजः मुद्रणालय-संचालकः श्री उपेन्द्र त्रिपाठी च स्वच्छ-शुद्ध प्रकाशनादिकार्यं शीघ्रतां कृतवान् । तान् प्रति सादरं सस्नेहं कृतज्ञतां ज्ञापयामि ।

९. भारतशासनाधीनं राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानमस्य प्रकाशनकार्ये आर्थिकसाहाय्यनिर्णयं विधाय ऐतिहासिकेऽस्मिन् प्रयासे मां संवर्धितवान् । यदर्थमहं तेषां भृशं कृतज्ञोऽस्मि ।

अन्ते चेदं विनिवेद्य समाप्यते यदस्मिन् ग्रन्थे ये केचन गुणाः सन्ति ते मूलग्रन्थकारस्य महर्षि **कम्बन्-महाकवेरेव ।** याश्च त्रुटयः सन्ति ताः सर्वाः ममाल्पज्ञानस्यैव परिचायिकाः । यदर्थमहं पुनः पुनः सादरं **क्षमां याचे ।**

१५-५-१९९२

विनयावनतः

आद्याचरण झा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनुक्रमणिका

	पृष्ठ
प्राक्कथनम्	१
पूर्वपीठिका	३
[अथ 'कम्बरामायणम्' संक्षिप्त परिचयः]	

भारतीयवाङ्मयेषु रामकथावर्णनम्

द्वितीय-खण्डम्

प्रथमो भागः

[कम्बरामायणम्]

बालकाण्डम्	७
अयोध्याकाण्डम्	४५
अरण्यकाण्डम्	७५
किष्किन्धाकाण्डम्	९९
सुन्दरकाण्डम्	१२५
युद्धकाण्डम् (पूर्वार्धम्)	१४९
युद्धकाण्डम् (उत्तरार्धं)	१९७

द्वितीयो भागः

[रामकाव्य नाटकानम्]

रघुवंशम्	२४३
महावीरचरितम्	२६५
उत्तररामचरितम्	२८३
अनर्घराघवम्	२९५
कुन्दमालानाटकम्	३०५
परिशिष्ट	३२१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्राक्कथनम्

"भारतीय वाङ्मयेषु रामकथावर्णनम्" इत्यस्याः विशाल-परियोजनायाः सन्दर्भेऽस्याः मम कल्पितभावनायाः परिणामस्वरूपं प्रथमखण्डम् आषाढ़शुक्लद्वितीयायां रथयात्रातिथौ ५।७।८९ दिनाङ्के मुद्रणालयात् प्रकाशितम् ।

अखण्डकरुणावरुणालयस्य भूतभावनस्य भगवतो रामचन्द्रस्य तस्य शक्तिरूपायाः भगवत्याः सीतायाश्चासीमानुकम्पया न केवलं प्रथमखण्डं प्रकाशितम्, अपितु भारतस्य उपराष्ट्रपतयः महामहिमशालिनो डॉ० शङ्करदयाल शर्मा महाभागेन नयी-दिल्लीस्थिते उपराष्ट्रपतिभवन-सभागारे ९।८।८९ दिनांके बुधवासरे अपराह्णे ५-३० वादने पुस्तकमिदं महता समारोहेण विमोचितम् ।

विविधबाधाविघ्नयुते वार्धक्येऽस्मिन् द्वितीयखण्डस्य लेखनादि-विचारोऽपि प्रायः मम मनसि नोदितः आसीत् । किन्तु विमोचनावसरे एव महामहिमशालिना उपराष्ट्रपतिमहाभागेन शीघ्रमेव द्वितीयखण्डलेखनार्थं सङ्केतितम् । तनैवोत्साहितः सन् द्वितीय-खण्डलेखनमद्य श्रीकृष्णजन्माष्टमीतिथौ शुभे नक्षत्रे प्रारम्भं करोमि ।

एतत् खण्डलेखनस्य विषये या मदीया परिकल्पना आसीत् तस्यां किमपि परिवर्त्तनमत्र क्रियते । यतोहि उपराष्ट्रपतिमहाभागेन प्रथमं तमिलभाषायाः महतः कम्बरामायणस्य सरलसंक्षिप्तसंस्कृतगद्ये प्रथमखण्डवत् अनुवादकरणार्थमिच्छा प्रकटिता । मया ज्ञातं यत् भारतराष्ट्रप्रतीकस्य अयं संकेतः आदेशश्च ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तदनुसारम् अस्मिन् खण्डे भागद्वयं स्थास्यति । प्रथमभागे षट्-काण्डात्मकस्य विशालकम्बरामायणस्य मुख्य कथा-वर्णनं विधास्यते । द्वितीय भागे च महाकविकालिदासस्य रघुवंशमहाकाव्यात् आरभ्य द्वादश-शताब्दी-पर्यन्तस्य कतिपय संस्कृत महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक, रूपकादि प्रभृतेः रामकथावर्णनस्य प्रत्येकस्य पृथक्-पृथक् संक्षिप्तं सोद्धरणं गद्यमयं विवरणं दास्यते ।

एवं क्रमेणापि द्वितीय खण्डमिदं विशालतां प्राप्स्यति इति मन्ये । किन्तु तस्य समाप्तिः कथं भविष्यति, कदा भविष्यति, प्रकाशनं च केन रूपेण भविष्यति इति सर्वं तु भगवत् कृपाधीनं तथा तथैव कृपया उपराष्ट्रपतिमहानुभावस्याधीनम् इति हृदि निधाय त्वरितमेव पावनेऽस्मिन् यज्ञे संलग्नोऽभवम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पूर्वपीठिका

"अथ 'कम्ब' रामायणम्" संक्षिप्त परिचयः

सर्वप्रथमं कम्व रामायण विषये पूर्वपीठिकारूपेण किमपि ज्ञानमावश्यकम्। अस्य नाम 'कम्वर्', 'कम्बन्' इति रूपद्वयेन प्राप्यते। तत्र 'कम्वन्' शब्द एव विशेषरूपेण प्रचलितो वर्तते। यत्र लखनऊ महानगरीस्थभुवनवाणीन्यासेन आचार्य ति० शेषाद्रि द्वारा हिन्दी भाषायाम् अनूदितस्य 'कम्व रामायणस्य' प्रथम पृष्ठे लिखितं वर्तते 'रचयिता महर्षि कम्बर' तथा महायोगिना स्वामिना चिन्मयानन्देनापि 'कम्बर' इति लिखितं, तत्रैव अन्ये जस्टिस एस० महाराजन्, जस्टिस् इस्माईल, तथा क्वथम् अडिप् पौडि सा०, गणेशन् प्रभृति महानुभावैः 'कम्बन्' इति शब्देन व्यवहारः कृतः। किन्तु सर्वैः पुस्तकस्य नाम "कम्व-रामायण" इत्येव लिखितम्।

भारतराष्ट्रस्य शतशः विद्वांसः ये च तमिल-भाषा विशेषज्ञाः तथा गम्भीर—गवेषकाः आसन् सन्ति च ते सर्वे 'कम्बन्' महोदयं 'महर्षि' इति शब्देन सम्बोधितवन्तः। तेषां विश्वासो वर्तते यत् महर्षि-वाल्मीकिवदेव महर्षि-कम्बन् अपि वर्तते।

भारतीय कवि परम्परावत् महाकवेः कम्बनस्यापि समयः जन्मस्थानं कदा कुत्र वर्तते अस्य निश्चयात्मकम् न किमपि प्रमाणम् उपलभ्यते। केवलम् अस्य महाकवेः काव्य समीक्षया विद्वद्भिः निश्चितं यत् नवम-शताब्द्याम् अयं महाकविः आसीत्। तस्मात् कालादेव अस्य रामायणस्य लोकप्रियता व्यापकता च क्रमशः वर्धमाना जाता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विद्वद्भिः वर्ण्यते यत् अयं महाकविः 'तिरूवलुन दूर' स्थाने जन्म गृहीतवान्। जात्या ब्राह्मणः आसीत्। अयं हि भगवत्याः वाग्देव्याः महत्-कृपा-पात्रम् आसीत् यः सार्वभौमः कविचक्रवर्ती शब्देन सम्बोधितः बभूव। अयं न केवलं कवि-सम्राट् आसीत् अपि तु विद्यासागरोऽपि आसीत्। यः वेद-सागरं प्रविश्य सकल ज्ञान-विज्ञान-रत्नं प्राप्तवान्।

कम्ब रामायणस्य मूल पद्येन साकं श्री गोपालकृष्णमाचार्यस्य प्रायः षष्टि (६०) वर्ष पूर्वः लिखिता टीका समुपलभ्यते। या च सर्वथा प्रामाणिकी उपादेया च। द्वितीया च टीका महामहोपाध्याय उ० वे० स्वामीनाथैयर महोदयस्य महत्वपूर्णा वर्तते। भक्तिदृष्ट्या ज्ञानस्य कोशो वर्तते। तत्र द्वितीया टीका साहित्यिक दृष्ट्या अति महत्वपूर्णा विद्यते। अत्र मया १९८० वर्षे आचार्य नि० शेषाद्रि द्वारा लिखिता भुवनवाणी-न्यास द्वारा प्रकाशिता मूलपद्य सहिता हिन्दी भाषा टीका युक्ता पुस्तिका गृहीता। तदनुरूपमेव प्रति-काण्डस्य संक्षिप्त सरल संस्कृत गद्यमयं विवरणं दीयते। दशसहस्र-चतुःशताष्टादश प्रामाणिक पद्यानि––अस्मिन् रामायणे (१०४१८) सन्ति। तदतरिक्तमपि कियन्ति पद्यानि वर्तन्ते। बालकाण्डे १३८६, अयोध्याकाण्डे १२१०, अरण्यकाण्डे ११९६, किष्किन्धाकाण्डे १००४ सुन्दरकाण्डे १०९६ तथा युद्धकाण्डे ४३२३ पद्यानि सन्ति। अस्मिन्, रामायणे उत्तरकाण्डं न वर्तते। एवं रूपेण वाल्मीकिरामायणम् आनन्दरामायणं च विहाय एतस्मिन् कम्बरामायणे एव सर्वाधिक-पद्यानि विराजन्ते। अस्मिन् रामायणे प्रत्येक काण्डे कतिपय पटलानि सन्ति। प्रतिपटलं विषय विभाजनरूपेण पद्यानि वर्तन्ते। 'कम्ब-रामायण' पठनानन्तरं स्पष्टं प्रतीयते यत् कविरयं यथैव महान्भक्तः आसीत् तथैव सरसवर्णनेऽपि नितान्तः निपुणः। इदं रामायणं मुख्यतया वाल्मीकिरामायणमेवानुसरति। किन्तु अध्यात्म रामायण-स्यापि यत्र-तत्र प्रभावः विद्यते। महाकवि कालिदासेनापि प्रभावितोऽयं महाकविरिति स्वयमेव 'कम्बन्महाभागेन लिखितम्। अथ च श्रृंगारादिरसवर्णने आनन्दरामायणस्यानुकरणं बहुशः प्रतिभाति। यथास्थानं विषयवस्तु वर्णने कियन्ति तत् पद्यानि दास्यन्ते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भारतीयवाङ्मयेषु रामकथावर्णनम्

द्वितीय-खण्डम्

[कम्बरामायणम्]

प्रथमो भागः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भारतीय वाङ्मयेषु रामकथा-वर्णनम्

(कम्बरामायणम्)

अथ बालकाण्डम्

विषय-प्रवेशः

अस्मिन् काण्डे द्वाविंशति (२२) पटलानि सन्ति तेषु प्रथमं पटलत्रयं नदीपटल, देशपटल, नगरपटल नाम्ना वर्णितम्। एतेन ज्ञायते यत् कम्बन् कविः नदी-वन-पर्वत-क्षेत्रोद्यानप्रभृतिप्राकृतिक-सौन्दर्यस्य दृश्यस्य च महत्वं सर्व-प्रथमं प्रददाति। ये चास्य देशस्य विशेषतां प्रकटयन्ति।

सर्वप्रथमं चतुर्दशपद्यैः भगवतो विविधरूपस्य तस्य सर्वशक्ति-मत्तायाः सुन्दरतायाश्च मधुरवर्णनैः मङ्गलाचरणं क्रियते। एतेषु मङ्गलाचरणपद्येषु सर्वशक्तिमतो ब्रह्मणः विविधरूपतायामेक-रूपतायाः, एकरूपतायां विविधरूपतायाश्च वर्णनं तथा गम्भीराशय-युक्तं; येनास्य महाकवेः विशालपाण्डित्यं प्रतिभाति।

(क) मङ्गलाचरणम्

मंगलाचरणस्य प्रथमं पद्यं मूलरूपेण निम्नाङ्कितं वर्तते——

आंनरा विरण्उ शुडरायोरु मूतरुमाहिम्,
पांन्शद वेद मारुनानगाडम् बूद माहि।
अन् राहि यण्डत् तहम् ताहियम् पुरम्नुमाहि,
निन्रा नारुव् नवनीलकलन् मन्जिमपुवंपूणाम्।

अस्य पद्यस्य संस्कृत पद्ये रूपान्तरमिदम्

या मूर्त्तिस्त्रिगुणात्मिका च खलु ये द्वे ज्योतिषी दीपिते
या सर्वत्र विराजते विभुयुता पञ्चात्मिका व्यापिता।
यो ब्रह्माण्डबहिः सदा विरमते योऽभ्यन्तरे चाण्डके
यश्चैको नितरां विभाति भुवने तं धार्यते चान्तरे॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अर्थात् परब्रह्मणः परमेश्वरस्य एव सत्त्व रज, तमो गुणात्मिका त्रिमूर्तिः तस्यैव प्रकृति-पुरुषात्मके द्वे देदीप्ते रूपे तस्यैव परब्रह्मणः पञ्चतत्वात्मिका व्याप्तेयं सृष्टिः। यश्च परमेश्वरः ब्रह्माण्डाभ्यन्तरे वहिश्च प्राणरूपः विराजते। एवंभूतः एव सर्वात्मकः परब्रह्मस्वरूपः व्यापकः विष्णुः मया हृदि धार्यते तदग्रे नमनं क्रियते।

पद्यमिदं व्यापकस्य ब्रह्मणः सर्वप्रभुसत्तां प्रदर्शयति, तथा महाकविकालिदासस्य अभिज्ञानशाकुन्तलस्य मङ्गलाचरणं "या सृष्टिः स्रष्टुराद्ये" ति पद्यं च स्मारयति।

मङ्गलाचरणस्य मूलं द्वितीयपद्यमिदम्

आन् रामम् पलवा युलनादिल नायु रधोर्क्
कत्रायप् परमा यरुवायुरु वाहि मेन्मै।
कुन्राव आनकु काकुन्वायु ककुय् मून् रुन् दनकु,
निनरा नियाव नयनी लकल्न् चन्निवैर्याम्।

अस्य संस्कृतपद्येऽनुवादः

भावोऽभावो रूपवांश्चाप्यरूपः
एकोऽनेकोऽनुत्तमज्ञानगम्यः।
निस्त्रैगुण्यो नित्य त्रैगुण्ययुक्तः
विष्णोस्तत्पादपद्मं शाश्वतं मूर्ध्नि धार्यम्।

अर्थात् यः व्यापकः विष्णुः सगुणः निर्गुणः, भावः अभावः, एकः अनेकः, त्रिगुणरहितः, त्रिगुणयुक्तः तथा ज्ञानैकगम्यः तस्य भगवतः ब्रह्मस्वरूपस्य रामस्य शाश्वतं, नित्यं चरणकमलं सदाशिरसि धारणं कुर्यामो वयम्॥

एवं प्रकारेण कविरयं भगवतः शेषशायिनः विष्णोः विविधरूपस्य सौन्दर्यस्य च वर्णनं कुर्वन् पञ्चतत्त्वस्य निर्माणकर्त्तुः स्वरूपं प्रदर्शितवान्। तथा च यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनं तत्र तत्र अञ्जलिवद्धः हनुमान् समुपस्थितोस्ति इति प्रतिपादितवान्। इत्थं च भगवत्याः सरस्वत्याः वन्दनां करोति। यथा प्राचीनतम सरस्वत्याः ध्यानपद्ये वर्तते। यथा "शुक्लां ब्रह्मविचार सारपरमाम्", "याकुन्देन्दु" इत्यादि पद्यम्। इदं च मङ्गलाचरणस्य द्वादशं पद्यं वर्तते। एवं हि भूतभावन-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भगवतः शिवस्य तथा शिवपुत्रस्य विघ्नविनाशकस्य विनायकस्य च वन्दनां चकार।

(ख) अथ च वालकाण्डस्य षोडशेपद्ये एकस्मिन् एव श्लोके समग्र रामायणस्य वर्णनं कृतं कविना।

मूलपद्यं निम्नोद्धृतमस्ति—

परावरु विगमन् मादो डिल्बल्दिन् पडरक् कानपो
विरादनैक् करने मानक् कवन्दमै वनरि काण्।
भराभरम् वालि मारबु तुलैन्तणै बइत्तुम् विन्
इरावणन् कुलमुम् पातर वेयटुट् नयोन्निव।

अर्थात् यस्य प्रशंसाकरणमसाध्यं वर्तते स श्रीरामः सीतया लक्ष्मणेन च सह वनं जगाम। तत्र विराधं खरदूषणं मायामृगं मारीचं कवन्धं राक्षसं च हत्वा सप्ततालवृक्षं छित्वा वालिवधं कृत्वा समुद्रे सेतुबन्धनं च कारयित्वा समग्र कुलसहितस्य रावणस्य च विनाशं कृत्वा यथाशीघ्रं अयोध्याम् आगतवान्। इदं तमिल भाषा-पद्यं तुलसी-दासस्य निम्नाङ्कित पद्यं स्मारयति। प्रायः अनेन पद्येनैव प्रेरितेन तुलसीदासेन पद्यमिदं लिखितम्।

आदौरामतपोवनाधिगमनं हत्वामृगं कांचनम्
वैदेही हरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम्।
वालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनम्
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्धिरामायणम्॥

(ग) प्रशस्तिपदम्

महाकविः कम्बन् महानुभावः मङ्गलाचरणान्तरं भगवतो नारायणस्य ऐश्वर्यस्य प्रभुत्वस्य च वर्णनं करोति, अस्मिन् **पायिरम्** प्रशस्तिपदपटले। महर्षि नारदस्य मुखात् परब्रह्मणः विष्णोः सकल-लीला-वर्णनं महर्षिवाल्मीकिमुखात् श्रुत्वा वेदतुल्यमेव रामायणं रचितवान्। यत् वाल्मीकिरामायणमितिनाम्ना प्रसिद्धं वर्तते। तस्यैवरामकथावर्णनस्य तमिलभाषायां श्री सम्पन्नस्य चोलदेशस्य तिरुअलुन्-तट् ग्रामवासी मेघसमदानशीलः कम्बन् कविः रामायणं विरचितवान्। तदेव 'कम्ब-रामायणम्' इति नाम्ना विश्वविश्रुतं वर्तते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अत्र ब्रूते यत् यथा मन्दराचलपर्वतेन समुद्रं मन्थयित्वा देवैः अमृतपानं कृतं कारितं च तथैव अयं कविचक्रवर्ती तमिल-भाषा सागरे निमज्जनं कृत्वा स्वपद्यामृतैः मधुररसपानं जनान् कारयति ।

इदं तु चिर प्रसिद्धं तथ्यपूर्णं यत् शिवपार्वतीसंवाद एव 'रामकथा विद्यते । इत्थं च भगवता शम्भुना भगवत्याः उमायाः कर्णे यत् नाम कथितं तत् 'राम' इति नाम एव। तस्यैव सीतापतेः रामस्य चरणकमलयोः कम्बन् कविः नत शिरसा प्रणमति । जनाः श्रीराम-चरितामृतस्य पानं कुर्वन्तु इति भावनया देवर्षिनारदेन इक्षुरसः निष्पीडितः । महर्षिवाल्मीकिना तस्यैव क्वाथं (चासनी) निर्मितं, यस्यैव कालिदासेन गुडरूपे परिवर्तनं कृतम् । तस्यैव गुडस्य क्षीरान्नं मधुरपायसं निर्मितं कम्बन् कविना । तात्पर्यमिदं वर्तते यत् यां रामकथां ब्रह्मणा ज्ञात्वा नारदः कथितवान् तां च कथां श्रुत्वा भगवता वाल्मीकिना विस्तृतं रामकाव्यं विनिर्मितं तस्मिन्नेव विस्तृते रामकाव्यसागरे प्रविश्य कालिदासेन च यत् रत्नं प्राप्तं तेषामेव प्रकाशेन तेषामेव रस माधुर्येण विशदीकृतं तमिलभाषायां महाकविना कम्बनेन। एतेन अयं महाकविः वाल्मीकिना कालिदासेन च प्रभावितो वर्तते इति स्वयमेव स्पष्टं प्रतिपादयति । एतत् काव्य-दर्शनेन च सर्वत्र तथैव प्रतिभाति ।

महाकविरयं रामनाम्नः महिमानं प्रतिपादयन् अवादीत् यत् इह जन्मनि रामनामोच्चारणे प्रतिदिनं धनं वर्धते हितं च भवति । अहितस्य पापस्य च नाशो भवति तथा जन्ममरणाभ्यां परः मोक्षः प्राप्यते । 'राम' इत्येक शब्द कथनेनैव सहस्र यज्ञस्य फलं जायते । नृपाणां धनं कीर्त्तिश्च वर्धते तथा पापस्यमूलं विनष्टं जायते । राम-नामोच्चारकाणां स्वर्गवासः नित्यं ध्रुवं च। रामचरित्र श्रोतुश्च वैकुण्ठवासः सुनिश्चितः। एवं च ये रामचरित्रं न विस्मरन्ति ते अन्नदानस्य, भूदानस्य, कन्यादानस्य, गोदानस्य, स्वर्णदानस्य च फलं ध्रुवं प्राप्नुवन्ति (पद्य २९-३४) ।

एवं च रामचरित्र लेखकस्य गायकस्य प्रशंसकस्य च वर्णनं श्रुत्वा कोऽपि राज्यं प्राप्तुं शक्नोति कर्मबन्धनं छित्वा मोक्षपदं च प्राप्तुं शक्नोति (पद्य ३९) । तमिलभाषायां **"शिरप्पुप् पायिरम्"**—कथयति

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यस्यार्थः भवति विशेष भूमिका, प्रस्तावना, प्राक्कथनं वा। इदं च केवलं लेखकस्य भवति लेखकप्रशंसकस्यापि भवति। इति ति० शेषाद्रि महोदयस्य स्वकीय हिन्दी टीकायाः टिप्पण्यां वर्तते।

अस्य प्रकरणस्य अन्तिमे भागे स्वकीय विनम्रतां वर्णयति कम्बन् कविः। वर्णनमिदं सर्वथा पूर्वकविभिः महाकवि कालिदास प्रभृतिभिः यथा वर्णितं तथैवात्र दृश्यते।

उत्ताल तरङ्गयुक्त क्षीरसागर निकटं गत्वा यथा यदि काचित् विडाली सर्वं पयःपानं कर्तुमिच्छति तथैव भगवतो रामचन्द्रस्य कथा-क्षीरसागरस्य समस्तं क्षीरपानं कर्तुं उद्यतः अयं अज्ञः कविः कम्बनः। यत्र क्रौञ्चवधं दृष्ट्वा महाकाव्यरचयितुः महर्षिवाल्मीकेः दिव्यवाणी यस्मिन् देशे राष्ट्रे विराजते तत्र स्वल्प शब्दैः मदीया रचनेयं किं जडतायुक्ता न वर्तते ? संसारः मां भर्त्सयिष्यति यत् किं त्वम् कुरुषे ? यत्र शाश्वत वेदज्ञानी वाल्मीकिः एव दिव्यं रामचरित्रं वर्णितवान्।

सत्यामेवं स्थितौ उन्मत्तस्य प्रलपनम् अज्ञस्य कथनं भक्तस्य च भक्तिः किम् आलोच्यम् आलोच्या वा। यथा कश्चित् बालः भूमौ भित्तौ च रेखां कुरुते तां रेखां दृष्ट्वा शिल्पी हसति। तथैव मदीयां इमाम् रामकथां श्रुत्वा पठित्वा च अवश्यमेव जनाः निन्दां करिष्यन्ति। तथापि देवभाषायां वाल्मीकि-वशिष्ठ-बोधायनाः इति त्रयः महाकवयः सञ्जाताः। तदनुसारिणः कालिदासादयश्च। तेषामेव कथनस्यानुसरणक्रमे ममायं प्रयासः। अन्ते च कथयति यत् विशाल-राक्षस-समूह-नाशकस्य धनुर्धरस्य श्री रामचन्द्रस्य स्तुति-कर्तारः ईप्सितं वस्तु प्राप्नुवन्ति ज्ञानं कीर्ति च लप्स्यन्ते। इयं स्तुतिः मोक्ष मार्ग प्रदर्शिका वर्तते। तदुपरि भगवती कमला लक्ष्मीः निश्चितं कृपादृष्टि विधास्यति। एवं रूपेण द्वादश पद्यैः महाकविः स्वकीय-विनम्रतां रामकथा-महत्तां च विनिर्दिष्टवान्।

नदीपटलम्

महाकविरयं सर्वप्रथमम् **"आऱ्रूप् पड्लम्"** (नदीपटलम्) नामके पटले सरयूनद्याः वर्णनं करोति। अस्यां नद्यां न कस्यापि पुरुषस्य पञ्चेन्द्रियाणि कुमार्गे गच्छन्ति, न च स्त्रीणां कटाक्षविक्षेपो जायते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एवं भूता महिमामयी भगवती सरयू नदी इमं देशम् अलंकरोति (पद्य १३)। अस्याः प्रवाहं पश्यन्तु यथा चतुर्वेदज्ञात्रे ब्राह्मणाय दानप्रदानेन दातुः शुभफलं वर्धते। यथा च सर्वशास्त्र विशारदस्य धर्मावलम्बिनः यश. प्रसरति तथैवेयं सरयू विस्तृता वर्धमाना च विद्यते।

अस्मिन् प्रवाहे पुष्पाणि प्लवन्ति, पुष्पपरागाः वहन्ति, परागाणां मधूनि वहन्ति। यतः विविध रंग वर्णानां सम्मेलनेन इन्द्रधनुस्तुल्यधारा दृश्यते। अस्याः प्रवाहः पर्वत शिलाखण्डानि वृक्षांश्च समुत्पाटच आनयति, यं दृष्ट्वा भगवतो रामचन्द्रस्य वानरी सेना स्मर्यते। यैः वानरैः समुद्रे सेतुबन्धनं क्रियतेस्म।

अस्मिन् प्रवाहवेगे गजाः अश्वाः अन्ये च जन्तवः प्रवहन्ति, शब्दं कुर्वन्ति। विविध लताश्च तेषु वृक्षेषु वर्तन्ते। एभिः अयं प्रवाहः तथा दृश्यते यथा सरयूनद्याः सेना समुद्रेण साकं युद्धं कर्तुम् अश्वदलैः गजदलैः छत्रजायुक्तरथैः सह प्रस्थानं कुरुते। इयं सरयूनदी अविच्छिन्न धारायुक्ता पवित्रतमा विशाला वर्तते। या रविकुलसंभूतानां नृपाणां सदाचारैः समतां करोति तथा च सामाजिक जनानां च कृते मातृस्तनवत् जीवनदायिनी वर्तते (पद्य २४)। अस्याः प्रवाहः विविध कस्तूरी केसरचन्दनादि सुगन्धिभिः विविध पुन्नाग-अगस्त्य-तमालादि पुष्पाणां सुगन्धिभिः व्याप्तो विद्यते।

इयं पावन-नदी पर्वतात् उद्भवति, विभिन्न नदीभिः साकं विविधरूपतां प्राप्नोति। अन्ते च समुद्रे ताः विलीनाः भवन्ति। अनुभूयते यत् यथा एकस्मादेव ईश्वरात् निर्गताः विभिन्न देवताः विविध रूपतां भजन्ते अन्ते च पुनः तस्मिन्नेव ईश्वर तत्त्वे लीनाः भवन्ति, तथैवेयं सरयूनदी अन्ते समुद्रे विलीना भूत्वा भगवत्याः परमेश्वर्याः आदिशक्त्याः रूपतां धत्ते (पद्य ३१)।

नाट्टुप पडलम (देशपटलम्)

अधुना महाकविः कम्बन् महानुभावः अस्य कोशलदेशस्य वर्णनं कुरुते। तत्र प्रथमं स्वकीय विनयशीलतायाः शालीनतायाः, शिष्टतायाश्च विशिष्टं परिचयं प्रददाति। कविः ब्रूते, महर्षि-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाल्मीकिः ब्रह्मणोमुखात् रामायणकथां श्रुत्वा चतुश्चरणानां श्लोकानां निर्माणं चकार। यत् रामकाव्यं देवानामपि श्रवणीयं समादरणीयं च जातम्। महर्षि द्वारा प्रशंसितस्य कोशल देशस्य वर्णनं मम कृते दुस्तरः प्रयासः विद्यते। यथा कोऽपि मूकः स्वकीयं भावम् अन्यं श्रावयितुं यतते। किन्तु मया प्रेम-सुरा पीता तस्याः सुरायाः प्रभावेण विक्षिप्तोऽयं जनः किमपि कर्तुमुद्यतः। अर्थात् ममेदं कोशल-देशवर्णनं प्रेममद्य पूरितं विद्यते। (पद्य ३३)

अस्य प्रदेशस्य क्षेत्रं सस्यपूर्णं वर्तते। सुजलां सुफलां मलयज-शीतलाम् इमां भूमिं नौमि। अत्र इक्षुरसाः प्रवहन्ति, नदीतटे शङ्खानां समूहो वर्तते, सर्वत्र मयूराः नृत्यन्ति, कमलानि विकसन्ति, मेघाः गर्जन्ति, भ्रमराः गुञ्जन्ति। धनस्य देवी, महालक्ष्मीः वर्तते तस्याः वास-स्थानं कमलपुष्पं वर्तते। अत्र कमलपुष्पाणि संख्या-तीतानि वर्तन्ते। अत्रत्याः जनाः शास्त्रीयविषयमेव वदन्ति, सत्यमेव निगदन्ति च। अत्रत्या भूमिः समृद्धेः सूचनां प्रददाति। कृषकाः हलेन भूमिं कर्षन्ति या भूमिः स्वर्णं प्रदीयते। अर्थात् धान्यानि इक्षवः, मत्स्याः, शङ्खाः, मुक्ताः विविध रत्नानि च सञ्जायन्ते। येन कारणेन भूमिरियं स्वर्णमेव ददाति इति कल्पना वर्तते। अत्र सरयूनद्यां कोशल देशस्य नार्यः स्नानं कुर्वन्ति क्रीडां कुर्वन्ति। तासां सुदीर्घ केशैः निर्गतानि पुष्पाणि शरीरे लिप्तानि केशर कस्तूरी सुगन्धीनि न केवलं सरयूनदीजलमेव सुवासयन्ति, अपि तु समुद्रतरङ्गानपि सुवासितान् कुर्वन्ति।

अवलोकयन्तु तत्रभवन्तो रसिकजनाः। वृक्षशाखायां मयूराः नृत्यन्ति कोकिलमिथुनानां संयोगो जायते। कमलशय्यायां राजहंसाः सुशोभन्ते। भ्रमराः तान् स्वकीयमधुरध्वनिभिः जागरयन्ति। फलतः साहित्यसंगीतस्य एकत्रैव आनन्दलाभो जायते।

अत्र ब्राह्मणादि चतुर्वर्णानां समृद्धा भोजन व्यवस्था विद्यते। प्राधान्येन आम्रं कदलीफलं पनसफलादिकं भक्षयन्ति जनाः। विविधव्यञ्जनयुक्तं द्विदलं पक्वं तण्डुलं च दधि-तक्रैः सह बन्धु-बान्धवयुक्ताः भुञ्जन्ति, न केवलं स्वयं भुञ्जन्ति। अस्मिन् कोशल-प्रदेशे भ्रमराः नित्यं निवासं चक्रुः। यतोहि ते तत्रत्य नारीणां मुखमेव कमलं मानयन्ति। तासां कज्जलयुक्तं नेत्रं च भ्रमरीं मन्यन्ते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अस्मिन् कृषियोग्यप्रदेशे तरुणीनां नेत्राणि तथा आकर्षकाणि सन्ति, यत्र तरुणाः स्वयमेव आकृष्टाः भवन्ति। तथा च तासां कठिनस्तनानामग्रे ते विनताः भवन्ति। अत्र च नारिकेल वृन्तात् निर्झरितां रसधारां पीत्वा मत्स्याः पीनाः भवन्ति।

अत्र स्वल्पं क्षीणं च न किमपि वस्तु। केवलं कामिन्याः कटिः क्षीणा। सुगन्धयुक्तान् स्त्रीणां केशान् दृष्ट्वा जनाः उन्मत्ता जायन्ते (तमिल भाषायां गन्ध शब्दस्य 'विक्षिप्तः' 'मद्यपायी' इत्युभौ अर्थौ जायेते) तात्पर्यमिदं यत् कोशल देशस्य जनाः न मद्यपायिनः न च विक्षिप्ताः किन्तु केवलं नारीणां सुगन्धियुक्तान् सुदीर्घ केशान् दृष्ट्वा मद्यपायीवत् विक्षिप्ताः उन्मत्ताः च भवन्ति।

अस्मिन् कोशल नगरे महानस-गृहात् धूमाः जायन्ते यत्र गुड-निर्माणं भवन्ति। तत्रत्य विशाल-चुल्लिकात् धूमाः जायन्ते, पूजा-धूपानां धूमाः जायन्ते, यज्ञस्य होम कुण्डात् धूमाः जायन्ते तथा च नारीणां केश संस्काराय सुगन्धियुक्त करणाय च प्रदत्त धूपानां च धूमाः आकाशे गच्छन्ति। ये च धूमाः आकाशे गत्वा मेघवत् व्याप्ताः भवन्ति।

यस्य कोशल देशस्य सुदीर्घकेशयुक्ताः स्तनेषु आवरणभूषिताः कामिन्यः पुष्पचयनार्थम् उपवने गच्छन्ति, तत्र तासां सुन्दरतां दृष्ट्वा तरुणाः तत्र ताम् अनुधावन्ति। मयूराश्च सुदीर्घकेशान् दृष्ट्वा स्वकीय मयूरी पुच्छान् विभाव्य अनुधावन्ति। फलतः कोशल-देशस्य नारीणां केशपाशा सुदीर्घतमाः भवन्ति इति स्पष्टं ज्ञायते। अत्र कविः तमिलदेश (राज्य) वासिनीनां नारीणां सामान्यरूपेण सुदीर्घकेशान् दृष्ट्वैव वर्णनमिदं कृतवान्। एतेन सर्वथा धन-धान्य-नीतिज्ञान, शीलसौजन्यसहितविशाल सौन्दर्ययुक्तः कोशलदेशः विभाति इति कवेराशयः।

कविचूड़ामणिः कम्बन् महोदयः प्रथमं नदी पटले अस्य कोशल-देशस्य विविध नद्याः वर्णनम्, ततश्च देश पटले कोशलदेशस्य वर्णनं कृतवान्। पुनश्च तस्मिन् नगरपटले अयोध्यानगर्यां वैशिष्ट्यं शोभां च वर्णितवान्। ज्ञायते यत् कविरयं एतस्मात् क्षेत्रात् तथा प्रभावितः येन पुनः पुनः कवेः भव्यभावना अयोध्यां परितः बद्धमूला जायते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रसाद गुणयुक्तं रससिक्तं सूक्ष्मार्थभावगर्भितं अयोध्यानगर्य्याः वर्णनं संस्कृतभाषायाम् ऋषयः मुनयश्च तथा भारतीयवाङ्मयस्य अन्यस्यां भाषायां विभिन्न कवयश्च अयोध्यायाः प्रशंसां कृतवन्तः। तथा भूतेयम् अयोध्या यत्र वैकुण्ठ-लोक निवासिनः अवतरितुं कामयन्ते (पद्य ६४)। किमियम् अयोध्या भूदेव्याः मुखं मुखतिलकम् अक्षि, वक्षसि मुक्ताहारः किं वा भगवतो नारायणस्य जीवनस्थानं विद्यते इति विवेचनं कठिनम्।

किमियम् अयोध्या भगवत्याः, लक्ष्मीदेव्याः, कमलासनं विष्णोः कौस्तुभमणेः—स्वर्ण मञ्जूषा विद्यते? किं वा प्रलयकाले यथा सर्वे जीवाः भगवतो विष्णोः उदरे समाविशन्ति तथैवेयं अयोध्या स्वर्गादपि गरीयसी वैकुण्ठ लोक इव वर्तते।

सर्वान् दशेन्द्रियान् मनश्च वशीकृत्य तपस्यया तत्त्वज्ञानेन धर्मेण च यस्य भगवतो नारायणस्य चरणारविन्दं प्राप्तुं मुनयः यतन्ते। तस्य नारायणस्य साक्षात् अवतारः श्रीरामचन्द्रः सर्वेषां शरण्यः स्वयमत्र महालक्ष्म्या सीतया सह आगत्य चिरं निवासं चकार। सा अयोध्या सर्वथा वन्दनीया अतुलनीया च (पद्य ६६)।

अयोध्यायाः प्राचीरदुर्गः कविकल्पनातीतः यतोहि देवलोकोऽपि अयोध्यायाः समतां कर्तुम् अक्षमः। अत्र सर्वाङ्गसौन्दर्ययुक्ताः नार्यः वर्तन्ते। याः स्वर्गसुन्दरीभिः विशिष्टाः। मनुशास्त्रानुसारं राजा राज्यं सञ्चालयति। मनुनामकेन देवशिल्पिना अयोध्यायाः प्राचीरः निर्मितः। उभयत्र मनुरेव कारणम्। अत्र राज्ञः प्राचीरस्य च रक्षा-प्रवन्धः प्रवलः यतोहि राज्ञः समीपे विविधायुधानि सन्ति। अस्मिन् प्राचीरेऽपि विविधास्त्रशस्त्राणि विद्यन्ते। राज्ञः समीपे राजतन्त्रं विद्यते, प्राचीरस्य पार्श्वे गूढयन्त्रं विद्यते। राजानं निकषा श्रेष्ठगुणाः वर्तन्ते, प्राचीरे गुप्त मार्गादयः सन्ति। राजा आज्ञाचक्रं चालयति, प्राचीरश्च चक्रायुधं चालयति। अतएव उभौ राजा, प्राचीरश्च अजेयौ विद्येते।

यथा भूमण्डलस्य चतुर्दिक्षु महासागरः विद्यते, तेन सागरेण परिवेष्टिता इयं पृथ्वी, तथैव अयोध्यां परितः चतुर्दिक्षु गभीरतम-जलस्रोतः (नहर) विराजते। तत्र यदा मेघः आगच्छति तदा मेघेन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ज्ञायते यत् इदं स्रोतः समुद्रः वर्तते । तत्रैव जलं प्रक्षिप्य यदा उद्गच्छति तदा प्राचीरस्य उच्चतां दृष्ट्वा, तत्रैव पर्वतबुद्धचा स्थित्वा शेषजलं निःसारयति । अत्र कविः अयोध्यायाः प्राचीरस्य उच्चतां स्रोतसरःगम्भीरतां च विशेष रूपेण वर्णितवान् ।

अयोध्यायाः प्राचीरस्य च चतुर्दिक्षु चत्वारो गोपुराः चत्वारि नगरद्वाराणि सन्ति । एते चत्वारो गोपुराः चत्वारि द्वाराणि चतुर्णां वेदानां तुल्यानि सन्ति । यत्र सन्मार्गस्य कपाटं वर्तते । कवेरत्राशयो वर्तते यत् अयोध्यानगरस्य चत्वारि गोपुरद्वाराणि चतुर्वेदतुल्य-पवित्राणि सन्ति । यत्र कपाटानि सन्मार्गप्रदर्शकानि इव विराजन्ते । फलतः इयम् अयोध्यापुरी **वेद-सभा पवित्रतमा ।**

अस्याः प्रासादे-अट्टालिकायां शतशः सुन्दरीणां चित्राणि अङ्कितानि सन्ति । येषां शोभा अवर्णनीया वर्तते । अत्र नाट्यमञ्चे नर्तकीनां समूहो नृत्यति । तासां नर्तकीनां कटाक्षविक्षेपैः दर्शकाः कामेन आहताः भवन्ति । अत्रोद्याने पुष्पेभ्यः मधूनि च्यवन्ति । तत्र मलयानिलैः कामिन्यः कामवेदनया पीडिताः भवन्ति । तासां स्तनश्च तप्तः जायते । अत्रत्यस्त्रीणां सौन्दर्यं रत्नप्रकाश इव वर्तते । अलकापुरी स्वर्गलोकस्य अमरावती-नगर्य्याः अधिका समृद्धा मनोरमा च कथ्यते । किन्तु इयम् अयोध्या तामपि तिरस्करोति ।

अत्र शङ्खनादैः, वीणानादैः, वंशीनादैश्च सर्वदा विविधध्वनयः जायन्ते । अत्रत्यनारीणां प्रायः सम्पूर्ण समयः प्रणयकलहे, सम्भोगे, मधुरगाने, स्नाने, केशविन्यासे, पुष्पालङ्कारे च व्यतीतो भवति । अत्रत्याः जनाः शिक्षिताः एव सन्ति, धनिनः एव सन्ति । अतएव न कोऽप्यशिक्षितः न कोऽपि निर्धनः । एवंभूता इयमयोध्या सर्वथा दिव्या दर्शनीया प्रातःस्तरणीया मधुरतमा विद्योतते ।

अस्मिन् रामायणे इयं विशेषता अवलोकक्यते, यत् सर्वप्रथमं नदीपटल, देशपटल, नगरपटलानां सुविशदं महत्त्वपूर्ण मनोहारि वर्णनं विद्यते । यत् वर्णनं समुपलब्धप्रसिद्धरामायणेषु न दृश्यते । **इयं नूतना शैली विद्योतते ।**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अरशियर पड्लम् (राज्यशासन पटलम्)

महाराज—दशरथस्य राज्य शासनं कीदृशम् आसीत् कथं च दशरथः महान् पराक्रमी आसीत् इत्येतेषां सर्वेषां विवेचनमस्मिन् पटले विधीयते। अस्य अयोध्या—महानगरस्य कोशलदेशस्य नृपः दशरथः सुयोग्यः महामहिमशाली भाग्यवान् आसीत्। यस्य सप्तद्वीपा वसुमती शासनाधीना विद्यते। यस्यैव पुत्ररूपे रामचन्द्रो भविता।

अयं हि प्रज्ञा, दया, वीरता, दानशीलता, शालीनता, नीति-परायणतादिविविधगुणैः अलङ्कृतः सर्वथा परिपूर्णः विराजतेस्म। राजा दशरथः याचकानां सागरं, दानतरणि-द्वारा, ज्ञानसमुद्रं शास्त्राध्ययननौकाद्वारा, शत्रुसिन्धुं कृपाण-सेतुद्वारा तथा ऐश्वर्य-सुखसागरं भोगविलास-सेतुद्वारा पारञ्चकार। (पद्यं १७३)। अस्मिन् पद्ये कविः विशिष्टशैलीमाश्रित्य विभिन्नसागरतरणवर्णनं विधाय **काव्यचमत्कारं प्रदर्शितवान्।**

अस्य राजाधिराजस्य श्वेतच्छत्रसमक्षं चन्द्रः हीनः प्रतिभाति। यतो हि चन्द्रस्तु कृष्णशुक्ल-पक्षयोर्मध्ये ह्रासवृद्धि प्राप्नोति, किन्तु दशरथस्य छत्रं निरन्तरं प्रकाशं प्रददाति। चन्द्रमा तु एकस्मिन् एव पक्षे (शुक्लपक्षे) अन्धकारं दूरीकरोति। तत्र अयं राजचन्द्रः दशरथः सर्वदा निर्बाधरूपेण प्रजानां दुःखान्धकारं दूरीकरोति। अतएव चन्द्रेण समम् अस्य तुलना भवितुं नार्हति।

स्वर्णहीरकादिरत्नजटिताभूषणादियुक्तः दशरथः शरीर-तुल्यो वर्तते तथा च तस्य राज्यस्य सर्वे चराचर जीवाः प्राणस्वरूपाः वर्तन्ते। तात्पर्यमिदं यत् दशरथस्य प्रजाः एव तस्य प्राणाः विद्यन्ते। अत्रापि दशरथस्य वैशिष्ट्यं चमत्कारजनकशैल्यां वर्णितं कविना।

तीरू अवदारपपड्लम् (श्रीअवतारपटलम्)

अस्मिन् पटले राज्ञः दशरथस्य पुत्राभावे राज्यप्रजानां चिन्ता-वर्णनं, गुरुवसिष्ठं पुरतो तच्चिन्ता निवेदनं पुत्रेष्टियज्ञ-व्यवस्था,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऋष्यश्रृङ्गमहर्षेरानयनं पुत्रेष्टियज्ञ-वर्णनं रामावतारस्य च वर्णनं सुस्निग्धकाव्यशैल्यां वर्तते। येषां संक्षिप्तवर्णनं निम्नाङ्कितमस्ति।

एकदा नृपः ब्रह्मपुत्रं वसिष्ठं निकषा गत्वा यन्वेदयत् यद्भवान् एव मम रक्षकः सुखदुःखयोर्मध्ये मातृ-पितृवदीश्वरतुल्यो विद्यते। भवत्कृपयैव मम पूर्वजाः सूर्यवंशिनः सूर्यसदृशेनैव तेजसा राज्यं शासितवन्तः। ममामि शासनकालस्य षष्टिसहस्र ६० हजार वर्षाणि व्यतीतानि। अत्र सर्वत्र रामायणेषु सहस्रवर्षगणना अनुसन्धेया विद्यते। वाल्मीकिरामायणे आनन्दरामायणे चापि एवमेव कतिपय-सहस्राणां सर्वत्र चर्चाऽस्ति—**वर्तमान सहस्र समक्षं किमिदं सहस्र-मिति-अनुसन्धेयम्।)**

मम देहावसानोपरान्तं प्रजाः कथं रक्षिताः स्युः इति चिन्ता मां बाधते। ते कष्टं सहिष्यन्ते, कथं सुखिनः स्थास्यन्ति सर्वामिमां कल्पनां कृत्वा चिन्तितोऽहम्। राज्ञः इति निवेदनं श्रुत्वा ब्रह्मतुल्यो ब्रह्मपुत्रः वसिष्ठः चिन्तयामास। एतत्क्रमे शङ्खचक्रगदापद्मधारिणः क्षीरसागरे शेषशायिनः भगवतो विष्णोः स्मरणं जातम्। इदमपि स्मृतं वसिष्ठेन यत् भगवान् विष्णुः उक्तवानासीत् यद्पीडितदेवा-नामुद्धारमहं करिष्यामि।

अधुना च देवाः ऋषयश्च रावणादि-राक्षसानामुपद्रवैः सन्त्रस्ताः सन्ति। कथं च इन्द्रादयो देवास्तत्र गतवन्तः, कथं च वरं प्राप्तवन्त इति सर्वदृश्यं तपोबलैः वसिष्ठेन ज्ञातम्। संक्षेपेणेदं यत् ते देवाः सर्वप्रथमं शिवसमीपं गतवन्तः। शिवस्तुतिसाकं मेरुपर्वतोत्तर-शिखरेस्थितं ब्रह्माणं पुरतो गत्वा राक्षसोपद्रवं वर्णितवन्तः। ब्रह्मा च अर्धनारीश्वरेण शिवेन इन्द्रादिदेवतानामुपद्रवकष्टकथां श्रुत्वा सर्वैर्मिलित्वा क्षीरसागरे योगनिद्रारतः श्लामलवर्णं विष्णुंध्यातवान्। भगवान् विष्णुः श्रीलक्ष्म्या सह प्रकटितवान्। दृष्ट्वा सर्वे देवादयः उत्थाय वारंवारं तं प्रणेमुः पुष्पाञ्जलिं च तस्मै प्रददुः।

विष्णुश्च तत्र मण्डप स्थितसिंहासने समुपविष्टवान्। देवाश्च तं स्वकीयकष्ट जालं विनिवेदितवन्तः। तदा भगवान् विष्णुरब्रवीत्। श्रृण्वन्तु भवन्तः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आकाशचारिणो गणाः सर्वे वानराः भूत्वा वने पार्वत्यक्षेत्रे निवसन्तु। एवं च स्वयमेव विष्णुना प्रोक्तम्। अहं तु राज्ञो दशरथस्य पुत्ररूपे अवतारं ग्रहीष्यामि तथा राक्षसनाशं करिष्यामि। अयं च मम शेषनागः ममानुजरूपे सेविष्यते। एवमुक्त्वा विष्णुः गरुडमारुह्य गतवान्।

तदनन्तरं ब्रह्मोवाच। अहं ऋक्षराजजाम्ववान् भूत्वा अवतरितो भविष्यामि। भवन्तश्च वानराः भूत्वाऽवतरन्तु। देवेन्द्रेणोक्तं शत्रु-नाशकरूपे अङ्गदः ममांशो भविता। सूर्येण प्रोक्तं-वाली-सुग्रीवश्च ममांशजौ स्याताम्। अग्निरुवाच नीलश्च ममांशजो भवेत्। वायुर-ब्रवीत् हनूमान् ममात्मजरूपे अवतरिष्यति।

एवं च भगवतो रामचन्द्रस्यावतारपूर्वपीठिकां योगेनावगम्य भगवान् त्रिकालज्ञो महर्षिः वसिष्ठ उवाच। हे राजन्! चिन्तांमाकुरु। एकं पुत्र-प्रदायिनं यज्ञं कुरु। तेनैव भवतां चिन्ता दूरीभविष्यति। इति श्रुत्वा आनन्दातिरेके निमग्नः दशरथोऽवादीत्। महत्यानु-कम्पया आज्ञां ददतु भवन्तो यत् स यज्ञः कथं सुसम्पन्नः भवेत्। किं करणीयं मयेति सर्वमादेष्टव्यं तत्र भवद्भिः।

वसिष्ठोऽवदत्, सर्वथा स्तुत्यः कश्यप-प्रजापतिपुत्रो विभाण्डको ऋषिरासीत् तस्य कृपा प्रदत पुत्रः ऋष्यश्रृङ्गः सर्वविद्या पारंगतः सकलवेदशास्त्रमर्मज्ञः चतुर्मुख ब्रह्मा इव विद्यते। तस्यैव ऋषिश्रेष्ठस्य अत्रानयनस्य व्यवस्था विधेया। स एव ऋष्यश्रृङ्गोऽत्रागत्य यज्ञ-विधानं विधास्यति यज्ञं च कारयिष्यति। तेनैव पुत्रेष्टि नामक-यज्ञेन भवान् पुत्रवान् भविष्यति।

राजा दशरथोऽब्रवीत्। कथं केनोपायेन स ऋषिरात्रागमिष्यति इति सर्वं कृपया निर्देष्टव्यम्। तदा वसिष्ठेनोक्तं पुरातनमेकं कथानकम्। स्वायम्भुवमनोवेंशे उत्तानपाद नामको राजा वभूव। तस्य गुणशाली पुत्रः रोमपादः राज्यं शशास। तस्य राज्ये चिरकालात् वृष्टिर्नजाता दुर्भिक्षो जातः। राजा च मन्त्रिवरान् विप्रानाहूय मन्त्रितवान्। ते ऊचुः यत् यदि ऋष्यशृङ्गोऽत्रागमिष्यति तर्हि वृष्टिर्भविष्यति। राजा चिन्तितवान् कथं स महान् ऋषिरत्रा-गमिष्यति कया रीत्यामन्त्रणं कुर्याम्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तस्य रोमपादस्य परिषदि काश्चित् परमरूपवत्यः वारवनिताश्चासन्। ताः कथितवत्यः यद् वयं तमृषिमत्रानयिष्यामः। राजा चेदं श्रुत्वा हर्षमाप्तवान्। तासां रूपगुणानां प्रशंसां कृत्वा यथेच्छं सम्मानं विधाय धनादिकं दत्वा ऋषेरानयनार्थमाज्ञां ददौ। ताश्च सुन्दर्यः राजानं नमस्कृत्य ततः प्रस्थितवत्यः।

एकस्मिन् दिने रोमपादस्यानुपस्थितौ ताः नार्यः ऋष्यश्रृङ्ग-स्याश्रमं गतवत्यः। ऋषिश्च ताः तपस्विनीः मत्वा सत्कारं चकार। ताश्च क्रमशः तस्मै मधुर फलानि ददुः। एवं क्रमेण परिचयं वर्धयन्त्यः ताः स्वकीयाश्रममानेतुं प्रार्थितवत्यः। ऋषिश्च ताः तपस्विनीः ज्ञात्वा स्वीचकार। ताश्च तम् ऋषिं सुदूरमानीतवत्यः।

तस्यागमनेनैव तत्र रोमपाद राज्ञो राज्ये महतीवृष्टिर्जाता। सर्वे जलाशयाः प्रपूरिताः। इदं दृष्ट्वा राजा ज्ञातवान् यत् महर्षि-रत्रागतः। इदमपि निश्चितं यत् तं जितेन्द्रियं सुकेशिन्यः कमलाननाः मृगनयन्यः येन केनोपायेनात्रानीतवत्यः। रोमपादश्च विप्रैः पार्षदैश्च सह। स्वागतार्थमुपस्थितः महर्षिं च विनयेन पुनः पुनः प्रणतवान्। प्रसन्नो मुनिराशीर्वचनं ददौ। ततश्च राजा स्वराजधानीमागत्य तत्रोन्नते सिंहासने राजभवने ऋषिमुपवेशयामास। अर्घ्यपाद्यादिभिश्च प्रसादितवान्।

ततश्च स्वकीयां परम सुन्दरी कन्यां वेदमन्त्रोच्चारणैः विधिवत् तस्मै ऋष्यश्रृङ्गाय ऋषये प्रददौ।

इत्थं च वसिष्ठेन ज्ञातं यत् शान्तादेव्याः परिचर्यां स्वीकृत्य मुनिस्तत्र स्थितः। इमां सूचनां दशरथं निकषां प्रेषितवान् वसिष्ठः। दशरथश्च सुमन्तादिमन्त्रिभिः सह रथमुपविश्य रोमपाद नगर-मागत्य ऋषिं स्तुवन् प्रार्थयामास। रोमपादश्च दशरथस्य स्वागतं व्याजहार। दशरथस्य निवेदनं श्रुत्वा रोमपादः ऋषिणा सह अयोध्यागमनस्य निश्चयं कृतवान्।

तदनन्तरं स ऋषिः अतिसुन्दर्या शान्तया रोमपादेन च सह अयोध्यां प्रस्थितवान्। अयोध्यायां दशरथः विद्याज्ञानरूपाय ऋष्यश्रृङ्गाय देव्यै शान्तायै च यथायोग्यमावासादि व्यवस्थां सेवा-सत्कारं च कृतवन्। **अत्र कविः कथयति यत् शान्ता दशरथस्यैव**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुत्री आसीत् यां रोमपादः दत्तक पुत्रीरूपे गृहीतवानासीत्। अतएव सा शान्ता स्वपत्युः ऋष्यशृङ्गस्य स्वागतादिकं दृष्ट्वा परममुदमाप्तवती।

कियत्कालानन्तरं दशरथः स्वकीयेच्छां मुनिं पुरतो निवेदितवान् मुनिश्च सुप्रसन्नो भूत्वा उवाच। चिन्तांमाकुरु। नैकमिदंभुवनं किन्तु चतुर्दश भुवनं रक्षयितुं समर्थस्ते पुत्रो भविष्यति। तदर्थं पुत्रेष्टि यज्ञं कुरु। दशरथस्तु मनोऽभिलिषितं वरमेवेदं वचनंश्रुत्वा त्वरितमेव तत्परो वभूव। राजाज्ञया यज्ञशाला निर्मिता सर्वोपकरणानि शीघ्रमेव प्रस्तुतानि। राजा च पवित्र सरयूजलेस्नात्वा यज्ञशालामुपतस्थौ। यज्ञः प्रारब्धः आहवनीयाहुतीभिः द्वादशमासपर्यन्तं यज्ञः निरन्तरं जायमान एवासीत्। तदा च सहसा आकाशे देवदुन्दुभयः नेदुः पुष्पवृष्टयश्च वभूवुः। यज्ञशालायां स्थिताः सर्वे ऋषिगणाः समुत्तस्थुः। तदैव ऋष्यशृङ्गः पुत्रेष्टि पूर्तिकारकमाहुतिम् अग्नौ चिक्षेप।

तदैव तस्मादग्निमुखात् एकः ज्वलदभास्वरतुल्यो देवः निर्गतः। तस्य हस्ते एकस्मिन् स्वर्णस्थाल्याममृत तुल्य मन्नं क्षीरमासीत्। स च प्रदीप्तपुरुषः तां स्थालीं तत्रैव निक्षिप्य पुनरग्नौ प्रविष्टः। तदा महर्षेराज्ञया दशरथः भागमेकं कौसल्यायै ददौ अपरमेकं भागं कैकेयी राज्ञ्यै ददौ अपरश्चैव भागः सुमित्रायै ददौ। स्थाल्यां विकीर्ण शेषभागं च पुनः सुमित्रायै प्रददौ।

एवं रूपेणायं पुत्रेष्टि यज्ञः सुसम्पन्नः सर्वे च ऋषिं प्रणेमुः। आगतेभ्यः ऋषिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथायोग्यं स्वर्ण रत्न भूमि गोदानं दशरथः प्रदत्तवान्।

वसिष्ठाज्ञया च दशरथः ऋष्यशृङ्गं प्रशस्तिवचनैः सह नमश्चकार। ऋषिश्च प्रसन्नो भूत्वा शान्तया सहितो रथमास्थाय स्वस्थानं ययौ।

अयोध्यायां दशरथस्य तिस्रः पत्न्यः गर्भधारणं कृतवत्यः। पूर्णः समयः समागतः। सर्वेदेवाः धर्मसहिताः मुदमापुः। शुभे लग्ने नक्षत्रे चैत्रे मासि नवम्यां तिथौ कौसल्या ज्योतिर्मयं पुत्रं जनयामास। यश्च

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वकीयोदरे समस्तं विश्वं लीनीकृत इवासीत् वेदाश्च यस्यान्तं न पारयामासुः तमेव भगवन्तं विष्णुं दशमास पर्यन्तं कौसल्या गर्भे दधार इति हर्षानन्द चमत्कार कारिका श्रेयसी प्रेयसी च घटना।

तदनन्तरं पुष्यनक्षत्रे मीनराशौ कैकेयी पुत्रमेकं जनयामास। सुमित्रा च सिंहराशौ मघानक्षत्रे पुत्रं जनितवती, अश्लेषा नक्षत्रे कर्कराशौ चापरं पुत्रं जनयामास। क्रमशः रामः भरतः लक्ष्मणः शत्रुघ्नश्चेतिनामानि व्यदधात् दशरथः।

रामस्य जन्म मेष राशौ नवम्यां तिथौ पुनर्वसु नक्षत्रे मर्कट लग्ने जातम्। चत्वारोग्रहा उच्चस्थाने आसन्। तमिल भाषायां मेष वृषादि लग्नमेव क्रमशः चैत्र वैशाख मास स्थाने कथ्यते। अतएव २४४ पद्ये मेष राशेर्नामोल्लिखितम् इयान् विशेषः।

एवं क्रमेणायोध्यायां कियन्मासपर्यन्तं पुत्रजन्मोत्सवः महता समारोहेण मङ्गलादि विधानेन जायमान एवासीत्। इत्थं च देवादिदेवः परब्रह्मरूपः रामः सुखेन अयोध्यायां बाल्यावस्थां यापयन्नासीत्। तत्र हर्षस्य पारावारः प्रवाहितो जातः।

कैयडैप् पडलम् (हस्तधारण पटलम्)

अस्मिन् पटले दशरथ समीपं विश्वामित्रस्यागमनं, यज्ञरक्षार्थं रामस्य वनगमनार्थं याचना, विश्वामित्रेण सह रामस्य वनगमन कथा मुख्यरूपेण विद्यते। इयं च कथा वाल्मीकिरामायणवदेव प्रायः वर्तते।

सर्वथा बलशालिनो दशरथस्य राज्यशासनं सानन्दं प्रचलतिस्म। वर्धमानान् पुत्रांश्च दृष्ट्वा नितरां प्रसीदति च राजा। तदानीमेव तपोधनो नूतन सृष्टिकर्त्ता विश्वामित्रः ऋषिः दशरथराज्यसभायामुपस्थितः। तदागमनं ज्ञात्वा नतशिरसा तं प्रणम्य स्वर्णमय सिंहासने तमुपवेशयामास तथा पुष्पाघ्यादिभिश्च तं पूजितवान्। ततश्च राज्ञोक्तम् यदिदं मम पूर्वजस्य ममापि च पुण्यफलं यद्भवतां चरणमत्रागतम्। शासनस्य फलमद्यैव प्राप्तं मया। कृपया समादिशन्तु तत्रभवन्तः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इतिश्रुत्वा विश्वामित्रेणोक्तं यत् सिद्धवने यज्ञमेकं कर्तुमहं-गच्छामि। तत्र राक्षसाः समागत्य तपस्यायां विघ्नान् करिष्यन्ति। अतएव स्वपुत्रं रामचन्द्रं मया साकं गन्तुमाज्ञां देहि। स यज्ञरक्षां विधास्यति। मुनेर्वचनं श्रुत्वा दशरथः स्तब्धो बभूव। अनुभूतं यत् ऋषिः मम प्राणानेव याचते।

मर्मस्थले प्रविष्टां ऋषिवाणीं श्रुत्वा राजाऽवदत्। रामस्तु वयसा बलेन च अल्पीयान् वर्तते। अस्त्रशस्त्राभ्यासोऽपि स्वल्प एव। अतएव स्वयमहं तत्र गत्वा यज्ञरक्षां करिष्यामि। सर्वान् राक्षसान् विमर्द्य निर्विघ्नं यज्ञसम्पादनं कारयिष्यामि।

राज्ञो वचनं श्रुत्वा विश्वामित्रनेत्रे विस्फारिते जाते भृकुटिर्वक्रा जाता। क्रोधेनोत्थाय चलितः। तं दृष्ट्वा देवाश्चिन्तिताः जाताः यत् प्रलयकालः समागतः, सर्वे भयभीताः अभूवन्। क्रुद्धमेवं विश्वामित्रमवलोक्य महर्षिः वसिष्ठोऽब्रवीत् महर्षे किंचित् प्रतीक्ष्यताम्, इत्युक्त्वा दशरथमुक्तवान् विश्वामित्राय पुत्रं देहि, तस्य पुत्रस्य दुष्प्राप्यशुभप्राप्तिसमयः समागतः, चिन्तां त्यज। हर्षेण पुत्रं प्रेषय।

तद्वचनं श्रुत्वा राजा राममानेतुमाज्ञां ददौ। श्रीरामश्च लक्ष्मणेन सहोपस्थितः। महाराजः लक्ष्मणेन साकं रामचन्द्रं विश्वा-मित्राय समर्पितवान् उक्तवांश्च यत् भवन्त एव एतयोः पितरौ, यथोचितं विधास्यन्ति।

विश्वामित्रः शान्तो जातः। दशरथायाशीर्वचनं दत्वा राम-लक्ष्मणाभ्यां सहितः यज्ञार्थं प्रस्थितः। भगवान् रामश्चैकमाश्रमं दृष्टवान् यत्र यज्ञधूमाः व्याप्ताः सन्ति। विश्वामित्रं पृष्टवान् किमिदं स्थानम्? विश्वामित्र उवाच।

एकदा कामदेवः चन्द्रमौलीश्वरं शिवं प्रति स्वकीय पुष्पबाणान् प्रक्षिप्तवान्। कुपितः शिवः कामदेवं भस्मसात् कृतवान् तदाप्रभृति स कामदेवः अनङ्गः जातः, अनङ्गशब्देन व्यवह्रियतेच। इदं तदेव स्थानम् यत्र स्वयं भगवान् शिवः तपश्चचार। अस्याश्रमस्य पवित्रताऽवर्णनीया विश्वामित्रः उभौ भ्रातरौ तत्रागत्य दर्शनं कृतवन्तौ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तदनन्तरमन्यदिने एकस्मिन्नतिग्रीष्ममय-बालुकातप्तप्रदेशे समागतवन्तौ। यत्र ऋतवो न जायन्ते, अग्निदेवोऽपि बिभेति, सर्वाणि वस्तूनि तत्र दग्धानि भवन्ति। तत्रत्यं तापमनुभूय गजाः पलायन्ते जीवजन्तवश्च ज्वलन्ति।

तत्रोद्विग्नं रामं दृष्ट्वा विश्वामित्रः ताभ्यां 'बला अतिबला' नाम्नीं विद्यामुपदिश्य ददौ तां विद्यां रामलक्ष्मणौ मनसा चिन्तितवन्तौ। तस्याः प्रसादात् तत् तप्तस्थानं शीतलमभूत्। तदा रामः पृष्टवान् महर्षे, कथमयं देशस्तथा तप्तः ? महर्षिरुवाच।

अत्रैका भीषणाकृतिः सहस्रगजबलतुल्या यमस्वरूपा नारी आसीत्। सुकेतु नामको बलवान् वह्निसमः तेजस्वी चर्चरस्य पुत्रो बभूव। सन्तानाभावे स सुकेतुः चतुर्मुख-ब्रह्मणः उपासनां कृतवान्। सुप्रसन्नो ब्रह्मोवाच। पुत्रस्तु ते न भविता किन्त्वेका पुत्री भविष्यति। तदनुसारं सुकेतोरेका रूपलावण्यवती सुता जाता। तस्याः विवाहः स्वकुलोत्पन्नेन सुन्दनामकेन यक्षेण सह कारितवान्। तस्य मारीच-सुबाहुनामानौ द्वौ पुत्रौ जातौ। उभौ मायाविनौ प्रपञ्च-चतुरावास्ताम्। सुन्दश्च महाप्रतापशालिनोऽगस्त्यऋषेराश्रम-मागत्योपद्रवं चकार। पशुपक्षिणां हत्या कृता वृक्षाश्चोन्मूलिताः तेन। तं दृष्ट्वा महर्षिः अगस्त्यः सुन्दं भस्मसात् कृतवान्। इति ज्ञात्वा सुन्दस्य सा पत्नी स्वपुत्रद्वयेन सह हाहाकारं कुर्वन्ती अगस्त्याश्रममागतवती। अगस्त्यः शापं प्रददौ यत् यूयं राक्षसाः भवत। ते ततः पातालं गतवन्तः।

विशेषः—तमिलभाषायामगस्त्य शब्दस्य तमिल दाता इति कथ्यते तदौपचारिकम्। अगस्त्येन तमिलभाषायां व्याकरणस्य रचना कृता, पाणिनिश्च संस्कृत भाषायां व्याकरणरचनां कृतवान्। भगवता शिवेन पाणिनिः संस्कृते अगस्त्यश्च तमिले व्याकरण निर्माणार्थमादिष्टः इति तमिल भाषायाः पारम्परिके इतिहासे वर्तते।

पाताले च ते सुमालीनामक राक्षसस्य समीपं गत्वा तेन सह सम्बन्धं स्थापयामासुः। सुमाली च रावणस्य मातामहः (रावणस्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मातुः केकशीदेव्याः पिता आसीत्)। पश्चात् सा ताडका रावण समीपं लङ्कां गतवती। सा दुष्टा त्रिशूलधारिणी ताडका रावणस्याज्ञाकारिणी वर्तते। यदि सा न म्रियेत तर्हि सर्वान् जीवान् उदरस्थं करिष्यति।

रामेणोक्तं सा कुत्र तिष्ठति ? मुनिनोक्तम् साऽस्मिन्नेव पर्वते तिष्ठति। रामस्तत्र गतः। रामं दृष्ट्वा ताडका चोक्तवती। चिरदिनात् सुन्दरं मांसं न लब्धं तदर्थमेव मम भाग्येन त्वमत्रागतोऽसि रामो जहास।

रामो मनसि स्त्रीहत्या कर्तव्या न वा कर्तव्येति संशये कियत्काल-पर्यन्तं प्रतीक्षमाणः तस्थौ। तदा विश्वामित्रेणोक्तं यदेवं भूता पापिनी किं त्वया स्त्री मन्यते ? स्त्रीसुलभा शीलसंकोचयुक्तैव 'स्त्री'-शब्देन सम्बोध्यते। एवं श्रुत्वा रामस्तां हन्तुमुद्यतः। ताडका च रामोपरि भीषणं त्रिशूलं प्रक्षिप्तवती, रामेण शरैः खण्डितं त्रिशूलम्।

ततश्च रामः तीक्ष्णं शरमेकं तामुद्दिश्य प्रक्षिप्तवान्। शरेणाहता सा भूमौ निपतिता। रक्तधारा प्रवाहिता। इदं दृष्ट्वा सर्वे देवाः ऋषयश्च रामं ववन्दिरे तथा सन्तुष्टाः सन्तः स्व यज्ञादि कार्ये संलग्नाः बभूवुः।

वेलविप् पडलम् (यज्ञपटलम्)

अस्मिन् पटले विश्वामित्रस्य यज्ञवर्णनं तत्र राक्षसानामुपद्रववर्णनं तथा श्रीरामचन्द्र द्वारा राक्षसवध वर्णनं मुख्यमस्ति।

ताडका-वधानन्तरं तद्वनं देवानां पुष्पवर्षया शीतलं जातम्। देवाः स्वस्वस्थानं प्रत्यागतवन्तः। तत्र महता तपोबलेन श्रेष्ठो विश्वामित्रः रामायानेकानि अमोघास्त्राणि प्रददौ। यान्यस्त्राणि कविकम्बनस्याभिभावकस्य 'शैडयप्पन' महाभागस्यामोघ शब्द-तुल्यानि आसन्। **(कम्बन् कवेरभिभावको रक्षकः एकः 'शैडयप्पन' महाभागः आसीत्, तं प्रति कृतज्ञताप्रदर्शनार्थं रामायणेऽस्मिन् अनेक-**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्थाने तेषां नामोल्लेखपूर्वकं तस्य महिमानं प्रदर्शितवानयं कवि चक्रवर्ती)। (पद्य सं ४१२)

विश्वामित्रश्च तेषामस्त्राणां संचालनप्रक्षेपणपरावर्तनाद्युपाया-नामपि विशेष शिक्षां प्रददात्। प्रोक्तवांश्च यदिमान्यस्त्रशस्त्राणि सर्वथाऽनुजतुल्यानि त्वया साकं स्थास्यन्ति। एवं ब्रुवन्तस्ते विश्वामित्र राम-लक्ष्मणास्ततः प्रस्थितवन्तः। तदनन्तरं कश्चिद् ध्वनिः श्रुतस्तैः। रामेणोक्तं महर्षे, कस्यायं ध्वनिः? मानसरोवरान्निः-सृतायां पावनसरयूनद्यामियं गोमती नदी मिलति। तयोरेव संगमस्यायं ध्वनिः। तदनन्तरं भवभयनाशिनी कौशिकी नदी समीपं समागतास्ते। एतत् क्रमे विश्वामित्रेण स्वोत्पतिवर्णनमपि कृतम्। तेनोक्तं ब्रह्मणः पुत्रो राजाधिराजः कुशः बभूव। कुशस्य वैदर्भीनाम्नी पत्नी जाता। तस्याश्चत्वारः पुत्राः समुत्पन्नाः। तस्य परमसुन्दर्यः शतकन्याः जाताः। उद्याने भ्रमन्त्यस्ताः वायुदेवेन दृष्टाः। वायुना चोक्तं मया साकं विवाहं कृत्वा विहरथ। ताः ऊचुः यदि पितुराज्ञा भवेत्तर्हि वयं विवाहं करिष्यामः। तच्छ्रुत्वा कुपितो वायुः तासामुपरि प्रहारं कृतवाद्। ताः पितुः समीपं गत्वा वृत्तान्तमिमं निवेदितवत्यः। पिता च ब्रह्मदत्तेन सह तासां पाणिग्रहणमकरोत्। ब्रह्मदत्तस्य पाणिस्पर्शेन ताः स्वस्थाः पुनः पूर्ववत् सुन्दर्यः जाताः। स च ब्रह्मदत्तः पुत्रार्थमेकं यज्ञं कृतवान्। तस्य यज्ञस्य प्रसादेन 'गाधि' नामकस्तेजस्वी पुत्रः समजनि। गाधिराज्ञः सन्तान द्वयं जातम्। एका पुत्री कौशिकी द्वितीयश्चपुत्रोऽहं विश्वामित्रः। मम भगिनी पृथिव्यां कौशिकीनाम्नी महानदीरूपे प्रवहति। अहंतु तव समक्षमेव। **अधुना इयमेव कौशिकी (कोशी) नदी उत्तरविहारे नेपालभारतयोर्मध्ये विनाशलीलां कुर्वन्ती प्रवहति।)**

विस्मयकारिणीं कथामिमां श्रुत्वा राम-लक्ष्मणौ साश्चर्यचकितौ बभूवतुः।

ततश्चैकमुपवनं वृक्षाच्छादितं दृष्ट्वा पप्रच्छ रामचन्द्रः यदयं कस्याश्रमः? विश्वामित्रोऽब्रवीत्। अयमाश्रमो गोतमस्य ऋषेस्तथा तत्पत्न्याः अहल्यायाः। अत्रैव वराहावतारो भगवान् हिरण्याक्षं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जघान। मध्ये च वलि राज्ञस्तथा वामनावतारस्य च वर्णनं चकार महर्षिः। एभिर्वर्णनैरवश्यमेव भवता ज्ञातं यदिदं पावनस्थानं विद्यते यत्राहं शास्त्रानुसारं यज्ञं कर्तुमीहे।

इत्थं च वार्तालापं विधाय विश्वामित्रो यज्ञकार्ये संलग्नो जातः। कुमारद्वयं च यज्ञरक्षणार्थं प्रतिनियुक्तवान्।

यज्ञसमारम्भं वीक्ष्य राक्षसाः वज्रपातगर्जनादप्यधिक गर्जनेन तत्र विघ्नबाधार्थमुपस्थिताः। मांसशोणितयुक्तान्यस्त्राणि प्रचिक्षेपुः। यद्यपि मन्त्रवलेन तान्यस्त्राणि भूमौ नागतानि किन्तु गगने मत्स्यादितरंगयुक्त सागरवत् प्रसृतानि। तत्र विद्रूपान् भीषणाकृतीन् राक्षसान् दृष्ट्वा रामचन्द्राज्ञया लक्ष्मणः बाणांश्चिक्षेप। तस्य बाणैः यज्ञवेद्यामुपरि वितानतुल्यमावरणं जातम्।

ततश्च श्रीरामचन्द्रः वाणेनैकेन मारीचं समुद्रे निक्षिप्तवान् सुबाहुं च यमलोकातिथिं कारयामास। एवं हि विश्वामित्रस्य यज्ञः निर्विघ्नः सुसम्पन्नः। पुनश्च महर्षिं निवेदितवान् यत् अथ किं कर्तुमाज्ञाऽस्ति। विश्वामित्रेणोक्तम् भवान् सर्वं कर्तुं समर्थः। अधुना चानेके लोकपकारिणः कार्यसमूहाः वर्तन्ते। तत्पश्चाद् भविष्यति। अधुना शस्य श्यामल क्षेत्र परिवृतामुद्यानपरिवेष्टितां पावनमिथिलाभूमिं प्रति प्रस्थानं विधेयम् यत्र मिथिलेशः यज्ञं कुरुते प्रथमं तं वयं पश्येम। इति विचार्य ते तत्र प्रस्थिताः। **(पद्य ४७०)** **(मिलियैर् मिथिला मिलियैर् कोमान् मिथिलाधिपतिः।)**

अहलिहैप् पडलम् (अहल्या पटलम्)

अस्मिन् पटले अहल्योद्धारस्य वर्णनं मुख्यं वर्तते। तत्र प्रथमं कविः नद्याः वर्णनं करोति। विश्वामित्र-रामचन्द्र-लक्ष्मणाः शोण-नद्याः तीरं समागताः। तस्याः नद्यायाः शोभा अपूर्वा आसीत्। नद्याया तले वालुकाः सन्ति तत्र मन्यः अगुरु चन्दनादिवृक्षाणां शाखाश्च वर्तन्ते, धारायां पुष्पाणि वहन्ति, एवं रूपेण इयं नदी सुन्दरी रमणीवत् दृश्यते। तत्र ते रात्रौ एकस्मिन् उद्याने निवासं चक्रुः। रामः प्रप्रच्छ। किमिदम् उद्यानम् विश्वामि त्रउवाच इदं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तदेव पवित्र-स्थानं यत्र भगवान् चन्द्रशेखरः योग्यम् एकं पुत्रं जनयामास। यस्यनाम कार्त्तिकेयः जातम्। तदनन्तरं प्रातः काले ततः प्रस्थाय कावेरीनद्याः तटे समागतवन्तः। इयं कावेरी दक्षिण-भारते गङ्गानदी तुल्या वर्तते। रामचन्द्रेण गंगा माहात्म्यं पृष्टम्। विश्वामित्रेण भगीरथद्वारा पृथिव्यां गंगानयन कथिता कथा, सकल सगरसन्तानोद्धार वर्णनं च विस्तरेण कथितम्। भगवत्याः भागीरथ्याः महिमानं श्रुत्वा उभौ भ्रातरौ गंगायाः वन्दनां कृतवन्तौ। ततः विश्वामित्रेण सह रामः गंगापारं गतवान्। ततश्च विदेह जनकस्य मिथिलादेशे समागतवन्तः **तत्र क्षेत्रस्य तडागस्य नद्याश्च विचित्रा शोभा वर्तते यत्र तडागे सुकोमलाङ्गीनां नारीणां स्नानस्य दृश्यं च अद्भुतं मनोहारि दृश्यते)।**

सहसा तत्र एकस्मिन् प्रस्तर खण्डे रामस्य चरणधूलिः कथंचित् संस्पृष्टः। सहसा तत् प्रस्तरखण्डं नारीरूपे परिवर्तितं, या च अहल्यारूपा जाता ज्ञायते यत् तस्याः सा स्वरूप प्राप्तिः अविद्याजन्यं मिथ्यारूपं परित्यज्य विद्यारूपं शरीरं भगवच्चरणारविन्दतः प्राप्तिरिवासीत्।

इति सर्वम् अवलोक्य विश्वामित्रः उवाच यत् हे रामचन्द्र, भवत् समीपं स्थिता इयं गौतमऋषेः पत्नी अहल्या वर्तते। एतत् क्रमे विश्वामित्रः अहल्या-इन्द्रयोः सम्भोगकथां गौतम शापकथां तथा च पुनः क्रोधशमनोपरान्तं गौतमद्वारा कथितं शाप विमोचनोपायं च वर्णितवान्। अस्मिन् एव क्रमे इयं शाप विमुक्ति घटना वर्णिता। यत्र गौतमेन कथितमासीत् यदा श्रीरामचन्द्रस्य चरणधूलिः, तव प्रस्तरदेहे प्राप्स्यति तदा त्वम् पुनः पूर्वस्वरूपं प्राप्स्यसि। एवमेव जातम्।

तदा विश्वामित्रेणोक्तम् महर्षे गौतम इयं सर्वथा पवित्रतमा अहल्या वर्तते। इमां कृपया स्वीकुर्वन्तु। विश्वामित्रस्य वचनं श्रुत्वा गौतमेन तथैव कृतम्। श्रीरामचन्द्रोऽपि तस्य आश्रमस्य परिक्रमां कृत्वा तपोधनेन विश्वामित्रेण सह महामहिममयीं मिथिलानगरीं प्रति प्रस्थितवान्। पद्य ५५५ **(मिदिलै = मिथिला, कण्डार = नगरे)**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मितिलैंक् काट्चिप् पड्लम्
(मिथिला दृश्यवर्णन पटलम्)

अस्मिन् पटले मिथिलादेशे रामचन्द्रस्य प्रवेशानन्तरं तत्रत्यायाः शोभायाः विस्तृतं वर्णनं विश्वामित्रस्य तपसः वर्णनं सीतारामयोः परस्परानुराग वर्णनं विस्तृतरूपेण वर्तते। इदमपि वर्णनं प्रायः वाल्मीकिरामायणवदेव दृश्यते। इदमपि स्पष्टं वर्तते यत् तमिलक्षेत्र वासिनः महाकविकम्बनस्य मिथिलां प्रति महती श्रद्धा, महान् आदरः च विद्यते। **यद्यपि मिथिला-मैथिलीं बिना रामकथा कथमपि परिपूर्णा भवितुंनार्हति, तथापि यथा अयं कवि चक्रवर्ती विशेषरूपेण मिथिलां प्रति अनुरागं स्वकीय विशाले महाकाव्ये प्रदर्शितवान सोऽनुरागः महत्त्वपूर्णः तथ्यात्मकश्च।**

अस्यां मिथिलायां नगरप्रसादे विविधाः ध्वजाः गगने व्याधूयमानाः सन्ति। तासां ध्वजानामान्दोलनं देवाङ्गनानृत्यतुल्य-मासीत्। ज्ञायते यत् साक्षात् धर्मस्वरूपाः इमे देवाङ्गना रूपाः ध्वजाः सीतारामयोः विवाहार्थं दौत्यकार्य कुर्वते। अत्र कविः विवाहे दौत्यकर्मणः प्रधानतां प्रदर्शयन् साक्षात् धर्ममेव दौत्येन नियोजितवान्।

अत्र अट्टालिकायां व्याधूयमानाः ध्वजाः सूर्यं परिवेष्टितवन्तः। तेन आकाशः क्षीरसमुद्रव्रत् जातः। आकाशे मेघस्य सम्पर्केण ध्वजाः जलेन क्लिन्नाः जाताः। किन्तु तस्मात् प्रासादात् निर्गतेभ्यः अगरु-चन्दन-धूपैः शुष्कतां प्राप्नुवन्ति। इमां विनोदमयीं शोभां विश्वा-मित्रेण सहितौ रामलक्ष्मणौ पश्यन्तौ विस्मयविमुग्धौ जातौ।

अत्राप्रतिमानिन्द्य सुन्दरी सीता विद्यते यस्याः सौन्दर्यस्य निर्माणं स्वयं कामदेवोऽपि अमृतमिश्रितरङ्गैः तूलिकया चित्रीकर्तुं न समर्थः। एवंभूता सीता यत्र तिष्ठति सा मिथिला सद्यः भगवत्याः लक्ष्म्याः पीठस्थानमिव विराजते शोभते च। अस्यां मिथिलायां सुदीर्घा, स्वच्छा, रत्नमणिमययुक्ता, सागर तुल्या वीथी वर्तते। कविः कल्पनां करोति यत् तमिल व्याकरण शास्त्रकारेण अगस्त्येन पीतः सागरः यदाशुष्कः जातः तदा सागरस्य रत्नानि अत्रैव

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समागतानि। एवं प्रकारेण अनेकाः रमणीयाः विविधसंगीतवाद्य-युक्ताः वीथ्यः विराजन्ते। तत्र च मार्गे यत्र तत्र नाटचशालाः दृश्यन्ते। तरुणी रमणी च दोलायां झूलनोत्सवं स्वीकुर्वन्ति। कुत्रापि अश्वानां धावनस्य दृश्यं, कुत्रापि मणिमय प्रासादस्य गवाक्षजालेन सुन्दरीणां मुखानि दृश्यन्ते। कुत्रापि नार्यः कन्दुक क्रीडां कुर्वन्ति। अथ च लघुवाप्यां तडागे च अनेकाः नार्यः स्नानं कुर्वन्ति स्म। तदा स्नानसमये तासां नारीणाम् आननं, नेत्रम्, अधरं, स्तनः केशाश्च तथा आकर्षकाः आसन् येषां परिदर्शनेन कोऽपि मुग्धो भवितुमर्हति। एवं भूतां शोभां विश्वामित्रसहितौ रामलक्ष्मणौ दृष्टवन्तौ। तत्र तासां पुष्पालङ्कृत सुदीर्घकेशान् विकीर्णान् अवलोक्य सर्वे पुनः पुनः पश्यन्तोऽपि न तुष्यन्ति।

सीतायाः अङ्ग प्रत्यङ्ग वर्णनक्रमे तस्याः अनुपमां शोभाम् उपमेतुं कविः न शक्नोति। अन्ततः सीता लक्ष्मीसदृशा इत्येव उक्त्वा संतोषं विदधाति। अनन्तरं अनन्यसाधारणा अचिन्त्यरूपगुणसमृद्धा सीता तत्र उत्थाय स्थिता आसीत्। श्रीरामचन्द्रस्य दृष्टिः तदुपरि गता, सीताऽपि रामं दृष्टवती उभौ परस्परं नेत्रजालेन समाकर्षितौ। यद्यपि क्षीरसागरे नारायण-लक्ष्मीरूपे अविनाशिनौ लक्ष्मीनारायणरूपौ इमौ आस्ताम्। परन्तु अत्र पृथक् पृथक् जन्म गृहीत्वा पुनर्मिलनार्थं मिथिलायां समुपस्थितौ इति विशेषता सञ्जाता।

एवं स्थितौ विश्वामित्रेण साकं रामः प्रतस्थे। सीता चित्र-लिखितमूर्तिवत् स्थिता। अत्र रामः सीतायाः मनःसंयमं निगृह्य गतवानिति कवेः कल्पना प्रेयसी श्रेयसी च। ततश्च सीता वियोगाक्रान्ता मलिना जाता। सीतायाः पुष्पशय्या च तस्याः मनस्तापेन मलिना शुष्का सं जाता। एतस्याः विस्तृतं विप्रलम्भ-काव्यश्रृङ्गारयुक्तं वर्णनं विद्यते।

ततो रामलक्ष्मणौ महर्षिणा सह जनकपुरीमागतवन्तौ। तत्र महर्षि-गौतमस्य अहल्यागर्भसंभूतस्तपस्वी शतानन्दः समुपस्थितः। स हि स्वमातुरुद्धारकथां विश्वामित्रमुखात् श्रुत्वा नितरामानन्दं संतोषं च प्राप्तवान्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ततश्च शतानन्देन विश्वामित्रस्य महत्तपसो विस्तारेण वर्णनं श्रीरामाय श्रावितम्। यत्र महर्षि वसिष्ठस्य कामधेनु सुरभेः (गोः) प्रतापस्य वर्णनं त्रिशंकोः स्वर्ग गमनागमनादि वर्णनमतिविपुलतया विद्यते। राज्ञोऽम्बरीषस्य यज्ञ वर्णनं तत्र शुनःशेपब्राह्मणपुत्रस्य यज्ञे बलि-वर्णनं विश्वामित्रद्वारा मन्त्रप्रदानेन शुनःशेपस्य प्राण- रक्षणादि-कथा च वाल्मीकिरामायणवदेवात्रापि विद्यते। (येषां वर्णनमत्र विस्तारभयेन त्यज्यते।)

तदनन्तरं ब्रह्म विष्णु महेश्वराः समागत्य ऊचुः। महर्षे विश्वामित्र! तव सदृशो वेदपारंगतो ऋषिस्तपस्वी नान्यो विद्यते। एवंरूपेण यद्यपि ब्रह्मादयस्तु विश्वामित्रस्य ब्रह्मर्षिरूपे मान्यतां स्वीकृतवन्तः किन्तु विश्वामित्रस्येयमिच्छा आसीत् यत् **ओंकार-वषट्कारादयो वेदाः माम् वृणीयुः तथा वसिष्ठश्च ब्रह्मर्षिरूपे मम मान्यतां मानयेत्। तदा तथैव तत्र जातम् वेदाश्च तं वृणीतवन्तः वसिष्ठश्च ब्रह्मर्षिरूपे विश्वामित्राय मान्यतां प्रददौ। अतएवास्य रामायणस्य ६८८ पद्येऽस्मिन् वेद पारंगत शब्दस्य प्रयोगो विश्वा-मित्रार्थं प्रयुक्तः।**

ततश्च रामचन्द्रो विश्वामित्रेण साकं मिथिला राजधान्यां जनकपुर्यां रात्रि विश्रामं चकार। एवं क्रमेण विरहावस्थायामेव रामो रात्रिसागरं तीर्तवान्। उषः काले सूर्यस्तं जागरयामास। रामश्चोत्थाय सर्वं नित्यकृत्यादिकं समाप्य विश्वामित्रं च नमस्कृत्य तेन सह जनकस्य यज्ञशालां गतवान्। यत्र विदेहो जनकः विराजतेस्म।

कुलमुरै किलत्तु पडलम् (वंशक्रमपरिचय पटलम्)

अस्मिन् पटले राज्ञो दशरथस्य राज्ञः जनकस्य च परस्परं वंशानुक्रम वर्णनं सविस्तरमस्ति। इयं च प्राचीना परम्परा यत्र **विवाहात्पूर्वमुभयोर्वंश परिचयो जायते।** विशेषतो मिथिलायामियं प्रक्रियाऽनिवार्या विद्यते। महर्षिवाल्मीकिना स्वकीय रामायणे सुविशदमस्य वंशानुक्रम परिचयस्य विवरणं प्रदत्तम्। (ग्रन्थस्यास्य प्रथमखण्डे मया स्पष्टीकृतमिदम्)।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अत्रापि कवि-कम्बन् महाभागस्तथैव वर्णनादिकं कृतवान्। नित्ययज्ञसमाप्त्यनन्तरं राजा जनकः राजसभायामागत्य रत्नजटित-सिंहासने समुपविष्टवान्। तत् पार्श्वे एव तपोधनो विश्वामित्रः रामलक्ष्मणौ उपविशन्तिस्म राज्ञा। जनकेन एतयोः कुमारयोः परिचयः पृष्टः। विश्वामित्रः तदा सूर्यवंशस्य राज्ञां महिमानं सुविशदं कथयितुमारेभे।

सूर्यवंशस्य प्रथमः पुत्रः वैवस्वतमनुं को न जानाति। तस्य वंशे प्रतापी राजा पृथुः जातः। तस्य वंशे महाप्रतापी तपःपूतः इक्ष्वाकुः सञ्जातः। अत्र वर्णने इयान् विशेषो यत् तमिलक्षेत्रे एवं विश्वासो वर्तते, यत् भगवतः श्रीरङ्गम्-नारायणस्य स्थानं त्रिचिनापल्ली नगर समीपं कावेरी नद्याः तटे विद्यते। अयमेवात्र इक्ष्वाकु कुल पूज्यः भगवान् श्रीरङ्गः नारायणः। एतत् क्षेत्रं वैष्णवानां परमधाम विद्यते। ततश्च राजा ककुस्त्थः जातः। ततश्च महानीतिज्ञः परमप्रतापी मान्धाता महीपतिः बभूव यस्य नाम को न जानाति। एतेषां वंशे एव एकस्य कपोतस्य प्राणरक्षार्थं महाराजः शिविः स्वमांसखण्डेन तुलादानं कृतवान्। अस्मिन्नेव सूर्यवंशे राजा भगीरथः महादेवस्य जटाजूटात् गंगां पृथिव्यामानयतिस्म या भागीरथीनाम्ना विख्याता जाता। तदनन्तरं महाराजः दिलीपः तस्य पुत्रः प्रतापी रघुः तत् पुत्रः अजः सञ्जातः अजस्य। पुत्रः प्रतापशाली सर्वगुणयुक्तः दशरथः बभूव। तस्य तिस्रः पत्न्यः कौशल्या-कैकेयी सुमित्रा च सञ्जाताः। दुर्भाग्यवशात् दशरथस्य न कोऽपि पुत्रः जातः।

चिन्तितः सन् दशरथः कुलगुरोः वसिष्ठस्य परामर्शेण प्रख्यातेन ऋषिणा ऋष्यश्रृङ्ग द्वारा पुत्रेष्टि नामकं यज्ञं कारितवान्। तस्य यज्ञस्य प्रभावेण अमृतमय क्षीरप्रसादभक्षणेन क्रमशः दशरथस्य तिस्रः भार्याः गर्भं धारितवत्यः। ततश्च कौशल्या गर्भात् रामचन्द्रः कैकेयी गर्भात् भरतः सुमित्रा गर्भात् लक्ष्मणः शत्रुघ्नश्च क्रमशः ज्येष्ठानु-क्रमेण सञ्जाताः।

तेषु एव अयं ज्येष्ठः रामचन्द्रः तथा सुमित्राज्येष्ठपुत्रः लक्ष्मणश्च अत्र विराजमानौ विद्यते। अयं हि रामचन्द्रः मार्गे ऋषिणा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यज्ञबाधकानां राक्षसी-राक्षस समूहानां वधं चकार। येषु ताडकासुबाहु-मारीचादय: प्रमुखा: सन्ति। अनेनैव रामेण स्वकीय-चरणधूलिभि: प्रस्तररूपे स्थिता 'अहल्या' समुद्धारिता।

इत्थं हि विश्वविख्याते मूर्धन्ये सूर्यवंशे सञ्जातोऽयं रामचन्द्र: भगवतो विष्णोरेव अवतार: इत्यपि सङ्केतितं जनकं प्रति विश्वामित्रेण। अस्मिन् रामायणे वंशपरिचय: धनुर्भङ्गपूर्वमेव वर्तते। किन्तु वाल्मीकिरामायणे धनुर्भङ्गानन्तरं वर्णितोऽस्ति। अत्र च जनकस्यवंशवर्णनं न दृश्यते। एतावान् भेद: कथायां विद्यते।

करमुहप् पडलम् (कार्मुक पटलम)

विश्वामित्र द्वारा रामचन्द्र पर्यन्तं सूर्यवंशस्य वर्णनं श्रुत्वा जनकेनोक्तम्। अहम् किं कथयेयम् मम धनुर्भङ्गसंकल्पस्तु प्राय: विफलो जात:। यथा भवद्भिरुच्यते तेन ज्ञायते यत् भवतां श्रीरामचन्द्र: धनुरुत्थापयितुं समर्थोभूत्वा मांचिन्ता सागरात् पारं कर्तुं क्षमो भवेत् तथा सीता सफलव्रता भवितुमर्हति।

तत्र सभायां राजाज्ञया मन्त्रिगण: उद्घोषयामास यत् य: परमेश्वरस्य शिवस्य इदं धनु: उत्थापयिष्यति तेनैव सह सीताया: विवाहो भविता। तत्र महाबलशालिन: षष्टि (६०) सहस्र वीरा: मिलित्वा येन केनापि प्रकारेण तद्धनु: आनीय सभायां समुपस्थापितवन्त:। **(अत्र वाल्मीकि: पञ्च सहस्र वीराणामेव उल्लेखं कृतवान्)**। धनु: दृष्ट्वा परस्परं जना: अब्रुवन् यत् साक्षात् सुदर्शन चक्रधारिणं विष्णुं विहाय न कोऽपि इमं कार्मुकम् उत्थापयितुं समर्थ:। न जाने सीताया विवाहस्य किं भविष्यति। केचित् कथयन्ति नेदं धनु: किन्तु स्वर्णमय मेरु पर्वत:। केचित् वदन्ति यत् कार्मुकोऽयं क्षीरसागरमन्थनपटु: सद्य: मन्दराचल पर्वत: वर्तते अथवा आकाशात् इन्द्रधनुरेव पतितम्। प्राय: अयं राजा जडमति: अस्ति यत् एवं प्रतिज्ञां कृतवान्। सीता मनसि किं भावयति इत्यपि शोचनीयम्। अनुमीयते यत् इदं विधेर्विधानं विद्यते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजा जनकः एकत्र धनुः विलोकयति अपरत्र च सीताम् अवलोकयति अर्थात् चिन्तामग्नः आसीत्। तद्दृष्ट्वा शतानन्दः अवादीत् यत् इदं धनुः शंभुः जनकस्य पूर्वजाय प्रददौ। यज्ञ कारणार्थं स्वर्णमणिमय मण्डित हलेन भूमिं कतिवारं कर्षयामास तत्रैव हलस्य सीतेन (फाल इति भाषायाम्) इयं कन्या प्रकटिता या महती कान्तिमयी साक्षात् पृथ्वीस्वरूपा आसीत्। यस्याः नाम सीता जाता (यतो हि **सीतेन हलस्य अग्रभागेन जाता या सा सीता इति विग्रहः।)**

अत्र समुपस्थिताः राजानः भ्रमरावृत्तकेशपाशधारिणीं सीतां दृष्ट्वा उन्मत्ता इव आसन्। कथमियं सुन्दरी मां प्राप्स्यति। किन्तु सर्वे तत्र विफलाः बभूवुः लज्जिताश्च जाता। तदनन्तरं विश्वामित्रस्य सङ्केतेन श्रीरामचन्द्रः तत्रोपस्थितः। सभासदः चिन्तामग्नाः तत्र दृष्टा जाताः ते चिन्तयन्ति यदि रामः धनुषः प्रत्यञ्चाम् संयोजयिष्यति तर्हि तु सीताया विवाह-संभवः तथा च तस्या यौवनं व्यर्थं न स्यात्। अन्यथा किं भवितेति भगवान् जानाति।

रामचन्द्रः सहसा अनायासेन शिव धनुः उत्थाप्य भङ्गं कृतवान्। आकाशात् पुष्पवृष्टिर्जाता। सर्वे आनन्द निमग्नाः बभूवुः। मध्ये च तत्र प्रासादे स्थिताः नारीणां समूहाः सुचिन्तिताः आसन्। यदि रामः, यः धनुरुत्थापने अन्तिमः वीरः अस्ति, असफलो भवेत् तर्हि कस्तूरी-कुङ्कुयुक्ता सुगन्धित सुदीर्घ-केशपाशवती सीता अग्नौ प्रविष्टा भविष्यति इति चिन्तायाः विषयः। किन्तु तदैव रामेण धनुर्भङ्गः कृतः। सर्वे आनन्द सागरे निमग्नाः जाताः। सर्वाः सुन्दर्यः नार्यः स्वकीय पतिम् उत्साहेन प्रसन्नतया च आलिङ्गितं चक्रुः। स्वर्गात् देवाङ्गनाः च धनुर्यज्ञं द्रष्टुकामाः मिथिलायां समागतवत्य आसन्। ताश्च रामस्य प्रशंसां कृत्वा निवर्तयामासुः।

एवंरूपेण धनुर्भङ्गः जातः। जनकेनोक्तम् हे महर्षे, तव पुत्रस्य (शिष्यस्य) विवाहः अद्यैव भवेत् इति मे इच्छा। तत्र किं करणीयमित्यादिशन्तु। विश्वामित्रेणोक्तम्, दूतान् प्रेषयतु अयोध्या नगरीं प्रति। शीघ्रमेव दशरथः आमन्त्र्यताम्। इदमेव सर्वप्रथमं करणीयम् जनकेन तथैव कृतम्। दूतांश्च अयोध्यां प्रेषितवान्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऐलच् ऐलुचिप् पडलम् (प्रस्थान पटलम्)

राजा जनकस्य दूताः वायुवेगेन रथमास्थाय अयोध्याम् आगतवन्तः। तत्र मृदङ्गवाद्यादि नादाः प्रतिध्वनिताः आसन्। राजद्वारे च दशरथ दर्शनार्थं समागतानां नृपाणां महती पङ्क्तिः आसीत्। अन्तः पुरं गत्वा तत्रत्य द्वारपालाः जनकपुरीतः समागतानां दूतानां सूचनां राज्ञे दशरथाय प्रदत्तवन्तः। त्वरितमेव तेषाम् अन्तः पुरप्रवेशार्थम् आदेशो जातः ते दूताः तत्रागत्य विधिवत् दशरथं प्रणेमुः संस्तुतिं च चक्रुः। ततः रामचन्द्र-सम्बन्धिनं सर्वं वृतान्तं विश्वामित्रेण सह अयोध्यातः प्रस्थानमारभ्य मिथिलागमनधनुर्भङ्ग वृत्तान्त पर्यन्तं नियेदयामासुः। जनक-द्वारा प्रेषितं निमन्त्रण पत्रं च समर्पितवन्तः। तं पत्रं तत्रोपस्थिताः सर्वे सभासदः क्रमशः पठितवन्तः। पठित्वा दशरथसहिताः सर्वे राजानः आनन्दातिरेके निमग्नाः सञ्जाताः।

तत्र दशरथेन स्वोदगारः प्रकटितः यत् तस्मिन् दिने उच्चैः रवः श्रवणं। किं सः ध्वनिः। अस्यैव धनुर्भङ्गस्य आसीत्? (इति मनसि कल्पना जाता)। इदं धनुः तु तदेव यत् दक्षयज्ञावसरे रूद्ररुपेण महादेवेन तेनैव धनुषा विजयः प्राप्तः। ततः महाराजेन आज्ञा प्रदत्ता यत् मम सर्वाः सेनाः, सर्वे मन्त्रिणः अधीनस्था सर्वे राजानश्च मिथिलां प्रचलन्तु। एतदाज्ञया यथायोग्यं सर्वे प्रचलिताः। अस्मिन् रामायणे विशेषरूपेण कौशल्या कैकेयी सुमित्राः तिस्रो मातरः सहस्रशः युवतयः नार्यः सुन्दर्यः किशोरिण्यश्च मिथिलां प्रति प्रस्थिताः इति नवीन-यात्रा वृत्तान्तं विद्यते। यद्वर्णनं वाल्मीकि रामायणादिप्रसिद्ध संस्कृत रामायणेषु न दृश्यते **(इयं च नवीना कथा शैली)**

दशरथस्य पार्षदाः सैनिकाश्च प्रचलन्ति स्म। यत्र नागरिक नारीणां च संख्या अधिका आसीत्। एतद्वर्णनक्रमे कम्बन् कविः अयोध्यायाः नारीणां यादृशं सौन्दर्यं वर्णनं शृङ्गाररस वर्णनं च कृतवान् तत् अद्वितीयम्। संक्षिप्तरूपेण तस्य कानिचित् उदाहरणानि दीयन्ते। गच्छन्तीनां रमणीनां स्तनद्वयेषु लिप्ताः कुंकुमकेसरादयः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गच्छतां पुरुषाणां भुजासंघर्षेण भूमौच्युताः। काश्चित् सम्भ्रान्त-कुलीनाः नार्यः शिविकायां गच्छन्ति स्म। तत्र तासां पुष्पावृत श्याममेघ-समानाः विशालाः केशराशयः तथा शोभन्ते स्म यथा आकाशे अगणिताः विमान-शृङ्खलाः स्युः। तासां मुखानि कमल-तुल्यानि आसन्। तासां केशपाशेषु भ्रमराः गुञ्जन्ति स्म। एका अति-सुन्दरी नारी आसीत् यस्याः विशालकेशाः नदी प्रवाह तुल्याः कुञ्चिताः आसन्। तस्याः अक्षि तीक्ष्णं सुदीर्घ नेत्रं तथा स्तनद्वयं पीनं च आसीत्। कटिस्तु तथाक्षीणा यथा अदृश्यमाना जाता। काश्चित् नार्यः गजोपरि काश्चित् च पदातिभिरेव। तासु सुवासित सुन्दर पुष्पैरलङ्कृतानां सुदीर्घ केशपाशानां भारैः अवनताः आसन्। तासां च सुदीर्घाः केशाः मायारूपाः दृश्यन्ते। याश्च जनान् आकर्षन्ति मायायां भ्रामयन्ति च। तासां वस्त्राणि च तथा सूक्ष्माणि सन्ति येन कारणेन सम्पूर्ण शरीरस्याङ्गप्रत्यङ्ग लक्ष्यते। तत्र मातृणां मध्ये अग्रे एकस्यां शिविकायां देवाङ्गनातुल्य-सुन्दरी कैकेयी अग्रे गच्छति स्म। तत्पश्चात् मध्ये शिविकायां सुमित्रा विद्यते, तत्पश्चात् चन्द्रोपमयाने रामचन्द्रस्य माता कौशल्या आसीत्। तासां पार्श्वे शतशः सुन्दर्यः स्त्रियः आसन् (अत्र कविः प्रथमे कनिष्ठ मातरं कैकेयीं मध्यमातरं सुमित्रां ततश्च अन्ते श्रेष्ठमातरं कौशल्यां क्रमशः प्रदर्शितवान् **अनुमीयते यत् पारिवारिक** स्नेह-सद्भाव-सौमनस्य कारणेन श्रीरामचन्द्रस्य माता कौशल्या एवं व्यतिक्रमं कृतवती। यतोहि श्रेष्ठानामेव अग्रे गमनं विहितमासीत्। तं विधिं परित्यज्य कौशल्या महतीम् उदारतां प्रदर्शितवती)।

अस्यां यात्रायां वेदज्ञाः ब्राह्मणाः अपि आसन्। तैः सह राजा दशरथः नित्यकर्मादिकं कृतवान्। सायंकाले सर्वैः परिगणैः सह 'चन्द्रशैल' नामक पार्वत्यक्षेत्रे रात्रि-विश्रामं चकार। **अत्रायं विशेषः वाल्मीकिरामायण-प्रभृतिषु संस्कृत-रामकाव्येषु चन्द्रशैलस्य पृथक् अस्तित्वं कुत्राऽपि न दृश्यते। इदं तु कम्बन् कवेः स्वकीया मधुमयी कल्पना काव्यप्रतिभा च विद्यते। इतः परं अग्रे क्रमशः चतुर्षु पटलेषु शैलदर्शनपटले च केवलं पुष्पचयनपटले जलक्रीडापटले पानक्रीडा-पटले च केवलं** सौन्दर्यशोभायाः शृङ्गारस्य प्रगाढं वर्णनं विद्यते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एतेन निश्चीयते यत् अयं कविचूड़ामणि: कथं सौन्दर्यप्रिय: शृङ्गारस्य वर्णन निपुणश्चसीत् । अत एव **एतेषां चतुर्णां पटलानाम् अत्र एकत्रैव किञ्चित् संक्षिप्तवर्णनं विधाय स्वागतपटले गमिष्यामि ।** यत: आरभ्य जनकद्वारा दशरथस्य स्वागतादि वर्णनं विद्यते ।

अत्र अश्वा: गजा: अन्ये वाहनादयश्च अयोध्यात: समागतवन्त: । तेषां सुरक्षार्थं नियतदासा: संलग्ना: सन्ति । नार्यश्च स्फटिक-शिलातलसमीपे सरोवरे स्नानं कुर्वन्त्य: अतिशयां शोभां विदधति तत्र तासां अङ्गानि सुदीर्घकुन्तलानि च महदाकर्षकाणि दृश्यन्ते । रात्रौ च ता: नायिका: मल्लिकापुष्पमालां विहाय चमेलीपुष्पमालां धारयन्ति प्रात:काले च नित्यकर्मादिकं कृत्वा सम्राट् दशरथ: प्रस्थानार्थं समुद्यत: जात: । तत्र उद्याने नायिका: विविधपुष्पशाखां पश्यन्त्य: पुष्पाणि चिन्वन्त्य: क्रमश: मिथिलां प्रति प्रस्थितवत्य: ।

तत्रैव एकस्मिन् महति सुन्दरे सरोवरे ता: नायिका: जलक्रीड़ां प्रारब्धवत्य: । स्वकीयपतिभि: साकं ता: विविधक्रीडायुक्ता: अर्द्धवस्त्रा:—निर्वस्त्राश्च जलक्रीडायां संलग्ना: आसन् । **यत्र तासां केशपाशै: मधुयुक्ता: पुष्पमाला: विकीर्णा: जाता: । केशपाशेषु च भ्रमर.: गुञ्जन्तिस्म । तासां केशपाशाश्च वर्षादायिका: मेघघटा-तुल्या: दृश्यन्ते ।**

अनन्तरं च ता: सर्वा: सुरापाने निमग्ना: सुरांपीत्वा **सुवासित-सुदीर्घकेशजालवत्य: सुन्दर्य:** पुष्पशय्यायां स्वपतिभि: सह रति-क्रीडायां निमग्ना: जाता: । एवं क्रमेण इमे दशरथस्य अनुगमनं क्रमश: आनन्दोल्लासेन कुर्वन्त: मिथिलां समागतवन्त: । **इयमेव अति-संक्षिप्ता सरसरथा पूर्वोक्त चतुर्षु पटलेषु विद्यते (पारलौकिक-लौकिकवर्णननिपुणस्य कवे: चमत्कारं ग्रन्थस्य अन्ते मया प्रकाश-यिष्यते ।)**

उलावियर् पडलम् (वीथीभ्रमणपटलम्)

अस्मिन् पटले रामचन्द्र: यदा मिथिलानगर्या: वीथ्यां समागत-वान् तदा तत्रत्यनायिकानां विचित्रसौन्दर्यस्य मनोदशायाश्च

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यया रीत्या चमत्कारि मनोहारि च वर्णनं कृतं कम्बन् कविना तत् यथार्थतः साहित्यिक संयोगवियोगमयश्रृङ्गाररसवर्णनेन साकंम् आध्यात्मिक रहस्य पूर्ण च विराजते।

तमिलभाषायां स्त्रीणां **वयोनुसारेण सप्तवर्गेषु वर्गीकृतानि नामानि दृश्यन्ते। (१) पेतैः–सप्तवर्षीया। (२) पदुमवैः–एकादशवर्षीया। (३) मङ्गै–त्रयोदशवर्षीया। (४) मडन्डैः–एकोनविंशतिवर्षीया। (५) अरिवैः–पञ्चविंशतिवर्षीया। (६) तरिवै–षड्विंशति वर्षतः त्रिशत्वर्षीयापर्यन्तं। (७) पेरिलम्ङ्डौः–चत्वारिंशत्वर्षीया।**

अत्र मिथिलानगर्यां उपर्युक्त सर्वासाम् अवस्थानां नार्यः तत्रागत्य रामचन्द्रस्य शोभां पश्यन्तिस्म। इमाः नार्यः मिथिलायाः श्रृङ्गाररूपाः विद्यन्ते। एताः नार्यः स्वकीयां चेतनां परित्यज्य तथा धावन्त्यः तत्र समुपस्थिताः येन तस्याः केशपाशाः विकीर्णाः जाताः। तेभ्यः मधुयुक्तानि सुगन्धितपुष्पाणि विगलितानि मेखला भग्ना जाताः। अतिपारदर्शीनि पट्टवस्त्राणि अपि शरीरतः अधःपतितानि। श्रीरामचन्द्रस्य हस्तपादौ द्वावपि महत्त्वपूर्णौ विद्येते, यतोहिअहल्यायाः उद्धारकारणेन चरणौ वन्दनीयौ तथा शिवधनुःभङ्गकारणेन उभौहस्तौ दर्शनीयौ महत्त्वपूर्णौ।

अत्र वीथ्यां निर्निमेषदृष्ट्या नार्यः श्रीरामचन्द्रे तन्मयीभूताः जाता। **तमिलभाषायाः "कण्णन" शब्दः महत्त्वपूर्णः यस्यार्थोभवति यत् यः सर्वस्य नेत्रं वर्तते** अथवा **यस्य नेत्रे सर्वं वर्तते।** आसां नारीणां नेत्रे रामचन्द्रः प्रविष्टः। अतएव सर्वासां नेत्रम् अभूत्। ताश्च नार्यः रामचन्द्रस्य नेत्रे प्रविष्टवत्यः। अतएव इमाः अपि रामचन्द्रस्य नेत्ररूपाः जाताः। अनेन **"कण्णन्" शब्दस्य प्रयोगः महत्त्वपूर्णः।** तीव्रगत्या रामचन्द्रस्य रथः मिथिला-वीथ्यां गच्छन् आसीत् सीता तं क्षणमात्रमेव दृष्ट्वा स्वकीय नेत्रे प्रविष्टं तं रामचन्द्रचौरं पलककपाटं पिधाय धृतवती। (इदमपि वर्णनं अतिशोभनं यथा चौरं धृत्वा स्वकीय गृहे कपाटं पिधाय वध्नाति तथैव सर्वासां मनसः चौरं रामचन्द्रं स्वकीय नेत्रद्वारा हृदये प्रविष्टं चौरं पलककपाटपिधानेन बन्धने कृतवती। पद्य सं० ११४५-११४६।)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

काचित् नारी रामचन्द्रस्य रथमग्रे गतमवलोक्य तत्पश्चात् धावितवती येन तस्याः वस्त्रालङ्कारिकं परिभ्रष्टम्। तस्य ज्ञानमपि न जातम्। काचित् पृष्ठभागं स्थित्वैव रामचन्द्रं द्रष्टुकामा न द्रष्टुं समर्थाऽभूत् यतोहि **अन्यासां नारीणां सुदीर्घकेशाः पीनस्तननितम्बाद-यश्चावरोधकाः बभूवुः**। अस्यां वीथ्यां न किमपि स्थानं रिक्तमस्ति, सर्वत्र नारीणां विशृङ्खलिताः मेखलाः कङ्कणादयः केशपाशात् च्युत-पुष्पमालाश्च विकीर्णाः व्याप्ताः दृश्यन्ते।

अस्मिन् संसारे ये च प्रसिद्धा धर्मपन्थानो विद्यन्ते तेषु स्वस्व-मतानुसारमेव परमेश्वरस्य कल्पनां कुर्वन्तः उपासनां कुरूते सिद्धिं च लभन्ते। अन्तत्य नारीणां मध्ये काऽपि रामस्य हस्तमेव दृष्टवती काऽपि पदमेव काऽपि चरणमेव एवं रूपेण या यमेवाङ्गं दृष्टवती तत्रैव लीना जाता। सम्पूर्णरूपं न कयाऽपि दृष्टया (**तात्पर्यमिदं यत् रामस्य प्रत्यङ्गं सुन्दरं ब्रह्मरूपमेवासीत् तत्र तत्र सा सा लीना जाता। तस्यैव तुलना पद्येऽस्मिन् विद्यते-पद्य ११५८।**) काऽपि एकाकिनी एव गच्छति, काचित् सखीभिः सह, काचित् पतिभिः सह। एताः सर्वाः सर्वथाऽतितमां शोभामादधानाः वीथ्यां स्थिता श्चालिताश्चासन्।

यदा एवंभूताः व्याकुलाः यत्र नार्य आसन् तदैव रामचन्द्रः सभा-मण्डपमुपस्थितः। यत्र त्रिकालज्ञः वसिष्ठः वेदशास्त्र-पारंगतः विश्वामित्रश्चासीत्। धर्मसंस्थापनार्थं साधूनां रक्षणार्थं चायोध्याया-मवतरितो रामचन्द्रस्तत्रागत्य वसिष्ठं विश्वामित्रं च दण्डवत् नमाम। उभावाशीर्वादं प्रदत्तवन्तौ। तयोराज्ञया चासने समुपविष्टो रामः। तत्र महिमामण्डितो दशरथश्चोपस्थितः। सोऽपि मुनिश्रेष्ठं वसिष्ठं तपोधनं विश्वामित्रं च प्रणेमे। तत्र वेदज्ञाः विप्राः वेदमन्त्रै-राशीर्वादं ददौ पुष्प वृष्टयश्च जाताः।

अस्यां सभायां गङ्ग, कोङ्ग, कलिङ्ग, तेलगु, सिंह, चेर, पाण्डिप, अङ्ग, वङ्ग, अवन्ति, मालव, चोल, महाराष्ट्र, मागध, लाट, विदर्भ, सिन्ध, प्रभृति देशानां नरेशाः समुपस्थिताः आसन्। तेषां स्वकीय परम्परानुसारं शोभा सज्जा चाभूतपूर्वा दृश्यतेस्म।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तत्रैकच्छत्रः दशरथो विराजतेस्म। जनकश्च महता व्यग्रेनोत्साहेन विनयेन च सर्वेषां सत्कारं चकार।

कोलङ्गाण पटलम् (शृङ्गारसज्जा पटलम्)

अस्मिन् पटले विवाहार्थं सीतायाः शृङ्गारसज्जाया मुख्यतमं सुमधुरं मनोहारि वर्णनमस्ति। शृङ्गारेऽस्मिन् **मिथिलापरम्परा-सहितं विशेषतः तमिल-परम्परया शृङ्गारवर्णनं दृश्यते।**

सभामण्डपे स्थितः राजा जनकः स्वपुत्रीं सीतामानयनार्थमादि-देश तत्रोपस्थितां चेटीं सखीं ताश्च दास्यः सख्यश्चान्तपुरं प्रविश्य सीतायाः शृङ्गारमारब्धवत्यः। तत्राङ्ग प्रत्यङ्गे यथायोग्यं यथा-स्थानं चाभूषणपुष्पचन्दन-लाक्षासुगन्धादि विन्यासविवरणमतिविस्तृतं वर्तते। तत्र संक्षिप्त रूपेणैवात्र प्रमुखश्रृङ्गारस्य चर्चा क्रियते।

सर्वप्रथमं केशविन्यासस्य वर्णनमेवं विद्यते। पञ्चप्रकारेण केशविन्यासो विधीयते। मस्तकपृष्ठभागे जूटिका (जूड़ा), कुण्डलिनी (जूटीबंध), वेणी (एकजूटीबंधीकम्लीवेणी), कुञ्चिता (घुंघराला जूड़ा) तथा विकीर्ण केशपाशा (खुले बाल)। तथा च मस्तकाग्रभागे पट्टिका (पाटी), पत्रिका (पत्तीदारकेश), मध्यसीमन्तः (बीच में सीथ), वामसीमन्तः (बायें सीथ), दक्षिण सीमन्तः (दायां सीथ) इति च। सीतायाश्च विशालाः केशपाशाः सन्ति। तेषु सर्वप्रकारकं केश-विन्यासं भवितुमर्हति। तत्र यथायोग्यं समयानुकूलं सर्वविधं केश-विन्यासं कृतवती सा चेटी-सखी। **(पद्य १२०५)**

एवं च अक्षिषु कज्जलं स्तनेऽङ्गरागः चन्दनादिकं, ललाटे विन्दुः, कटिप्रदेशे मेखलां कर्णे स्वर्णमयपुष्पस्य कर्णपुष्पम्, नासिकायां रत्नजटितं नासाभरणं, कण्ठे च मणिमयमुक्ताहाराः भुजायां स्वर्ण-मण्डिताः केयूराः पादे किंकिण्यः हस्तपादनखेषु नखरङ्गरसः, पादयोः लाक्षारसादयश्च यथायोग्यमत्याकर्षकरूपेण विन्यस्ताः ताः शृङ्गारविशेषज्ञाः दूत्यः। सर्वत्र केशादारभ्य यथास्थानं विविध-सुगन्धयुक्तं पुष्पं माल्यादिकं च विन्यस्तम्। एवं सुसज्जितां स्वयंभूतां शक्तिस्वरूपां सीतामवलोक्य सर्वाः नायिकाः विस्मयविमुग्धाः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वभूवुः । तथाभूतां सीतां सभामण्डपे समागतां दृष्ट्वा दशरथः नितरां मुदमाप्तवान् । समुपस्थिताः सर्वेः चकित-चकिताश्च जाताः । सा सीता तत्र साक्षादाद्या-भगवतीरूपा दृष्टा जाता ।

तदा चक्रवर्ती सम्राट् दशरथः विश्वामित्रं पप्रच्छ । विवाहस्य शुभलग्नः समयश्च कः ? विश्वामित्रेणोक्तम्-विवाहस्य शुभदिनं श्वः विद्यते । तच्छ्रुत्वा सर्वेऽद्य स्वस्व वासस्थानं ययुः ।

कडिमणप् पडलम् (शुभविवाह पटलम्)

राजा जनकः यथायोग्यं सर्वेषामतिथीनां सत्कारं कृतवान् । समुपस्थिताः नृपाः चिन्तयन्ति स्म—"सशरीरा एव स्वर्गमागतवन्तः" । अत्र सीतारामयोरेकरात्रियापनं महत्कठिनतमं जातम् । उभयोर्मनसि महती या समुत्कण्ठा समुदिता तया तावुभौ वेदनायुक्तावास्ताम् । तौ च रात्रौ निद्रां न लेभाते । विभिन्न सरसकल्पनायामेव रात्रिर्गता । अरुणोदय बेला समागता ।

मिथिलावासिनः सर्वत्र मार्गे वीथ्यां चन्दनागरु सुगन्धीनि प्रक्षिपन्ति पुष्पाणि च विकरन्ति जलानि सिञ्चन्ति । प्रासादाग्रभागे विभिन्न रत्नजटितमालाः विलम्बिताः सन्ति । तात्पर्यमिदं यत्तत्र नर नार्यः विभिन्नकार्येषु संलग्नाः तिष्ठन्ति । सर्वे चारणादयः विविधगीतवाद्यादिकं कुर्वते ।

तत्र च चतुषष्टि (६४) कलायां निपुणाः वेश्याः विभिन्न देशस्थाः । लोकाश्चागत्याज्ञां याचन्ते यथचितकार्यार्थम् । केचित् विभिन्नवाद्यं वादयन्ति केचिन्नृत्यन्ति । हसन्ति परस्परं युद्ध कौतुकं प्रदर्शयन्ति । तत्र विशाले विवाहमण्डपे रत्नजटिलविविधवितानादिकं शोभतेस्म । दशरथः प्रथममत्रागतः स्वर्णनिर्मिते विशिष्टसिंहासने चोपविष्टः । सबन्धुवान्धवः राजाजनकश्चासने समुपविष्टवान् । तत्र हि नरनारीणां समूहः पूर्वत एवासीत् स्वर्गलोकवासिनः देवलोकवासिनश्च सीतारामयोर्विवाहदर्शनार्थमागतवन्तः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विवाहवेद्यां वेदोक्त गङ्गाजलं पवित्रनदीनां जलं, शङ्ख पुष्पादिकं चानीतम् । वेदज्ञाः महान्तो मनीषिणः समुपस्थिताः बभूवुः रामेण च वैवाहिकं पवित्रं मुकुटं धारयामास। स्वकीय वंश परम्परानुसारं परमज्योतिरूपं श्रीरङ्गनाथदेवं पूजितवान् **(पूर्वमेव प्रतिपादितमस्ति यदयं श्रीरङ्गनाथदेवः तमिलक्षेत्रस्य सुपूजितो विष्णुतुल्यः) रामश्च 'किं पुरी' नामकमाभरणं धृतवान् । इदमाभरणं विवाहकाले परिधान परम्परा "तमिल क्षेत्रे" विद्यते ।** सीता च तत्रानीता ।

गुरुः वसिष्ठः बालुका निर्मित स्थण्डिले कुशदर्भान् विकीर्य पुष्पांश्च प्रसार्य विधिवत् अग्निस्थापनं चकार। **इयं परम्परा मिथिलायामद्याप्यनिवार्यरूपेण विद्यते)** वेदमन्त्र द्वारा हवनं चकार।

तदा राजा जनकः रामचन्द्रसमीपमागत्य रामस्य हस्तकमले जलं दत्वा विधिवत् सीतां ददौ। सर्वत्र मङ्गलवाद्यानि गीतानि गायन्ति सुवासिन्यः। सधवा नार्यश्च **'जीव' नामक गीतं गायन्ति स्म । इयमपि परम्परा मिथिलायां वर्तते)** संकोचशीला सीता रामेण सहाग्नि परिक्रमां कृतवती । अनुभूयतेऽत्र लोकैः यत् **"सीता रामयोर्विवाहः जीवात्मनो संयोगरूप एव ।"**

अन्ये च विवाहविधयस्तत्र सुसम्पन्नाः जाताः। सीतया सह रामः स्वगृहे (विवाहोपरान्तं सुसज्जितभवने—कोबरगृहे) समागतवान् । तदा प्रथमं कौसल्यां कैकेयीं सुमित्रां च प्रणामं कृतवान् । सीता च तथैवानुगम्यमाना कृतवती । मातरश्चाभूतपूर्वा लौकिकानन्दहर्षपूर्णाः समभूवन् । अशेषाशीर्वचनं च प्रददुः। चतुर्दिनपर्यन्तं विवाहविधयः संजायन्तेस्म । यतो हि मिथिलायां चतुर्थीकर्मपर्यन्तं **(विवाहस्य चतुर्थदिनपर्यन्तं)** विवाहश्रृङ्खला वर्तते एव **(अत्रापि कविः मिथिलारीतिमेव वर्णितवान् ।)**

ततश्च जनकस्यैकाऽपरा दुहिता उर्मिला आसीत् तया सह लक्ष्मणस्य, स्वकीयानुजस्य कुशध्वजस्य द्वे कन्ये—माण्डवी, श्रुतिकीर्तिश्च विद्येते तयोः साकं क्रमशः शत्रुघ्नस्य भरतस्य च विवाहः विधिवत् दशरथस्य गुरुवसिष्ठस्य पूर्वाज्ञया सुसम्पन्नो जातः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इत्थं हि चत्वारो भ्रातरः—राम-भरत-लक्ष्मण-शत्रुघ्नाः—क्रमशः सीता-माण्डवी-उर्मिला-श्रुतिकीर्त्तिभिः साकमत्रैव विवाहिताः वभूवुः। इति सर्वं चमत्कारपूर्णम्। राजा दशरथः सविशेषं दानं ददौ। जनकश्च पूर्वमेव दानं कृतवान् इत्थं च विवाह विधिसम्पन्नानन्तरं कियद्दिनानिपर्यन्तं दशरथः मिथिलायामेव तस्थौ। जनकेन साकं च धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, राजनीति, शास्त्रादिकस्य चर्चा च प्रतिदिनमानन्दनिमग्नं कृतवती।

अत्र विशेषः—विवाहोपरान्तं वरः कियन्ति दिनानि श्वसुरालये तिष्ठति। इयं व्यवस्था परम्पराप्रथाऽद्यापि मिथिलायां प्रतिगृहमास्ते वरस्य पिता च द्वि-त्रिदिनपर्यन्तं तिष्ठति। इमां परम्परामधिश्रित्य एव तमिल क्षेत्रीयः कम्वन् कविरत्र मिथिला—प्रकरणे प्रारम्भत एव सर्वक्रियाकलापवर्णनं मिथिलानुसारं व्यदधात्। इति अतिशयेन महत्त्वपूर्णं कविकर्म विधाय कम्वन्ः निष्पक्षतथ्यपूर्णघटना वर्णयन्-कविमूर्धन्यो वभूव।

परशुराम्प् पडलम् (परशुराम पटलम्)

अस्मिन् संक्षिप्त पटले विवाहोपरान्तं विश्वामित्रस्य हिमालयन् क्षेत्रगमनवर्णनं, पुत्रैः पुत्रवधूभिः समेतदशरथस्य अयोध्याप्रस्थान-वर्णनं, मार्गे क्रोधातुरस्य परशुरामस्यागमनवर्णनं, रामद्वारा तस्य पराजयवर्णनं, परशुरामस्य सौजन्य वर्णनं च विद्योतन्ते।

तत्र मिथिलायां रामः सीतया सह नानाविधोपभोगान् कुर्वन्नास्ते। तदा तपोधनो विश्वामित्रः रामाय अक्षयवेदविहित-नीतेरुपदेशं प्रदाय (स्वकार्य सम्पन्नतामवगम्य) यथायोग्यमाशीर्वचनं दत्त्वा हिमालयं प्रत्युत्तरस्यां दिशि प्रतस्थे।

ततश्च दशरथोऽपि प्रस्थानस्याज्ञां प्रदाय रथमारुरोह। प्रस्थान-वार्ता श्रुत्वा मिथिलावासिनो नरनार्यः विदीर्णाः संजाताः। जनकस्तु विदीर्णः विकलश्चासीदेव। यथायोग्यमभूतपूर्वं सत्कारं विधाय प्रस्थानं कारितवान्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मार्गे महान् प्रचण्डतेजस्वी क्रोधमूर्तिः परशुरामः सहसा समुपस्थितः। तं दृष्ट्वा दशरथः कम्पायमास। किं करिष्यति किं कथयिष्यत्ययं सहज कोपोऽयं परशुधारी इति चिन्तामापतितः दशरथः परशुराम समीपमागत्य संस्तुतिं चकार। किन्तु तस्य क्रोधो न शान्तो जातः।

परशुरामः रामचन्द्रसमीपमागत्योवाच। यद् धनुः त्वया त्रोटितं तत्तु पूर्वत एव त्रुटितमासीत् इत्यहं जाने। मद्भुजायामधुना युद्ध कण्डू समुद्गता। अतएवागतोऽहम्। इदं श्रुत्वा दशरथः व्याकुलो जातः। पुनः प्रार्थितवान् हे प्रभो मह्यं प्राणदानं करोतु रामाय क्षमादानं विधाय। किन्तु परशुरामः न स्वीकृतवान्।

रामं चोक्तवान् यदि सामर्थ्यशक्तिर्विद्यते तर्हि गृहाणेदं धनुः तथा प्रत्यंचासन्धानं कुरु। यदि त्वमेवं करिष्यसि तर्हि युद्धस्य चर्चामहं त्यक्ष्यामि। **(पद्य सं १३७०)**। रामश्च मन्दं मन्दं हसन् धनुषि प्रत्यञ्चामाधाय शरं विनियोजयामास। रामेणोक्तं च भवन्तस्तु असंख्य राज्ञां वधं कृत्वाऽपराधिनः सन्ति किन्तु जमदग्नि-पुत्रस्तपोव्रती भवान् अतएव बाणेनानेन भवत्प्राणहरणं नोचितम्। लक्ष्यमिदममोघमस्ति कथयन्तु भवन्तः किं कुर्याम्?

परशुरामोऽवदत् नीतिस्वरूपराम! मह्यं न क्रुध्यतु मया ज्ञातं यत् भवान् सर्वलोकेश्वरः परब्रह्मरूपः वेदाधारः। शिवधनुर्भङ्गस्तु उचितएवासीत्। इदं शरसन्धानमव्यर्थमत एव मम तपोबलं नीत्वा परावर्तयतु बाणम्। रामस्तथैव विधाय परावर्तितवान् स्वबाणम्। परशुरामश्च स्तुतिं चकार। सर्वस्वं निजतपः परित्यज्य गते परशुरामे रामः पितरं निकषा समागतवान्। (अत्रत्या कथा वाल्मीकि-रामायणवदेव। ततश्च सर्वेऽयोध्या समीपमागतवन्तः)।

॥ इति बालकाण्डम् ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अयोध्याकाण्डम्

अस्मिन् काण्डे प्रार्थना पद्यातिरिक्त त्रयोदश (१३) पटलानि सन्ति। प्रतिपटलं बालकाण्डवत् विभिन्नघटनावर्णनपूर्णं विद्यते। घटना चक्रस्तु बाल्मीकि रामायणवदेव प्रायः सर्वत्र दृश्यते। यत्र तत्र च महत्परिवर्तनमपि अवलोक्यते। तेषामुल्लेखस्तत्र तत्र कथा-प्रसंगे करिष्यते।

यथा यथाऽस्य विशालरामायणसागरस्यान्तःस्तले प्रविशामि तथा तथा नूतनाऽभिनयशैल्यां कथां प्राप्नोमि। काव्य रस सिद्धान्त परिपाके तु संस्कृतं विहाय भारतीय वाङ्मय काव्येषु सिद्धहस्तोऽद्वितीयोऽयं कविचक्रवर्ती नात्र काचिद् विचिकित्सा न वा किमपि-वैमत्यम्।

मङ्गलाचरणम्

कैकेय्याः कठोर निर्णयेन राज्यं परित्यज्य वनं गतो रामः देवादीनां ऋषीणां च संकटान् दूरीकृतवान् सोऽस्मान् पातु यं च रामं ज्ञानिनः पञ्चभूत निर्मितेऽस्मिन् देहे देहीति (आत्मा) शब्देन व्यवहरन्ति। स एवान्तर्वाह्योभयत्र स्थितः आत्मतत्त्वरूपः।

मन्दिरप् पडलम् (मन्त्रणा पटलम्)

राम भरत लक्ष्मण शत्रुघ्नानां विवाहोपरान्तं मिथिलातः पुत्रवधूभिः साकं परावर्तितो दशरथः सानन्दः राज्य शासनं कुर्वन्नास्ते। बालकाण्डस्यान्तिमपद्येषु दशरथेन भरतः स्वमातामहेन कैकेयेन सह मातुर्जन्मभूमि (ननिहाल) गमनार्थमादिष्टः। भरतस्तत एव केकय देशं प्रति प्रस्थितः। (**अत्रेयं नूतना कथा। बाल्मीकिरामायणे भरतः अयोध्यामागत्य कियद्दिनानन्तरं पितुराज्ञया मातामहनिकेतनं गतवान् एवं रूपेण कथाऽस्ति।**)

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एकदा राजा दशरथः स्वकर्णमूले द्वौश्वेतकेशौ दृष्टवान्। तेन चिन्तितं यद् वार्धक्यं समागतं पुत्राय राज्यं प्रदाय वनं गत्वा तपसः समयः समुपस्थित.। **अत्रेयं कल्पना क्रियते यत् रावणस्य पापमेव श्वेतकेशरूपेण दशरथ-कर्ण समीपे समुद्गतं येनाग्रिम घटना भविता।**

दशरथो मन्त्रणागृहमागतः। सो हि अमात्यादीनागमनार्थमादिष्टवान्। सर्वप्रथमं वसिष्ठः समागतः। ततश्चान्ये पार्षदाश्च समुपस्थितवन्तः। शास्त्रज्ञाः नीतिज्ञाश्च समागताः। एतेहि राज्ञां शासकानां नायकानां वा कथं हितमेव भवेत् तदेव ब्रुवन्ति। एते च अष्ट सहस्र (८०००) संख्याकाः आसन्। तेषामग्रे दशरथोऽवादीत्।

षष्ठि सहस्र वर्ष पर्यन्तं मया राज्यं शासितम्। इदानी वार्धक्यमागतम्। यथा मम पूर्वजाः कामक्रोध लोभ मोहादिकं विस्मृत्य पुत्राय राज्यं प्रदाय वने निवसन्तः तपश्चर्यां कुर्वन्तिस्म तथैवाहमपि कर्तुमीहे। मानव जीवनस्य गरिमा तु मुक्ति प्राप्तिरेवास्ति। मम मनस्तु तत्रैव गतमस्ति। अहं तु चिरकाल पर्यन्तमपुत्रत्वेन चिन्तित आसम्। सा चिन्ता रामेण स्वजन्मना दुरीकृता।

श्रीरामस्तु पुरुषोत्तमावतार एव। सीता च सद्यः लक्ष्मीरूपा तया सह तु विवाहो जातः, तेन रामः लक्ष्मीपतिरप्यभूत्। अधुना चाहं तं भूदेवीपति रूपेणापि द्रष्टुकामोऽस्मि। भगवतो विष्णोः पत्नीद्वयमस्ति श्रीदेवी भूदेवी च। तथैव श्रीदेवीतु समागता भूदेवी च स्वानुरूपं पतिरूपं रामचन्द्रं प्राप्नोतु इयं मे वलवती कामना। (मनोहारिणी कल्पनाऽत्र)।

इदं श्रुत्वा मन्त्रिणः सुप्रसन्नाः जाताः। दशरथस्य वियोगं विस्मृत्य तस्य कल्याणार्थं राष्ट्र कल्याणार्थं च रामाय राज्यदानं सर्वथा शोभनं वरं च। तदा वसिष्ठ उवाच। राम-सदृशं पुत्रमवाप्य भवान् महान् भाग्यशाली महिमामण्डितोऽस्ति। भवतोऽयं श्रेयान् प्रेयांश्च विचारः सर्वथा लोक-कल्याणकारी वर्तते। अयं हि रामः परात्परः परमेश्वरोऽस्ति। ब्रह्मविष्णु महेश्वराः मिलित्वा यत्कर्तुं शक्नुवन्ति तदेकाकी रामः स्वयं कर्तुं शक्ष्यति। इत्थं हि श्रीदेवी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भूदेवी उभे दैव्यौ रामं पतिमेव मन्येते। अतएव सर्वथा श्लाघ्यः शीघ्रकरणीयोऽयं विचारः।

दशरथः तत् श्रुत्वा चरमानन्दं प्राप्य यथा रामजन्मसमये शिवधनुर्भङ्गघटनायां परशुरामगर्वहरणसमये च हर्षातिरेकं प्राप्तवान् ततोऽप्यधिकः संतोषः अभूत्। वसिष्ठं पुनः पुनः प्रणम्य उवाच दशरथः यत् भवतां सदुपदेशेनैव मम पूर्वजाः विविध यज्ञं सम्पाद्य महान्तः यशस्विनः बभूवुः तथा मोक्ष योग्याः च जाताः। तदा महामन्त्री सुमन्त्रः तत्रोपस्थितः सन् बद्धाञ्जलिरुवाच। राजन्! प्रथमं वेदोक्तरीत्या नीलमणि वर्णं वरिष्ठं ज्ञानिनं पुत्रं राज्ये प्रतिष्ठापयितुं तदनन्तरं तपस्याकरणार्थं वनगमनविचारो विधेयः। अधुना वनगमनचर्चा न सामयिकी। राजा विचारमेनं स्वीकृतवान्। ततः सुमन्त्रः रामचन्द्रं निकषागतः तथा रामं नमस्कृत्य राज्ञः सन्देशं श्रावितवान्। पितुराज्ञया रामः त्वरितो रथमारुह्य प्रस्थितः।

रामस्य प्रस्थानकाले पुनः पुनः अयोध्या मार्गाणि वीथयः अतिशयेन शोभायुक्ताः सञ्जाताः रामचन्द्रस्य शोभां द्रष्टुं नरनार्यः स्व स्व गृहात् निर्गत्य वहिः निर्गता। स्त्रियश्च तथा धाविता यथा गावः वत्सं दृष्ट्वा धावन्ति। एवं हि रामचन्द्रः पितरं निकषा समुपस्थाय प्रथमं गुरु वसिष्ठं ततश्च पितरं ननाम।

रामचन्द्रं दृष्ट्वा अशेष वात्सल्येन दशरथ ब्रूते। हे पुत्र, वार्धक्यं मम शरीरे समागतमस्ति शरीरं जर्जरं जातम् अतः मम साहाय्यं कुरु सा मम कुले पूर्वजाः अस्याः विशाल भूमेः शासनं पुत्राय समर्प्य अन्तिम समये काम क्रोध मोह स्वरूपं शत्रुं विजित्य मुक्तिम् अधिगतवन्तः मया च आजीवनं शुभकर्माणि कृतानि कठिनतया यज्ञाः कृताः तेषामेव परिणामेन तवसदृशं पुत्रं प्राप्तवानहम्। अतएव जीवनयात्रायाः चरमचरणे मदीया वलवती कामना विद्यते, यत् राज्य शासनस्य दुर्वहभारं त्वयि निक्षिप्य मोक्षपथे अग्रसरः भवेयम्।

प्रायः त्वया ज्ञातमस्ति यत् मम कुलश्रेष्ठः राजा भगीरथः कठिनतमां तपस्यां विधाय स्वकुलदेवस्य श्रीरङ्गनाथस्य चरणाभ्यां निःसृतां गङ्गां पृथिव्यामानीतवान्। यथा गङ्गया सगरपुत्रास्तारिता

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैकुण्ठं च प्रापिता: यत: पुनरावृतिर्जाता। (**गङ्गाया: श्रीरङ्गनाथस्य चरणकमलात् निर्गतकथा बाल्मीकि व्यासादि वर्णित पृथिव्यां भगीरथ द्वारा गङ्गानयन कथातो विभिन्ना विद्यते। यत्र कवेः तमिल क्षेत्रस्य साक्षात् शिवस्वरूपस्य भगवतो रङ्गनाथस्य महिमानं प्रति अखण्ड-निष्ठा आस्था च विराजते।**)

इति श्रुत्वा रामोऽवदत् पितुराज्ञा स्वीकरणं पुत्रस्य प्रधानं कर्तव्यं तु वर्तते एव। सहैव चक्रवर्तिन: सम्राज: आज्ञापि शिरोधार्यैव। एवमुक्त्वा पितुराज्ञां गृहीत्वा च निवास-स्थानं प्रत्याययौ। दशरथश्च राज्ये घोषणां कृतवान्। समाचारमिमं श्रुत्वा प्रजाजना: राजान: नरनार्यश्च परं प्रमोदं प्राप्नुयु:। तत्र च अयोध्याया: सहस्त्रश: नार्य: तथा भूता: हृष्टा जाता: यत् आनन्दातिरेकेण तासां स्तनद्वयात् कञ्चुकी निर्गता केशपाशा: विगलिता वस्त्राणि च अध: पतितानि यस्य ज्ञानं न जातम् (**पद्य ८७**)। ततश्च रामचन्द्र: गत्वा मातरं कौशल्यां सूचितवान्। माता च ब्राह्मणेभ्य: स्वर्णरत्नभूमि-दानादिकं दत्वा कदलीपत्रे भोजयामास। तथा च मन्दिरं गत्वा भगवन्तं विधिवत् पुजां विधाय कल्याणाय प्रार्थयामास।

मन्दरे शूल्च्चिप् पड्लम् (मन्थरा षड्यन्त्र पटलम्)

अत्र तु रामराज्याभिषेकस्य पूर्वव्यवस्थायां सम्पूर्णाऽयोध्या सोल्लासं संलग्ना बभूव। चक्रवर्ती दशरथस्तत्रोपस्थितान् ज्योतिर्विद्या-विशारदान् प्रत्यब्रवीत्। रामचन्द्रस्य राज्याभिषेकस्य सुदिनं सुनक्षत्रं शुभबेलां च कृपया विचार्य कथयन्तु। ते च सुविचार्योचु:। श्व: एव शुभदिनमस्ति। ततश्च वसिष्ठोऽप्यागतवान्। तं प्रति राज्ञोक्तं यत् श्व: एव मंगलमयं दिनं वर्तते। अतएव वैदिक विधिं शीघ्रमेव भवद्भि: करणीयम् रामायोपदेशश्च कृपया दातव्य:।

वशिष्ठस्ततो रामचन्द्रसमीपं गतवान्। रामस्तं दृष्ट्वैवोत्थाय प्रणम्य शुभासनं प्रदत्तवान्। ततो वसिष्ठ उवाच। मम हितकारिण-मुपदेशवचनं शृणोतु।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्रह्म-विष्णु-शिवेभ्योऽप्यधिकाः पञ्चमहाभूताः ? सत्याद्याधिकाः ब्राह्मणाः श्रेष्ठाः पूज्याश्च। तान् प्रति सम्मानं प्रदर्शनीयम्। ब्राह्मणस्य कृपाभाजनं भूत्वा कियन्तोऽसंख्यराजानः कल्याणमापुः। सर्वत्र सर्वथा दयां क्षमां कोमलतां च प्रदर्शयन्तु। ताः विहाय न कोऽपि कल्याणमाप्तवान्। विषयभोगेष्वासक्तान् इन्द्रियांश्च वशीकुर्वन्तु। यदि राजानः प्रिय भाषणं दानं विवेकशीलतां नीतिमार्गं च न त्यजन्ति तर्हि सदैव तेषां कल्याणमेव भवति। इत्थं च रामाय विविधोपदेशं विधाय रामेण साकं **सहस्रशीर्षभगवतः श्रीरंगनाथस्य मन्दिरं ययौ।** तत्र वेदमन्त्रैः पवित्रीकृत-तीर्थजलेन रामः स्नात्वा श्वेतवर्ण कुशासनमुपविष्टः। वसिष्ठश्च राजानं सूचितवान् यद्वैदिकी प्रक्रिया पूर्णा जाता दशरथश्च सम्पूर्ण नगरं सुसज्जयितुमादिदेश।

समस्त नगरं आनन्दसागरैः समुद्वेलितम्। जनाश्च हर्षे आत्मविस्मृताः जाताः सर्वत्र तोरणद्वारादिकं ध्वजादयश्च संरचिताः। एवंरूपेणायोध्या विविधालङ्कारैः सुसज्जिता विद्यते।

इतस्तु साक्षाद्राक्षसीतुल्या कुब्जा मन्थरा समुपस्थिता। पुरावाल्यावस्थायां रामः मृत्तिका गोटिकया चापेन मन्थरायाः उपरि कदाचित् प्रक्षिप्तवानासीत् क्रीडायाम्। तेनापि क्रोधोन्मत्ता मन्थरा कैकेय्याः राजभवनं तीव्रतया प्रविष्टा। **(मृत्तिकागुटिका-प्रक्षेपण-कथा बाल्मीकि रामायणादौ न दृश्यते किन्तु तमिल क्षेत्रीय वैष्णवा एवं कथयन्ति)।**

कैकेयी शोभन शय्यासीना विराजतेस्म। तत्रागत्य सा कुब्जा विषवाणसदृशवाक्यैः कैकेयीं सम्बोध्योक्तवती। जानासि राज्ञि, कौसल्यायाः षड्यन्त्रपूर्णा कामना फलिता। श्वः तस्यपुत्रस्य रामचन्द्रस्य राज्याभिषेको भविता। त्वं दासी भविष्यसि तव पुत्रो भरतः दासवत् राम सिंहासन समीपमुत्थित एव स्थास्यति।

मन्थरावचनं श्रुत्वा कैकेयी तां भर्त्सितवती। उक्तवती च यत् रामस्तु मम प्राणप्रियोऽस्ति। अयं तु शुभसमाचारः। कैकेयी च प्रथमं मन्थरायै स्वर्णोपहारं प्रदत्तवती।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तं प्रक्षिप्य मन्थरा क्रोधोन्मत्ता सती चीत्कारं च कुर्वती अवादीत्। त्वं मूर्खाऽसि कैकेयि, उन्मत्तासि। तव सपत्न्याः कौसल्यायाः पुत्रः राजा भविष्यति। त्वं दासी भविताऽसि, तव पुत्रः दासः स्यात्। नात्राहं दास्याः दासीरूपे स्थातुमुत्सहे। कौसल्या सदा सावधाना सती निज कार्यं साधितवती। तस्याः पुत्रः चक्रवर्ती स्थास्यति तव पुत्रस्तु मृततुल्यो दास एव। अहं तु मन्ये यत् भवत्याः गर्भादुत्पन्नभरतस्य जन्म निरर्थकम्।

इत्थं च श्रुत्वा पुनः कैकेयी प्रोक्तवती। सूर्यकुल-संभूताः नृपाः प्राणत्यागं वरं मन्वते परन्तु वचनत्यागं नैव अङ्गीकुर्वन्ति। मयूर-कुलतुल्य एव मनुकुल-सूर्यकुल सम्प्रदायः। मयूरपक्षिणः कुले संभूत-मयूरेषु प्रथमं ज्येष्ठमयूरस्यैव पुच्छं जायेत। अथ च एकमातुर्गर्भा-दुत्पन्नाः बहवः मयूराः यत्रसन्ति तत्र प्रथमं ज्येष्ठ एव स्वपुच्छं प्रसारयति। तद्वदेव कैकय नरेश कुलेऽपि ज्येष्ठ एव राजा भवति इयमेव परम्परा विद्यते। **'केकी' शब्दस्य मयूरः इत्यर्थो विद्यते। प्रायः केकादेव 'केकय' शब्दः सञ्जातः इति कथ्यते। फलतः केव मयूर कुलवदेव केकय कुलेऽपि ज्येष्ठायैव राज्यदान प्रक्रिया विद्यते सूर्य-कुलवत्। अतएव दशरथेन राज्ञा विहितमेवाचरितम् [पद्य १६१]।** वर्णनेनानेन कैकेयी सर्वथा दोषमुक्ता जायते। परन्तु पुनः विधि-प्रेरिता मन्थरा तथा विषवमनं कुरुते येन कैकेय्याः मनः परिवर्तितम् विचारश्च परिवर्तितः।

इत्थं समाकर्ण्यापि मन्थराऽवादीत् अहं तु तव हितैषिणी मातृ-गृहादागता दासी। सदा तव भविष्य विषये चिन्तिता सती यत्कलाण-कारकं वचनं तदेव वच्मि वक्ष्यामि च। तव सपत्नी कौसल्या राजमाता भवित्री तस्याः पुत्रश्चक्रवर्ती पदेन सम्बोधयिष्यते, किन्तु त्वं हि राजदासी तुल्या तव पुत्रो भरतश्च सेवकोपमो भविष्यतीति नूनम्। यदि तव कुले ज्येष्ठमेव राज्याधिकारी भवति तदातु दशरथ-स्याग्रे रामः कनिष्ठः कथं तदग्रे रामो ज्येष्ठः? **(मन्थरायाः तात्पर्य-मिदमस्य कथनस्य यत् दशरथस्य देहावसानानन्तरं रामो राज्याधि-कारी भवितुं योग्योऽधुना कथं स ज्येष्ठः। इति परिकल्पना रामायणेऽस्मिन् नूतना नेत्थं कल्पनाऽन्यस्मिन रामायणेऽवलोक्यते।)**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एवं हि मन्थरया कैकेय्याः स्वच्छं मनः परिवर्तितं विचारोऽपि सहसा परिवर्तितः। इत्यवलोक्य सा ब्रूते यत् राज्ञः पार्श्वे पूर्वप्रदत्तं तव वरद्वयं सुरक्षितमस्ति। तमेव वरद्वयं राज्ञा पतिना याचस्व। कैकेयी कथितवती त्वं मम हितैषिणी प्रियकार्यकर्त्री विश्वसनीया सखीतुल्यादासी असि, इति मम मनसि त्वां प्रति नितरां ममचित्तमाकृष्टं जातम्। तदा सा सर्पिणीतुल्या मन्थराऽवोचत्। वरद्वयेषु प्रथमं वरं भरताय राज्यप्रदानं याचस्व, अन्यस्मिन् वरे चतुर्दश वर्षाणि यावत् सीतया सह जटावल्कलधारी भूत्वा रामस्य वनगमनं याचस्व। कैकेयी तथैव करिष्यामीति स्वीकृत्य कोपभवनं गतवती मन्थरा च प्रफुल्लिता सती स्वस्थानं प्रति निर्वातिता।

कैकेयी शूल् वितैप् पडलम् (कैकेयी दुष्कर्म पटलम्)

रात्रौ मध्यभागे राजा कैकेयी प्रासादमधिगतः। तत्रागत्य राजा दृष्टवान् यत् शुभ्रपर्यंकशायिनी सुन्दरी सुकोमला कैकेयी भूमिमधिशेते। प्राणप्रियां तथाविधांदृष्ट्वा दशरथः स्वहस्तं तस्याः शरीरे दत्तु कामएवासीत् तदैव सा स्व हस्तैर्निवारितवती तथा दीर्घश्वासं श्वसितिस्म। स्थितिमिमामवलोक्य दशरथो भयभीतो भूत्वा उक्तवान्। सप्तसु लोकेषु क एवं वर्तते यस्त्वां क्लिश्यति। स तु त्वरितमेव मया हन्तव्य एवास्ति। कैकेयी नारीसुलभमायां प्रदर्शयन्ती अश्रुपूरितनेत्रैरवदत्। यदि कृपाऽस्ति तर्हि पूर्वं प्रदत्तं वरद्वयं मह्यं ददातु। राजा विहसन्तोऽब्रवीत् यथा ते रोचते तथैव करिष्यामि रामस्य शपथं करोमि। उत्तिष्ठ, प्रसन्नाभव। कैकेयी कठोर रूपेण वक्ति, वरद्वयमधुनैव देयम्। राज्ञोक्तं कथमियती त्वरा उत्कण्ठा च। अधुनैव दीयते। किमिच्छसि कथय।

कैकेयी अब्रवीत् ममपुत्राय भरताय राज्यंददातु तथा रामाय चतुर्दश वर्ष पर्यन्तं वनवासं च प्रददातु। निश्चल भावेन कम्पनरहितेन शब्देन इति व्याजहार। कैकेय्या सर्पिणीतुल्येन क्वनविषेण दष्टो दशरथः भूमौपपात। तस्य सर्वाणीन्द्रियाणि निष्क्रियाणि जातानि जिह्वा च शुष्का श्लथा जाता। पुनश्च साहसं कृत्वा ब्रूते दशरथः मम शपथो वर्तते सुस्पष्टं कारणं ब्रूहि।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निर्भया कठोररूपा कैकेयी अवादीत्। पूर्वप्रतिज्ञातं वरद्वयं देहि। अन्यथा भवानपयशसः सागरे पातयित्वा स्वप्राणत्यागं करिष्ये।

राजा पुनः सान्त्वयन्नुक्तवान्। तव पुत्रः राम समीपं राज्यं न स्वीकरिष्यति। यदि स्वीकरिष्यतितर्हि तद्दत्तम। किन्तु रामवनगमन वरं परित्यज्य अन्यं वरं याचस्व यदि मम प्राणाः ते प्रियास्तर्हि द्वितीयं वरं त्यज। इयं मम याचना। प्रसन्ना सती मह्यमिदमेकं वरंत्वमेव देहि।

कैकेयी उक्तवती। वचनं दत्वा यदि न दास्यति तर्हि सत्यस्य रक्षा कथं भविता? विस्तृतरूपेणात्र कथोपकथनानन्तरं राज्ञा निश्चितं यदियं न मानयिष्यति। तदोक्तवान् अस्तु प्रदत्तं वरद्वयम्! रामोवनंगत्वा तत्राज्ञां पालयिष्यति। अहं च प्राणान् परित्यज्य स्वर्गं गत्वा सुखेन तत्र स्थास्यामि। इदमुक्त्वा राजा मूर्च्छितो बभूव।

अत्रायोध्यायां श्वः प्रातरभिषेकस्य सर्वाः पूर्वव्यवस्थाः सञ्जाताः। सर्वे नगर निवासिनो ब्रह्म मुहूर्त्ते एव समुत्थाय दैनिक कृत्यमकुर्वन्। जनानांसागरसमूहस्तत्रोपस्थितः। जनाः दशरथस्य प्रतीक्षायां निर्निमेष दृष्ट्या राजभवनं पश्यन्तिस्म।

रामचन्द्रश्च प्रातरुत्थाय सर्वं दैनिककृत्यं कृत्वा विधिवत् पूजादिकं च विधाय प्रस्तुतः आसीत्। राजानश्चाभिषेकमण्डपमुपस्थिताः वेदज्ञाः ब्राह्मणाः ऋषयश्च समागतवन्तः। महर्षिः वसिष्ठश्च राज्याभिषेकार्थं मुकुटधारणार्थं चावश्यक मङ्गल पदार्थान् नीत्वा तत्रोपस्थितो जातः। गणितज्ञाश्च वदन्तिस्म राज्याभिषेक-मुहूर्त्तः समुपस्थितः। रामश्च कुलदेवं श्रीरंगनाथं संपूज्य प्रणम्य च विमातरं कैकेयी गृहं प्रति प्रचलितः। सभामण्डपस्थाः राजानो ऋषयश्चाब्रुवन्। समुचितमेव प्रथमं कैकेयी गृहगमनं रामस्य। रामस्तु तत्रागत्य मर्मन्तुदं दृश्यं दृष्ट्वा स्तब्धो जातः। राजा तु मूर्च्छित आसीत्।

कैकेयी दृढतया राज्ञः वरदान द्वयस्य वर्णनं कृतवती। रामः सुप्रसन्नो भूत्वाऽवदत्। यदि पितुः चक्रवर्तिनश्चाज्ञा नापि स्यात्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तदापि किं भवत्याः आदेशमहं कदापि त्यक्तुं समर्थः ? भ्रातुर्विभवं राज्यं तु ममैव विद्यते । ततः वनं प्रस्थितुं भवत्याः आज्ञामाशीर्वादं च याचे । इत्युक्त्वा रामस्ततः प्रतस्थे । अयोध्यायां हाहाकारो जातः । तत्रत्य शोकाश्चर्ययुक्त दशाऽत्र वर्णनीया नैव विद्यते केवलं कल्पनां भावनां कुर्वन्तु तत्र भवन्तो ज्ञानिनः पाठकाः सुधियः **इति संक्षेपः ।**

(नहर्नीङ्गु पडलम् (नगर निष्क्रमण पटलम्)

अथ श्रीरामचन्द्रः मूर्च्छितं पितरं प्रणम्य मातरं कैकेयीं च प्रणम्य मातुः कौशल्या गृहमागतवान् दृश्यमिमं दृष्ट्वा सर्वे देवाः देव्यश्च शोकनिमग्नाः जाताः । माता कौशल्या च तथाविधं कुण्डलकिरीटादि रहितं पुत्रं रामचन्द्रं दृष्ट्वा साश्चर्यं पृष्टा । कथमियं दशास्थितिश्च ? रामेणोक्तम् भवत्याः सर्वगुण सम्पन्नः पुत्रः ममानुजः भरतः राजा भविष्यति इति राजाज्ञा वर्तते ।

इदं श्रुत्वा कौशल्या अब्रवीत् यत् भरतः सर्वथा सुयोग्यः समुपयुक्तः राजपदयोग्यः वर्तते । स तु भवतः अपि त्रिगुणाधिकः गुणवान् वर्तते । किन्तु ज्येष्ठं परित्यज्य कनिष्ठस्य राज्याभिषेकः न कुलक्रमागतः । एतावान् एव दोषः अस्मिन् निर्णये वर्तते । तथापि राजाज्ञां शिरोधार्यं कृत्वा त्वमपि भरताय राज्यं देहि इति सम्मतिं दत्वाभरतेन सह चिरंजीव । इति श्रुत्वा रामः हर्षितः जातः । तदनन्तरं रामेण द्वितीयः समाचारः श्रावितः यत् मह्यं चतुर्दशवर्षपर्यन्तं तपस्विभिः सह वने निवासं कृत्वापुनरयोध्यागमनस्य आज्ञां दत्तवान् ।

तीक्ष्णतरं कठोरवचनमिदं श्रुत्वैव कौशल्या मस्तकं धुनोतिस्म भूमौ पतिता पुनरुत्थाय विक्षिप्तवत् जाता । प्रलापं कृतवती मातरं स्वहस्ताभ्याम् उत्थाप्य सान्त्वनां प्रयच्छन् ब्रूते । सत्यवादिनं राजानं किं तत्र भवती असत्यवादिनं करिष्यति । क्षितिजलपावकगगनसमीराः विलयं यान्तु किन्तु मया दासेन रामेण राजाज्ञा कदापि नोपेक्ष्या स्यात्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(तमिल भाषायां 'अहम्' हलस्यअडियेन् इति भवति यस्यार्थः 'दासोऽहम्' इति भवति) । रामः पुनरब्रवीत् मातः धैर्यं धारय । पिता मम वियोगे प्राणत्यागं करिष्यति । तं सर्वथा धैर्य साहसादि धारणेन रक्षयतु । मह्यम् तु महर्षि विश्वामित्रस्य प्रसादेन विविधाः शस्त्र-शास्त्रादि विद्याः प्राप्ताः विविधाश्चोपलब्धयोजाताः । पुनश्च तेषां ऋषीणां सेवा महती लाभदायिका भविता ।

ततो रामचन्द्रः मातुः सुमित्रायाः समीपं गत्वा सर्वं श्रावयामास तथा पितुः सान्त्वना प्रदानार्थं प्रार्थितवांश्च । कौशल्या तु कैकेयी-वासस्थानं (राजभवनं) गत्वा राज्ञो दशां दृष्ट्वा तत्र निर्जीवम् पतिता । पुनश्च चेतनां प्राप्य उक्तवती किमिदं राजन् ! कथं न वदसि पुत्र आगच्छ चक्रवर्तिनो दशां पश्यतु ।

तत्र राज्याभिषेक मण्डपे स्थिताः ऋषयोराजानश्च वसिष्ठं निवेदितवन्तो यत् भवन्तस्तत्र राजभवनं गत्वा स्थितेरकलनं विधाय सूचयन्तु अस्मान् । वसिष्ठस्तत्रोपस्थाय स्थितिमवलोक्य विस्मितो बभूव । कथं किमिदं जातमिति तेनापि तपोधनेन न ज्ञातम् । कियत्कालानन्तरं ज्ञातं यत्क्षीरसागरान्निःसृतविषतुल्येन कैकेय्याः वचनविषप्रभावेणेयं स्थितिर्जाता । राजा तु यदा कदा चेतनां प्राप्य राम रामेत्येव ब्रुवन् पुनः पुनः चेतनाशून्यतां प्राप्नोति ।

तदा मुनिवरः कोपयुक्तां कर्कशां कैकेयीं प्रति उवाच । महाराज्ञि स्वपतये प्राणदानं कुरु, अन्येभ्योऽपि प्रजाजनेभ्योऽभयदानं देहि । तयाचोक्तं यदि राजा सत्यपालनात् विमुखः स्यात् तदा नाहं प्राण-धारणं करिष्यामि इति मे दृढतरो निश्चयः । तच्छ्रुत्वा वसिष्ठ उवाच । किं न पश्यसि त्वं यत् यदि तव पतिः दशरथोम्रियेत तर्हि संसारः तं न सोढुं शक्ष्यति किं काऽपि पत्नी विधवा भवितुमिच्छति ? किं त्वं मानवी मायापिशाचिनी वेति ? वचनमिमंश्रुत्वाऽपि कैकेयी न द्रविताऽभूत् ।

एतन्मध्ये एवं स्वल्पां चेतनां प्राप्य राज्ञा दशरथेनोक्तम् महर्षेइयं न मम धर्मपत्नी मया त्यक्तेयम् । एतस्याः पुत्रं भरतमपि पुत्रं नाहं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मन्ये। अतएव मम दाहादि क्रियाकरणाधिकारेण स (भरतः) वञ्चितो जातः।

(अत्रेयं कथा न कस्मिन्नपि संस्कृत रामयणे नवा कस्मिन्नपि संस्कृत रामकाव्ये दृश्यते। कम्बन् कवेरस्याः कथायाः किं मूलम् इति मृग्यं विद्वद्भिः।

अत्र कौसल्या कृशा जाता प्रायश्चेतना ज्ञान शून्येव आसीत् तथापि राजानं सम्बोध्य उक्तवती यत् भवान् यदि सत्यपालनात् विमुखः स्यात् तथा च पुत्रस्नेहेन सत्यरक्षणे शिथिलतां विधास्यति तर्हि संसारस्य श्रेष्ट जनाः समुचितं न मानष्यिन्ति। अतएव भवतामाज्ञायाः सर्वथा पालनमेवास्माकं चरमं परमं च कर्तव्यम्।

ततश्च दशरथः चिरपूर्वभूतां श्रवणकुमार वाणाभिहत कथां सविस्तरं श्रावितवान् तत्पित्रा च प्रदत्त पुत्र वियोग मरणशाप कथां च वर्णितवान्।

वसिष्ठश्च सभामण्डपमागत्य सूचितवान् यत् सर्वगुणोपेतः भरतः राज्यसिंहासनं प्राप्स्यति। विशालबाहुः रामः चतुर्दश वर्ष पर्यन्तं वनवासार्थं प्रस्थानं करिष्यति। एतत् प्रसङ्गे कैकेयीदेव्यै राज्ञा पूर्वप्रदत्तवरदानद्वयस्य विस्तरेण विवरणं च वसिष्ठेन प्रोक्तम्।

इदं श्रुत्वा सर्वे ऋषयः राजानश्च स्तब्धाः सञ्जाताः। अयोध्यावासिनश्च शोकनिमग्नाः। यत्र ये आसन् ते तत्रैव चित्रवत् निष्प्राणभूताः बभूवुः। लक्ष्मणश्च घटनामिमां श्रुत्वा प्रलयान्तकालीनः अग्नितुल्यः प्रज्वलितो जातः; विविधप्रकारकं, क्रोधोन्मत्तः सन् प्रलापं कृतवान्। रामचन्द्रः तं विभिन्नप्रकारेण नीतिपूर्णवचनेन सान्त्वयामास। सहसा तत्र माता सुमित्रापि समुपस्थिता जाता। साऽपि विह्वलासती विललाप। रामचन्द्रः तामपि सान्त्वयामास।

तदनन्तरं लक्ष्मणोऽपि रामेण सह वनं गन्तुं समुद्यतोऽभूत्। सीता च दारुणं वर्णनमिदं श्रुत्वा विक्षिप्तासती तत्र समागतवती रामचन्द्रः तां शतशः शान्तिदायक वचनैः वनवास कष्ट विवरणैश्च प्रबोधित-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वान् । किन्तु स्वकीय अकाट्य तर्कद्वारा सीता सर्वं विखण्डितवती अन्ते च रामः तामपि वनं गन्तुंसमादिष्टवान् ।

इत्थं च वल्कल धारणं कृत्वा सीता लक्ष्मणाभ्यां सहितः रामचन्द्रः तत्रोपस्थितं कुलगुरुं वसिष्ठं प्रणम्य मातरं च प्रणम्य विलपन्तं नगर-निवासिनं यथायोग्यं सन्तोषं प्रदाय सुमन्त्रद्वारा समानीते रथे समुप-विश्य वनं प्रतस्थे । (इत्थमेव कथा अत्र मुख्यरूपेण विद्यते यत्र परस्परं वार्तालापः अति विशदः वर्तते यस्येदं संक्षिप्तमत्र विवरणं प्रदत्तम् ।)

तैलमाट्ट् पडलम् (तैलनिमज्जन पटलम्)

अस्मिन् पटले श्रीरामचद्रस्य वन प्रवेश कथा वर्णनं रामस्याज्ञया सुमन्त्रस्य अयोध्या परावर्तन वर्णनं राज्ञः दशरथस्य राम वियोगे प्राणत्याग वर्णनं वसिष्ठाज्ञया केकय देशात् भरतस्य अयोध्यागमन-वर्णनं तथा दशरथस्य मृतशरीरं तैलपात्रे निमज्जन वर्णनं च विद्यन्ते येषां संक्षेपेणात्र विवरणं दीयते ।

पितुराज्ञया रामेण साकं सीता गतवती लक्ष्मणश्च चलितः एव । तत्र केवलं दशरथस्य पत्न्यः तं परित्यज्य न गतवत्यः तथा च अयोध्या नगरस्य निर्जीव चित्राणि न गतानि । शेषाः आवालवृद्धवनिताः रामेण साकं तदनुप्रस्थिताः शोकाकुलाः विक्षिप्ततुल्याः वस्त्राभरण-परिस्खलनज्ञानशून्याश्च । तस्मिन् दिने सूर्यास्तः शीघ्रमेव जातः । तत्र कविः कल्पनां करोति यत् स्वकीय वंशोद्भवं सूर्यकुलभूषण-रामचन्द्रं वनगमन करुण दृश्यं द्रष्टुं सूर्यः नाशकनोत् ।

अयोध्यानगर निवासिनीनां नारीणां नेत्राणि 'कण्णीर्' इति निःसृतानि कृतवत्यः । अत्र तमिलभाषायाः 'कण्णीर्' शब्दे श्लेषो वर्तते यत् **कणणीर** शब्दस्य 'अश्रु' इत्यर्थः, कलणीर् शब्दस्य **मधु** इत्यर्थः । तेन स्त्रीणां नेत्राभ्यां विगलितानि अश्रूणि मधुमिश्रितजल-तुल्यानि विद्यन्ते इति विशेषः । इत्थं च सर्वे बुभुक्षां पिपासां च विस्मृत्य तमसा नदी तटमागतवन्तः । तत्र केचन वालुकायां केचन शिलाखण्डे केचन च हरित क्षेत्रे च समुपविष्टाः तथा क्रमशः तत्र निद्रामाप्नुयुः । निद्रावस्थायां तासां मृगनयनीनां सुदीर्घकेशैः कस्तूरी-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुंकुमादि सुगन्धीनि सर्वत्र व्याप्तनि। तथा च ताः दुग्धफेन सदृश-स्वीय स्वच्छ वस्त्राणि एव विस्तीर्य तत्र सुप्ताः (एतेन तासामनुपमं सौन्दर्यप्रदर्शनं वर्णितं कविना।)

यदा सर्वे सुप्ता आसन् तदा रामचन्द्रः प्रधानमन्त्रिणं सारथिरूपं सुमन्त्रमाहूय कथितवान्। हे गुरुतुल्य महामन्त्रिन् कृपया ममैकं कार्यं कुर्वन्तु भवन्तः। यतोहि मां प्रति भवतां स्नेहः कृपादृष्टिश्च सर्वथा सर्वदा वर्तते। अतएव मम प्रार्थनां विज्ञाय कृपया भवन्तः रथमास्थाय रथं नीत्वा अयोध्यां प्रति परावर्तनं कुर्वन्तु। अयोध्याः समागतान् प्रातः उत्थानानन्तरं परावर्तयितुं नाहं शक्ष्यामि। एतेषां परावर्तनं विना ममाग्रे गमनमपि नैव सम्भवम्। अतः भवत्-परावर्त्तनानन्तरमेव सीतालक्ष्मणाभ्यां सहितोऽहं त्वरितमेवाग्रे गन्ताऽस्मि। (अत्र वाल्यमीकि रामयणे गुप्तरूपेण अयोध्यावासिनं सुप्तावस्थायामेव सुमन्त्र रथ द्वारा गंगातट पर्यन्तं गमनकथा विद्यते। रामचरितमानसे तुलसीदासेनापि तथैवानुसृतम्। **अत्र तु इयं कथा घटना च काचित् विभिन्नरूपा नूतना अवलोक्यते।)**

रामचन्द्रसुमन्त्रयोर्मध्ये विविध तर्कवितर्कानन्तरं सुमन्त्रः रामचन्द्रस्य भावनानुकूलं दुःखितः शोकसन्तप्तः सन्नपि अयोध्यां प्रतस्थे। रामचन्द्रश्च अयोध्या नगर निवासिनां जनानां सुप्तावस्थायामेव परित्यज्य सुदूर वन गमनार्थमग्रे प्रस्थितः। सुमन्त्रश्च मनसि चिन्तितं यत् "स्वकर्म सूत्र ग्रथितोहि लोकः" इति रीत्या तादृशीं कोमलाङ्गीं सीतां पुनः पुनः वीक्ष्य रामं लक्ष्मणं च वारं वारं परावृत्य पश्यन् अयोध्यामागतवान्। सीता रामयोः वनगमन दृश्यं तु महत् दारुणं नितान्त कठिनंचासीत्। यस्य वर्णने कविः अत्र महतीं भावुकताम अभिव्यक्तवान्।

सुमन्त्रश्च परावर्त्य विशाल दुर्गयुताम् अयोध्या नगरीं प्राप्तवान्। "रामचन्द्रः पुनः सुमन्त्रेण सह आगतवान्" इति भावनया समुत्सुकाः अयोध्यानगरवासिनः पश्यन्तिस्म सुमन्त्रं च पृष्टवन्तः। सुमन्त्रोऽवदत्। मया तु वहुशः निवेदितं किन्तु रामेण न स्वीकृतम्। स तु मर्यादा रक्षकः, सत्यधर्म पालकः अतएव निराशोभूत्वा अहं परा-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

र्वतितवान् । इतिश्रुत्वा वसिष्ठः सुमन्त्रेण साकं दशरथभवनमागतः । उभौ दृष्ट्वा "रामः पुनरागतः इति भावयन् दशरथः प्रसन्नो भूत्वा समुत्थितः" । पृष्टश्च यत् "रामः कुत्र वर्तते" ?

'रामो नागतवान्' इति कठोरवचनं कथितुं यद्यपि ते समर्थाः न बभूवुः किन्तु तेषां मुखाकृतिं विलोक्य एव दशरथः ज्ञातवान् यत् रामो नागतः एवं च पुनः मूर्च्छितो जातः । पुनः मूर्च्छां परित्यज्य राजा अब्रवीत् रामः सपीपस्थो दूरस्थो वेति । साहसं कृत्वा सुमन्त्रोऽब्रवीत् "मैथिली-लक्ष्मणाभ्यां सहितः रामः" दीर्घवंश-वृक्षादि युत सघनं वनं जगाम । इति श्रुत्वैव दशरथः प्राणान् तत्याज । राज्ञो मरणं श्रुत्वा सर्वाः स्त्रियः सर्वे पार्षदाः अन्तः-पुरवासिनश्च त्वरितमेव एकत्रीभूताः जाताः । स्पन्दनरहितं मृतपत्युः दशरथस्य शरीरं स्पृष्ट्वा कौसल्या मूर्च्छिता जाना । पुनः चेतनां प्राप्य सकरुणं विलपति । रामस्य जननी कौसल्या ब्रवीति । राजन्, त्वया तु शतशः यज्ञं कृत्वा अत्रैव स्वर्ग सुखं प्राप्नम् सर्वं दत्तम्, किमिदं यज्ञस्यफलम् ? एवंप्रकारेण सुमित्राऽपि तत्रागत्य विललाप । **(अस्मिन् रामायणे राज्ञः मृतशरीर समीपं न काऽपि कैकेयी-चर्चा वर्तते ।)**

दशरथस्य षष्ठि (६०) सहस्र संख्याकाः स्त्रियः आसन् । ताः पत्या सहैव चितायां प्रवेष्टुं समुद्यताः बभूवुः । तथा कर्तुं वसिष्ठेन आदिष्टं च **(इयं कथा अस्मिन् रामायणे नूतना वर्तते । एतस्याः चर्चा संस्कृत रामकाव्ये न कुत्राऽपि वर्तते)** । स्त्रीणां विलाप मध्ये दशरथस्य मृतशरीरं तावत्पर्यन्तमेकस्मिन् तैलपात्रे संरक्षणीयम् यावत्पर्यन्तं भरत-शत्रुघ्नौ केकयदेशात् स्वमातामहगृहात् अयोध्यां न प्राप्नुतः ।

कम्बन्-कवेरनुसारं राज्ञो दश रथस्य षष्ठि ६० सहस्र संख्याकाः पत्न्यः अपि आसन् । ताः सर्वाः प्राण त्यागार्थमुद्यताः जाताः । तत्र वसिष्ठेन निवार्य कथितम् यत राज्ञो दाहकर्म समये यूयं चितायां प्रवेशं करिष्यथ ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कौसल्यायै सुमित्रायै स्वस्य भवने गमनस्याज्ञां प्रददौ। वशिष्ठः इत्थं च दशरथस्य मृतं शरीरमेकत्र तैलपात्रे सुरक्षितं कृत्वा सर्वे पार्षदाः सेवकाश्च तत्समीपमेव तस्थुः। नार्यश्च वसिष्ठादेशानुसारं यथा-स्थानं गतवत्यः। वसिष्ठेन भरतः प्रत्यायनार्थं दूताः संप्रेषिताः। कौसल्यां सुमित्रां च आदिष्टवान् यत् युवां स्व-स्व गृहे तिष्ठताम्। दूताः केकय नगरं प्राप्य भरतं वशिष्टस्य आज्ञां श्रावितवन्तः यत् त्वरितमेव अयोध्यां चलतु। किं कार्यं वर्तते इति भरतेन पृष्टः। किन्तु तैरुक्तं यत् वयं न किमपि जानीमहे।

भरतः शीघ्रमेव अयोध्यां प्राप्तवान्। अयोध्या प्रवेशानन्तरमेव राज्ञः प्राणत्यागस्य रामचन्द्रादीनां वनगमनस्य च वार्ता श्रुत्वा अतिशोक सन्तप्तः सन् प्राणान् हातुम् आत्महत्यां कर्तुं समुद्यतो जातः। तदा तत्र वसिष्ठेन निवारितः यत् आत्महत्या महत् पापं नैवं विधेहि। धैर्यं धारणं कृत्वा अग्रिम कर्माणि कुरु। भरतः सहमतो जातः। **(आत्महत्यार्थमुद्यतस्य भरतस्य चर्चा नान्यस्मिन् संस्कृत रामायणे रामकाव्ये वा कुत्रापि दृश्यते। तस्य शोकोद्गार पारावारस्य विशदवर्णनं यद्यपि विद्यते। इयमपि नूतन कथा शैली।**

गंगगैप् पडलम् (गङ्गा पटलम्)

वनगमन क्रमे असाधारण सौन्दर्यवान् श्यामलो रामः स्वकीय-तेजसा सूर्यं तिरस्कृतवान्। यतोहि रामस्य शीतल छायायां सूर्य-किरणानां तीक्ष्णता प्रच्छन्ना विलीना जाता। सीतायाश्च कटिप्रदेशः तथा शूक्ष्मतमःक्षीणः येन कटिं प्रदेशः अस्ति न वेति मिथ्यामायावत् प्रतीयते। रामस्तु कोशल देशस्य दक्षिण भागे गच्छन्नासीत् यत्रत्यं सौन्दर्यम् अति मनोहरं वर्तते। अर्द्धचन्द्र सम ललाटयुक्ता सुवासपूर्ण परागमिश्रित केशयुक्ता सीता प्रवालाधर-सम-रामेण सहिता मेघमालायां विद्युच्छटा रूपा परिदृश्यते।

मार्गे विभिन्न क्षेत्रम् यत्र कृषकाः स्व क्षेत्राणि विविध प्रकारेण अन्नोत्पादनार्थं कर्षन्ति स्म। एवं क्रमेण क्षेत्रम् उद्यानपार्वत्यप्रदेशं पश्यन् गङ्गातटे ते समागतवन्तः यत्र वेदपाठ निरताः तपस्विनः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निवसन्ति स्म । ते तपस्विनः कथयन्ति स्म यत् अस्माकं तपस्यायाः फलस्वरूपं प्राप्तिस्थानं स्वयं रामएव समुपस्थितः । अस्माकं तपः परिपूर्णं जातम् । रामश्च त्रिदण्डि धारिणान् तपस्विनां स्वागतं चकार । ते ऋषयः स्तुति रूपं पुष्पं समर्पितवन्तः भक्तिरूपं नैवेद्यम् अर्पितवन्तः तथा आनन्दाश्रुसुधारया श्रीरामचन्द्राय पाद्यार्घ्यं समर्पितवन्तः । वन्य कन्द फल मूलादिकं च तस्मै समर्पितवन्तः ।

सीतायाः हस्तं धृत्वा श्रीरामः गङ्गायां प्रविष्टः । गङ्गा तत्र इदं वाक्यं व्याजहार यत् मम धारायां स्नानं कृत्वा जनाः निष्पापाः भवन्ति किन्तु अद्य मम जनकः भवान् **(भगवतो विष्णोश्चरणात् गङ्गा समुद्भूता इति वैदिकी कथा वर्तते । रामस्तु साक्षात् विष्णु-स्वरूपः अतएव गङ्गायाः जनकः ।)** स्वयमागत्य ममपापं दूरीकर्तुं मम उद्धारार्थं च समागतवान् । अद्य पर्यन्तं भगवतो महादेवस्य जटा जूटे स्थित पत्र पुष्पाणामेव सुगन्धिः गङ्गायामासीत् किन्तु अद्य भगवत्याः **सीताया विशाल केशजालात् निःसृत कस्तूरी पुष्पादि** सुगन्धिभिः गङ्गा सुगन्धिता जाता । सीतायाः श्यामल मेघ सदृशाः विशालाः केशपाशाः गङ्गाजले सन्निविष्टाः तथा सुशोभिताः दृश्यन्ते यथा अत्र श्वेत जलधाराः गङ्गा श्याममयी जलधारा यमुना सदृशाः सीतायाः श्यामल केशाः मिलित्वा अत्रैव गङ्गा यमुना संगमं विद्यते ।

विष्णुरूपस्य भगवतो रामचन्द्रस्य चरणारविन्दात् निर्गतायां गङ्गायां सम्पूर्ण शरीरेणाद्य स्वयं रामचन्द्रः स्नातः येन गङ्गा सर्वथा पवित्रतमा बभूव । दक्षिणभारतस्य मदुरा क्षेत्र समीपे एकं पवित्रं जलस्रोतो वर्तते यत् **स्रोतसमः नूपुरः** गङ्गा शब्देन् तत्रत्य जनाः अभिधीयन्ते । यस्मिन् स्नानेन लोकाः पवित्राः भवन्ति इयमपि मान्यता विद्यते । तत्र गङ्गातटे तपस्विनः श्रीरामस्य विशेषरूपेण सेवा-सत्कारं भक्तिपूजां च समुपासितवन्तः । तेन सन्तुष्टः रामः स्वयं महताश्रमेण गङ्गा नद्याः अन्तस्तलात् विशेषामृतं निःसार्य तेभ्यः मुनिभ्यः प्रदत्तवान् उक्तवांश्च यत् इदं पवित्रममृतं गृहाण । ऋषयः स्व सेवायाः फलं तत्क्षणमेव लब्धवन्तः । **(इयं नूतन कथा अत्र वर्तते ।)**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गुहप् पड्लम (निषाद पटलम्)

एतस्मिन्नेवकाले तत्रत्य वन्य कोल भिल्ल किरातानां राजा निषाद राजगुहः समुपस्थितः। तस्य भयंकर मूर्तिः सद्यः चाण्डालरूपा आसीत्। तस्य विशाल जंघा रक्तवस्त्र युक्ताः व्याघ्र चर्मावृता वराटिका दन्तयुक्त ग्रथिता माला चासीत्। येन तस्य शरीरं विचित्रं भयकारकम् दृश्यते। तस्य विशालाः सेनाः आसन् याश्च तत्र समन्तात् परिवृताः विराजन्ते।

स च निषादपतिः गङ्गा समीपे शृङ्गवेरपुरे स्थितस्य सीतालक्ष्मण सहितस्य रामस्य दर्शनार्थं गङ्गायाः मत्स्यं सुवासित पुष्पाणां मधूनि च समुपहारार्थं नीत्वा समुपस्थितः। लक्ष्मणेन पृष्टः सोऽब्रवीत्। भगवन् भवतां सेवकः निषादपतिः यश्च एतत् क्षेत्रस्य नौकायाः अधिष्ठाता वन्य जन्तूनां जनानां च एकाधिपतिः अस्मि। अयं च श्वान तुल्यः जनः भवत् दर्शनार्थमुपस्थितः। लक्ष्मणेनोक्तम् अत्रैव तिष्ठ, अहं भगवन्तं निवेदयामि। यदि तस्य आज्ञा भवेत् तर्हि दर्शनं संभवम्। लक्ष्मणः श्रीरामं निकषा गत्वा सर्वं वृत्तान्तं ब्रूते। तच्छ्रुत्वा रामः तस्यागमनार्थम् आज्ञां ददौ। तदनुसारं लक्ष्मणस्य निर्देशेन निषादराजः गुहः राम समीपमागत्य रामेण इंगितः सन् तत्रोपविष्टः उक्तश्च भवदर्थम् एतान् मत्स्यान् इमानि मधूनि च मया आनीतानि कृपया स्वीकुर्वन्तु।

रामश्च तत्रोपस्थिततपस्विनां मुखं पश्यन् अब्रवीत्। इमे पदार्थाः सर्वथा पवित्र विचारेण भक्त्या चानीताः सन्ति अतएव स्वीकरोमि। किन्तु मांसाहारः वर्ज्यः अस्ति। तथापि मया स्वीकृताः इमे पदार्थाः इति पर्याप्तम्। त्वम् स्व परिजनैः सह नगरं प्रति परावर्त्तनं कुरु। श्वः प्रातः नौकामेकां नीत्वा आगच्छ अस्माभिः गङ्गापारं गन्तव्यम्। निषादेनोक्तम् न हि भगवन् त्वया अत्रैव स्थातव्यम् इदमपि वनमेव। वयम् सर्वे भवत् सेवकाः। न वयम् परावर्तयिष्यामहे। रामेणोक्तम् एवमस्तु रात्रौ अत्रैव स्थीयताम्। इदंश्रुत्वा त्वरितमेव गुहः चतुर्दिक्षु रक्षाव्यवस्थां कृतवान्। रामश्च सन्ध्यावन्दनादिकं कृत्वा वन्य फलं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

च भुक्त्वा सीतया सह भूमौ एव दर्भ शय्यायां सुप्तवान् । लक्ष्मणश्च धनुर्वाणं धृत्वा उत्थितः एव रक्षायां संलग्नः जातः । निषादराजोऽपि तथैव कृतवान् । प्रातरुत्थाय रामः सन्ध्यापूजादिकं विधाय अग्रे गमनार्थं ऋषिभ्यः आज्ञामादाय भक्तं निषादं नौकानयनार्थम् आदिष्टवान् । पुनश्च निषादेन अत्रैव निवासार्थम् प्रार्थितम् । रामेणोक्तम् तव भक्त्या स्नेहेन च तवाधीनोऽस्मि । किन्तु स्वकार्यं समाप्य पुनः तव समीपमागमिष्यामि **(अस्मिन्नपि रामायणे पुनरागमनाय प्रतिज्ञा कथा वाल्मीकिरामायणादिवदेव वर्तते) ।**

निषादराजः गुहः रामस्य भावनां विज्ञाय सुन्दरं तरणिमानीतवान् । रामश्च सीतालक्ष्मणाभ्यां सहितः तस्यां नौकायाम्उपविश्य नदी सौन्दर्यं पश्यन् यत्र सीता च मत्स्ययुक्तं गङ्गाजलं स्व हस्तैः उच्छालयन्ती आसीत्, गङ्गा पारं गतवान् । गङ्गापारं गत्वा रामेण पृष्टः यत् चित्रकूट गमन मार्गं दर्शय । पुनश्च तत्र निषादेन प्रार्थितं यदहमपि भवद्भिः सहैव स्थास्यामि सेवां विधास्यामि । इति श्रुत्वा रामः प्रोवाच त्वम् मम प्राणोपमः प्रियः अयं च लक्ष्मणः तव **"कनिष्ठः भ्राता" इयं च सीता तव "भ्रातृ जाया"** इयं च **"समुद्रवलयिता पृथ्वी"** तव वर्तते । त्वम् च **अद्यप्रभृति मम पञ्चमः भ्राता विद्यते** इतः पूर्वं वयम् चत्वारः भ्रातरः एव आस्म । अधुना **वयम् पञ्च जाताः । (इयं कथा अस्मिन् रामायणे सर्वथा नवीना वर्तते यत्र रामेण निषादः गुहः पञ्चम भ्रातृरूपे स्वीकृतः । नान्यस्मिन् रामायणे इयं कथा दृश्यते ।)**

किंकर्त्तव्य विमूढो भूत्वा निषादः रामाज्ञां शिरसि निधाय रामः पुनरागमिष्यति इत्याशा विश्वासेन ततः प्रस्थितः ।

(अस्मिन् रामायणेऽपि केवट-पादप्रक्षालन कथा वाल्मीकि रामायणादिवदेव न विद्यते ।)

वनम्-बुड्ड पडलम् (वनप्रवेश पटलम्)

सीतालक्ष्मणाभ्यां सहितो रामः चित्रकूट मार्गे वनं प्रविवेश । तत्र तदा वसन्त ऋतुरासीत् सर्वत्र वन्यशोभाऽद्वितीया मनोहारिणी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आसीत्। अत्रत्य वन्य जन्तवः गजः सिंहः सर्पः नकुलः अश्वः महिषश्च सर्वे परस्परं नित्यवैरभावं विहाय एकत्रैव भ्रमन्ति क्रीडन्ति च। इदमपूर्वं दृश्यम्। मयूराः नृत्यन्ति भ्रमराः गुञ्जन्ति पिकाः कूजन्ति खगाः मधुरं शब्दायन्ते।

जटाकमण्डलधारिणः मृगचर्मावृतो वल्कलधारिणो त्रिदण्डिनस्तपस्विनः संन्यासिनश्चात्र वसन्ति भ्रमन्ति तपः कुर्वन्ति वा।

तदनन्तरं रामो भरद्वाजाश्रमं गतवान्। यत्र भरद्वाज द्वारा अलौकिक स्वागत सत्कारं प्राप्तवान्। वार्तालाप क्रमे भरद्वाजेनोक्तम् यद्भवानत्रैव प्रयागतटे तिष्ठतु। अत्र वन्यशोभा त्रिवेणी संगम पूतं तीर्थं विद्यते। रामो ब्रूते। महर्षे, अयोध्या इतः समीपमेव वर्तते ममात्रावस्थानं ज्ञात्वाऽयोध्यावासिनो जनाः मम पारवारिक सदस्याश्चात्रागत्य मम कार्ये यात्रायां च बाधां दास्यन्ति। अतएव कंचित् शान्तिमयं सौम्यमेकान्त स्थानं कृपया दर्शयन्तु निर्दिशन्तु। महर्षिणाऽनुमोदितमिदम्। ततो भरद्वाजः प्रोवाच। इतः दशयोजन दूरं चित्रकूट नामकं सुरम्यं देवैरपि दुर्लभं पावनं स्थानम् यत्र भवान् स्वेच्छानुसारं स्थातुमर्हति। एवंरूपेण मुनेराज्ञया रामस्ततः प्रतस्थे। ततश्च पवित्र यमुना नद्यां स्नात्वा नूतन वंश (बाँस) निर्मित सोपाने रामो यमुना पारं गतवान्। **इत्थं कथाऽन्यस्मिन् संस्कृत रामकथा काव्ये रामचरितमानसादौ न विद्यते। भरद्वाज ऋषि दर्शनं गङ्गापारगमनपूर्वं कथाऽन्यत्र विद्यते। अत्रतु गङ्गापार गमनानन्तरमियं कथा विद्यते या च नूतना दृश्यते।)**

महाकवि-कम्बन् महाभागः चित्रकूट वर्णन क्रमे पूर्णमेकं पटलं लिखितवान्। यत्रान्यस्मिन् रामायणे चित्रकूट प्रसंगस्य कतिपय पद्यैरेव वर्णनं विलोक्यते। चित्रकूटं प्रति कवेः भक्तिः श्रद्धा चाऽद्भुता दृश्यते। **पञ्चपञ्चाशत् (५५) पद्येषु चित्रकूट शोभा वर्णनं माहात्म्य वर्णनं च विद्यतेऽत्र।**

श्रीरामः देवैरप्यज्ञेयः। अस्माकं कृते तु सर्वथाऽगम्योऽगोचरः स्वकीयामेव सृष्टिशोभां चित्रकूटविशिष्टतां भगवतीं सीतां परिदर्शयन् लौकिकलीलां विलोकयति परमात्मा रामः। **(पद्यम्**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

७४० । अस्य पटलस्य प्रथम पद्यम् ।) रामोऽब्रवीत्, हे सुनयने । पश्य चित्रकूट शोभां यत्र मेघाकारका: सुप्ता: गजा: एलालवंग लता:, पार्वत्य अजा: स्फटिक प्रस्तरा: सुशोभन्ते । यत्र पर्वत शिखरात् श्वेत-जलधरा: नि:सरन्ति याश्च भगवत: शिवस्य जटाजूटात् निर्गता-गङ्गेव विभाति । पश्य गर्भवतीं हस्तिनीमेकां यस्यै तत्पति: हस्ती स्वहस्तै: (शुण्डै:) सुमधुर मधूनि नीत्वा तस्या: मुखे निक्षिपति ।

अत्र किन्नरगणा: पार्वत्य दाम्पतीनां प्रीत्यै मधुरं गानं गीयन्ते । पार्वत्या: कुद्दालादिकेन भूमिगत कन्दफलं नि:सारयन्ति **(अद्यापि चित्रकूटे स्फटिक शिलातट समीपं कन्दमूलफलं प्रसादरूपेण विक्रीयन्ते यच्च दर्शका: सादरं क्रीणन्ति) ।**

यत्र भ्रमरावृत लताभि: पुष्पाणि पतन्ति प्रायस्तव पादपूजार्थमेव हे विशाल सुदीर्घ श्यामल केशपाश धारिणि सीते, सर्वत्राकाशान् यज्ञ धूमराशयो विकीर्णा: सन्ति । तत्र मणि माणिक्यमये प्रस्तर खण्डे पतिता: सूर्यरश्मय: सविशेषं विद्योतन्ते । वयोवृद्ध तपस्विनां कमण्डलौ स्व शुण्डेन गज: तत्रत्य तीर्थ जलं प्रक्षिपति । विचित्रेयं स्व छटा । तपस्विनां होमाग्नि मयूरा: स्वकलापै: प्रज्वालयन्ति ।

एवं भूत चित्रकूटस्थ तपस्विन: रामस्य स्वागतार्थं तत्रोपस्थिता: वभूवु: । तेषां स्वागत सत्कारमादाय राम: तत्र लक्ष्मण निर्मित पर्णशालायां सीतया सह प्रविश्य विश्रामं चकार । इयं च पर्णशाला मायारहितं मन: परमादरणीयो वेद: पवित्र क्षीरसागर: ब्रह्मनिवास स्थानं वैकुण्ठतुल्यमेवास्ति यत्र रामो निवासमाससाद । पुष्पादप्यधिक कोमल पाद पद्मिनी सीताऽत्र पर्णशालायां निवसति या च ,पर्णशाला सर्वगुणोपेतेन वन्दनीयेन ममानुजेन लक्ष्मणेन विनिर्मिता विद्यते । रामेण तत्र लक्ष्मण: सम्बोध्यते यत् कार्येऽस्मिन् पर्णशाला-निर्माणे महत्कष्टं त्वयानुभूतमिति खिद्यते मे मन: । लक्ष्मण: परमदु:खित: सन्नब्रवीत् नेदं मम दु:खम् इदं तु मत्कृते महत् सुखम् । दु:खं तु केवलं भवतामेवं वनवास एव ।

एवं रूपेण राम: सीतालक्ष्माणाभ्यां सहितस्तत्र पावने चित्रकूटे चिरं तस्थौ विचचार च । **यत्रत्य मन्दाकिनी धारासीताया: स्नानेन**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पूता जाता। इत्थमिदं चित्रकूटं सर्वथा श्रेयस्करं प्रेयस्करं तपः पूतं च विराजते। (कथ्यते यदत्र रामचन्द्रः सार्धैकादश वर्षं (११½) यावत् निवासं चक्रे। शेषं च द्वि वर्ष षड्मासानि च पञ्चवट्यां समुद्र तटे च निनाय यतोहि चतुर्दश वर्ष पूर्तिदिने एव अयोध्यामागतवान्।)

पल्लिप्‌पडैप्‌ पडलम् (चितार्पणपटलम्)

गुरु वसिष्ठस्याज्ञया दक्षाः चतुराश्च दूताः भरतानयनार्थं त्वरितमेव कैकेय देशं प्राप्ताः। निवेदितवन्तः यत् पितुः सन्देशं नीत्वा अयोध्यातः वयम् समागताः। सन्देशमिमं राजभवने श्रुत्वा भरतः तत्क्षणमेवागत्य पृष्टवान यत् किं चक्रवर्ती अस्वस्थो वर्तते ? चतुरो दूतः ब्रूते सर्वं सुदृढ़ं वर्तते। इदं च पत्रं वर्तते तालपत्रे लिखितं तत्पत्रं भरतः पठितवान्।

ततः शीघ्रमेव मुहूर्त्तादिकम् उपेक्ष्य सुसज्जित रथैः अयोध्यां प्रति प्रस्थितः मार्गे च विविधवन्य जन्तूनां पशुपक्षिणां नरनारीणां च दर्शनं जातम्। कोशल देशे प्रविष्टः सन् भरतेन दृश्यते यत् पुनः पुनः यन्त्रेण पीड्यमानाः इक्षुरसाः क्षेत्रे प्रवहन्ति क्षेत्रे कर्षणं न भवति तत्र जलमपि नास्ति वृक्षे मिष्टफलानि सन्ति किन्तु न कोऽपि तानि त्रोटयति। एतत् सर्वं अमङ्गल सूचकं दृश्यं दृष्ट्वा भरतः कियान् चिन्तितो जातः। अथ च कोशले नृत्य गीतादिकं न भवति सर्वत्र सर्वे मौनावलम्बिनः। अयोध्या नगरे प्रासादेषु राष्ट्रध्वजाः नोल्लसन्ति।

इत्थं दर्शं दर्शं शत्रुघ्न सहितः भरतः अयोध्या राजभवनं समागतवान्। तत्र सर्वत्रोदासीनतां दृष्ट्वा सर्वप्रथमं स्वमातरं निकषा गत्वा प्रणामं कृत्वा पृष्टवान् यत् किं पूज्यः पिता स्वस्थो वर्तते। कैकेयी कथितवती तव पिता देवैः सम्मानितो भूत्वा देवलोकं गतः। उक्तञ्च यत् शोकं माकुरु। इति श्रुत्वैव भरतः मूर्च्छितो जातः। नेत्रैः अश्रुधारा प्रवहिता चेतनां प्राप्य कथितवान् यत् त्वां विहाय एवं कठोरवचनं कथितुं कोऽपि न समर्थः। सौन्दर्यस्य साक्षात् प्रतिमूर्तिः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(तमिल भाषायां "यं गुरुगणं कथ्यते") भरतः दीर्घ निःश्वस्य विलापं कुर्वन् अवादीत् हे भानुकुलश्रेष्ठ पितः कथं श्रीरामं विहाय स्वर्ग गतवान्। चिर तपस्यया पुत्ररूपे प्राप्ताय रामाय राज्यदानं विहाय कथं देवलोकं प्राप्तः।

एवं विलपन्तं भरतं दृष्ट्वा कर्कशभाषिणी कैकेयी कथितवती पिता तुभ्यं राज्यं दत्वा रामाय चतुर्दश वर्ष यावत् वनवासस्याज्ञां प्रदाय स्वर्गं गतवान्। अकस्मादेवं श्रुत्वा भरतः स्तब्धसंज्ञो जातः। उक्तं च कथमिदं जातम् किमियं वार्ता, केयं दुर्घटना ? इति श्रुत्वा कैकेयी अवदत्। चक्रवर्तिना पुरा मह्यं वरदानद्वयं प्रदत्तम्। अहमेव तयोरेकं तुभ्यं राज्यं द्वितीयं च चतुर्दशवर्ष यावत् रामवनवासं याचितवती। राजा प्रतिज्ञानुसारं तथैव कृतवान्। किन्तु रामवन-गमन शोकं सोढुमशक्तः राजा प्राणाँस्तत्याज।

इत्थमिदं श्रुत्वा भरतस्य हस्तौ कर्णयोः समागतौ नेत्रे आरक्ते संजाते, दीर्घनिःश्वासैः स कम्पयामास। क्रोधावेशेन भरतः यदा भूमौ पादौ पातितौ तदा भूकम्पवत् धरणी कम्पिता जाता। मातरं प्रत्यवादीत्। यद्येवं कठोर वचनं श्रुत्वापि यद्यहं तव वधं न करोमि तत्रैकमेव कारणं यत् रामः रुष्टो भविता। प्रथमं त्वया मह्यम् स्तन्यं (दुग्धपानं) प्रदत्तम् अधुनाऽनन्तकलङ्कः प्रदत्तः। त्वं पिशाचिनी पति-प्राणान् पीतवती। एवं क्रमेण महता कटुवचनेन भरतः मातरं कैकेयीं भर्त्सयामास। तदनन्तरं भरतः मातरं कौसल्यां निकषा समागतवान्। माता तमवलोक्य विलपन्ती सर्वं कथितवती। भरतेन तत्र महान् प्रलापः कोलाहलः शोकप्रकाशश्च कृतः। तत्सर्वमाकर्ण्य कौसल्या सर्वथा समाश्वस्ता जाता। यदत्र भरतस्य न कुत्रापि किमपि ज्ञानमस्ति। तथापि कौसल्या पृष्टवती यदेतद्विषये पूर्वतः किं किमपि जानासि।

प्रश्नवाचकमिमं वाक्यं श्रुत्वैव भरतो महान् विह्वलो भूत्वाऽवो-चत्। पितुः मातुः गुरोः भ्रातुः राज्ञः एतेषां पञ्चमहाजनानां बालस्य स्त्रीणां च हत्यायां यानि पापानि भवन्ति तानि सर्वाणि मह्यं स्युः यदि मम पूर्वतः किमपि ज्ञानमासीत्। एते यस्मिन्नरके गच्छन्ति तत्रैवाहम् शीघ्रं गच्छेम यदि एतस्य महतः पातकस्य पारम्परिक-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रूपेणापि कोऽपि मम सम्पर्कः स्यात्। इत्थं च वहुविस्ताररूपेण भरतेनोक्तम्। (**इत्थं कथाऽन्यस्मिन् रामायणे नैवावलोक्यते।**)

कौसल्यातु केवलं परीक्षार्थमेव भरतमेवं मति सामान्यरूपेण पृष्टवती। तदनन्तरं माता कौसल्याऽब्रवीत्। तव पितुर्मरणस्य सप्त-दिनानि व्यतीतानि। पुत्रैर्यदन्तिमं कर्मादिकं क्रियते तत् त्वरितमेव भवता विधेयम्। मातुराज्ञां प्राप्य भरतः ऋषिणा सह तत्र गतः यत्र दशरथस्य शरीरं तैलपात्रे सुरक्षितमासीत्। तं दृष्ट्वा पुनः भरतोऽति विह्वलः सन् क्रन्दति चीत्कारं कृत्वा रौति। सर्वे समुस्थिताः जनाः तं सान्त्वयामास।

तदनन्तरं दाहपूर्वविधिविधानानुसारं चितां विरच्य तदुपरि दशरथस्य शरीरं स्थापयामास। भरतः दाह संस्कारार्थमुद्यतः। तदा गुरू वसिष्ठेनोक्तम् भरत तव पिता अन्तिमक्षणेऽति दुःखितः सन् तव मातुः कुकर्मणा त्वां दाहाद्यन्तिम कार्येणवर्जितवान्। ततश्च स देहं तत्याज। एवं कथयन् वसिष्ठः महान् दुःखितो जातः किन्तु शत्रुघ्नं निर्दिष्टवान् संस्कारादि कर्म कर्तुम्। तथैव जातः।

तत्र दशरथस्य षष्ठि सहस्र पत्न्यः चितामभिरूह्य पुण्यलोकं गतवत्यः। ततः सर्वं संस्कारादि कर्म यथा विहितम् शास्त्रानुसारं दस दिन पर्यन्तंविहितम्। दीनेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो वहुशो धनानि-गवादिकं च दाने प्रदत्तानि। एवं च दशरथस्यान्तिमसंस्कारादि कर्म सम्पन्नम्। (**अत्रत्येयं कथा सर्वथा नूतना। नान्यस्मिन् कस्मिन्नपि भारतीय वाङ्मय रामकाव्ये इत्थं वर्णनमुपलब्धं। अस्य मूलं तु कविरेव कथितुं क्षमोऽभविष्यत् यदि स जीवितोऽभविष्यत्। अस्य टीकाकाराः अपि सर्वेऽत्र मौनीभूताः सन्ति।**)

ततश्च समे नागरिकाः विद्वांसः राज्य पार्षदाश्च राज्य संचाल-नार्थं भरतसमीपमाययुः।

आरूशैल् पडलम् (मार्गगमन पटलम्)

महर्षिः वसिष्ठस्तु भरतसमीपमेवास्ते। सर्वे मन्त्रिगणाः पार्षदाः प्रमुखनागरिकश्च समुपस्थिता वभुवुः। तत्र सुमन्त्रस्तु वेदनया

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मौनमेवासीत् किन्तु संकेतेन वसिष्ठं निवेदयामास । वसिष्ठ उवाच । हे रघुकुलभूषण ! राज्यमिदं त्वया संचालनीयम् इदं तु तव कर्त्तव्यम्, अयमेव धर्मः, इयमेव नीतिः ।

इदं श्रुत्वैव भरतः शिथिलो विचलितो जातः । नेत्राभ्यामश्रुधारा प्रवाहिता । मूर्च्छितो बभूव । कियत्कालनन्तरं चेतनां प्राप्य अवादीत् । यदि सर्वगुणोपेतं रामं विहाय मया राज्य-मुकुटं धार्यते तर्हि मम मातुः कुकृत्ये को दोषः । यदि भवन्तः एवं स्वीकुर्वन्ति किं तर्हि त्रेता द्वापर युगमतिक्रम्य पापिष्ठः कलियुगः समागतः ? इत्युक्त्वा पुनः स्वकीय संकल्पं घोषयन्नवोचत् ।

अहं भवद्भिः साकं वनं गत्वा पूज्याग्रजं रामं संप्रार्थ्य परावर्त्य च तस्मै राज्य किरीटं भवद्भिः प्रदास्यते । अन्यथा अहमपि वने निवसन् कठोर तपः करिष्यामि प्राणान् वा त्यक्ष्यामि ।

इति श्रुत्वा सर्वे सभासदः भरताय भूयोभूयः शुभाशीर्वचनं प्रदत्त-वन्तः । भरतस्य वनगमनसूचनां नगरवासिभ्यो देहि इति शत्रुघ्न-मादिदेश ।

घोषणामिमां ज्ञात्वा अयोध्यानगर निवासिनः समस्तबालवृद्ध-वनिताश्च भरतेन साकं रामानयनार्थं वनं प्रस्थितुमुद्यताः बभूवुः ।

वन प्रस्थानदृश्यं तु सर्वथाऽभूतपूर्वं विचित्रमासीत् । कथं नगर-वासिनः समुत्साहत्य आसन् कथं च ते निज शरीर रक्षामपि विस्मृत्य मनसा आत्मना च राममन्वेष्टुमेव संलग्नाः इति विस्मयजनकम् ।

भरतेन साकं गच्छन्त्यः राज्यसेनाः मार्गस्थ समस्त नदी नद जलानि पीत्वा तं रिक्तं चक्रुः असमभूमिं च समतलं कृतवन्तः । **अत्र ६८२ पद्ये तमिल क्षेत्रस्य विशेषतां वर्णयन् कविः ब्रूते ।** तमिल क्षेत्रस्य प्रथमाचार्यः अगस्त्यः बभूव । स च सम्पूर्ण समुद्रजलं पीत्वा भूमेः स्थिरतां विधाय विन्ध्य पर्वतं पाताले प्रेषितवान् । तमिलक्षेत्रे प्रसिद्धमिदं यत् पार्वत्याः विवाहे सर्वे जीवाः दक्षिणादुत्तरांदिशमाग ताः । फलतः दक्षिण भागः उपरि उत्थितः । ततः परमेश्वरेण दक्षिण-भागं समीकर्तुं महर्षिः अगस्त्यः प्रेषितः । मार्गे विन्ध्यपर्वतोऽवरोधं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चक्रे तं च अगस्त्यः पातालं प्रवेशयामास। तदनन्तरं सः अगस्त्यः दक्षिण दिशमागतः। तदा स भागः समोऽभूत्। अतएव अगस्त्यः तमिलक्षेत्रस्य जनकः कथ्यते तत्रत्यजनैः। अगस्त्यश्च पाणिनि तुल्यो प्रथमः महावैयाकरणः आसीत्।

अत्र अगस्त्यस्य तुलना विशाल सैन्यैः सह कविना कृता। यतोहि सैन्य द्वारैव भूमिः समतला जाता। दक्षिण तमिल क्षेत्रमपि अगस्त्येन समं कृतम्।

अत्र कवेः तमिलक्षेत्रं प्रति महती श्रद्धाभक्तिर्दृश्यते।

पथि कोऽपि न किमपि ब्रूते सर्वेषां ध्यानं रामोपर्येव केन्द्रीभूतमस्ति। रात्रौ शत्रुघ्न सहितो भरतस्तत्रैव स्थितः यत्र सर्वप्रथमं-रात्रौ सीतालक्ष्मणाभ्यां सहितः रामः स्थित आसीत्। कन्दमूल फलाहारं विधाय रात्रौ भरतः न सुष्वाप। केवलं तत्रधूलधूसरितभूमावेव विश्रामं चकार।

गङ्गै काण् पडलम् (गङ्गादर्शनपटलम्)

एवंरूपेण भरतः कावेरीपरिपूत क्षेत्रात् गङ्गातटे सम्प्राप्तः। भरतस्य सेनायां अगणिताः अश्वाः गजाश्च आसन् ये च गङ्गाजलं तथापीतवन्तः येन गङ्गा क्षीणतरा जाता। भरतेन साकं षष्ठि सहस्र संख्याकाः अक्षौहिणी सेनाः आसन्। एवं विद्वांसः कथयन्ति। ताः सेनाः गङ्गायाः उत्तर तटे संप्राताः। इमां सेनां दृष्ट्वा तत्रत्यः निषादराजःगुहः क्रोधाविष्टो जातः। निषाद राजेनानुभूतं यत् सेना सहितः भरतः रामं विजेतुं समागतः। त्वरितमेव यमराज तुल्यः कठोरो निषाद्राजः स्वकीय सैन्यम् आदिदेश यत् यूयं सर्वे गंगातटं समावृणुत—आच्छादयत। येन भरतस्य सेना गङ्गापारं न गच्छेत्। निषादोऽब्रवीत् इमा भरतसेनाः अति तुच्छाः। तेषां सैन्यानां नाशः समुपस्थितः।

हन्त भरतेन इत्यपि नानुभूतं यत् रामेण साकं महापराक्रमी लक्ष्मणो वर्तते। मदीया विशाला दुर्जेया सेना वर्तते। मम शासने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कथं स गङ्गापारं गन्तुं शक्नुयात् । एवं चिन्तयन् एव निषादराजः आसीत् । तदैव निषादराजः रामचन्द्रस्य मित्रमस्ति इति श्रुत्वा विज्ञाय च भरतः महावीरं निषादराजं निकषा समुपस्थितः । तथाविधं म्लानं दुःखितं च भरतं दृष्ट्वा गुहः सहसा स्तब्धः सञ्जातः । मनसि चिन्तयामास यत् अयं तु रामचन्द्र तुल्य एव दृश्यते । सम्भवतः श्रीरामं प्रति अखण्ड भक्ति युक्तः प्रेममयः भरतः एवंरूपेण मम समीपे समागतवान् । निश्चितरूपेण भरतः रामं परावर्तयितुं गच्छति ।

एवं चिन्तयन् निषादः भरतसमीपमागत्य सादरं नमस्कारं कृतवान् । भरतश्च तं हृदयेन आलिङ्ग्य अश्रुधारया निषादमस्तकं सिक्तवान् । निषादेनागमनकारणं पृष्टः सन् भरतोऽब्रवीत् यत् अहं रामं प्रत्यावर्तयितुं सकलपुरजन-परिजन-भ्रातृभिः मातृभिः सहितः प्रचलितोस्मि । अत्र मम साहाय्यं करोतु ।

भरतस्योक्तिं श्रुत्वा निषादराजः हर्षातिरेके निमग्नः सञ्जातः । उक्तश्च यत् भवत् समानः सर्वगुण सम्पन्नः कोभतितुमर्हति। निषादमुखात् रामचन्द्रस्य सकल वृत्तान्तं श्रुत्वा भरतः शोक सागरे निमग्नः सञ्जातः । तथा तत्रैव गङ्गातटे वालुकायामेव स्थितो जातः । अन्यस्मिन् दिने एते रथाः सैनिकाः अश्वाः गजाश्च यथायोग्यं विभज्य यथायोग्यनौकासु संवाह्य गङ्गापारं कर्तुं प्रेषिताः निषाद राजेन । **(इयं कथा नूतना वर्तते यतोहि अन्यस्मिन् रामायणे नैवं दृश्यते ।)**

अन्यस्यां नौकायां च वसिष्ठेन मातृभिः सुमन्त्रेण शत्रुघ्नेन च साकं भरतः समुपविष्टवान् यत्र स्वयं निषादराज गुहः अपि आसीत् । तत्रैव निषाद्राजः सर्वेषां च परिचयं प्राप्तवान् ।

एवं च गङ्गापारं गत्वा यज्ञयाजने अध्ययनाध्यापने निरताः ब्राह्मणाः आसन् यैः साकं महान् तपस्वी भारद्वाज ऋषिः आसीत् । येषां पावनाश्रमं भरतः प्राप्तवान् । भरतस्य सर्वे विशालसहगामिनः अपि ससुपस्थिताः भरद्वाजाश्रमं संप्राप्तास्तत्र स्थिताश्च ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तिरूवडिशूट्टु पडलम् (पादुकाशिरोधारणपटलम्)

एतस्मिन् पटले भरतस्य स्वकीय परिजनैः तथा निषादराजेन सह चित्रकूट गमन वर्णनम् तत्रत्य कारूणिक दृश्य वर्णनम् राम-भरतयोः स्नेह भक्ति पूर्ण-संवाद-वर्णनम् तथा रामस्य पादुकां शिरसि निधाय अयोध्या परावर्तनवर्णनम् सुविशदं प्रेमभक्ति-श्रद्धा-परिपूर्णं विद्यते। अत्रैव अयोध्याकाण्डस्य समाप्तिरपि विद्यते।

विशेषता—कम्ब रामायण पाठनेन महाकवेः रचना शैल्याः सर्वत्र कवेः वर्णननैपुण्यं साहित्यिक सरस वर्णनं दक्षिण भारत भूभागं प्रति विशेषानुरागं प्रतिभाति।

कथा—भरद्वाजाश्रमे श्रद्धया विनयेन साकं तपस्विनं प्रति भरतः भक्तिभावं प्रदर्शितवान्। चन्द्रमौलीश्वर-शिव सदृशः मुनिरपि तस्मै अनन्तमङ्गलदायकम् आशीर्वादं प्रददौ। मुनिना पृष्टं यत् पित्रा प्रदत्तमपि राज्यं परित्यज्य कथं त्वं जटाजूटं कृत्वा मुनिवेषे समागतोऽसि ? इति श्रुत्वा भरतः क्रोधेन दुःखेन च कथितवान् यत् परम्परा क्रमम् उल्लङ्घ्य मह्यम् राज्य-प्रदानं सर्वथा विपरीत-मवज्ञाय तत् राज्यं श्रीरामचन्द्रं निकषा गत्वा तस्मै समर्पयिष्ये। यदि स न स्वीकरिष्यति तर्हि अहमपि चतुर्दश पर्यन्तं वनवासमेव करिष्यामि।

श्रीखण्डचन्दनवत् शीतलदायकं भरतस्येदं वचनं श्रुत्वा सर्वे मुनयः परां प्रीतिमुपागताः। ततश्च महर्षिभरद्वाजः निजाश्रमम् आनीतवान्। समस्त राज्य पार्षद परिजन सैन्य सहित भरतस्य स्वागतार्थं निजतपोवलेन स्वकीयाश्रमे स्वर्गमेव अवतारितः। तत्र समग्र राज्य सुख साधनानि भोजन शयनादि उपकरणानि नृत्यगीतवाद्य अप्सरादिकानि च समुपस्थापितानि मुनिना भारद्वाजेन। अयं तु भारद्वाजस्य तपोवल चमत्कारः एव आसीत्। यं दृष्ट्वा सर्वे चकित चकिताः विस्मय विमुग्धाः च जाताः।

अस्मिन् स्वागतसत्कारे अन्ये निमग्ना जाताः, तत्रैव भरतः केवलं कन्दमूलादिकं भुक्त्वा रजोयुक्त भूमौ एव सुप्त्वा रात्रिं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्यतीतवान्। प्रातः उत्थाय नित्य कर्मादिकं विधाय मुनेराज्ञामाशीर्वादं च नतमस्तकेनादाय चित्रकूटं प्रति प्रस्थितः। यत्र अग्रजः रामचन्द्रः निवसन् आसीत्। विशाल सागर तुल्यमागच्छन्तं सैन्यं दृष्ट्वा लक्ष्मणेन चिन्तितं यत् भरतः अत्रागत्य अस्मान् संहर्तुं समागच्छति। क्रोधाविष्टः लक्ष्मणः स्वकीय शर सन्धानं विधाय रामसमीपमागत्योक्तवान्। पश्यन्तु भवन्तः यत् भरतः विशालसैन्यैः सह अस्माकं विनाशार्थं समायति। कृपया आज्ञां प्रयच्छतु। अद्याहं चतुर्दशभुवनसंहारं करिष्यामि। इति सर्वं श्रुत्वा रामोऽब्रवीत्। लक्ष्मण ! यदि त्वं चतुर्दश भुवन संहारस्य संकल्पं विधाय युद्धार्थं गन्ताऽसि तर्हि को निवारयितुं शक्नोति ? किन्तु मदीयामिमां वार्तां सावधानेन श्रृणु।

किं त्वया इति न शोचितं यत् भरतः पितुराज्ञया मम स्नेहेन च अत्र आगच्छति **(अधुना पर्यन्तं पितुर्मरणसूचना नासीत्)**। किं त्वम् न पश्यसि भरतः कथं दुर्बलः नतमस्तकः शोकाकुलो वर्तते। भरतसदृशः प्रियतमः अनुजः किं माम् प्रति द्वेषभावं कर्तुं शक्नोति? भरतः कदापि राज्यमदोन्मत्तः स्वप्नेऽपि भवितुं नार्हति। एवं वार्त्तालाप क्रमे एव भरतः समुपस्थितः। तथाविधं शोकाकुलं भरतं हृदयेनालिङ्ग्य रामः विविध प्रश्नान् पृष्टवान्। शोकाकुलेन भरतेनोक्तम् यत् भवतां वियोगे पिता स्वर्गतः। अस्माकं च इयं दुर्दशा समस्त कोशल देश वासिनां च इमाः व्यथाः। सर्वं स्वयमेव पश्यतु। अहं तदधिकं पुनः न किमपि कथितुं शक्नुयाम।

वज्राघातसमं पितुर्मरणं विज्ञाय रामचन्द्रः मूर्च्छितो जातः कियत् कालानन्तरं चेतनां प्राप्तवान्। ततश्च समस्त राज्य परिजनैः मातृभिः सहितः ब्रह्मात्मजः वसिष्ठः रामं परितः समुपविश्य कथितवान्। हे सर्वज्ञ रामचन्द्र त्वम् जानासि। अनित्योऽयं संसारः सर्वे जीवाः मरिष्यन्ति एव तत्र शोक चिन्ता करणेन किं भविष्यति तव पिता तु कतिपय सहस्र वर्ष पर्यन्तं यज्ञ दान तपोभिः वीरभावेन जीवनं यापितवान्। दैववशात् इयमेव गतिरासीत्। अतएव शोकं परित्यज्य अधुना स्वर्गतस्य पितुः शास्त्ररीत्या उदक संस्कारादिकं करोतु अत्रापि वसिष्ठेन मृत्युकाले दशरथस्योक्तं श्रावितं यद् भरतः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्राद्धकर्मणा राज्ञा कारितः। रामचन्द्रः वसिष्ठेन साकं मन्दकिनीतटमागत्य वसिष्ठद्वारा रामः कियत् कालं तूष्णांभूतोऽब्रवीत्।

अधुना मया सहैव ममाज्ञया भरतोऽपि सर्वमन्तिम कृत्यं करिष्यति। ततः यथा विहितं कारितं कर्म कृतवान्। तदनन्तरं सर्वे चित्रकूट-समीपस्थ पर्णशालामागतवन्तः। तदा सीता श्वसुर मरणं ज्ञातवती। अति पीडितां सीतां मन्दाकिनी गङ्गातटमानीय स्नानादिकं कारितवती। एतदनन्तरं रामेण पृष्टम्। भरत, चक्रवर्ती तु चिरनिद्रां लब्धवान् तेन प्रदत्तं राज्यं तव वर्तते। कथं त्वमेवं जटामुकुटधारी वर्तसे। इति श्रुत्वा भरतः अवादीत्। मम पिता यत् कृतवान् मम माता च यद् दुखं सर्वस्मै प्रदत्तं तत्सर्वमवर्णनीयं वर्तते। केवलमित्येव निवेदनं यत् भवन्तः दयापूर्वकम् अयोध्यां परावर्त्य स्वकीय राज्यं शासनं च संचालयन्तु। अस्माकं भ्रातृणां च सेवां गृह्णन्तु।

रामचन्द्रः प्रत्युक्तवान्। अहं तु चतुर्दश पर्यन्तं वनवासे एव स्थास्यामि। त्वम् ममाज्ञयाऽपि तावत् पर्यन्तं राज्य शासनं कुर्वन्तु। रामस्य इत्थं प्रतिज्ञां श्रुत्वा वसिष्ठादयः अपि सम्मतिं प्रदत्तवन्तः। अन्ते च भरतः कातरभावेन नम्रता पूर्वकं निवेदितवान् यत् यदि एवमेव वर्तते तर्हि मह्यम् स्वकीय पादुकां ददातु। इमां पादुकामेव प्रतीकरूपेण राज्यसिंहासने संस्थाप्य मुनिवेषेनैव अहं चतुर्दश वर्ष-पर्यन्तं राज्यशासनं संचालयिष्यामि। किन्तु यस्मिन् दिने एव चतुर्दश वर्षाणि पूर्णतां प्राप्स्यन्ति तस्मिन् दिने यदि भवन्तः अयोध्यां नागमिष्यन्ति तर्हि तस्मिन् दिने सूर्यास्त समये एव अहम् अग्नौ प्रविश्य प्राणान् त्यक्ष्यामि इति निश्चतरूपेण भवत् सौगन्धं कृत्वा ब्रवीमि। सर्वैः इदं श्रुतम्। रामचन्द्रेण पादुका प्रदत्ता। तां शिरसि निधाय भरतो ब्रूते इदमेव मम किरीटम् मुकुटम्। साष्टाङ्गं भरतः रामचन्द्रं प्रणम्य प्रस्थितवान्। तथा सर्वाः मातरः अपि प्रस्थितवन्तः। आकाशात् देवगणाः पुष्पवृष्टिं चक्रुः। रामस्याज्ञया निषाद राजोऽपि परावर्तितः। सनातन ऋषिः भरद्वाजः अपि परावर्तितः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(भरद्वाजागमन कथा नूतना)

भरतः पादुकां शिरसि निधाय गङ्गापारं गत्वा अयोध्यामागत्य रात्रौ जागरणं च कृत्वा प्रातः नन्दिग्रामे पादुकां संस्थाप्य अश्रुपूरित-नेत्रैः मुनिव्रत-युक्तैः राज्य-शासनं भरतः चकारः। अनन्तरं रामेण चिन्तितं यत् अयोध्यावासिनः ज्ञातवन्तः यत् वयमत्र चित्रकूटे तिष्ठामः। अतएव इयं संभावना निश्चता जायते यत् यदा कदा ते अत्रागत्य मम तपस्यायां विघ्न-बाधां दातुं शक्नुवन्ति। इत्थं विचार्य सीता लक्ष्मण सहितः रामः चित्रकूटात् दक्षिणस्यां दिशि प्रतस्थे।

विशेषः—(क) अस्मिन् रामायणे भरद्वाजस्याऽपि चित्रकूटागमन-वर्णनं वर्तते यद् अन्यस्मिन् रामायणे न विद्यते।

(ख) अत्र च भरत-राम संवादे अन्य रामायणवत् तथा कथा न विद्यते यथा अन्यत्र।

(ग) भरतस्य अयोध्याप्रस्थानानन्तरं त्वरितमेव रामचन्द्रस्य चित्रकूट परित्याग वर्णनमपि नूतनम्।

(घ) षष्ठिसहस्रसैन्यैः सह चित्रकूटे भरतागमन वर्णनमपि नूतनम्।) अस्मिन् रामायणे सहस्त्र, लक्ष, कोटि, अर्वुद संख्याना-मुल्लेखः कथं किमाधारकमित्यनुसन्धेयम्।

॥ इति अयोध्याकाण्डम् ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अरण्य-काण्डम्

विरादन् वदैप् पड्लम् (विराधवध पटलम्)

अस्मिन् काण्डे द्वादश पटलानि सन्ति । तत्र सर्वप्रथमं चित्रकूटात् प्रस्थान काले महर्षि-अत्रेराश्रमं गत्वा तत्र रात्रिमेकं व्यतीय अग्रे गमन मार्ग ज्ञानं प्राप्तवान् । तथा अत्रि-पत्नी अनसूयाद्वारा सीतायै विविधोपदेश प्रदानं तथा सिन्दूराद्याभरणप्रदानं तथा वर्णितम् अस्ति । ततश्च वनगमनमार्गे त्वरितमेव विराध राक्षसस्य आक्रमणं जातम् । सम्पूर्णे अस्मिन् पटले महावलशालिनः विराधस्य विकरालरूपस्य वर्णनेन सह भयंकर युद्धस्य विशदवर्णनं तथा विराध राक्षसस्य संहार वर्णनं सुविशदं विद्यते । अतएव अस्य पटलस्य विराधवधपटलम् इति नाम कृतं कविना ।

अस्य पटलस्य प्रथम पद्यं भगवतो रामचन्द्रस्य महिमा वर्णन युक्तं मङ्गलाचरणं विद्यते । तत् पद्यं निम्नाङ्कितं मूलरूपेण समुद्धृतम् ।

पेदियाडुनिमिर् पेद वसवम् पिर्ल्हिला,
ओदि योदियुण रुन्दास मुणर्च्चि युद्दम् ।
वेदम् वेदियर् विरित्रजत् मुदलोर्ताटिला,
आदिदेवरवर्म् मर्रिकितुक् करिव्रो ।

तत्पद्यस्य संस्कृतपद्यानुवादः

यो नित्यः शाश्वतोऽयं सकल गुणयुतो निर्गुणो भेदहीनः,
यं वेदाः ज्ञान गम्यं निखिभुवनमयं नेतिनेतिब्रुवन्ति ।
साक्षाद् ब्रह्मात्मकं यं दशरथ तनयं न विदुस्तत्स्वरूपम्,
सोऽयं मे हीन बुद्धौ प्रविशतु कृपया सर्वदा रामचन्द्रः ।

अत्रि आश्रमे रात्रौ विश्रम्य अत्रि अनसूयाभ्याम् आशीर्वचनं गृहीत्वा द्वितीय दिने प्रातः कालं दण्डकारण्य नामकं वनं प्रविवेश । सहसा तत्र विकराल राक्षसः विराधः समक्षमायातः । यस्य विराधस्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्रूर रूपस्य वर्णनं कविना चतुर्दश पद्येषु विस्तृत रूपेण कृतम्। तेषां अयं सारांश: विराधस्य हस्ते एक: भीषण: त्रिशूल: आसीत्। य: त्रिशूल: विचित्राकारक: अद्भुत: आसीद्।तस्मिन् त्रिशूले षोडशमत्त-गजानां द्वात्रिंशत् सिंहानां तथा षोडश शरभ नामक विशालाकाराणां जन्तूनां संश्लिष्टा: पिनद्धा: आकारत: आसन्। शास्त्रे षड्जिह्वा-युक्त: अष्टापद सहित: शरभ: भयंकर: जन्तु: भवति इति वर्णनं दृश्यते। अत्र कम्ब कविना कठोर दन्त तीक्ष्ण नख विशाल शुण्ड पक्षद्वययुक्त: अयं जन्तु: जायते इति वर्णित:। केनापि रूपे शरभ: भयंकर: विद्यते इति तु निश्चितम्।

(शरभस्य चर्चा महाकविना कालिदासेन स्वकीय मेघदूत काव्ये "ये संरम्भोत्पतन-रभसा: स्वाङ्गमङ्गाय तस्मिन् मुक्त्वाध्वानं सपदि शरभा:, लंघयेयुर्भवन्तम्" इत्यस्मिन् पद्ये कृतम्। फलत: शरभ: भयंकरविशाल: दुर्दान्त: जन्तुर्वर्तते नात्र सन्देह:। **एवं प्रकारकस्य त्रिशूलस्य वर्णनं न वाल्मीकिना नान्येन कविना वा कृतम्।**)

विराधस्य शिरसि कुञ्चिता रक्त केशा: आसन्। तस्य आगमन-गत्या पर्वता: छिन्नभिन्ना: जाता:। तस्य वक्षसि शुङ्गवीर नामिका जयमाला आसीत् यस्यां मालायां अष्ट सर्पनायकानां फणा: आसन् तथा नवग्रहाणां ग्रन्थय: आसन्। याभ्य: ध्वनि: जायतेस्म। यदा स चलित: तदा कैलाश पर्वतं मेरुपर्वतं च कन्दुकवत् उच्छालयन्तं दृश्यते स्म। तस्य वज्रस्वरेण भयंकर स्वरूपेण च स्वयमेव वृक्षा: पर्वता-दयश्च धराशायिन: बभूवु:। स मांसं चर्व्यमाण्या: कठोर स्वरेण चीत्कारं कृतवान्। यत् रे वनवासिन् भाग्यहीन मानव तत्रैव तिष्ठ। इत्युक्त्वा स एकेन हस्तेन सीतामुत्थाय आकाशमार्गे प्रस्थित:। इदं दृष्ट्वा राम-लक्ष्मणौ कुपितौ भूत्वा कथितवन्तौ। रे वञ्चक कुत्र गन्तासि ? तिष्ठ परावर्तस्व। इदं श्रुत्वा विराधेनोक्तम् अरे मूर्ख, सृष्टि कर्त्ता ब्रह्मा मह्यम् वरदानं दत्तवान्। तेन वरदानेन मां कोऽपि किमपि कर्तुं न शक्नोति। इदमेव पर्याप्तं यत् अहं युवाम् त्यजामि। इमां सुन्दरीमादाय गच्छामि। राम: मन्दं मन्दं हसन् धनुषि प्रत्यञ्चा वाणं च सन्धाय भीषण धनुष्टङ्कारं कृतवान्। तेन नादेन शङ्कित: विराध: सहसा सीतां भूमौ निक्षिप्य क्रोधाभिभूत:

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रामोपरि स्वकीयं भयंकरं त्रिशूलं प्रक्षिप्तवान् । यस्य त्रिशूलस्य वर्णनं उपरि विद्यते ।

रामचन्द्रस्य वाणेन स त्रिशूल: छिन्न भिन्नः संजातः । छिन्नं भिन्नं त्रिशूलं दृष्ट्वा विचलितः विराधः एकं शालवृक्षमुत्पाट्य रामं प्रहर्तुं चलितः । अत्र कविः कथयति यत् **यः रामः प्रणवस्य-ॐकारस्य-अर्थः ज्ञानिनां ज्ञानम् सर्वाभीष्टदायकः धर्मस्थापनार्थाय दुष्टनाशार्थाय क्षीरसागरस्य शेष शय्यां परित्यज्य भूमौ अवतरितवान् तं विष्णुस्वरूपं रामं मूर्खो विराधः एकेन वृक्षेण मारयितुमुद्यतः । इदमपि न तेन ज्ञातं यत् एकेनैव शरेण यस्य अद्भुतः त्रिशूलः खण्डितो जातः स रामः कथं वृक्षेण हन्यते । (अत्र कविना परब्रह्मस्वरूपस्य रामस्य पुनः पुनः वर्णनं कृत्वा स्मारयति यद् रामः परमात्मा)** ततश्च रामः चतुर्भिर्वाणैः तं वृक्षं खण्डितवान् तथा च द्वादश वाणैः तस्य स्कन्धं उरश्च चिच्छेद । व्यथितः सन् स विराधः भूमौ पतितः । रामलक्ष्मणौ तस्य स्कन्धयोः आरूढौ जातौ । तेन सह राक्षसः पक्षिराज गरुड तुल्यः दृश्यते स्म । सहसा पुनः उत्थाय स राक्षसः प्रचलितः । सीता एवंभूतां स्थितिं दृष्ट्वा विचलिता जाता । किन्तु रामस्य तु इदं नाटकमासीत् । यत् यस्य आतंकेन समस्तं दण्डकारण्यं निष्प्राणभूतमासीत् तस्यैव स्कन्धयोः उभौ भ्रमतः । रामेणोक्तं अस्माभिः तु दक्षिण दिशि गन्तव्यमासीत् अतएव अस्य स्कन्धोपरि एव कथं न गन्तव्यम् । पथ-यात्रायां क्लेशोऽपि न भविष्यति । किन्तु सीता चिन्तिता वर्तते सा कथं गमिष्यति । फलतः अस्य उभौ स्कन्धौ शरीरात् विच्छिन्नौ कृतवान् ।

ततश्च तस्य राक्षसस्य ज्ञानशक्तिः सहसा समुदिता यत् अयं रामचन्द्रः साक्षात् परब्रह्मरूपः वर्तते । इति ज्ञात्वा स स्तुतिं चकार । यत् भवान् एव आदि-परब्रह्म-स्वरूपः परमात्मा विद्यते । समस्तं जगत् तवाधीनम् । सर्वेषां धर्माणां आधारो भवान् एव । माम् उद्धर हे भगवन् । ततो रामेण पृष्टं तव इयं स्थितिः कथं जाता । तेनोक्तं अहं तुम्बुरु-नामकः कुबेराधीनः स्वर्गवासी गन्धर्वः आसम् । एकदा इन्द्रसभायां नर्तकी रम्भा नृत्यतिस्म । मम मनः तस्यां रम्भायाम् अनुरक्तं जातम् । एतेनैव अपराधेन कुबेरः शापं ददौ यत् त्वम्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राक्षसपुत्रो भव। पुनः पुनः प्रार्थितः कुबेरः प्रोक्तवान् यत् यदा श्रीरामचन्द्रस्य चरणस्पर्शो भविष्यति। तदा त्वं पुनः पूर्वरूपं प्राप्स्यसि। अहं किलिञ्जननामक राक्षसस्य पुत्रः अभूवम् यः सर्वत्र भ्रमन् जीवजन्तुं नाशयामास। (**वाल्मीकि मतानुसारं विराधस्य पितुः नाम जयः। मातुः नाम शतह्रदा आसीत्।**

इत्थं हि विराधं शापमुक्तं कृत्वा पुनः तुम्बुरू रूपेण यक्षलोकं प्रेषितवान्। रामश्च सीता-लक्ष्मणाभ्यां सहितः ततः शरभङ्ग ऋषेराश्रमं प्रचलितवान्। (**अध्यात्मरामायणानुसारं विराधेनैव शरभङ्गाश्रमगमनस्य परामर्शः दत्तः**)।

शरबङ्रपिर्पपु नीङ्ग्र पडलम् (शरभङ्गमुक्ति पटलम्)

सीतालक्ष्मणाभ्यां सहितः श्रीरामः शरभङ्ग ऋषेराश्रमं सायंकाले प्राप्तवान्। सीता च कुरा नामक पुष्पेण कोङ्गुनामक पुष्पकोरकेन च अलङ्कृता आसीत्। शरभङ्गाश्रमे मराम नामकः वृक्षः विशेषरूपेण आसीत् वृक्षात् मधुनः सुवासः प्रस्फुटितो जायते। (**मराम नामक दक्षिण भारतीय पुष्प वृक्षस्य कुंकुम वृक्ष इत्यपि कथ्यते। अर्थात् कुंकुमः अस्मादेव वृक्षात् समुत्पद्यते**)।

यदा श्रीरामचन्द्रः तत्रागतवान् तदैव सहस्राक्षः इन्द्रः समुपस्थितवान्। तेन सह सुराङ्गनाः अपि आसन्। इन्द्रस्य शतमखः शतयज्ञकारी अस्ति अतएव त्रिदेवं विहाय सर्व देवैः वन्दनीयोऽयम्। तेन सह इन्द्रस्य पत्नी लक्ष्मी सदृशा शची अपि आसीत्। इन्द्रः तत्र आगत्य यावन्नोपविष्टः तावत् महर्षिणा स्वागतानन्तरं तत्रागमनकारणं पृष्टम्। इन्द्रेणोक्तम् ब्रह्मणा तव दीर्घ तपस्यया प्रसन्नः सन् तव स्वर्गगमनार्थमादिष्टः। अतः दीर्घ तपस्यया प्राप्तं सत्यलोकं भवन्तः प्रचलन्तु। तत्र स्वयं ब्रह्मा भवतां स्वागतं करिष्यति। मुनिः अब्रवीत्। हे देवेन्द्र! नेदं सत्यलोक पदं प्रशंसा योग्यम् इदं ज्ञातम् यत् मम अन्तिमः समयः समागतः। हे महावैयाकरण इन्द्र। किं इदमेव नश्वरपदं प्राप्तुं मम इयती तपस्या आसीत्। अत्रापि ध्यानं ददातु भवान् (**ऐन्द्र नामक तमिल व्याकरणस्य रचयिता इन्द्र एव आसीत् इति कम्बकविः कथयति।**)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अहं तु तत्पदगिच्छामि वन्नक्षीय ते न वर्धते, शाश्वतमस्ति। तत् अक्षयपदमेव मोक्षपदं कथ्यते तदेवाहं प्राप्स्यामि। यदा महर्षिरेवं कथयन्नेवासीत् तदैव सहसा सीतालक्ष्मणाभ्यां सहितः श्रीरामचन्द्रः समुपस्थितः। प्रथमं तु रामेण श्रुतम् यत् आश्रममध्ये कोलाहलो जायते। अतएव सीता-लक्ष्मणौ वहिरेव परित्यज्य केवलं स्वयमेव आश्रमं प्रविष्टः। सहस्राक्षः इन्द्रः सहसा तस्य दर्शनं कृत्वा चरणे नतमस्तको जातः। कथितश्च यत् हे करूणानिधान, अस्माकं रक्षार्थमेव भवन्तः अवतारं गृहीतवन्तः। यद्यपि भवान् देशकाल-परिच्छेद रहितः न भवतां शत्रुमित्रम्। एवं इन्द्रेण पूजितः सन् सीतां लक्ष्मणं च आश्रम मध्ये समानीतवान्।

एतस्मिन् समये एव अत्र शरभङ्ग ऋषिः अग्निं प्रज्वाल्य तत्र प्रवेष्टुकामः आसीत्। तदैव रामेण पृष्टम् यत् इदं तु किं कर्तुमुद्यतो भवान्? शरभङ्गेनोक्तम्। मम उभे पापपुण्य कर्मणी विनष्टे जाते। अतएव अग्नौ प्रविशामि। कृपया आज्ञां देहि। रामेण पुनरूक्तम् यदा अहमत्र आगतवान् तदैव भवान् कथमग्निं प्रवेष्टुमिच्छति? महर्षिणा प्रोक्तम् सहस्र वर्ष पर्यन्तं मया तपस्तप्तं तेन तपोबल-प्रभावेण मया ज्ञायते यत् **यदा पाप पुण्ये उभे समाने भवतः तदैव भवद्दर्शनं (परमात्मनः प्रत्यक्षं) जायते**। स समयः समुपस्थितः।

अत्रेदं ज्ञेयं यदा पुण्यं किमपि वर्तते तदा स्वर्गो भवति। स्वर्गात् पुनः प्रच्यवनं भवति यदा किमपि पापं वर्तते तदा नरको भवति। नरकात् पृथिव्यां पुनरागमनं जायते। किन्तु यदा पाप पुण्ये किञ्चिद्रूपेणापि नावशिष्टे जायेते तदा मोक्षो भवति। स एव **भगवद्गीतावाक्यानुसारं "यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।" तथा च "यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह न स पुनरावर्तते न स पुनरावर्त्तते।"** इयमेव मोक्ष प्रक्रिया वेद वेदान्त-शास्त्रेषु प्रदर्शिता। तदेव शरभङ्गेन कथितम्।

भगवतो रामचन्द्राज्ञया शरभङ्गः पत्न्या साकं अग्नौ प्रविश्य अक्षर ब्रह्म पदं मोक्षपदं प्राप्तवान्। यं पदं यां गतिं च सर्वे ऋषयः साधकाः तपस्विनः इच्छन्ति। कविः कथयति यत् जन्म जन्मान्तर-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तपस्ययापि यत् पदं लब्धुं यदा कदा कोऽपि महान् तपस्वी एव प्राप्तुं शक्नोति। तत् पदं शरभङ्गेण साक्षात् परब्रह्म स्वरूपस्य सकल कल्याणकारकस्य वेदवर्णित भगवतो रामचन्द्रस्य समक्षमेव-प्राप्तम्। **(बाल्मीकि रामायणे पत्न्या सह प्रवेशस्य, शरभङ्ग-पत्नीनाम्नोऽपि कथा न विद्यते।)**

अहत् तियप् पडलम् (अगस्त्य पटलम्)

सकल लोक रञ्जकः धनुर्धरो रामचन्द्रः कोमलाङ्गी सीता वीर-लक्ष्मणाभ्यां सहितः शरभङ्ग ऋषेः गोलोकगमनानन्तरं मोक्षानन्तरं तस्मादाश्रमात् प्रस्थितः। तस्मिन् दण्डकारण्ये ब्रह्मणः रोमभिः समुत्पन्नाः सहस्रशः तपस्विनः भगवन्तं रामचन्द्रं दृष्ट्वा प्रसन्नाः बभूवुः। तेषां कृते रामस्यागमनं मरुस्थले सुधाधारा प्रवाह समं जातम्। राक्षसैः उत्पीडिताः मुनयः सान्त्वनां लेभिरे। ते अनुभूतवन्तः यत् राक्षस सागरे निमग्नाम् अस्माकं श्रीरामः उद्धर्तुं नौकावत् मिलितः।

श्रीरामः मुनिं नमस्कृत्य स्तुतिं च कृत्वा अपृच्छत्। भवताम् आज्ञां श्रोतुं समुत्सुकोऽहम्। तैरुक्तम् अहर्निशं वयं राक्षसैः सम्पीड्य-मानाः बलहीनाः धैर्यरहिताश्च सञ्जाताः। अस्मान् समुद्धरन्तु भवन्तः। सूर्यकुलभूषणो रामोऽब्रवीत्। यदि ते राक्षसाः मम शरणं नागच्छेयुः तर्हि दण्डकारण्यस्य का कथा समस्ते ब्रह्माण्डे कोऽपि तान् रक्षितुं न समर्थः।

यद्यपि मम पिता-चक्रवर्ती दशरथः दिवंगतः सर्वाः मातरः पीडिताः सन्ति। भक्तोऽनुजो भरतः शोकितो वर्तते। तथापि मम वनागमनं मम पुण्यस्य फलं विद्यते। यतो हि ये गो ब्रह्मणान् निर्बलांश्च रक्षन्ति ते एव वन्दनीयाः जायन्ते। इति श्रुत्वा मुनिभिरुक्तम् प्रभो, यदि भवान् कुपितो भवेत् तर्हि लोकत्रयाणां का कथा कोटि कोटि लोकाः भवतां समक्षमागन्तुं न शक्ष्यन्ति इवि वेदाः कथयन्ति। वेद पठनेन च वयमपि ज्ञातवन्तः। एवं श्रुत्वा दशवर्षाणि यावत् तस्मिन्नेव दण्डकारण्ये वसतिं चक्रे। राक्षसानाम् उपद्रवाः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विलुप्ता: जाता: । **(दण्डकारण्ये दशवर्षाणि यावत् रामो निवासं चकार इयं नूतन कथा अस्मिन् रामायणे विद्यते ।)**

दशवर्षानन्तरं सीतालक्ष्मणाभ्यां सहितो राम: दण्डकारण्यात् सुतीक्ष्णमुनेराश्रमं प्रतस्थे । **(बाल्मीकिरामायणे शरभङ्गेनैव सुतीक्ष्णाश्रमगमनार्थं कथितम्** अत्र तथा **कथा न विद्यते ।)** सूर्य-समानं तेजस्विनं तं ऋषिं विनीतभावेन राम: प्रणामं कृतवान् सुतीक्ष्णश्च दिव्यातिथिरामचन्द्रस्य प्रभूत सत्कारं कृतवान् । रामेणोक्तम् क: एवं ब्रह्मण: वंशे भवत्सदृश: अग्रगण्य: महर्षि: यो महत् तप: कृतवान् । कश्च मत्सदृश: भाग्यशाली यस्मै भवता दर्शनं दत्तम् । मुनिनोक्तम् मम तपस: फलं तु अद्यैव पूर्णतां प्राप्तवान् । यतोहि त्वमेव सर्वै: देवै: ऋषिभिश्च साक्षात् करणीय: । स अद्य सुसम्पन्न: । रामेणोक्तम् हे मुनिश्रेष्ठ ? अगस्त्य ऋषे: दर्शनस्य प्रबलोत्कण्ठा विद्यते । सुतीक्ष्ण: अब्रवीत्, अवश्यमेव तत्र गच्छन्तु भवन्त: सर्वं मङ्गलं भविष्यति । सोऽपि अगस्त्य: भवतां प्रतीक्षायां समुत्कण्ठायां च वर्तते । एवमुक्त्वा स ऋषि: अगस्त्याश्रमगमन-मार्गम् अदर्शयत् । पुष्कलं आशीर्वादं च प्रदत्तवान् ।

सीता लक्ष्मणाभ्यां सहित: भगवान् रामचन्द्र: अगस्त्याश्रम-मागतवान् । तमिल क्षेत्रे एवं मन्यन्ते जना: यत् यथा त्रिविक्रमो भगवान् वामन: त्रिपादेनैव यथा लोकत्रयं मापितवान् तथैव तमिल-भाषाद्वारैव अगस्त्य: समग्रं ज्ञानलोकं मापितवान् ज्ञातवान् । तपोवलेनैव अगस्त्येन ज्ञातं यत् वन्दनीयो रामचन्द्र: तेषाम् आश्रमम् आगत: । अगस्त्य: आकृत्या लघुरासीत् किन्तु एकेनैव चुल्लुकेन सागरं पीतवान् । यथा विशाल वटवृक्ष: तस्य स्वल्पाकारक बीजे अन्तर्निहित: तिष्ठति तथैव स लघुकाय: अगस्त्य: महामहिमामय: आसीत् । अगस्त्येन आतापी-वातापी नामकौ द्वौ राक्षसौ अपि निहतवान् । स्वयं च विन्ध्य पर्वत: सूर्यचन्द्रादिकस्य मार्गम् अवरुद्धय जीवान् उपद्रवं कृतवान् । देवै: प्रार्थित: अगस्त्य: तस्य पर्वतस्योपरि आरुह्य तं पर्वतं पाताले नागलोके प्रेषितवान् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वरः शिवः यथा पाणिनये संस्कृत व्याकरणस्यशिक्षां ददौ तथैव अगस्त्याय तमिल भाषायाः व्याकरणस्य शिक्षां ददौ इति पुराणे वर्तते एवं कम्बन्कविः प्रतिपादयति। अगस्त्यश्च स्वमेधाशक्त्या तमिलभाषां व्याकरणबद्धां श्रेष्ठ भाषारूपेण प्रतिष्ठापितवान् इत्यपि कम्बन् कविः कथयति। अगस्त्यश्च महान् हर्षितो भूत्वा मनसि चिन्तितवान् यत् वेद पुराण शास्त्रादीनामध्ययनेन अन्वेषणेन च यस्य परमात्मनः ज्ञानं कठिनं वर्तते स एव परमात्मा रामचन्द्रः मम समक्षमुपस्थितो वर्तते इति चरम तपस्यायाः फलम्।

शिष्टाचारानन्तरं रामचन्द्रेणोक्तम्। वयम् कुत्र तिष्ठेम इति निर्दिशन्तु कृपया। मुनिनोक्तम् अत्रैव निवसन्तु। भवतां निवसनेन राक्षसाः विनिष्टाः भविष्यन्ति। उपद्रुताः देवगणाः समुन्नताः भविष्यन्ति। रामोब्रूते, राक्षसानाम्उन्मूलनार्थं मया प्रतिज्ञा कृता। अतएव तेषामागमनमार्गे मयावस्थानमनुचितम्। अगस्त्येन कथितं इति तु साधु विचारितं भवता। कृपया त्रिभुवनं पूजितं परात्पर विष्णोः समीपस्थम्-अक्षय-तूणीरयुक्तमिदं धनुः गृहाण। तथा च इमम् अक्षयमखण्डकरवालमपि गृहाण। रामः नतमस्तकेन सर्वं गृहीतवान्।

तदा अगस्त्येन **'पञ्चवटी'** नामक स्थानस्य मार्गम् अदर्शयत्। तस्य स्थानस्य सौन्दर्यं महत्त्वं च वर्णितवान्। रामश्च मुनेराज्ञां गृहीत्वा पञ्चवटीं प्रति प्रस्थितः।

शडायुकाण् पडलम् (जटायु दर्शन पटलम्)

अगस्त्याश्रमात् प्रस्थाय सीता लक्ष्मणाभ्यां सहितः रामचन्द्रः नदीपर्वत वनोपवनानि पश्यन् गृध्रराजस्य जटायोः दर्शनं कृतवान्। स जटायुः मन्दराचलपर्वतसमं विराजमानः आसीत् यश्च एकस्मिन् श्यामपर्वतस्य शिखरे उन्मुक्ते स्थले स्थितः आसीत्। तस्य कान्तिः सूर्यसमाना आसीत्। यया कान्त्या प्रकाशपुञ्जः प्रसृतः जायते। एवं तेजोयुक्तं जटायुं रामचन्द्रः ददर्श। एवं बलवन्तं वीरं दृष्ट्वा रामचन्द्रः शङ्कितः सन् मनसा चिन्तितवान् यत् प्रायःकोऽपि महान्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राक्षसोऽयम्। जटायुरपि तं धनुर्धरं वीर रामचन्द्रं दृष्ट्वा मनसि चिन्तितवान् यत् नायं तपस्वी किन्तु धनुर्वाणहस्तः जटाजूटधारी कोऽपि वीरः अस्ति। जटायुः शोचते, इन्द्रादि देवान् तु प्रतिदिनं पश्यामि। ब्रह्माणं शिवं च प्रतिदिनं नमामि। कामदेवमपि अपश्यम्। कोऽयमनुपम रूपधारी इति न ज्ञायते।

इति चिन्तयन् जटायुः स्पष्टरूपेण रामलक्ष्मणाभ्यां पृष्टवान्। युवाम् कौ वर्तेते इति स्पष्टं कथयतम्। रामेणापि स्पष्टमुक्तं वीर-शिरोमणेः चक्रवर्तिनः राज्ञो दशरथस्य पुत्रौ स्वः (वर्तावहे)। इदं श्रुत्वैव जटायुः स्वचिरमित्रस्य दशरथस्य पुत्रौ दृष्ट्वा विज्ञाय च परमहर्षितो जातः। किन्तु त्वरितमेव जिज्ञासां कृतवान् कथमत्रा-गतवन्तौ ? किं प्रयोजनम् ? कथमिदंरूपम् ? रामचन्द्रेण प्रत्युत्तरितम्। महाराज-दशरथः स्वकीय सत्यवादितायाः रक्षणार्थं स्वर्गवासी बभूव। इति श्रुत्वा जटायुः भूमौ पतितः चेतनाशून्यश्च जातः। पुनः चेतनां प्राप्य विलापं कृतवान्। ततश्च निम्नोक्तप्रकारेण स्वकीय परिचयं रामचन्द्राय प्रदत्तम्। तेनोक्तम् अहं अरूणस्य पुत्रः अस्मि। सर्वत्र स्वेच्छानुसारं गन्तुं शक्नोमि। देवैः सह विविध जन्तुवत् पुरा एव मम जन्म जातम्। गृध्रराजस्य सम्पातेः अनुजोऽहम् तथा दशरथ-स्य प्राणप्रियो मित्रमस्मि। (अत्र पञ्च पद्यैः जटायोः वंशावली वर्तते तत्र विनता नाम्न्या दक्ष प्रजापतेः पुत्रेण काश्यपेन अभ्रकुन्तलायाः विवाहो जातः। तस्या गर्भात् अरूणो जातः तस्यांहं पुत्रः। एवं हि तत्र विस्तृत वंशावली वर्तते)।

अयं पितुः दशरथस्य सखा वर्तते इति ज्ञात्वा रामलक्ष्मणौ तं प्रणमेतुः। जटायुरब्रवीत् अहं महापापी अस्मि, मम सखा दशरथः स्वर्गतः। ममापि शव संस्कारं कुरू। इदं श्रुत्वा रामो ब्रूते यत् पिता तु अस्मान् अनाथान् कृत्वा दिवंगतः। यद्यस्मिन् भयंकरे अरण्ये भवान् अपि परित्यज्य प्राणान् त्यक्ष्यति तर्हि अस्माकं कः सहायः भविष्यति तदनन्तरं जटायुना पृष्टम्। त्वया कथमत्र समागतम्। तव तु राज्यशासनं कर्तव्यमासीत्। रामेण कैकेयी वरदान कथा तथां अयोध्यायाः समग्रघटना वर्णिताः। इदं श्रुत्वा तथा कोमलाङ्गीं सीतामवलोक्य महान् शोकितो जातः। लक्ष्मणेन च श्रीरामचऽद्रस्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पूर्व वृत्तान्तं विश्वामित्रेण सह गमनं, ताडका वधं, मिथिलायां शिवधनुर्भङ्ग वर्णनं, सीतायाः विवाहादिकस्य समग्र वर्णनं कृतम्। सर्वं विज्ञाय जटायुरवदत् अहं तव रक्षां करिष्यामि। यूयं गोदावरी नदी तटे शान्तां सौन्दर्यमयीं पञ्चवटीं गत्वा तत्र तिष्ठतं। यूयं पादैः चलत। अहं आकाश मार्गेण युष्माकं मस्तकेषु पक्षैः छायां कुर्वन् पञ्चवटीं यावत् गच्छामि। तत्र संस्थाप्य पुनरहमागत्य भवतां संरक्षणे संलग्नः स्थास्यामि। एवं विधाय रामचन्द्रः सीता लक्ष्मणाभ्यां सहितः पञ्चवटी क्षेत्रे सानन्दं निवासं चकार। जटायुः च परावर्त्य सीता लक्ष्मण सहितस्य श्रीरामचन्द्रस्य अहर्निशं सावधानतया रक्षायां संलग्नो जातः।

शूर्प्पणहैप् पडलम् (शूर्पणखापटलम्)

अस्मिन् पटले कविना शूर्पणखायाः राम समीपागमन वर्णनं शूर्पणखायाः कृत्रिम सौन्दर्यस्य स्वयं समुद्भावितस्य वर्णनं सीतायाः सौन्दर्य वर्णनं लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखायाः नासिकास्तनच्छेद-वर्णनं च विस्तृतरूपेण विद्यते। एषु वर्णनेषु कविः स्वकीय काव्य निर्माण-शैलीमासृत्य नायिका वर्णनं चकार। यत्र पूर्ववत् कामिन्याः कटिस्तन-सुदीर्घश्यामलकेश वर्णनं च प्रधानमस्ति।

पञ्चवटी समागमनान्तरमेव सीता लक्ष्मण सहितो रामः प्रवाहितां पवित्र गोदावरीं दृष्टवान्। या गोदावरी कवि काव्य निर्माण प्रवाहवत् प्रवहतिस्म। इयं नदी, पर्वत, वन, नदीतट, समुद्रतट मरुप्रदेशेभ्यः वहन्ती स्वच्छ शीतल सुखद प्रवाहमयी विद्यते। अत्र कविः श्लेषाऽलङ्कार द्वारा काव्यनिर्माण प्रवाहस्य गोदावरी नदी प्रवाहेण समता वर्णिता। अत्र उभौ सीतारामौ प्रवहमानां नदी शोभां पश्यन्तौ परस्परं उभयोरङ्ग प्रत्यङ्गस्य परिदर्शनमपि सरस दृष्ट्या कृतवन्तौ।

तत्र पञ्चवठी क्षेत्रे लक्ष्मणेन निर्मित पर्णशालायां सीता सहितो रामः निवासं कुर्वन्नास्ते। तत्र सहसा शूर्पणखा दैवप्रेरिता समुपस्थिता। या च अस्मिन् क्षेत्रे एकाकिनी एव निवसन्ती

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आसीत्। अत्र कवि-कम्बनेन कारणद्वयं प्रदर्शितम्। एकं च तस्याः अतृप्त कामवासना अपरश्च स्वपत्युः हन्तारं रावणं प्रति क्रोधः। (शूर्पणखा विधवा आसीत् तस्याः पतिं रावणः मारितवान् यद्यपि सा तस्य भगिनी आसीत्) सा राक्षसी आसीत् विरूपा आसीत्। किन्तु रामस्याद्भुत सौन्दर्यं दृष्ट्वा मोहिता जाता। तथा रामं निकषा आगमनात् पूर्वं स्वकीय राक्षस जाति-सिद्ध प्रक्रिया द्वारा अति सुन्दरी-रूपं निर्माय समागतवती। येन रामः तदुपरि त्वरितमेव मुग्धो भवितुमर्हति।

एवं कृत्वा सा समीपमागत्य सुमधुर वचनेन स्वकीय हाव भाव कटाक्ष दृष्ट्या च पश्यन्ती समुपस्थिता। यस्याः आगमनेन नुपूरध्वनिः तथा तस्याः केशपाशे सुगुम्फितपुष्पाणामुपरि गुञ्जायमानस्य भ्रमरस्याऽपि मधुरस्वरः समायाति यश्च काम-दुन्दुभि-तुल्यः आसीत् तत्रागमनानन्तरं रामेण तस्याः परिचयः पृष्टः। साऽब्रवीत् अहं ब्रह्मणः पुत्रस्य पुलस्त्यस्य पुत्रस्य पुत्री अस्मि। अर्थात् ब्रह्मणः पौत्री अस्मि। तथा कुबेरस्य भगिनी एवं त्रिलोकाधिपतेः रावणस्यापि अनुजा अस्मि। मम नाम कामवल्ली अस्ति। भगवतो महादेवस्य वरदानं मम भ्रातुः रावणस्योपरि अस्ति। अहं तु ब्रह्मणः पौत्री राक्षसाचारं विहाय पवित्र कर्मणि संलग्ना अस्मि। रामेणोक्तं यदि त्वं रावणस्य भगिनी असि, तर्हि एवं सौन्दर्यं कथमस्ति? साऽब्रवीत् अहं धर्मावलम्बिनी विवेकशीला सञ्जाता। अतएव भगवतः कृपया ममेदं सुन्दररूपम्।

पुनः रामेण पृष्टम्। त्वं तु त्रिलोकविजयिनः रावणस्यानुजा असि तर्हि कथमेकाकिनी वने निवससि? साऽब्रवीत् अहं नीचाचार-विचारयुक्तेन जनेन सह स्थातुं नेच्छामि। अतएव वनेऽस्मिन् तिष्ठामि। पुनरब्रवीत्, कुलीनस्त्रीणां कृते स्वकीय कामवासनाया प्रदर्शनं न विधेयम्। अतएव मम मनसः विचारेण त्वया अवगन्तव्यः। रामः तस्याः निर्लज्ज हाव भावं दृष्ट्वा निश्चितवान् यत् इयं मायाविनी नारी न तथा वर्तते यथा इयं कथयति। एवं क्रमे सा शूर्पणखा स्वकीय परिचये कथितवती यत् यद्यपि मम पिता ब्राह्मणः आसीत् किन्तु माता शालकटङ्कक नामकस्य क्षत्रिय वंशस्य कन्या

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आसीत्। अतएव अहं त्वया सह विवाह योग्या अस्मि। यदि मम विवाहः त्वया सह भविष्यति तर्हि रावणः अपि देवैः ऋषिभिश्च वैरभावं परित्यज्य सर्वथा तव सहायकः भविष्यति। **(एवं कथा बाल्मीकि रामायणे नास्ति।)**

एतत् वार्यालाप मध्येस्व पर्णशलातः सीता समागतवती यां दृष्ट्वा सा शूर्पणखा चकित चकिता सञ्जाता। यतः सीता सदृश-रूपवती अपि अस्मिन् संसारे वर्तते। धन्येयं ब्रह्मणः सृष्टिः। सा चिन्तितवती सीता रामयोः सदृशं सौन्दर्यं न कुत्रापि दृष्टं न द्रक्ष्यते। सीता क्रोधयुक्तासती पृष्टवती। कथमियं नारी अत्र समागता। रामः सीतां राक्षसमायां कथयित्वा सान्त्वयामास। तथा च अत्र बुद्धया एव कार्यं करणीयम्। इत्युक्त्वा शूर्पणखां प्रति उक्तवान्। यत् त्वं शीघ्रमितः गच्छ। अन्यथा क्रोधी ममानुजः लक्ष्मणः यदि द्रक्ष्यति तर्हि कापि विपरीता स्थितिः भवितुमर्हति। एवमुक्त्वा सीतया सह रामः पर्णशालां गतवान्। ततश्च लक्ष्मणः तां दृष्ट्वा तस्याः नासिकां स्तनं च चिच्छेद। सा हाहाकारं कुर्वती भूमौ निपतिता जाता। पुनश्च रक्तरञ्जितेन देहेन विलपन्ती स्व भ्रातरं खर नामकं भीषण राक्षसं निकषा गत्वा घटनामिमां वर्णितवती। **(स्तनच्छेद घटना बाल्मीकि रामायणादिषु न विद्यते।)**

करन् वदैए् पडलम् (खरबधपटलम्)

छिन्न भिन्न युक्ता विद्रूपा विकीर्ण केशी सा शूर्पणखा तस्मिनेव वन प्रान्ते स्थितस्य प्रचण्ड राक्षसस्य निज भ्रातुः खरस्य समीपमागत्य पतिता। नासिका विहीनां रक्त प्रवाह युक्तां तां दृष्ट्वा खरेणोक्तम् केन तवेयं दुर्दशा कृता? शूर्पणखा अब्रवीत् तौ द्वौ धनुर्वाण धारिणौ कामदेव तुल्यौ धर्ममार्गगामिनौ कोशलदेशल्य दशरथस्य पुत्रौ वर्तेते। धर्म मार्गे स्थितौ तौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ तव महत्त्वं न स्वीकुर्वतः। तथा राक्षसान् समूलनष्टार्थं समुद्यतौ। तस्य समीपे त्रैलोक्यसुन्दरी एका स्त्री वर्तते। यां च स्व भ्रातुः लङ्केश रावणस्य कृते नीत्वा गमिष्यामि इति मनसि कृत्वा तत्र गतवती। यत्र तयोरेकेन अनुज

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भ्राता लक्ष्मणेन मम नासिकाविच्छिन्ना कृता। एवं रूपेण सा मिथ्यावादिनी घटनां वर्णितवती।

महान् प्रचण्ड-राक्षसः तस्याः अग्रजः खरः क्रोधाग्निना संदीप्तः रथानयनार्थमाज्ञां प्रदत्तवान्। खरस्य चतुर्दश सेनापतयः पर्वताकाराः आसन् ये स्वहस्तेन पृथ्वीमपि उन्नेतुं समर्थाः। तैरुक्तं हे राक्षसराज कार्यमिदम् अस्मासु निक्षिप्तव्यम्। खरेण तथैव कृतम। कथितं च यत् तत्र गत्वा उभौ मानव पुत्रौ वालकौ हत्वा तयोः रूधिरं च पीत्वा तां कोमलाङ्गी नारीं गृहीत्वा अत्रानयन्तु। इमामाज्ञां गृहीत्वा ते राक्षसाः तत्र गतवन्तः।

तान् आगतान् दृष्ट्वा रामो ब्रूते, लक्ष्मणः ! त्वं सीतां रक्ष। अहं तैः सह युद्धं कृत्वा तां विनिहत्य शीघ्रमेव आगच्छामि। इत्युक्त्वा रामः स्व धनुषि प्रत्यञ्चामाधाय वाणान् सन्धानं कृतवान्। रामश्च वाणैः तेषां चतुर्दश राक्षस सेनापतीनाम् अष्टाविंशति हस्तान् चिच्छेदयामास। तेषाम् अस्त्र शस्त्र युक्ताः कराः भूमौ पातिताः। तथा च क्रमशः तेषां शिरांसि च छिन्नानि रामेण। इमां घटनां शूर्पणखा खर समीपं गत्वा श्रावितवती। क्रुद्ध खरः भीषण गर्जनां कृत्वा चाज्ञां दत्तवान् यत् समग्र सैन्याः सन्नद्धाः भूत्वा समागच्छन्तु। इत्थं च खरः तत्र गन्तुं समुद्यतः। तदा तस्य दूषण नामकः एकः सहयोगी राक्षसः आसीत्। तेनोक्तम् यत् प्रथमम् अहं युद्धं कृत्वा तं विहनिष्यामि। इत्थं च दूषणः विशाल सैन्यमादाय युद्धार्थं प्रस्थितः।

अत्र विशाल सैन्यानां भीषण वर्णनं कविना वहुभिः पद्यैः कृतम्। येषु वर्णितमस्ति यत् केचन् अष्टपदाः केचन सप्तपदाः केचन विंशति-हस्तयुक्ताः केचन विचित्र नासिका दन्त कर्ण युक्ताः आसन्। तैः सह एकाकी एव रामः युद्धं कुर्वन् सर्वेषां विनाशं कृतवान्। अयमेवत्र सारांशः। ततश्च त्रिशिरा नामकः खरस्य एकः लघु भ्राता विचित्राकृति युक्तः आसीत् यस्य त्रीणि शिरांसि आसन्। अतएव तस्य नाम त्रिशिरा इति जातम्। सोऽपि विशाल सैन्येन साकं समागत्य युद्धं कुर्वन् रामेण हतः। समाचारमिमं ज्ञात्वा अन्ते भयंकरः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खरः सैन्यैः सह समुपस्थितः। ये च महान्तः मायविनः तथा बलशालिनः च आसन्। खरेण सह रामस्य युद्धमपि कविना विस्तृतरूपेण वर्णनं कृतम्। तत्रैका घटना सञ्जाता। कपटपूर्ण माया युद्धे खरः वीर राघवस्य धनुः चिच्छेद। धनुर्वाण रहितं दृष्ट्वा खरेण निश्चितं यत् अधुना तु त्वरितमेव रामो निहतः स्यात्।

किन्तु रामः चिन्ता रहितः सन् स्वकीय हस्तौ पृष्ठदेशं कृतवान्। यत्र वरूणेन एकं सुरक्षितं धनुः रामाय प्रदत्तम्। (अत्रेयं कथा कम्बेन वर्णिता यत् परशुरामेण सह युद्धं कुर्वन् रामः परशुरामस्य धनुः नीत्वा वरूणाय रक्षणार्थं प्रदत्तम्, तदेव धनुः वरूणः इदानी रामाय प्रत्यावर्तितवान्। इयं कथा अन्यस्मिन् रामायणे न वर्तते।) ततश्च तेनैव धनुषा राघवो रामचन्द्रः भीषणम् अजेयं खर नामकं राक्षसं छिन्न भिन्नं कृत्वा जघान। सर्वे देवाः मुनयश्च सुप्रसन्नाः जाताः। इमां घटनां शूर्पणखा पादाभ्याम् (पदातिरेव) एव लङ्कामागत्य रावणाय निवेदितवती। इत्थं चातिविस्तृतरूपेण दूषण त्रिशिरा-सहिता-खरस्य विशाल सैन्यानां रोमाञ्चकारिणः युद्धस्य वर्णनं कविना कृतम्। यस्य संक्षिप्त रूपेण प्रमुख वर्णनमेवात्र लिखितमस्ति।

शूरप् पणहै शूलच्चिप पडलम्
(शूर्पणखा योजना पटलम्)

यद्यपि शूर्पणखा लङ्कां प्राप्तवती किन्तु खरदूषण त्रिशिरा प्रभृति महावलशालिनां भ्रातृणां विशाल सैन्येन साकं विनाशस्य कथा विस्मृतवती। तस्याः मनसि केवलं रामचन्द्रस्य मनोहर रूपमेव विद्यते। येन सहसा विवाहं कृत्वा वासना तृप्ति निरन्तरं कामयते। यद्यपि तस्याः अङ्गानि छिन्न भिन्नानि जातानि। मणिमण्डपे विराज-मानं महिमामण्डितं रावणसमीपमासाद्य घटनामिमां श्रावयितुं समुपस्थिता वभूव।

अत्र एकविंशति पद्यैः रावणसभायाः विचित्रामद्भुतां शोभां कवि चक्रवर्ती कम्बन् वर्णितवान्। यत्रेयं विशेषता विद्यते यत् विंशति-पद्येषु केवलं सभाशोभायाः वर्णनविशेषणमेव वर्तते। **येषाम् अयं**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सारांशः । त्रिभुवनानां नायकानां प्रदत्तोपहारैः परिपूर्णाः सभागाराः दृश्यन्ते । तत्र स्थिताः पार्षदाः नतमस्तकैः तस्याज्ञा-प्रतीक्षायां करवद्धाः आसन् । वायुदेवः सुगन्धित पवनैः व्यजनं कुर्वन् आसीत् । तथा मधुमकरन्द च्यवित पुष्पाणां शोभा दर्शनीया आसीत् । तत्र ऊर्वशी नाम्नी अप्सरा नृत्यं कुर्वन्ती समुपस्थितानां सकल पार्षदानां मनांसि आकृष्टवती । एवं शोभनायां राजसभायां विराजमानः रावणः आसीत् । तदैव नासिका विहीना रक्तं च्यावयन्ती स्तनेहस्त-निहिता शूर्पणखा समुपस्थिता । यां दृष्ट्वा मेघ गर्जन तुल्योच्च-स्वरेण रावणेन पृष्टम् । केनेदं कृतम् ? शूर्पणखा वदति । स दशरथ-पुत्रः राजकुमारः वर्तते येन ममाङ्गानि छिन्नानि । स च राजकुमारः अनुपमः सुन्दरः प्रशंसनीय गुणयुक्तः विद्यते । यश्च पितुराज्ञया अत्र वनमागत्य स्थितोऽस्ति । एवं कथयन्ती विलपन्ती सा पुनरूक्तवती यत् तेन सकल सैन्यैः साकं खरदूषण त्रिशिरा प्रभृतयः निहताः । इति श्रुत्वा सर्वे कम्पिताः अभूवन् । तत्रस्थ स्थितानां सुन्दरीणां मेघसदृशाः कुञ्चित केशाः विकीर्णाः जाताः । वस्त्राणि विगलितानि दीर्घोच्छ्वासैः तासा स्तनानि उच्छलितानि ।

शूर्पणखा अवादीत् ममापराधस्य एकमेव कारणं यत् एका स्त्री तेन सह विद्यते यस्याः वर्णनं चित्राङ्कनं च कठिनम् । यस्याः नाम 'सीता' वर्तते । यस्याः वचनम् अमृतमयम् । जलवर्षक श्यामल मेघ-सदृशानां तस्याः सुदीर्घ केशानाम् आपादलम्बिता वेणी अति आकर्षका विद्यते । पृथक् पृथक् तस्या अङ्ग वर्णनं तु कठिनम् । त्वं तु स्वयमेव तां द्रक्ष्यसि । तामेव तवार्थमानेतुं तत्राहं गतवती । यत्र ममेयं दुर्दशा जाता ।

इति श्रुत्वा रावणः क्रुद्धस्तु जातः किन्तु तस्य मनसि सीता-सौन्दर्यमाकर्ण्य मनसि कामवासना समुद्दीप्ता जाता । हरविजयी रावणः कामं जेतुमसमर्थो जातः । तेन भगिन्या नासिका स्तनच्छेदनं विस्मृतम् । सः परस्त्री विषये शास्त्रज्ञानं विस्मृत्य केवलं तां प्राप्तुं समुद्विग्नः जातः । अत्रापि रावणस्य मनोदशानां वर्णनमति **विस्तृत-रूपेण प्रायः एकशत पद्यैः कविना कृतम्** । यत्र रावणस्य वैभव चित्रण-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मस्ति । अन्ते च रावणः मन्त्रिभिः मन्त्रणां कृत्वा आकाशयानमारूह्य तपस्यां कुर्वन्तं मायाविनं स्वमातुलं मारीचं प्रति प्रस्थितः ।

मारीसन् वदैप् पडलम् (मारीचबध पटलम्)

आकाश मार्गेण वायुयानेन रावणः तपोरतं मारीचं निकषा समुपस्थितः । मारीचः तं दृष्ट्वा समुचितातिथिसत्कारं कृत्वा पृष्ट्वान् यत् कथं लङ्काधिपतिः भवान् कष्टदायके अस्मिन् वन-प्रान्तरे समागतवान् । रावणेनोक्तम् यत् दण्डकारण्ये स्थितेन एकेन मनुष्येण तव भगीनी पुत्र्याः शूर्पणखायाः नासिका विच्छिन्ना । इतः परं मम कुलस्य का हेयता भवितुमर्हति । अधुना मम मनः दग्धं विचलितं च वर्तते । अहं तं हन्तुं नेच्छामि किन्तु तेन साकं एका सुन्दरी स्त्री वर्तते तां येन केन प्रकारेण हर्तुमिच्छामि ।

वाक्यमिदं मारीचस्य कर्णे तप्तद्रवितलौह समं प्रविष्टम् । तेनोक्तम् शान्तं पापं, शान्तं पापं धिक् धिक् कथमेवं त्वं शोचसे । हे निरूक्त-सहित वेद विद्याविशारद रावण, महत्तपः कृत्वा भवता सा सम्पत्तिः समुपार्जिता यस्याः तुलना न वर्तते । तां सम्पतिमिदं दुष्कर्म कृत्वा नाशयितुं कथमिच्छसि । त्वं जानासि यत् परधनापहारी परदारापहारी विनश्यति । कथम् अहल्या जार रूपः इन्द्रः संकट ग्रस्तो जातः । तव समीपे शतशः सुन्दर्यः नार्यः सन्ति । यासां सौन्दर्य-माकर्षणं चाद्वितीयम् ।

अथ च स मनुष्यः रामः न सामान्य मनुष्यः अस्ति किन्तु अतुलितवलशाली महान् पराक्रमी वर्तते । अतएव न किमप्यविचारितं गर्हितं च कर्म करणीयम् । रावणाय इदं वचनं न रोचयामास । तेनोक्तम् यत् हे मारीच, त्वं कापुरुषो वर्तसे । यदि तव जीवितेच्छा वर्तते तर्हि मह्यम् उपदेशदानं विहाय ममानुकूलं कार्यं कुरु । मारीचेन विचारितं यत् ममान्तिमः समयः समागतः । रावणस्यापि विनाशः समुपस्थितः । मारीचेनोक्तम् किं मया कर्त्तव्यम् । रावणो ब्रूते त्वं स्वर्णमृगो भूत्वा तां सर्वसुन्दरीं सीतां प्रलोभय । इत्युक्त्वा अन्येन मार्गेण रावणः निर्गतः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यद्यपि मारीचः पुरा वारद्वयं रामस्य हस्तात् कथंचित् मुक्तः जातः। प्रथमं तु विश्वामित्रस्य यज्ञे अपरञ्च मित्रद्वयस्य कार्यार्थं मृगरूपं धृत्वा गतवान् आसीत् तत्र केनापि रूपेण मुक्तो जातः। अधुना पुनः स्वर्णमृगस्य रूपं धृत्वा तत्र गतवान्। तं स्वर्णमृगं दृष्ट्वा सीता लुलुभे तथा रामचन्द्रं तमानेतुं प्रेरितवती। इति ज्ञात्वा लक्ष्मणेनोक्तम् मुक्तामाणिक्य युक्तः स्वर्णमृगोऽयं कथं भवितुमर्हति। यश्च इतः ततः कूर्दते। रामेणोक्तम् अस्मिन् संसारे न किमपि आश्चर्यं विद्यते। किं भरद्वाजाश्रमे स्वर्णशरीरिणः सप्तहंसा नासन्। अहं तं मृगमानेतुं गच्छामि त्वमत्र सीतां संरक्षस्व। अत्र यदि स मायामृगः अस्ति तर्हि मम वाणैः निपातितो भूत्वा ऋषीणां कण्टकः दूरी भविष्यति। यदि स यथार्थं स्वर्णमृगः तदा तमादाय आनेष्यामि येन सह सीता क्रीडिष्यति। उभयथापि सफलता वर्तते। इत्थं उक्त्वा रामः मृगमनुधावन् दूरं गतः। तथा स्ववाणं तदुपरि विक्षिप्तवान् स माया मृगरूपधारी मारीचः हा लक्ष्मण। हा लक्ष्मण। इति वदन् स्वकीयं रूपं प्राप्तवान्। रामः सहसा तं ज्ञातवान् यत् अयं स एव राक्षसः मारीचः यः विश्वामित्रयज्ञे केनापि प्रकारेण मम वाणैः न हतः। रामश्च दुःखितो जातः तथा त्वरितमेव कोऽपि उपद्रवः भविता इत्याशंक्य पञ्चवटी पर्णशालां प्रति परावर्तितवान्। मारीचस्तत्र पञ्चत्वं गतः।

சடாயு உயிர் நீத்த படலம் (जटायुप्राणत्यागपटलम्)

मारीच वधानन्तरं यावत् श्रीरामचन्द्रः पञ्चवटी पर्णशालां प्राप्स्यति तावन् मध्ये पर्णशालायां सीतादेव्याः विचित्रा स्थितिः सञ्जाता। यतोहि मरणकाले मारीचस्य हा लक्ष्मण हा लक्ष्मण इति भयंकर शब्दं श्रुत्वा सीता मूर्च्छिता जातः। पुनः चेतनां प्राप्य चिन्तितवती यत् कथं मया स्वर्णमृगानयनार्थं प्राणप्रियः प्रेषितः।

सीता लक्ष्मणं तत्रैव स्थितं दृष्ट्वा क्रोधे कथितवती यत् तव भ्राता राक्षसस्य कपटेन आहतो जातः त्वम् अत्रैव स्थितोऽसि ? लक्ष्मणेनोक्तम् किं रामादप्यधिकः कोऽपि वीरो बलशाली वर्तते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

त्वया स्त्रीबुद्धया एवमुच्यते। त्रिभुवनेषु चतुर्दश लोकेषु च शिव-धनुर्भञ्जकं भगवन्तं श्रीरामचन्द्रं न कोऽपि किमपि कर्त्तुं शक्नोति। लक्ष्मणस्य वचनं श्रुत्वा अति क्रोधाभिभूता सीता ब्रूते। अधुना अग्नौ प्रविश्य प्राणत्यागं विहाय न कोऽप्यन्यः उपायो मम वर्तते। सीता च ज्वलद्दावाग्नौ प्रवेष्टुं धावितवती। लक्ष्मणः तां निरुध्य प्रोक्तवान् यत् भवदाज्ञया अहं तत्र गच्छामि। भवती कृपया अत्रैव तिष्ठतु। यद्यपि अहं जानामि यत् महती विपत्तिः समागमिष्यति। प्रभोराज्ञाम् उल्लंघ्य मां प्रेषयति। इत्युक्त्वा लक्ष्मणः ततः प्रस्थितः। प्रस्थान-समये प्रोक्तवान् यत् गृध्रराजः जटायुः अस्माकं संरक्षकः। **(अत्र कविः कल्पनां कुरूते यत् देवानां तपस्या शीघ्रमेव फलीभूता भविष्यति अतएव लक्ष्मणः तत्र प्रस्थितः)।**

रावणस्तु इदं सर्वं गुप्तस्थाने उपविश्य पश्यन्नासीत्। अवसरं प्राप्य हस्ते त्रिदण्डं धृत्वा संन्यसि-वेषे तत्रोपस्थितः। स शनैः पदम-ग्रेसरं कृत्वा सीतायाः पर्णशालां प्राप्तः। सीता तं दृष्टवा मनसि चिन्तितवती यदयं कोऽपि तपोधनो वर्तते। अतएव तस्मै यथायोग्यं सत्कारं विधाय अत्रासने उपविशतु इति उक्त्वा रावणं पर्णशाला-भ्यन्तरे पवित्रासने उपावेशितवती। तथा तेन रावणेन पृष्टा सीता अब्रवीत्। हे तपस्विन् इक्ष्वाकुकुलस्य श्रेष्ठस्य दशरथस्य पितुराज्ञां शिरोधार्य अनुजेन लक्ष्मणेन मया च सहितः रामचन्द्रः अत्र तिष्ठति। ततश्च तेन कपटसंन्यासिना रावणस्य महिमा श्रावितः। अत्र रावणस्य वर्णनं विविध पद्यैः कविना कृतम्।

रावणस्य वचनं श्रुत्वा सीता विराध खरदूषण त्रिशिरा प्रभृति-बलशालिनां राक्षसानां रामचन्द्र द्वारा वध कथां वर्णितवती। इति श्रुत्वा स कपटी साधुः स्वकीय दशग्रीव मस्तक रूपं प्रदर्शयन् रावणः-रूपे समुपस्थितः उक्तश्च। अहं त्रिभुवन विजयी रावणः अस्मि। त्वं व्यर्थंचिन्तां मा कुरु। मम शिरः तव चरणे पतितमस्ति। त्वं चतुर्दश-भुवनेषु शासनं करिष्यसि। मम सर्वमैश्वर्यं तवैव विद्यते। केवलं मां स्वीकुरू। रावणस्य वचनं श्रुत्वा सीता प्रोवाच्। हे कपट वेशधारी रावण मां मुञ्च। ततः रावणः विशाल परिधिमयीं भूमिं स्वकीय-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वलेन खनित्वा भूखण्ड सहितां सीतमुत्थाप्य स्व रथे स्थापितवान्। सीता मूर्च्छिता जाता। पुनः चेतनां प्राप्य करुणं विलपती पर्वतान् वृक्षान् मृगमयूरान् वनदेवताश्च प्रार्थयन्ती कथितवती यत् इमं समाचारं श्रीरामचन्द्रं प्रति प्रेषयति। हे भगवति गोदावरि त्वं मातृसमा शीतलासि कृपया शीघ्रं स्व प्रवाहगत्या मम पतिमिदं सूचयतु।

रावणश्च आकाश मार्गेण वेगेन गच्छन् जटायुना पृष्टः। रे नीच कुत्र गच्छसि तत्रैव तिष्ठ इति वज्र स्वरेण कथितवान्। त्वं पुरुषोत्तम-रामस्य पत्नीं नीत्वा स्थलमार्गेण आकाशमार्गेण वा गन्तुं न शक्ष्यसि। इत्युक्त्वा जटायुः स्वकीय विशाल पक्षैः मार्गं रोधयामास। सीतां प्रति उक्तवान् यत् मा भैषीः। रावणेनानेन तवस्पर्शः न कृतः यतोहि विशाल भूमि—खण्ड सहितां त्वाम् उत्थाप्य रथे निवेशितवान् अतएव त्वं सर्वथा पवित्रा निर्दुष्टासि। **(भूमि-खण्ड सहित सीतोत्थापन कथा अत्रैव विद्यते नान्यस्मिन् रामायणे प्रायः कोऽपि कविः सीतां रावणेनास्पृष्टां प्रदर्शितवान्।**

जटायुः प्रोक्तवान् हे रावण सबान्धवः विनिष्टः। यद्यधुनाऽपि सीतां त्यक्ष्यसि तर्हि तव रक्षा भवितुं शक्या। रावणश्च कथितवान् हे गृध्र, त्वं मार्गात् बहिः गच्छ अन्यथा तव प्राणघातं करिष्यामि। एवञ्च जटायुरावणयोर्मध्ये लोम-हर्षकः तुमुल युद्धः सञ्जातः। यदा जटायूः राणणस्य बलेन विजितो ना भूत्, तदा रावणः अमोघ चन्द्रहास नामकम् असिम् आदाय जटायोः पक्षाणि चिच्छेद। यतोहि शिवस्य वरदानमिदमासीत् यत् अनेन चन्द्रहास-करवालेन कोषामपि शिरांसि अङ्गानि च छेत्तुम् अर्हसि। मुमूर्षुं जटायुं दृष्ट्वा देवाः आकाशात् पुष्प वृष्टिं चक्रुः। एतन् मध्ये रावणः पुनः भूमि सहितां सीतामुत्थाप्य आकाश मार्गेण चलितः। तथा च लङ्कामागत्य अशोक वाटिकायां शिंशपा वृक्षतले तां स्थापितवान्। तत्र राक्षसीनाम् संरक्षणं च कारितवान्।

अत्र इयं घटना जाता। तत्र पञ्चवटी क्षेत्रे लक्ष्मणेन सहितः रामचन्द्रः पर्णशालामागत्य सीतामदृष्ट्वा व्याकुलो जातः।।लक्ष्मणश्च

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एकाकिनीं सीतां परित्यज्य कथं भवदन्वेषणार्थं प्रस्थितवान् इति पूर्वोक्त सर्वाः घटनाः वर्णितवान्। ततः उभौ विचारितौ यत् अत्र विलम्वकरणेन न किमपि फलम्, अग्रे गत्वा सीतान्वेषणम् विधेयम्। इति तु स्पष्टं दृश्यते यत् इतस्ततः रथचक्रस्य चिह्नानि वर्तन्ते तथा शत्रुः भूमि-सहितां देवीं समुत्थाय निर्गतः। एवं विचारयन् उभौ भ्रातरौ प्रस्थितौ। किञ्चिदग्रे मृतप्रायं जटायुं वीक्ष्य उभौ प्रस्थितौ जातौ। जटायुना सर्वं विस्तृतरूपेण निवेदितम्। इत्यपि कथितं यत् रावणेन सीता हृता तथा दक्षिणस्यां दिशि गतः। इत्युक्त्वा जटायुः निष्प्राणः जातः। जटायुः परात्परब्रह्मस्वरूपं परमेश्वरं रामचन्द्रं पश्यन् स्मरंश्च प्राणान् परित्यज्य परं पदं वैकुण्ठं प्राप्तवान्। यत् पदं मोक्षार्थिनां ऋषीणामपि दुर्लभम्। जटायुवियोगे रामलक्ष्मणौ अत्यधिकं रोदनं कृतवन्तौ। ततश्च पितृतुल्यस्य जटायोः दाह-संस्कारादिकं विधिवत् करणीयम् इति निश्चित्य अगरूचन्दनादीनाम् इन्धनैः चितां विरचितवन्तौ। पुष्पाणि तत्र प्रक्षिप्तानि स्वच्छ जलेन जटायु शरीरं स्वयं रामचन्द्रेण स्नापितं स्वहस्तेनैव चितायामारोपितवान्। अरणिमन्थनेन अग्निं प्रज्ज्वाल्य रामचन्द्रेण विधिवत् पितृ-संस्कारः कृतः। तथा च जलाञ्जलिं दत्तः। इत्थं च यदा रामचन्द्रः जटायु संस्कारात् निवृत्तः तदा सूर्यास्तो जातः। प्रायः सूर्यः अपि जटायोः ज्ञातिः सम्बन्धी आसीत् अतएव सूर्योऽपि संस्कारार्थं गतः।

अयोमुहिप् पडलम् (अयोमुखी पटलम्)

जटायु संस्कारानन्तरं रामलक्ष्मणौ ततः प्रचलितौ। मार्गे अरुण शिखर युक्त श्यामल पर्वतं निकषा स्थिते यत्र आकाशः तमसाच्छन्नो जातः। रात्रौ रामस्य नेत्रं निर्निमेषमेवासीत्। लक्ष्मणस्यापि तथैव। रामस्य कृते सीतावियोगो दारुणतरः। तदा चन्द्रोदयो जातः। रामस्य मनसि भ्रमो जायते यत् आकाशे सुकेशी सीता विद्यते। तस्मिन् पर्वतप्रान्ते शीतल मन्द सुगन्ध युक्तः पवनः वहति। यः रामस्य कृते सर्पवत् शरीरे प्रचलन् आसीत्। **अत्र १०-३५ पद्यैः**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"तण तमिल्त् तण्र्" इति शब्देन शीतल मधुरमलय पवनस्य वर्णनं कविना कृतम् । तमिल् शब्दस्य मधुरमित्यर्थः) एवं वियुक्तः रामः मनसि चिन्तितवान् यत् कथं राक्षसाः नाशं प्राप्स्यन्ति । कथं धर्मस्य रक्षा भविष्यति कथं च मया क्षीरसागर-शयनं त्यक्त्वा अवतारः गृहीतः । इत्यादि विविध चिन्तामग्नः रामं रात्रिं निनाय ।

इति तु स्वाभाविकमेव यत् विरहिणां मनः प्रियायाः स्मरणं कृत्वा व्यथते । तथा श्रीरामः सीतायाः केशपाशान् स्मरति स्तनं स्मरति प्रणय-व्यापारेण आलिङ्गनं च स्मरति । एवं कुर्वन् यदा रामः आसीत् तदा लक्ष्मणः तत्रागत्योक्तवान् सीतान्वेषणं विना अत्रास्माकम् अवस्थानं निरर्थकम् । अतएव इतः प्रस्थातव्यम् । इति विचार्य ततः प्रचलितः । मार्गे एकस्यां स्फटिक शिलायां तस्थौ या स्फटिक शिला एकस्मिन् उपवने आसीत् तत्र चन्द्रिका विकीर्णाः पक्षिणश्च मधुरस्वरैः गायन्ति स्म । **(अत्र तमिल भाषायां संस्कृतवत् सङ्गीत विद्यायाः सप्तस्वराः सन्ति येषां नामानि क्रमशः इलि, कुरल, तुत्तम्, कैकिलैः, कुलैः विलरि तथा तारम् । संस्कृते च निषादः: ऋषभ गान्धारः, षड्जः, मध्यमः, धैवतः, तन्त्री-कण्ठोत्थितः इति सप्तनामानि सन्ति ।)**

रामचन्द्रः पिपासितो जातः । कुतोऽपि जलानयनार्थं लक्ष्मण-मादिदेश । लक्ष्मणः सुदूरे गतः । कुत्रापि जलं न लब्धवान् । तन्मध्ये एका अयोमुखी नाम्नी राक्षसी समुपस्थिता । सा भीषणाकृतिः सर्पिणी तुल्या आसीत् या सर्पिणी मन्त्रौषधि वशा न तिष्ठति । सा राक्षसी लक्ष्मणेन साकं स्वकाम वासना-तृप्त्यर्थं तत्र समागतवती । यस्याः भीषण स्वरूपस्य वर्णनं कविना सप्त पद्येषु कृतम् ।

लक्ष्मणेन ज्ञातं यत् शूर्पणखावत् कापि राक्षसी । राक्षसी ब्रूते, अहं त्वया सह सम्भोगं कर्तुम् आगतवती । मम स्तनं अस्पृष्टं वर्तते । अद्य पर्यन्तं अहं केनापि पुरुषेण अभोग्या अस्मि । त्वं मह्यं प्राण दानं देहि । मम वासनातृप्तिं कुरु । यदि त्वमेवं करिष्यसि तर्हि त्वरितमेव गङ्गाजलम् अहम् आनयिष्यामि । येन गङ्गा जलेन तव पिपासाकुलः भ्राता शान्तो भविष्यति । इत्युक्त्वा सा अयोमुखी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राक्षसी लक्ष्मणं धृत्वा पलायिता। अत्र पिपासितः रामः लक्ष्मणमनागतम् दृष्ट्वा महान् चिन्तितो जातः। रामः चिन्तयति यत् मम वंशस्य प्रख्यात पूर्वजः मान्धाता-नृपात् दशरथ पर्यन्तं यां परम्परां रक्षितवान् तां परित्यज्य मया वनमागतः। सर्वे सम्वन्धिनः परित्यक्ताः, प्राणप्रिया पत्नी हृता। एकस्त्वमेव सहायकः असि। यः कुत्र गतः इति न जाने। प्रायः विपत्तिः एकाकिनी नागच्छति अपितु अनेकानेकविपत्तिभिः सह आगच्छति। एवं विचार्य श्रीरामचन्द्रः आत्महत्यां कर्तुं समुद्यतः। तदैव लक्ष्मणः तस्याः अयोमुखी-राक्षस्याः नासिका कर्ण स्तनच्छेदनं विधाय तत्र समुपस्थितः। रामः लक्ष्मणं दृष्ट्वा तथैव सन्तुष्टः जातः यथा काचिद् गौः स्वकीयं वत्सं विना रभते। सहसा वत्सं प्राप्य प्रसन्ना जायते। तथा जिज्ञासानन्तरं लक्ष्मणः सर्वं वृतान्तं कथितवान्। रामश्च तत्रैव स्फटिक शिलायां पल्लव पुष्पाणि विस्तीर्य पार्श्वं परिवर्त्तन् कुर्वन् आसीत्। सर्वत्र सीतामेव पश्यन् रात्रिं व्यतीयत। (निनाय)

कदाचित् स चिन्तयति इयं सीता इदं च तस्याभरणं, एते तस्याः सुदीर्घाः विशालाः श्यामल केशाः अधुना आलिङ्गनं कुर्याम किन्तु तन्न भवति। अथ च पुनः नवविकसितमधुयुक्तं कमलतुल्यं तस्याः बिम्बाधरोष्ठं तस्याः अमृतपानं कुर्याम् किन्तु एते स्वप्नानुभवाः भ्रमपूर्णाः आसन्।

(अत्र कम्बन् कविः भवभूतेः उत्तर रामचरिते सीतायाः छायारूप दर्शन तुल्यमेव वर्णनं कृतम्।

अत्रेदमपि ज्ञातव्यं यत् वाल्मीकि रामायणस्य अरण्यकाण्डे ६९ सर्गे अयोमुखी राक्षस्या भयंकर वर्णनम् तस्याः वासनायाः अपि वर्णनं नासिका कर्णस्तनच्छेद वर्णनं च विद्यते। यस्यैव विस्तृत वर्णनमत्र कम्बनेन कृतम्। किन्तु रामचन्द्रस्य आत्महत्याप्रसङ्गवर्णनं न वाल्मीकिरामायणे कुत्रापि विद्यते।

कबन्दन् बदैप् पडलम् (कबन्धबध पटलम्)

प्रभातो जातः। रामलक्ष्मणौ सीतामन्वेष्टुं प्रस्थितौ। मध्याह्नो जातः। धनुर्वाणधरौ रामलक्ष्मणौ कबन्धवने प्रविष्टौ यत्र कबन्ध

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नामकः राक्षसः एकत्रैव तिष्ठन् स्वकीय अति विशाल बाहुभ्यां तत्रा-गतान् जनान् आवेष्टयति स्म। रामलक्ष्मणावपि कवन्धस्य हस्तयोर्मध्ये समागतौ। मेरू पर्वत तुल्यं विशालं कवन्धसमीपमागत्य लक्ष्मणः कथितवान् यत् अयं विशालः प्रेतः वर्तते। रामेणोक्तम् यत् हे अनुज लक्ष्मण, त्वं इतः गच्छ अहं जीवित्वा किं करिष्यामि। प्राण-प्रिया सीता हृता। पितृतुल्यः जटायुः अपि मृत एवं स्थितौ मम निन्दापवाद-जीवनेनालम्। मया तु अस्यैव राक्षसस्य सामिषं भोजनं भवितव्यम्। **(एवंरूपा कथा वाल्मीकि रामयणे न विद्यते।)** ततः लक्ष्मणेनोक्तम् हे मानवरूपधारिन् अग्रज, किमिदं कथनं तव शोभनम्? किं एवं कृत्वा भवतां कीर्तिः स्थास्यति वा विलुप्ता भविष्यति? वनगमन-समये मम माता सुमित्रा अवादीत् यत् निरन्तरं रामस्याज्ञायां स्थास्यसि। यदि मरणस्य स्थितिः संभाविता तर्हि प्रथमं त्वमेव मृत्योः वरणं करिष्यसि। ततश्चोक्तं लक्ष्मणेन। परात्पर ब्रह्मस्वरूपः किं भवान् न परमात्मा रामः। किम्अनेन वनवासिना प्रेतेन मारितः भवान् मरिष्यति। यः अजः नित्यः शाश्वतः पुराण पुरुषः परब्रह्म अस्ति। भवतां कथनस्य कोऽयमर्थः?

अत्र लक्ष्मणस्य उभयथा उक्तिः अतीव गम्भीरतमा श्लाघनीया च विद्यते। यत्र एकेन वचसा मनुष्यरूपधारिणं रामचन्द्रं कर्तव्यं स्मार-यति। तत्रैव अपरेण **वचसा परात्पर ब्रह्मस्वरूपं स्मारयति। इति गुह्यात् गुह्यतमम्।** इति श्रुत्वा रामचन्द्रः कबन्धस्य उभौ हस्तौ स्वकीय करवालेन छित्वा पातितौ। कबन्धश्च सर्वथा मुक्तो भूत्वा दिव्यरूपमाधाय प्रकटितः सन् अब्रवीत्। यत् हे मोक्षाधिपते भगवन् सर्वं महाप्रपञ्चं भवान् स्वकीयाभ्यन्तरे रक्षति। भवान् एव आदि-सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा अनादि पुरुषः अपि भवान्, ज्योतिःपुञ्जोऽपि भवान् एव वेदानां च सारतत्त्वमपि भवान् एव। इतोऽधिकं मया न कथ्यते यतोहि भवतामवताररहस्यं जनाः ज्ञास्यन्ति। इत्युक्त्वा स कवन्धः ऋष्यमूक—पर्वतमार्गं दर्शयन् तत्र सुग्रीवेण सह मैत्रीकरण निदर्शनं च कुर्वन् सशरीरं स्वर्गं गतवान्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रामश्च लक्ष्मण-सहितः कबन्धनिर्दिष्टां दक्षिण दिशां प्रति प्रस्थितः। रात्रिः समागता उभौ मातङ्ग ऋषेः पर्वते समागत्य स्थितवन्तौ।

शबरि पिरप्पु नीङ्गु पडलम्
(शबरी जन्मविमोचन पटलम्)

ततः तस्मात् पर्वतात् मातङ्गाश्रमात् शबरी-आश्रमं प्रति प्रतस्थे। यश्च आश्रमः कल्पतरूवत् आसीत् यत्र सर्वं सुखमेव सुखं न किमपि दुःखम्। तत्र चिरकालात् शबरी श्रीरामं ध्यायन्ती तपस्यां कुर्वन्ती च स्थिता आसीत्। तत्रागत्य रामचन्द्रः तां कुशलक्षेमादिकं पृष्टवान्। शबर्याः नेत्राभ्यामश्रुधाराः प्रवहिताः। सा स्तुतिं कृतवती। उक्तवती च मम तपः पूर्णं जातम्। मायापाशाः विच्छिन्नाः जाताः। भवतां योग्यं इमानि फलानि संगृह्य मया रक्षितानि तानि कृपया गृहाण। मया पूर्वमेव कथंचित् ज्ञातं यत् भवानत्र आगमिष्यति। अतएव तव प्रतीक्षायामेव आसम्। मम पुण्यं सफलीभूतं तदा रामेणोक्तम् मातः ममापि श्रमजनितं दुःखं दूरीभूतम्। उभौ भ्रातरौ तस्मिन् दिने तत्रैव स्थितवन्तौ। शबरी प्रदत्तफलानि सादर सस्नेहं भक्षितवन्तौ। शबरी च रामचन्द्रं सुग्रीव निवासस्थानं ऋष्यमूक पर्वतं प्रति गमनस्य यथार्थं मार्गं परिदर्शितवती। रामेण मातृतुल्यायाः शबर्याः उपदेशं तथा श्रुतम् यथा केनापि ज्ञानिना गुरूणा मोक्षोपदेशः श्रूयते।

शबरी च योगशक्त्या शरीरं परित्यज्य गोलर्क-मोक्षपदं प्राप्तवती। रामलक्ष्मणौ च शबरीप्रदर्शित-पथा नदीपर्वतादिकं लंघयन् पावनपम्पा-सरस्तटमागतवन्तौ। यत् पम्पा सरः प्रति दिनं असंख्य जनान् स्वकीय स्नानेन जल सिञ्चनेन च पापात् निवारयन्ती प्रवहति। अतः पम्पा सरोवरं मूर्त्तरूपं पुण्यं सरः कथ्यते।

(इदं पुण्यं पम्पासरः दक्षिणभारतस्य कर्णाटक राज्ये इदानीमपि प्रवहति यच्च महत्तीर्थं विद्यते।)

॥ इति अरण्यकाण्डम् ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किष्किन्धा-काण्डम्

पमथैप् पडलम् (पम्पा पटलम्)

मङ्गलाचरण—ज्ञानगम्यो ब्रह्मस्वरूपः श्रीरामचन्द्रः त्रिगुणात्मकस्त्रिदेवः सृष्टेः सकल जीवात्मकः अवतारं गृहीत्वा लोकमङ्गलार्थं संलग्नोऽस्ति ।

पञ्चवटी क्षेत्रात् सीतान्वेषणार्थं शोकाकुलो रामचन्द्रः लक्ष्मणेन साकं पावन पम्पासरोवर-तटं प्राप्त। तत्र पम्पा सरोवरस्यापूर्वां विचित्रां मनोहारिणीं शोभां कतिपयपद्यैर्वर्णयति कवि कम्बन् महाशयः ।

इदं सरः भ्रमरावलि गुञ्जित मधुमय कमल कुसुमैर्युक्त स्फटिकसमोज्ज्वलं विराजते। यत्र शतशः मणिमाणिक्यादयः तेजांसि विकिरन्ति। इदं सरः विश्वामित्रेण नवीन सृष्टिनिर्माणक्रमेऽभिनवसमुद्रवत् दृश्यते। यत्र मध्ये हंसयुक्त रक्त कमलपुष्पाणि राजन्ते। ये च हंसाः कमलमध्येऽग्नौ प्रवेष्टुमुद्यता इव भान्ति ।

अत्र कवि-कल्पनेयं यत् सुदीर्घवेणीयुक्ताया सीतायाः संकेतं दातुमशक्ताः हंसाः अग्नौ प्रविश्यमानाः इव दृश्यन्ते। तत्र पम्पायाः जलं पीत्वा जनाः मधुमत्ता जायन्ते। यथा विम्बाधरवतीनां नारीणामधरपानं कृत्वा लोकाः समदाः भवन्ति। तत्र हंसयुग्माः परस्परमालिङ्गनं कुर्वते। विभिन्न जातीयाः पक्षिणोऽत्रागत्य निवसन्ति ये चास्पष्टं कूजन्ति शब्दायन्ते च ।

तत्रागत्य सलक्ष्मणो रामचन्द्रः द्रवीभूतोऽभूत् विलपन् रामो ब्रूते मम मनः व्रणपीडितमिवास्ति। नव विकसित कमल पुष्पैः व्रणे शीतलतामनुभवन् तत्रत्य मयूरं प्रति ब्रवीति। त्वमद्यात्र सानन्दं नृत्यसि। पूर्वं सीता केशपाश शोभामवलोक्य त्वं पलायितः। हे नीलकमल सीता लोचन सदृशं तव रूपं दृष्ट्वा मे मनः विदीर्णमिव जातम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एवं विलपन् रामचन्द्रः तस्मिन् पम्पासरसि स्नातवान्। यत्र स्नानेन तस्य विरहाग्निः कियदंशेन शान्तो जातः। विष्णोरवतारोऽपि रामः वेदोक्तरीत्या तत्र स्नात्वा नारायणस्य पूजाऽर्चनां विधाय एकस्मिन् तट प्रान्तस्थोपवने विश्रामं कृतवान्। यद्यपि सीता वियुक्तो रामः पूर्णनिद्रां न लेभे। उन्निद्र एव रात्रि निनाय। प्रातरुत्थाय त्वरितमेव सीतान्वेषणार्थं सलक्ष्मणः ततः प्रतस्थे।

अनुमप् पडलम् (हनुमत्पटलम्)

रामलक्ष्मणौ शबरी निर्दिष्टमार्गेण ऋष्यमूक पर्वते शीघ्रतया अनायासेन प्रस्थितौ। तस्मिन्नेव पर्वते भयभीतः सुग्रीवः निवसतिस्म। तत्रागतं रामं दृष्ट्वा तं शत्रुमेव मत्वा ततः पलायितुं तत्परोऽभूत्। तत्र वायु-पुत्रं हनुमन्तं प्रति अवादीत्। यत् नीलपर्वताकारं धनुर्धरमेनं पश्य। अवश्यमेव वालिप्रेरितः अयं समायाति। इत्युक्त्वा सुग्रीवः गुफायां प्रविष्टः। तत्र अन्येऽपि वानराः भयाकुलाः सञ्जाताः। ततः महाज्ञानी शिवतुल्यो जटाधारी हनुमान् आश्वासनं प्रदाय ब्रूते यत् भवन्तः अत्रैव तिष्ठन्तु अहं सर्वं विदित्वा आगच्छामि।

ततः अञ्जनीपुत्रः हनुमान् ब्रह्मचारी वेषं धृत्वा रामं निकषा आगत्य मनसि चिन्तितवान् यदयं तपस्विवेषधारी धनुर्धारी वर्तते। अतएव मनसि संशयो जायते यत् नायं त्रिदेवः यतोहि इमौ द्वौ वर्तेते। कथामत्रागतवन्तौ आकृत्या च चिन्तितौ दृश्येते। स्वभावेन सरलौ क्रोधरहितौ च विद्येते। तथा च सुकोमलाङ्गमपि विद्येते। हनुमान् मनसि पुनः विचारितवान् यत् तापत्रयनाशकः कश्चित् देवतुल्यः अयं वर्तते। तन्मध्ये एव रामलक्ष्मणौ तत्रोपस्थितौ। हनुमान् तौ प्रणम्य अत्रागमन कारणं प्रप्रच्छ। ततः पूर्वं स्वकीय परिचयं कथयति यत् अहं अञ्जना गर्भ सम्भूतः पुत्रः हनुमान् अस्मि।

अस्मिन् पर्वते सूर्यपुत्रः सुग्रीवः निवसति यस्याहम् आज्ञाकारी सेवकः। भवदागमनेन सुग्रीवः व्याकुलो वर्तते। अतएव भवत् सम्बन्धे जिज्ञासार्थमत्रोपस्थितः। रामेणोक्तं लक्ष्मण ! नायं ब्रह्मचारी अयं कश्चित् पराक्रमी श्रेष्ठः जनः वर्तते। हनुमन्तं प्रति उवाच कुत्र स

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वानरराजः, तं दर्शय तेन सह परिचयं कारयतु। हनुमान् अब्रवीत् इदं तु सुग्रीवस्य भाग्यं यत् स्वयं भवान् तं दर्शनं दातुं समुपस्थितः सूर्यपुत्रः सुग्रीवाः इन्द्रपुत्रेण निर्दयेन वालिना उपद्रुतः वर्तते सर्वेषाम् अभयप्रदानार्थं भवताम् आगमनं जातम्। किन्तु सुग्रीवं प्रति भवतां परिचयं केन रूपेण कथयिष्यामि इति विनम्रजिज्ञासा वर्तते।

ततः लक्ष्मणेनोक्तम्। कोशलदेशस्य अयोध्याधिपतेः चक्रवर्तिनः दशरथस्य अयं ज्येष्ठ पुत्रः श्रीरामचन्द्रः। यः मातुराज्ञया स्वकीय-राज्यम् अनुजाय प्रदाय वनमागतवान्। अहं च तस्यानुजः। राम-चन्द्रस्य पत्नीं सीतां वञ्चनेन रावणः जहार। इयमेव संक्षिप्त कथा वर्तते। इति श्रुत्वैव हनुमान् रामचन्द्रस्य पादयोः पतितवान्। त्वरितमेव तमुथाप्य कथयति यत् हे वेदशास्त्र विचक्षण विप्र कथमेव कुरुते अहं तु क्षत्रियोऽस्मि। ब्राह्मणस्य क्षत्रियपाद नमनं सर्वथा शास्त्रविरूद्धम्। तदा तेनोक्तम्, हे पद्मपत्रपलाशाक्ष भगवन् अयमपि जनः कपिकुलोत्पन्न एव वर्तते। येन सूर्यात् व्याकरण-शास्त्राणामध्ययनं कृतम्। कृपया आज्ञां ददातु त्वरितमेव तं सूर्यपुत्रं सुग्रीवं भवतां शरणे आनयामि। एवमुक्त्वा हनुमान् प्रस्थितः।

नट्पुप् पडलम् (मैत्रीपटलम्)

हनुमान् शिवतुल्यं नृत्यं कुर्वन् सूर्यपुत्रं सुग्रीवं निकषा गत्वा प्रोवाच। यत् भूभारहरणार्थं अवतरितः श्रीरामचन्द्रः समुपस्थितः। यश्च चक्रवर्तिनः दशरथस्य पुत्रः मेधावी सुन्दरः न्यायी करूणावान् अस्ति। येन कीर्त्तिमता कौशिकेन विश्वामित्रेण शिक्षितः तस्मात् प्राप्त दिव्यास्त्रधारी वर्तते। स एव ताडकां जघान अत्याचारिणं सुवाहुम् यमलोकं प्रेषयामास। गौतमपत्नीं प्रस्तररूपाम् अहल्यां स्वचरणरजैः उद्धृतवान्। अनेनैव शिवधनुः भंक्त्वा सीतया सह विवाहः कृतः। अनेनैव मर्यादापुरुषोत्तमेन रामेण पित्रा दशरथेन प्राप्तं राज्यं विमातुः आज्ञया स्वानुजाय भरताय प्रदाय पत्नी-सहितः वनं प्राप्तः।

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अयमेव रामचन्द्रः महापराक्रमशालिनः परशुरामस्य गर्वं जहार। खर-दूषण-त्रिशिरा-प्रभृति भीषण राक्षसांश्च हतवान्। रावणेन प्रेषितं मायामृगरूपधारिणं मारीचं च निहतवान्। सोऽयं रामचन्द्रः शबरीप्रदर्शितमार्गेण भवत् समीपं समुपस्थितः। शबरीं च मोक्षपदं प्रापयामास। भयंकर कबन्ध राक्षसं च यमलोकातिथिं कारयामास।

हनुमतः सर्वं विवरणं श्रुत्वा सुग्रीवः रामचन्द्रशरणमुपस्थितः। तेषां चरणे आत्मानं समर्पितवान्। उभयोः मैत्री सञ्जाता। राम-सुग्रीवयोः मैत्री तथा दृश्यते यथा पूर्वं कृत तपस्यायाः फलम् तथा तत्काल प्रयत्नश्च उभौ संमिलितौ। सुग्रीवेण सर्वं स्वकीय वृत्तान्तं निवेदितं यथा अग्रजेन वालिना स निर्वासितः। सर्वं विज्ञाय रामेण प्रतिज्ञातं यत् तव शत्रु बालिनं हत्वा त्वाम् तस्मिन् राज्ये स्थापयिष्यामि। राज्यं तु अधुनैव प्रदत्तम्। चतुर्दश भुवनेषु त्रिलोकेषु च कोऽपि तं रक्षितुं न समर्थः यतोहि स अनुजपत्नीं जहार। केवलं तस्य वासस्थानं परिदर्शय। हनुमता सह सुग्रीवः तं नीत्वा महान्तं विशालं समुन्नतं च सप्ततालवृक्षसमीपमानीतवान्।

मरामरप् पडलम् (शालवृक्ष पटलम्)

अनेन पथा गन्तव्यम् इति वदन् सुग्रीवः श्रीराम लक्ष्मणाभ्यां सहितः तत्रागतः। यत्र समुन्नताः विशालाः सप्तताल वृक्षाः आसन्। तत्रागत्य सुग्रीवोऽवदत् यदि एकोऽपि वृक्षः भवद्वाणेन विद्धः स्यात् तर्हि मम मनसः कष्टं दूरीं भविष्यति। इति श्रुत्वा रामः सुग्रीवस्य मनोभावनां ज्ञातवान् यत् असौ सुग्रीवः मम पराक्रमस्य प्रभावं शक्तिं च जिज्ञासति।

त्वरितमेव रामचन्द्रः धनुषि प्रत्यञ्चामाधाय तत्र विशाल शालवृक्षं निकषा गत्वा एकेनैव वाणेन सप्तताल वृक्षान् बेधयामास। तथा सप्त वृक्षातिरिक्तं किमपि वस्तु नासीत् अतः स वाणः पुनः रामचन्द्र-समीपमागतः। अन्यथा यदि किञ्चित् वस्तु अग्रेऽपि अस्थास्यत् तर्हि तदपि विद्धम् अभविष्यत्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनया घटनया समस्ते अस्मिन् विश्वस्मिन् एकीभूताः ये च सप्त संख्याकाः आसन् वर्तन्ते च ते सर्वे सहसा चिन्तिता व्याकुलाश्च सञ्जाताः। यतोहि यदि एकेनैव वाणेन रामेण विशाला सप्त तालवृक्षाः विद्धाः तर्हि अन्ये च ये सप्तसंख्याकाः एकत्रीभूताः पदार्थाः, लोकाः, देवाः, ऋषयः पर्वत प्रभृतयः सन्ति तेऽपि कदाचित् विनाशतां प्राप्स्यन्ति यथा (१) **सप्तलोकाः**—भूलोकः, भुवलोकः, स्वर्गलोकः, जनः, महः, तपः, सत्यम्। (२) **सप्तपर्वताः**—कैलासः, हिमवान्, मन्दराचलः, विन्ध्याचलः, निषधः, हेमकूटः, गन्धमादनम्। (३) **सप्तसमुद्राः**—लवणम्, इक्षुरसः, सुरा, धृतम्, दधि, दुग्धम्, जलम्। (४) **सप्तऋषयः**—अत्रिः, भृगुः, कुत्सः, वशिष्ठः, गौतमः, काश्यपः, अङ्गिराः। (५) **सप्तछन्दांसिः**—गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, वृहती, पंक्तिः, त्रिष्टुप् जगती। (६) **सप्तकन्याः**—ब्रह्माणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा। (७) **सूर्यस्य सप्त अश्वाः**—

वर्णनमिदं सर्वथा अद्भुतम् अदृष्टपूर्वम् भारतीय वाङ्मयेषु कस्मिन् अपि रामकाव्ये नेदं वर्णनं नेदृशी कल्पना नेदृशः चमत्कारः कुत्रापि परिलक्ष्यते। इदंहि वैशिष्ट्यम्।

इत्थं च सुग्रीवेण निवेदितं यत् भवानेव साक्षात् परब्रह्मरूपः परमात्मा सृष्टेः प्रपञ्चकर्त्ता धर्मसंरक्षकः वर्तते। सर्वे वानराश्च तत्र आनन्देन नृत्यन्तिस्म।

तुनदुविप् पडलम् (दुन्दुभि पटलम्)

अस्यैव पर्वतस्य समीपं कस्यापि दुन्दुभि नामकस्य महिषस्य पर्वताकाराः अस्थि पञ्जराः आसन्। ये च अस्थि पञ्जराः प्रलयकालानन्तरमपि अवशिष्टा एव स्थिताः। तं दृष्ट्वा अपृच्छत् किमिदं कस्य इमे अस्थि पञ्जराः? सुग्रीवेणोक्तम् दुन्दुभि नामकः एकः श्रृङ्गद्वयधारी दानवः आसीत्। यस्य श्रृङ्गौ आकाशे चन्द्र सूर्ययोः स्पर्शं कुर्वाते स्म। अग्नि ज्वाला सदृशः तस्य क्रोधः। एकदा स विष्णुना सह युद्धं कर्तुं समागतः। विष्णुना कथितं यत् मया सह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शिव समीपं चल। शिवंसमीपमागत्य स युद्धार्थं शिवं आहूतवान्। शिवेन कथितं यत् त्वं इन्द्र समीपं गच्छ। स एव त्वया सहयुद्धं कर्तुं शक्नोति। इन्द्रश्च कथितवान् यत् नाहं तव सदृशः वीरः त्वम् वालि समीपं गच्छ स एव त्वया सह युद्धं कर्तुं शक्नोति **(इदं विवरणं बाल्मीकि रामायणे नास्ति।)** वालिनः समीपमागत्य सः दानवः दुन्दुभिः बालिनम् आहूतवान्। बाली च समागत्य सहसा तस्य दानवस्य उभौ शृङ्गौ त्रोटयित्वा दूर दिशायां प्रक्षिप्तवान् तथा च तं दानवं भूमौ पातयित्वा प्राणान् जहार। तदारभ्य तस्य दुर्गन्ध पूर्ण शरीरं मांस पिण्डादिकं च पर्वताकाररूपमिदं विद्यते।

रामेणादिष्टः लक्ष्मणः स्वकीय पादाङ्गुलिभिः तं पर्वतं कन्दुकवत् उच्छाल्य अन्तरिक्षे प्रक्षिप्तवान् एष अपि महान् प्रतिरोधः सुग्रीवस्य विनष्टः।

कैलन् काण् पडलम् (आभरण दर्शन पटलम्)

सप्तताल वृक्ष बेधानन्तरं दुन्दुभि राक्षसस्य अस्थि पर्वत विध्वंसानन्तरं ऋष्यमूक पर्वते स्थितं रामचन्द्रं वार्तालापक्रमे सुग्रीवेणोक्तम्। एकस्मिन् दिने वयमत्र समुपविष्टाः आस्म। तदा दुष्ट रावणः आकाश मार्गेण एकां नारीं नीत्वा गच्छन्नासीत्। सा च नारी विलपन्ती गच्छतिस्म। अनुमीयते यत् सा सीता एव। सा च नारी एकस्मिन् वस्त्र खण्डे कियन्ति आभरणानि अधः प्रक्षिपति। अहं च आभरण सहितं वस्त्रखण्डं नीत्वा रक्षितवान्।

अत्यन्त मधुरभाषी सुग्रीवः तानि आभरणानिआनीय राम समीपं स्थापितवान्। तानि आभरणानि दृष्ट्वा रामचन्द्रस्य स्थितिः यादृशी जाता तस्याः स्थितेः वर्णनं नितान्तं करूणापूर्णं वेदनापूर्णं च। रामः तथा द्रवीभूतो जातः यथा अग्नौ घृतं द्रवितं भवति। सर्वाणि आभरणानि हृदि मस्तके च निधाय रामो भृशं विललाप। विलापक्रमे एव सीतायाः अङ्गप्रत्यङ्गस्य स्मरणं जातम्। यत् आभरणं नासिकया घ्रातं तत् पुष्पं जातम्। यदाभरणं स्कन्धोपरि रक्षितं तत् चन्दन तुल्यं सुशीलतम् उत्तरीयं जातम्। रोमाञ्चितः रामः अश्रुधारां

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रवाहयन् विरहाग्निना सन्तप्तो जातः। विरहाग्नेः तापः तथा आसीत् येन तापेन सुग्रीवस्य शरीरस्थकेशाः म्लानाः जाताः।

इदं दृष्ट्वा सुग्रीवेण चिन्तितं यत् मया किं कृतम् कथमाभरणम् आनीतम् येन रामस्य इयं स्थितिः सञ्जाता। ततः रामचन्द्रं प्रति उक्तवान् हे भगवन् ब्रह्माण्डस्य कस्मिन्नपि मागे स्थितां तां सीताम्-अन्विष्य निश्चितमेव आनयिष्यामि। श्रीमान् निश्चन्तं तिष्ठतु। पश्यतु मम कार्य कुशलताम्। रामचन्द्रः यद्यपि सुग्रीव वचसा आश्वस्तो जातः। तथापि आत्मानं हीनभावेन चिन्तितं यतोहि सूर्य वंशोद्भवानां राज्ञां भगीरथ-मान्धाता-दिलीपप्रभृतीनां प्रख्यातं यशः मया अधः कृतम्। येन स्वकीय धर्मपत्नी अपि न रक्षिता। रामः सुग्रीवं प्रति ब्रूते यत् तव वचनेनैव अहम् आश्वस्तः। त्वम् सर्वथा मम हितकारी नात्र कश्चन सन्देहः। किन्तु तव कार्यं साधयित्वैव युष्मान् कुत्रापि प्रेषणस्य विचारं करिष्यामि।

इति श्रुत्वा हनुमान् अवदत्। प्रथमं वाली निहन्तव्यः तथा सुग्रीवाय राज्य प्रदानं ततश्च विभिन्न दिशासु वानर सैन्यान् सीतान्वेषणार्थं प्रेषणं वरम्। रामः विचारेणानेन सहमतो बभूव।

बालिवदैप् पड्लम् (वालिवध पटलम्)

उक्त विचारविमर्शानन्तरं श्रीरामचन्द्रः नल नील सुग्रीव हनुमान् लक्ष्मण-प्रभृतिभिः सह विविध लता वृक्ष गुल्म पुष्पावलि-शोभां पश्यन् वालिनिवासस्थानं प्रतस्थे। उन्नतावनते अस्मिन् पार्वत्य प्रदेशे रामस्य पदातिना एव गमनं नितान्तं कष्टप्रदं विस्मय-जनकं च। दश योजन (४० क्रोशं) गमनान्तरं वालि निवास स्थानं किष्किन्धा नगरं प्राप्तवान्। या किष्किन्धा पुरी स्वर्णमयी अमरावती सदृशा विराजमाना देदीप्यमाना च दृश्यते।

रामः सुग्रीवं समीपमाहूय कथितवान् यत् त्वम् वालि समीपं गत्वा युद्धार्थं तम् आह्वय। अहं तु प्रक्षिप्तरूपेण युवयोः युद्धं पश्यन् वाणं प्रक्षेपयिष्यामि। येन स निहितः स्यात्। सुग्रीवेण तथास्तु इत्युक्त्वा वालि समीपस्थ प्राचीरं निकषा गत्वा उच्चैः उच्चतरैः गर्जनं कृतम्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तथा चोक्तम् यत् हे वालिन् वहिरागच्छ त्वया सह योद्धुकामः समुपस्थितोऽस्मि । तच्छ्रुत्वा वाली मनसि चिन्तितं यत् कथमयं तुच्छो ममानुजः युद्धार्थं समुपस्थितः । वाली उच्चैः विहसितवान् येन ध्वनिना लोकाः कम्पिताः जाताः । वाली वहिः निर्गत्य संहार कारिणं भीषणं युद्धं प्रारभत । युद्धार्थं प्रस्थितं वालिनं तस्य पत्नी तारासमागत्य तं रोधयामास कथितवती च यत् त्वम् युद्धं मा कुरु । यतोहिविना प्रबल साहाय्येन सुग्रीवः अत्रागत्य युद्धं कर्तुं कथमपि साहसमपि कर्तुं न शक्नोति । श्रूयते यत् राम नामकः कश्चित् तस्य सुहृद् सुग्रीवेण सह वर्तते । अतएव त्वम् युद्धात् विरमस्व ।

इदं श्रुत्वा वाली मनसि चिन्तितं यत् उक्तं च यत् रामस्तु स एव यः सर्व पुण्य कर्मणां फलस्वरूपं दर्शनं ददाति । स च महान् धर्मात्मा न्यायप्रियश्च । स एव रामः निज विमातुः कथनेन समस्तं राज्यं विमातुः पुत्राय भरताय प्रदाय वनं प्रतस्थे । अतएव स कदापि अधर्मम् अन्यायं न करिष्यति । त्वम् किञ्चित् कालं प्रतीक्षस्व त्वरितमेव सुग्रीवं निहत्य अहमागच्छामि ।

वालि-सुग्रीवयोर्मध्ये यादृशः भीषणः युद्धः प्रारब्धः तस्य वर्णनं शतशः पद्यैः महाकविना कम्बनेन कृतम् । विस्तरभयात् न तस्योल्लेखंक्रियते । युद्धकाले वालि सुग्रीवयोः समरूपतां दृष्ट्वा एतयोर्मध्ये कः वाली कश्च सुग्रीवः इति भेदं कर्तुं रामो नापारयत् । युद्धे आहतः सुग्रीवः पलायमानः रामं निकषा समागत्य निवेदितं यत् हे महाभाग, ममेयं दुर्दशा जाता भवता किं कृतम् । रामेणोक्तम् उभयोर्मध्ये भेदं कर्तुं नाहं पारितः । अतएव न किमपि कृतवान् । अधुना इदं पुष्पमाल्यं परिधाय पुनः गच्छ । अहं तदा बालिनं ज्ञात्वा अचिरेणैव तं हनिष्यामि । एवञ्च कृत्वा पुनः सुग्रीवं प्रेषयामास । पुनस्तयोर्भीषणं युद्धं प्रारभत् । वाली सुग्रीवं यदा भूमौ पातयितुमेव ऐच्छत् तन्मध्ये एव एकेन शरेण रामेण वाली विद्धः कृतः वाली भूमौ निपपात ।

वाणेन विद्धः व्याकुलः वाली शोचते नेदं विष्णोः सुदर्शनं चक्रं नायं शिवस्य त्रिशूलः नेयं कार्तिकस्य शक्तिः न चायं इन्द्रस्य वज्रायुधः । एते मम शरीरं छेत्तुं न समर्थाः । अयं वाणस्तु केनचित् धनुषा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रेरितः। इति विचार्य स्व विशाल पुच्छेन वाली तं शरं हृदयात् निस्सारितवान्। किन्तु तस्य उरसः अजस्र रक्तधाराः प्रवाहिताः। येन प्रवाहेण पुन वाली भूमौ पतितः। तथा च तस्मिन् वाणे अङ्कितं रामनाम दृष्ट्वा शोचते यत् कथं त्रिलोकस्य संरक्षकः भक्तानाम् अभीष्टदायकः ऐहिक पारलौकिक भवरोगस्य महान् औषधः महान् महिमामयः राम शब्दः वर्तते। कथमयं गृहत्यागी वनवासी धर्म-मार्गात् निर्गत्य सूर्यवंशस्य प्रख्यात कीर्तिं च विहाय कथमिदं दुष्कर्म कृतवान्। अत्र को मम दोषः यदि स्वयं राम एव एवं कुरुते तर्हि अन्यस्य का कथा?

तदनन्तरं रामः तत्रोपस्थितवान्। मुमूर्षुः वाली पृच्छति। हे राम, भवता किं शोचितं किं कृतम्। भवान् तु धर्मस्य न्यायस्य सत्य-वचनस्य रक्षकः। अन्यान् जनान् पातात् त्रायते किन्तु कथं स्वयमेव पापं कृतवान्। इत्थं वहुविधरूपेण रामं भर्त्सया मास। पुनश्चोक्तम् वालिना तव हस्ते स्थितमिदं धनुः तव परिहासं करोति। किं प्रच्छन्नो भूत्वा वाण संचालनं छात्र-धर्मः किं रिक्तहस्तस्य मम वक्षसि एवं-रूपेण वाण वेधनं युक्तम्।

ततः रामेणोक्तम् त्वम् निरपराधं स्वानुजं सुग्रीवं हन्तुमुद्यत आसीत्। तथा च अनुज पत्नीं हृत्वा स्वपत्नीत्वेन स्वीकृतः। एतानि वहूनि कारणानि सन्ति। यैः कारणैः निर्दोषस्य रक्षार्थं मया वाणः निःक्षिप्तः। त्वम् जानासि यत् यः बुद्धौ श्रेष्ठो भवति स एव महान् बुद्धिमान् कथ्यते। यथा गजग्राहयोर्मध्ये गजस्य मतिः विमला आसीत् अतएव शङ्ख चक्र गदाधारिणा विष्णुना स उद्धृतः। धर्मपथ गामी जटायुः मोक्षपदं प्राप्तवान्। अतएव अहं तवोपरि वाणं प्रक्षिप्तवान्।

ततः वाली रामं प्रार्थयामास यद्भूतं तद्भूतं। अधुना ममानु-जोपरि कृपा विधेया। अयं महाबुद्धिशाली वलवान् हनुमान् विद्यते। अयं तव सेवायां तथा अयञ्च मम पुत्रः अङ्गदः निरन्तरं तव सेवा-याम् स्थास्यति। एवमुक्त्वा शिरशि अञ्जलिं निधाय स्वकीय मोक्षपद-प्राप्त्यर्थं याचतेस्म। रामेण तथास्तु इति कथितम्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तदनन्तरं अङ्गद सुग्रीव प्रभृतयो वानरा: तथा वालि पत्नी तारा च विलापं कुर्वन्त: कुर्वन्ती च शोक सागरे निमग्ना: । तदा वालिन: अन्तिम संस्कारार्थम् अङ्गदादय: सर्वे संलग्ना: वभूवु: ।

अरशियर पडलम् (राज्यशासन पटलम्)

वालि श्राद्धानन्तरं श्रीरामचन्द्र: बुद्धिमन्तं कनिष्ठं लक्ष्मणम् आदिष्टवान् यत् सूर्यपुत्रं सुग्रीवम् अभिषेकं करोतु । रामस्याज्ञां प्राप्य लक्ष्मण: हनुमन्तं कथितवान् । राज्याभिषेक मङ्गलकार्याय अपेक्षितावश्यक साधनानि आनयतु । हनुमान् त्वरितमेव तत्परो भूत्वा पवित्राभिषेक जलं स्वर्ण मुकुटादि साधनोपकराणि आनीतवान् । लक्ष्मणश्च सुग्रीवाय स्वर्णमुकुटं प्रदाय विधिवत् राज्याभिषेकं चकार वेदज्ञा: ब्राह्मणा: आशीर्वादं प्रददु: । आकाशात् देवाश्च पुष्पवृष्टिं चक्रु: ।

राज्यमुकुट किरीटं धृत्वा सुग्रीव: रामचन्द्र चरणं निकषा समागत्य प्रणामं कृतवान् । रामश्च सुग्रीवं वक्षसा आलिङ्ग्य सुग्रीवाय निम्नोद्धृतं समुपदेशं ददौ । उपदेशक्रमे रामेणोक्तम् । त्वम् सानन्दं सुमनोहरं निजावासस्थानं गच्छ तथा बालि पुत्रेण अङ्गदेन सह मिलित्वा सुयोग्य राज्य शासनं कुर्वन् समग्र सुख वैभवं भुङ्क्ष्व । मन्त्रिभि: सह सद्व्यवहारं कुरु । विशाल सैन्यै: सह सद्व्यवहारं कुरु निर्दुष्टमाचरणं कुरु । प्रजाजनै: सह नातिदूरं नातिसमीपं तिष्ठ । देवतुल्य: सम्मानितो भव ।

न्यायशास्त्ररीत्या "यत्रयत्र धूमस्तत्र तत्र वह्नि:" इत्यनुमानानुसारं प्रजाजनेषु समुत्पन्नं विरोध धूमं निरंतरं द्रष्टुं सावधानं तिष्ठ । तथा च शास्त्रानुसारम् आचरणं कुरु शास्त्रे च विश्वासं कुरु । त्वाम् प्रति ये शत्रुतां कुर्वन्ति तान् प्रत्यपि मधुरव्यवहारं कुरु । प्रसन्नचित्त: सन् सर्वथा मधुर वचनं ब्रूहि । जीवन यात्रायां त्रिप्रकारका: जना: दृश्यन्ते, (क) मित्रम् (ख) अरि: (ग) उदासीन: । एतान् प्रति अपि दुर्व्यवहारं माकुरू । तेषाम् अभद्रं न कदापि शोचस्व । अपवादं श्रुत्वाऽपि मधुरमेव वद । प्रचुरं दानं कुरु परधनं च मा अपहर । एभि: कृत्यै: त्वम् सुखेन निर्विघ्नं राज्यशासन कर्तुं क्षमो भविष्यसि ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नारी कारणेन पुरुषस्य विनाशो भवति कष्टं जायते च। अस्य ज्वलन्तम् उदाहरणं तवाग्रजः वाली तथा तवाग्रे चाहम्। नान्यद्-उदाहरणं मया दीयते यद्यपि बहुशः उदाहरणानि सन्ति। यदि प्रजाः त्वाम् स्वामिनं मन्तुं नोत्सहन्ते तथापि त्वं प्रजां स्वजननीरूपां धात्री-तुल्यां मानय। तस्याः सेवां च कुरूष्व। एतानि अति महत्त्वपूर्णानि विशिष्टोपदेशवाक्यानि श्रुत्वा सुग्रीवः तथैव कर्त्तुं प्रतिज्ञातवान्।

सुग्रीवेणोक्तम् अस्माकं वासस्थाने इयानेव दोषो वर्तते यत् इदं वानरस्य वासस्थानम्। अन्यथा तु स्वर्गादप्यधिकं शोभनं सुधर्मा नामकं सभाभवनं वर्तते। अयं पर्वतश्च तरुशाखाभिः पुष्पलताभिः पवित्र-जलयुक्तसरिताभिः सुमनोहरं भव्यं स्थानम्! कृपया अत्र कियद्दिन पर्यन्तं निवासं कुर्वन्तु तत्र भवन्तः श्रीमन्तः मयि अनुकम्पां कुर्वन्तः इति प्रार्थ्यते मया। रामेणोक्तम् मया तु चतुर्दश वर्ष पर्यन्तं निम्नोन्नत प्रदेशमये वने एव वासस्य संकल्पः कृतः। अतएव गार्हस्थ्य-जीवन सुख सुविधायां ममावस्थानं नैव संभवं तत्रापि सीता वियुक्त-स्य मम दुर्भाग्यशालिनः। इति श्रुत्वा वानरराजेन न किमपि उत्तरितं केवलम् अश्रुधारां प्रवाहयन् रामस्य शुभौ चरणोः मूर्ध्ना प्रगृहीतौ। ततश्च वालि पुत्रः अङ्गदः रामस्य चरणयोः पपात। तमपि यथा-योग्यम् उपदिष्टवान् तथा सुग्रीवं पितृतुल्यं मानयितुम् आदिष्टवान्। हनुमन्तं प्रति च अवादीत् यत् हे महावीर त्वमपि स्वबुद्धिबलेन सुग्रीवस्य शासनकार्ये सहायको भवतु। रामचन्द्रमुखेन **एतवान् महत्त्वपूर्णः उपदेशः राजनीतिशास्त्रस्य मूलभूतं तत्त्वं तथा नान्येषु रामायणेषु एवमुपदेशः अवलोक्यते।**

तदनुसारं रामाज्ञां शिरसि निधाय सर्वे राजधानीं किष्किन्धां प्रति प्रस्थितवन्तः। रामस्तु च तस्मात् पर्वतात् प्रस्थाय **प्रश्रवण** नामक पर्वतं प्राप्तवान्। सुग्रीवश्च स्वराजधानीं किष्किन्धामागत्य सुखेन राज्यशासनं प्रारभत।

कार्कालप् पडलम् (वर्षाकालपटलम्)

समस्तेस्मिन् पटले पावस ऋतोः वर्णनं विविध प्रकारेण कविना विहितं यद् वर्णनं काव्यशास्त्रीय परम्परायां महत्त्वपूर्णं विद्यते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाल्मीकिना अपि अत्र पावस वर्णनं विशिष्टरूपेण कृतम् (**वाल्मीकिना किष्किन्धा काण्डस्य २४ सर्गे ७७ पद्येषु वर्णनं कृतं किन्तु कम्बनेन १२० पद्येषु वर्णनं कृतम्**)। भारतीय वाङ्मयस्य अन्येऽपि रामकाव्य कर्तारः कम्बन् कवेः पूर्ववर्तिनः परवर्तिनश्च कृतवन्तः। येषु षोडश-शताब्द्यां गोस्वामिना तुलसीदासेनापि विशाले रामचरित्रमानसे विशिष्ट रूपेण पावस वर्णनं वर्णितम्। अत्रमया अस्य पटलस्य कियान् महत्त्वपूर्णांशः उद्धृयते। तथा च रामचन्द्रस्य कियत् वियोग वर्णनं च विधीयते।

अधुना सूर्यः दक्षिणायनः जातः। अत्र रामः शोचते यत् मम वंशमूलरूपः सूर्यः (रामश्च सूर्यवंशी एव आसीत्) दक्षिणस्यां दिशि गतां सीताम् अन्वेष्टुं प्रायः गतवान्। आकाशे घनघटाः समागताः तत्र विद्युल्लसति गर्जनं जायते। समुद्रजलानि समुच्छलितानि। अति वेगवान् पवनः वाति। वर्षाकालीन विद्युल्लताभिः श्यामघन-मालाभिश्च इन्द्रादि अष्ट दिक्पालानां गजाः यत्र तत्र भ्रमन्तः दृश्यन्ते। येषां गजानां क्रमशः इमानि नामानि सन्ति। (क) **इन्द्रस्य ऐरावतः (ख) अग्नेः पुण्डरीकः** (ग) **यमस्य वामनः** (घ) **नैऋतस्य कुमुदः** (ङ) **वरुणस्य अञ्जनः** (च) **वायोः पुष्पदन्तः** (छ) **कुवेरस्य सार्वभौमः** (ज) **ईशानस्य सुप्रदीपः**। तथा च एताः विद्युल्लताः सर्पस्य अष्ट जिह्वातुल्याः सीता वियुक्तं मां (रामचन्द्रं) यथा दशन्ति तथैव रामेणानुभूयते। एते **च सर्पाः क्रमशः** (अ) **वासुकी** (आ) **अनन्तः** (इ) **तक्षकः** (ई) **शङ्खपालः** (उ) **कुलिकः** (ऊ) **पद्मः** (ए) **महापद्मः** (ऐ) **कर्कोटकः**।

इयं कल्पना नूतना विद्यते मेघैः जलधाराः पतन्ति। या जलधाराः सीता वियुक्ताय रामचन्द्राय कामदेवस्य पुष्पवाणाः इव अनुभूयन्ते इत्थं च इयं वर्षा ऋतुः रामचन्द्रम् उद्वेजयति। अस्मिन् पार्वत्य-प्रदेशे "**वेंगै**" नामक पुष्पाणि "**काडिच्ची**"-स्त्रीणां केशपाशेषु निबद्धानि। "**शूपुनाग**" पुष्पाणि धीवरबालानां केशपाशेषु सुनि-बद्धानि। "**रक्तोत्पलानि**" कृषक स्त्रीणां सुदीर्घ केशेषु सुनिबद्धानि सन्ति तथा च **कुन्दपुष्प माल्यानि** तत्र गोपवधूनां सुदीर्घ केश-जूटिकायां संलग्नानि दृश्यन्ते। याभिः पुष्पमालाभिःसुरभिः=सुगन्धिः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निःसरति तथा च तत्र भ्रमराः गुन्जन्ति । वियोग व्यथितो रामचन्द्रः एतानि पुष्पाणि कण्टक तुल्यानि मन्यते । **(विभिन्न जाति नारीणां कृते विभिन्न पुष्पाणां मालाः केशपाशेषु सन्नद्धाः सन्ति इयमपि नूतना कल्पना) ।**

अत्रत्य विरह वर्णनं कम्वनेन वृहद् रूपेण कृतम् । यच्च राम-विरहस्य साक्षात् चित्रं तु वर्तते एव सहैव वियोगेपि विप्रलम्भ शृङ्गारस्य चमत्कारपूर्णं विवरणं च विद्यते । यद् वर्णनं १२० पद्येषु विस्तृतमस्ति ।

किट्किण्डैप् पडलम् (किष्किन्धा पटलम्)

इत्थं रूपेण वर्षा ऋतुः व्यतीता शोभना शरद ऋतुः समायाता । रामः लक्ष्मणं कथितवान् निश्चितावधिः व्यतीतः । सुग्रीवः नागतः । किं अयमेव वचनपालनक्रमः ? मम सहाय्येन प्राप्त राज्यसुखभोगे प्रायः लिप्तः सुग्रोव. कृतघ्नो जातः । त्वम् शीघ्रं तत्र गच्छ तस्याभिप्रायं जानीहि । यद्येवं स्यात् तर्हि मम धनुः अपि विद्यते शराः अपि सन्ति, यमः यमलोकोऽपि विद्यते एव । त्वं किष्किन्धां गत्वा सुग्रीवं कथय यत् यदि स राज्य-शासनं कर्तुमिच्छति तर्हि सीतान्वेषणार्थं पूर्वप्रतिज्ञातं सर्वं कार्यं त्वरितमत्रागत्य करोतु । अन्यथा दुष्परिणामस्य प्रतीक्षां करोतु । त्वं केवलमिमं संवादमेव तत्र गत्वा ब्रूहि । तत्र क्रोधो न कर्तव्यः । शीघ्रमेव पुनः मम समीपम् आगमिष्यसि ।

लक्ष्मणः रामाज्ञां शिरशिनिधाय तं प्रणम्य च धनुर्वाणं गृहीत्वा सुदीर्घ कठिन मार्गे प्रचलितवान् । शेषावतारस्यलक्ष्मणस्य तीव्रगमनेन मार्गस्थिताः वृक्षाः पर्वतादयश्च विघटिताः जाताः । तथा आगच्छन्तं लक्ष्मणं वानराः दृष्टवन्तः । तं दृष्ट्वा सर्वे वानराः भयभीताः सन्तः युवराजम् अङ्गदं निकषा प्राप्तवान् । अङ्गदोऽपि लक्ष्मणस्यागमन-कारणम् अनुमानेन विज्ञाय त्वरितमेव स्वपितृव्यस्य सुग्रीवस्य समीपं प्रस्थितः ।

नलेन निर्मितराज्यान्त पुरे पुष्पशय्यायां सुग्रीवः शयानः आसीत् । तस्य पार्श्वे सुदीर्घकेशिन्यः बालस्तनयुक्ताः नार्यः तस्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चरण सेवां कुर्वन्त्यः आसन् । येन सुग्रीवः निद्रां प्राप्नुयात् । सुग्रीवस्य शरीरे तासां नारीणां सुदीर्घ केशाः इतस्ततः धूयमानाः विलम्बिताः सन्ति । एतत् दृश्यं केषां कामवासनां न जागरयति । सुग्रीवस्तु विपुल धनमदेन अत्यधिक सुरापानेन च स्वकीय चेतनाम् अपि विस्मृतवान् । इमां स्थितिं दृष्ट्वा अङ्गदः त्वरितमेव प्रत्यावर्तितो भूत्वा बुद्धिमन्तं प्रति प्रस्थितवान् । मध्ये अङ्गदः स्वमातरं निकषा गत्वा पृष्टवान् । अधुना किं करणीयं पितृव्यस्य तु इयमेव स्थितिः वर्तते । अङ्गदस्य माता तारा अब्रवीत् यूयं कृतघ्नाः अकरणीय-दुष्कर्मकर्तारः । अवधिः व्यतीतः । इदानींपर्यन्तं रामकार्यं न कृतवन्तः । स्वकर्मणः फलं प्राप्तुं तत्परो भव । एवन्मध्ये एव राजद्वारसमीपे विशाल वानर सैन्यैः सुरक्षिते राजभवने प्रवेष्टुं लक्ष्मणः समागतः । लक्ष्मणागमनेन तस्य चरण स्पर्शेनैव राजद्वार कपाटानि त्रुटितानि प्रस्थरखण्डवत् छिन्न भिन्नानि जातानि ।

इदं श्रुत्वा अङ्गदमाता तारा तत्र सहसा समागतवती । सा तारा सुसज्जिताभिः सखीभिः सह तत्र स्थिता । सुवासित सुदीर्घ श्यामल केशिनी तारा लक्ष्मणस्य मार्गम् अवरूद्धच सुमधुर वचसा लक्ष्मणं प्रति उक्तवती । हे वीर कुमार भवदागमनं तु चिर तपस्यायाः फलमस्ति यत् फलं इन्द्रादि देवैरपि दुष्प्राप्यम् । मयानुमीयते यत् अस्माकंम् उद्धारः जातः । किन्तु श्रीरामचन्द्र चरणात् दूरमत्राग-मनस्य किं प्रयोजनमिति ज्ञातुं प्रार्थये ।

तारायाः मधुर वाणीं श्रुत्वा लक्ष्सणस्य क्रोधः शान्तः मनसि दया च समागता । वैधव्ययुक्तां तां सुन्दरीं तारां दृष्ट्वा लक्ष्मणस्य लोचनानि अश्रुपूर्णानि जातानि । लक्ष्मणेनानुभूतं यत् मम मातरः अपि एवमेव वैधव्येन श्रीहीनाः अयोध्यायां तिष्ठन्ति किम् ? लक्ष्मणोऽवदत् सुग्रीवेण रामचन्द्रं प्रति प्रतिज्ञातं मम सेनाः सीता-मन्विष्य आनयिष्यन्ति । तद्विषये न किमपि ज्ञात्वा रामः मामत्र प्रेषयामास । तारा अब्रवीत् । सुग्रीवः न किमपि विस्मृतवान् । असंख्य वानर दूताः विभिन्न दिशासु सीतान्वेषणार्थं गतवन्तः । तेषां परावर्तनस्यापि समयः आगतः सुग्रीवस्तु भवतां शरणागत्या एव सर्वं लब्धवान् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लक्ष्मणः ताराया: वचनं श्रुत्वा सन्तुष्टो जातः। तदैव महाबुद्धिमान् वलवान् हनूमान् तत्रोपस्थितः। हनुमता उक्तम् हे वीर-पुङ्गव ! कपिकुलपतिः सुग्रीवः न किमपि विस्मृतवान् स्वकीय दूतान पूर्वमेव प्रेषितवन्तः। तेषां प्रत्यागमनस्य प्रतीक्षायां वयम् सर्वे समुत्सुकाः वर्तामहे। लक्ष्मणेनोक्तम् यत् इति तु निश्चितं यत् यदि भवतां समाश्वासनं न स्यात् तर्हि सर्वशक्तिमान् रामचन्द्रः स्वयमेव सम्पूर्ण विश्वमध्ये कुत्रापि स्थितां प्रियां सीताम् अन्विष्य आनेतु क्षमो वर्तते। इति श्रुत्वा मारुतिः अवदत्। कृपया शान्तो भवतु भवान्। सर्वाणि कार्याणि सेत्स्यन्ति अधुना कृपया सुग्रीवसमीपं प्रचलतु। लक्ष्मणः प्रस्थितः। अङ्गद माता तारा तु स्वर्गसुन्दरीभिः सहिता ततः परावर्तिता (अत्र कविना प्रदर्शिता यत् तारा वैधव्य-जीवनं यापयति किन्तु तस्याः सेविका एवं भूताः सौन्दर्यवत्यः वर्तन्ते)।

अङ्गदः राज्यान्तःपुरं प्रविश्य सुग्रीवस्य चरणौ पिधाय उक्तवान्। रामस्यानुजः क्रुद्धः लक्ष्मणः समुपस्थितः। भवान् निर्धारितसमये रामचन्द्र समीपं न गतवान् अतएव भवान् राम-समीपे कृतघ्नः मिथ्यावादी जातः। अत्र तु हनुमता लक्ष्मणस्य क्रोधः शान्तः कृतः। अतः शीघ्रमेव यथायोग्यम् करणीयम्। सुग्रीवः अवादीत् मम तु इयमेव निन्दिता सुरापानस्य दुष्प्रवृतिवर्तते, यत् सुरापानं प्राणिनां बुद्धिं विवेकं कर्त्तव्याकर्त्तव्य विचारं च हरति। इदं सुरापानं **पञ्च महापातक मध्ये हत्या, असत्यं, चौर्यं गुरुनिन्दा, सुरापानं चेति अन्यतमम्।** अधुना मम विवेकः समुद्भूतः तथा वेगेन लक्ष्मणस्य स्वागतार्थम् द्वारि गत्वा लक्ष्मणाय नमश्चकार। ततो भगवतो रामचन्द्रस्य कुशल प्रश्नं पृष्टवान् लक्ष्मणश्च सुग्रीवं दृष्ट्वा स्वकीय क्रोधं मनसि एव निधाय राज्यान्तःपुरे प्रस्तर खण्डेन निर्मितायां एकस्यां पट्टिकायाम् उपविष्टवान्। सुग्रीवेण स्वागतार्थं समानीतं विविधोपहारं परित्यज्य ब्रूते यत् रामचन्द्रस्य कन्दमूल फलादि भोजनेन अवशिष्टमेव मया भुज्यते। अतएव इदं किमपि न गृहीष्यामि। अत्र विलम्ब करणं न वरं यतोहि अहमेव तत्र गत्वा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रामचन्द्रस्य भोजनार्थं कन्दमूलादिकम् आनयिष्यामि तदा सुग्रीवः अपि अङ्गदेन सहितः रामं निकषा प्रचलितः । हनुमन्तं च कथितवान् यत् विविध सैन्ये सह त्वं शीघ्रमागच्छ ।

रामसमीपमागत्य सुग्रीवः रामस्य चरणौ स्वहस्ताभ्यां प्रणम्य धृतवान् । रामः तम् उत्थाप्य हृदयेन आलिङ्गनं कृत्वा कुशल प्रश्नादिकं पृष्टवान् । तस्मिन् क्रमे राज्यशासनस्य प्रजानां कष्टादिकस्य च जिज्ञासां कृतवान् । सुग्रीवेणोक्तम् । यद्यपि वयम् क्षुद्राः स्मः । किन्तु सहस्रकोटि वानर सैनिकाः विभिन्न दिशासु सीतान्वेषणार्थं गतवन्तः येषां प्रत्यागमनस्य प्रतीक्षा वर्तते । रामो ब्रूते न त्वं तुच्छः न च अपराधी यत् कर्त्तव्यमासीत् तत् सर्वं कृतम् कृतमेव त्वया । अग्रे च यत् करणीयं तदर्थं चेष्टा विधेया । ततः सुग्रीवादयः तस्मिन् माल्यवान् नामके पर्वते एव रात्रौ निवासं चक्रुः ।

तानैकाण् पडलम् (सेना सन्दर्शन पटलम्)

अस्मिन् पटले सुग्रीवस्य असीमित विशाल सैन्य सागरस्य विचित्रं वर्णनं विद्यते । नैतादृश सैन्य वर्णनं कस्मिन्नपि रामकाव्ये समुपलभ्यते । अतः वर्णनमिदं सर्वथा नूतनं विभाति । संक्षिप्तेऽस्मिन् पटले सैन्यवलस्य वर्णित नाम संख्यानां तदनुसारमेव विश्लेषणमत्र दीयते ।

(१) **शतदल नामकः** वीरः वानरः आसीत् यस्य दशलक्ष गज बलानां वानराधिपतिः आसीत् । तस्य पृष्ठभागे दश सहस्रकोटि वानर सेनाः आसन् ।

(२) **सुषेण नामकः** वीर वानरः समुपस्थितः तेन सह दशलक्षकोटि वानर सैनिकाः आसन् ।

(३) **अनुपम** नामकः सुग्रीवस्य श्वसुरः रूमायाः पतिः समुपस्थितः । येन सह सशक्ता अष्ट चत्वारिंशत् (४८) कोटि संख्याकाः वानराः आसन् ।

(४) ततश्च हनुमतः पिता **केशरी** समुपस्थितः येन साकं पञ्चाशत (५०) लक्षकोटिमिता वानरसेना आसन् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(५) **गवाक्षनामकः** सेनापतिः तत्रागतः येन सह चतुः सहस्र कोटिसंख्याकाः सेनाः आसन् ।

(६) **धूम्र नामकः** वलशाली ऋक्ष सेनापतिः द्वि सहस्र कोटि ऋक्षसैन्यैः सह समुपस्थितः ।

(७) **पनस् नामकः** वानराधिपतिः द्वादश सहस्र कोटि सैन्यैः सह तत्रागतः ।

(८) **नील नामकः** सेनापतिः पञ्चाशत (५०) कोटि परिमिता वानर सेना आसन् ।

(९) **गवय नामकः** वानराधिपतिः त्रिशत (३०) सहस्र कोटि भयंकर सैन्यैः सह सनद्धः आसीत् ।

(१०) **दरीमुख नामकः** वानरसेनापतिः त्रिशत् (३०) कोटि-सैन्यैः युक्तः समुपस्थितः ।

(११) महावल**शाली जाम्बवान्** एक सहस्रं षट्शत (१६ सौ करोड़) कोटि परिमिता-सैन्यबलैः सह तत्रागतः ।

(१२) **महाबलशाली दुर्मुखः** कोटि द्वय संख्यक सेनाभिः साकं तत्रागतः ।

(१३) **द्विविद नामकः** महावलशाली वानर सेनापति कतिपय कोटि संख्यक सैन्यवलैः सह समागतः ।

(१४) शतसहस्र कोटि सैन्यैः सह **मैन्दनामकः** वानरसेनापतिः अपि आगतः ।

(१५) नवकोटि वानर सैन्यैः सह **कुमुद नामकः** सूर्यसम तेजस्वी सेनापतिः समायातः ।

(१६) तदनन्तरं पञ्चविंशति सहस्रकोटि सैन्यैः सह स्वयं **हनुमान् समागतः** ।

(१७) देवशिल्पी (इञ्जीनियर) सदृशः **नल** असंख्य **सैन्यैः सह** समुपस्थितो जातः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इत्थं च संख्या गणनस्य अन्तिम महाशङ्ख नामक संख्यातः अपि सहस्र गुणमधिक संख्यायुक्ताः वानर सैन्यानां तत्रोपस्थित वर्णनं प्रमाणयति यत् सुग्रीवस्य वानरसेना अपरिमितबलशालिनः विशालाः आसन्।

(किन्तु इदं तु सर्वथा चिन्तनीयं विचारणीयं यत् एतासां संख्यानां वर्णनस्य कः आधारः किञ्चमूलस्रोतः। समस्त भूमण्डलस्यैव न हि अपितु त्रिभुनस्यापि क्षेत्रफले इयत्यः सेनाः स्थातुं न शक्नुवन्ति। अतः कवि कम्बनस्य एतद्वर्णनं प्रायः अर्थवादयुक्तं वर्तते। यत् वर्णनं सुग्रीवस्य बहुसंख्यक सेनापतीनां तथा च असंख्य सैन्यानां सङ्केत-मात्रमेव)। इयमपि कथा नूतना।

रामचन्द्रः इमं सेना सागरं दृष्ट्वा पुलकितः जातः तथा सुग्रीवं प्रति कृतज्ञतां ज्ञापितवान्।

नाड्बिट्ट पडलम् (अन्वेषणप्रेषणपटलम्)

रामचन्द्रः सुग्रीवाय धन्यवादं वर्धापनं च प्रदाय अब्रवीत्। हे वानरराज, व्यूहरचनां विना कियन्तः संख्याकाः एते सैन्याः वर्तन्ते इत्यस्य कापि गणना अस्ति। सुग्रीवेणोक्तम् गणितज्ञा विद्वांसः कथयन्ति **प्रवाहतुल्याः एते सैन्याः तेषां गणितज्ञानां कथने विश्वासमन्तरा न कोऽप्यन्यः उपायः। यतो हि सैन्यानां गणनम् असंभवम्।** तदा रामेणोक्तम् अधुना तु विविध वार्तालापेन न कोऽपि लाभो वर्तते यथायोग्यं स्व स्व कार्ये सर्वे निमग्नाः भवन्तु इत्येव वरम्।

महत्वपूर्ण मार्ग वर्णनम्:—

तदा सुग्रीवेणोक्तम्। हे हनुमन्! त्वं तु स्वपितुः पवनतुल्यः वेगवान् त्रिभुवन मध्ये सर्वत्र सञ्चारी वर्तसे, स्व पराक्रमं प्रदर्शय। मम मनसि एष निश्चयो जायते यत् रावणः दक्षिणस्यां दिशि गतः। अतएव इयं दिशा कठिना। अस्यामेव दिशायां त्वं गच्छ विजयी भव, यशो लभस्व। त्वया सह युवराजः अङ्गदः वरिष्ठः बुद्धिमान् जाम्ववान् गमिष्यति। यूयम्इतः प्रस्थाय सर्वप्रथमं भगवतो विष्णोः तुल्यं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वन्दनीयं विन्ध्यपर्वतं निकषा गच्छ। ततः तत्र पवित्र नर्मदा नदी प्रवहति यत्र देवाः समागत्य स्नान्ति। तदनन्तरं सुमनोहरं हेमकूट पर्वतं प्राप्स्यसि। यत्र देवाङ्गनाः गायन्ति तथा **'अशुण'** नामक प्राणी तिष्ठति। ततश्च **'पण्णं'** नामकी एका नदी वर्तते तस्याः तटं प्राप्य सीताम् अन्वेषय। अनन्तरं विदर्भदेशः मिलिष्यति। तत्र सुगन्धित-श्रीखण्डचन्दन तरवः सुगन्धिता अगरूवृक्षाः मिलिष्यन्ति। तान् पश्यन्तो यूयं दण्डकारण्यं प्राप्स्यथ। तत्रैव मुण्डक नामके वन्य-वृक्षावृत्तेः क्षेत्रे महर्षिः अगस्त्यः विराजते। यस्य दर्शनेन जनाः कल्याणं प्राप्नुवन्ति। तत्र **मुण्डक क्षेत्रे मधुर** फलानि नित्यम् असमयेऽपि फलन्ति। तत्र सूर्यस्थाऽपि मार्गः अवरुद्धो जायते। **इदं स्थानं भोगस्य मोक्षस्य च संगमस्थलं विद्यते।**

मुण्डक क्षेत्र शोभां दर्शम् दर्शम् उत्तुङ्ग शिखरयुक्तं **पाण्डुपर्वत** नामकं गिरिं द्रक्ष्यसि। तदग्रे भगवती **गोदावरी** नदी मिलिष्यति यस्याः सनातनः प्रवाहः मुक्ता स्वर्णकानि रत्नानि च समानयति यस्यां नद्यां स्नात्वा अपुत्रोऽपि नरकात् मुक्तो भवति। तां गोदावरीं तीर्त्वा **'शोण'** नद्याः तटं गमिष्यथः यत्र शत्रु संहारकः **षण्मुखः** भगवान् कार्त्तिकेयः वर्तते। तां सुन्दरीं शोण नदीं पश्यन् अग्रे **'सूर्यकान्त'** नामकं पर्वतं प्राप्यस्यथ। यस्य निकटमेव चन्द्रकान्तपर्वतोऽपि वर्तते। तेषां महतीं शोभां दृष्ट्वा तदग्रे **'अरून्धती'** नामक श्रेष्ठ पर्वतं प्राप्य आकाशगङ्गां द्रक्ष्यथ। यत्र शिखरे सूर्यचन्द्रमसौ विश्रामं कुरूतः। यं पर्वतं दूरतः एव प्रणम्य **'मरतक'** नामक पर्वतं प्राप्यस्यथ। अस्मिन्नेवपर्वते कश्यपमुनेः विनता-कद्रू नामिके द्वे भार्ये आस्ताम्। विनता गरुडस्य माता आसीत्। कद्रू च नागमाता आसीत्। या च कद्रू निज-सपत्नी विनतां दासीं विधाय शासतिस्म। अत्रैव गरुडः विषदन्त नागान् अमृतं पाययित्वा स्वमातरं विनतां दासी भावात् विमुक्ताम् कृतवान्। इयं पौराणिकी कथा अस्यैव मरकतपर्वतस्य विद्यते। इमं पवित्रं पर्वतं नत शिरसा प्रणम्य प्रस्थानं कुरुध्वम्। तदैव यूयं **श्रीवेङ्कट गिरि** समीपं गमिष्यथ। **अत्र चतुर्वेद ज्ञातारः वैदिकाः** अन्य शास्त्रवेत्तारश्च विराजन्ते। तत्रैव परमतत्त्वम् वर्तते। **इदं च स्थानं संस्कृत प्रदेशस्य तमिल प्रदेशस्य च मध्यवर्ती सीमा क्षेत्रं विद्यते।**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(कवि कम्बन् मते वेङ्कटगिरितः आरभ्य भारतभ्य दक्षिणभागः तमिल क्षेत्रम् । वेङ्कटगिरितः उत्तरभागः संस्कृतक्षेत्रम् । एतस्य मते तमिल भाषा संस्कृतभाषा-तुल्या अत्र संस्कृतव्याकरणं पाणिनि प्रभृतयः रचितवन्तः तत्रैव तमिल व्याकरणं महर्षिणा महावैयाकरणेन अगस्त्येन लिखितम् । इति तु कम्बन्—मतं वर्तते । नेदं मतम् भाषा वैज्ञानिक दृष्टया समर्थितं नान्ये च विद्वांसः मतमिदं मन्यन्ते । किन्तु प्रारम्भतः एव कम्बन् कविः तमिलभाषा-महत्त्वं सर्वत्र प्रतिपादयन् दृश्यते) ।

अत्रैव पवित्रा कावेरी नदी प्रवहति । अत्रैव अगस्त्यस्य स्थायि-स्थानं वर्तते । यस्मात् विशाल तमिल देशे यूयं प्रविश्य अग्रे गन्तुं यतध्वम् । एक मासस्य अवधिः मया दीयते । एतन्मध्ये एव सीता-मन्विष्य भवद्भिः परावर्तितव्यम् ।

सुग्रीवस्य इमाम् आज्ञां इदं च मार्ग दर्शन वर्णनं श्रुत्वा रामचन्द्रः हनुमन्तं प्रति अवादीत् । हे हनुमन् सीतायाः परिचयार्थं **कानिचित् लक्षणानि कथयामि यानि लक्षणानि सीतायाः आपादमस्तक सम्बन्धे आसन्** । एतस्य संक्षिप्त वर्णनमेवात्र विधीयते । यद्यपि कम्वनेन स्व स्वमानुसारं ललित पदावली युक्तसरस काव्य रचना चातुरी धरीणेन विविधरूपेण वर्णितम् । रामो ब्रूते, सीतायाः विशाल केशपाशाः तथा वर्तन्ते येषां वर्णनं चित्रणं च कवि कल्पनातीतं वर्णनातीतं च । तस्याः नेत्राणि अधरं कपोलं दन्तपङ्क्तयः स्तनं. ऊरू, जङ्घे, हस्तौ, पादौ, वाहू, अङ्गुलयः सर्वाणि अङ्ग प्रत्तङ्गानि तथा वर्तन्ते तथा च लावण्यं वर्तते येषां शोभाम् अवलोक्यैव त्वया त्वरितमेव ज्ञास्यसि यत् इयमेव सीता । यदि त्वां सीतां द्रक्ष्यसि तर्हि मम वचसा सावचनीया । विश्वामित्रेण सह मिथिला राजधान्यां महाराज विदेहस्य जनकस्य धनुर्यज्ञे कन्यासौधनामके अट्टालिका भागे मया सीता दृष्टा । यदर्थं मया शिवधनुर्भङ्गः कृतः । एवं रूपेण सीता परिचयं हनुमते प्रदाय स्वाङ्गुलीतः स्वनामाङ्कितम् अङ्गुलीयकं निःसार्य सीता-प्रत्ययार्थं ददौ । एवं हि सर्वे वानरवीराः सुग्रीव निर्दिष्ट मार्गेण यथायोग्यं यथास्थानं सोल्लासं सगर्वं प्रस्थितवन्तः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पिलम् पुक्कु निङ्गु पडलम्
(विलप्रवेशनिर्गमन पटलम्)

अस्मिन् पटले हनुमत् प्रभृतीनां वीराणां विन्ध्य पर्वत समीपमाग-मनान्तरं एकस्मिन् विशाल विवरे प्रवेश-वर्णनं तत्रत्य विचित्रै-स्थिति-वर्णनं पुनः तस्मात् विवरात् निर्गमन वर्णनं विशदेन वर्णितम् अस्ति। वाल्मीकिनापि विवर प्रवेशादि वर्णनम् कृतम्।

रामचन्द्रस्य आज्ञां मुद्रिकां चादाय जाम्बवान् अङ्गद सहितः हनुमान् दक्षिणस्यां दिशि प्रस्थानं चकार। अत्र केवलं दक्षिण-दिग्गामिनः एव विवरणं कविना लिखितम्। यस्य संक्षेपतः प्रमुख-वर्णनमत्र दीयते। अयं विन्ध्य पर्वतः शिवस्य जटाजूटसदृशः अस्ति। यत्र सीतान्वेषणार्थं समागतवन्तः हनुमत् प्रभृतयः वानराः इतस्ततः उपरि अधः भ्रमन्ति स्म। अत्रैव नर्मदा नदी वर्तते यत्र हंसानां क्रीडा-स्थलानि देवाङ्गनानां स्नानस्थानिस्वर्गवासिनां च भ्रमणस्थानानि सन्ति। इयं दक्षिण दिशा पृथिव्यां शिरो भूषण रूपा विद्यते। अत्र सीतामन्वेषयन्तः सीता सदृशं सर्वं वस्तु पश्यन्तः ते आसन्। यत्रैव हेमकूट नामकः पर्वतः विद्यते। तत्रापि सीतामन्वेषयामास। किन्तु सीता न दृष्टा। तदा ते निश्चतवन्तः यत् नेदं रावण-स्थानम्। अङ्गदः तदा अब्रवीत् '**वल्लम्** संख्या युताः' सेना जलावृत्त भूमौ गत्वा सीताम् अन्वेषय। यूयं ततः महेन्द्र पर्वते समागत्य मिलिष्यथ। हनुमत् प्रभृतयः वयं मरुप्रदेशे गच्छामः यत्र न जलं न वृक्षः न च छाया। अत्युष्णमयी भूमिः। यत्र चलनेन पादयोः व्रणं जायते, एकं मरणमेव संभवम्। तथापि तत्र एकस्याम् अन्ध गुफाकारयुक्तायां गुहायां ते प्रविष्टा यत्र भयात् सूर्यःचन्द्रश्च नागच्छतः। साहसं कृत्वा मारुतिः अवादीत्। यूयं मम पुच्छं दृढं धृत्वा पृष्ठतः आगच्छत। अहं अग्रे गच्छामि।

ततः अमरावती सदृशमेकं स्थानं **कोलोतुङ्ग नामकं** दृष्टम्। यस्य शोभा अनुपमा वर्तते। तत्र नाना फलानि तमिल-क्षेत्रस्य मधूनि शीतल-जलानि च वर्तन्ते। तैः वानरैः इदं दृष्ट्वा विचारितं यत् प्रायः इयमेव रावण नगरी। किन्तु यदा ते तत्र भ्रमणं कृतवन्तः तदा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तैः ज्ञातं यत् नात्र कोऽपि लोकः वर्तते । नायं देवलोकः न च मानव-लोकः न च नाग लोकः । प्रायः इयं माया नगरी स्वर्गपुरी तु विद्यते । पुनः निश्चितं यत् वयम् तु जीवामः । स्वर्गगमनार्थं तु मरणम् आवश्यकं तत्तु न जातम् । ततः जाम्बवान् साहसं वर्धयन् अवादीत् । यत् अस्माकं संतोषः न क्षीयते । मारुतिः अवोचत् । अस्मात् विवरात् वहिः गमनं तु नितान्तं कठिनम् । अतएव साहसं कृत्वा एव अग्रे गमनं वरम् । कियत् दूरे गते स्वयंप्रभा नामिका एका तपस्विनी दृष्टा या जटाजूट युक्ता सर्वसौन्दर्यमयी आसीत् तथा च योगाभ्यासे लीना आसीत् । हनुमता चिन्तितं यत् किं इयमेव सीता रामेण यल्लक्षणं कथितं तदाधारे मया परिक्ष्यते । एतन्मध्ये एव सा तपस्विनी समाधिं समाप्य जागृता जाता । तथा पृष्टवती यूयं कुतः कथम् अत्रागतवन्तः । हनुमता उक्तम्, आततायिना रावणेन स्वमायया रामचन्द्रस्य पत्नी सीता हृता । तां सीतामेव अन्वेषयन्तः वयमत्र समागताः ।

स्वयंप्रभा सहसा समुत्थाय स्वागतं कुर्वन्ती नृत्यति स्म । तथा चोक्तवती यत् मम तपस्या अद्य सफला जाता । मारुतिः तस्याः परिचयं पृष्टवान्, यस्याः सुदीर्घ केशराशयः भूमौ लुठन्ति स्म । सा उक्तवती केनापि कारणेन शापिता अहमत्र तपः कुर्वन्ती अस्मि । अधुना च शापविमुक्ता भवामि, यतोहि इन्द्रेण कथितम् आसीत् यत् रामचन्द्रस्याज्ञयया वानराः यदा आगमिष्यन्ति तदा त्वं शाप-विमुक्ता भविष्यसि । स समयः समागतः । अत्र सर्वं सुखभोग्यं वस्तु विद्यते । तेषाम् उपयोगं करोतु । हनुमत्प्रभृतयः तं कल्पितनगरम् उत्थाप्य सागरे निःक्षिप्तवन्तः, तथा तपस्विन्या स्वयंप्रभया सह वहिः समागतवन्तः । सा च स्वयंप्रभा स्वर्गं गतवती । इमे च वीराः वहिरागत्य पुनर्जीवनं लब्धवन्तः तदा सूर्यास्तो जायते स्म ।

आरूशल पडलम् (मार्गगमन पटलम्)

उपर्युक्त जलाशयं प्राप्य सर्वे वानर सैनिकाः स्वेच्छानुसारं तस्य सरोवरस्य जलं पीतवन्तः तथा च मधुरफलानि भुक्त्वा तत्रत्य मधूनि च पीतवन्तः । किञ्चित्कालार्थं ते तत्र विश्रामार्थं लम्बिताः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एतन्मध्ये एकः भीषणः दानवः समायातः। स दानवः वानरान् दृष्ट्वा तैः सह युद्धार्थं समुपस्थितः। अङ्गदः निद्राभङ्गेन क्रुद्धः सन् तं दानवं मुष्टिभिः प्रहार्य आहतं च कृत्वा अधः पातयामास।

ततः जाम्बवान् विचार्य उक्तवान् यत् अस्य सरोवरस्य रक्षकः स्वामी धूम्र नामकः महान् दानवः। ततः ते वानराः **"पण्णै"** नामक नदी तटे समायाताः। तथा तत्र कियत् कालं स्थित्वा तां नदी तीर्त्वा विदर्भदेशे समायाताः। समग्रे विदर्भदेशे सर्वत्र सीताम् अन्वेष्टुं भ्रमन्ति स्म। तत्र सीता न मिलिता। ततः प्रस्थाय **'गुण्डक'** नामक नदी तीरं प्राप्तवन्तः। यत्र देवाङ्गनाः यक्षिण्यश्च समागत्य जलक्रीडां कुर्वन्ति। तत्र बहवः सुसज्जित सुदीर्घकेशयुक्ताः रमणी समूहाः विचरन्ति स्म। किन्तु तत्रापि सीता न मिलिता।

ततः प्रस्थाय **शोण नद्याः** तटमागतवन्तः ततश्च **'कोङ्कण'** देशस्य सप्त भागेषु भ्रमन्तः अपि सीतां न दृष्टवन्तः ततः प्रस्थाय **वेङ्कटादि** पर्वतं निकषा समागतवन्तः यत्र साक्षात् भगवतः विष्णोः चरणद्वाय चिह्नस्य दर्शनं कृत्वा मोक्षं प्राप्नुवन्ति लोकाः। इमे वानराः तत्र वेङ्कटाचलपतेः पूजा कृतवन्तः। एवंरूपेण इमे वीराः दक्षिण तमिलदेशस्य सर्वस्मिन् भागे भ्रमन्तः कष्टं सहन्तः श्रान्ताः जाताः किन्तु तत्रापि सीता नाधिगता। सर्वे निराशाः स्थग्नाः भूत्वा **'महेन्द्र'** नामक पर्वते समागतवन्तः यस्य सङ्केतः प्रस्थानसमये सुग्रीवेण प्रदत्तः आसीत्।

सम्पादिप्-पडलम् (सम्पाति-पटलम्)

तत्र दिग्गज तुल्ये महेन्द्र नामक पर्वते समागत्य हनुमत् प्रमुखाः सर्वे वानराः दक्षिण समुद्रं मेघ सदृशं गर्जन्तं तरङ्गायमानं दृष्टवन्तः। अत्र कविः कल्पनां करोति यत् एते उत्तालतरङ्गाः स्वहस्तैः वानरान् आमन्त्रयन्ति यत् अस्माकं पार्श्वे लङ्कायां सा विशालाक्षी सुकेशी सीता वर्तते।

तत्रैव विभिन्नदेशेभ्यः अन्ये च सैनिकाः समागत्य सम्मिलिताः। ते सर्वे स्वकीय असफलतायां विचारयन्तः चिन्तिता आसन्। यत्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कार्यसिद्धिं विना परावर्त्तनं न हि वरम्। समयावधिः च व्यतीत एव दृश्यते। मिं कुर्यामो वयम् इति न ज्ञायते अस्माभिः किं विषं पीत्वा वयं प्राणान् त्यजेम। यतो हि यत् कर्तुं वयं कृतप्रतिज्ञाः आस्म सा कार्य सिद्धिः नैव जाता। एवं चिन्तयन्तः यदा ते व्यथिताः आसन् तदा श्रेयान् जाम्ववान् उक्तवान्। यदि वयम् अत्र मरणं प्राप्स्यामः तर्हि अवश्यमेव इमं समाचारं केनापि प्रकारेण सुग्रीवः ज्ञास्यति। स इति श्रुत्वा त्वरितमेव स्वर्गलोकं प्राप्स्यति। इत्यवलोक्य राम-लक्ष्मणौ अपि मरिष्यतः इदं तु ध्रुवम्। येन केन प्रकारेण इमां दुर्घटनां ज्ञात्वा अयोध्यायां भरत प्रभृतयः सर्वे लोकाः सर्वाः मातरश्च देवलोकातिथयः भवितारः।

तदा महावीरेण हनुमता उक्तं यत् अधुना तु वयं लोक त्रयाणां मध्ये प्रायः एकस्मिन् मार्गे अन्वेषणं कृतवन्तः। अन्ये च सर्वे लोकाः तेषां भागाश्च शेषाः एव सन्ति। अतएव वयम् अन्वेषणार्थं पुनः प्रस्थानं कुर्याम। यदि अवधि व्यतीतेऽपि सीता प्राप्ता भविता तदापि किं सुग्रीवः समयोल्लङ्घनस्य दोषं दास्यति। मरणं तु सर्वथा निन्दनीयम् यद्यन्वेषण क्रमे जटायुवत् मरणं स्यात् तर्हि तु शोभनम्।

महेन्द्र पर्वत समीपस्थ जटायोः भ्राता सम्पातिः निवसन् आसीत्। अनुजस्य जटायोः मरणं श्रुत्वा सम्पातिः रुदन् क्रन्दनं कुर्वन् तेषां समीपमागतवान्। तं दृष्ट्वा क्रोधाविष्टः हनुमान् उच्चैः गर्जन् तं पृष्टवान्। अरे कपट वेषधारिन् वञ्चक राक्षस किं त्वं मम हस्तात् मुक्तो भविष्यसि? ततः सम्पातिना उक्तम् यत् जटायोः कः हन्ता वर्तते, कृपया सविस्तरं ब्रूहि। अहं तस्य अग्रजः सम्पातिः नाम गृध्रः अस्मि। यदि त्वं सर्वं कथयिष्यसि तर्हि अहमपि सीता सम्बन्धिनं सर्व विवरणं दास्यामि। अहं तु भ्रातृरहितः जातः। इति ज्ञात्वा अति दुःखितः अस्मि।

तदा हनुमता जटायुमरणस्य सर्वं वृत्तान्तं सविस्तरं श्रावयामास। यथा चन्द्रहासेन असिना रावेणन जटायुः निहितः। तत् श्रुत्वा सम्पातिः उवाच, आकाशमार्गेण गच्छता रावणेन हृता सीता मया दृष्टा। सा च सीता लङ्कायां कुत्रापि भयंकर कारागारे वन्दिनी वर्तते

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किन्तु अधुनाऽपि जीवति। तत्र गत्वा तां पश्य। किन्तु लङ्कागमनं न सरलम्। अति कठिनं तत् कार्यम्। यदि संभवं तर्हि एकाकी एव कोऽपि गच्छतु। प्रच्छन्नो भूत्वा ताम् अवलोक्य तया सह वार्ता कृत्वा परावर्तय। तथा तात्कालिकं दुःखं दूरीकृत्य शीघ्रमेव रामसमीपं गत्वा सर्वं निवेदय। इत्युक्त्वा सम्पातिः आकाशमार्गेण प्रस्थितः।

मयेन्दिरप पडलम् (महेन्द्रपटलम्)

सम्पाति द्वारा सीता सम्बन्धिनीं वार्तां ज्ञात्वा जाम्ववान् अङ्गद-हनुमान् नल नीलादि प्रभृतयः सर्वे वीर पुङ्गवाः प्रसन्नाः सन्तः परस्परं गम्भीर विचार विमर्शे संलग्नाः बभूवुः। तैः चिन्तितं यत् गृध्र-राजस्य कथनं तु सर्वथा तथ्यपूर्णं किन्तु अधुना किं करणीयम् इति सर्वैः गम्भीरतया विचारणीयम्। सर्व प्रथमं नलेनोक्तम् (यश्च नलः वानरेषु अभियन्ता प्रमुख तुल्यः कथ्यते स्म) विशालेऽस्मिन् पारावारे सागरे सेतु निर्माणं नैव मया शक्यम्। जाम्बवान् उक्तवान् एकदा स समयः आसीत् यदा त्रिविक्रमः भगवान् वामनः सम्पूर्णां धरित्रीं एक पादेनैव लंघितवान् तदा अहमेव सम्पूर्णां पृथ्वीं धावन् सूचनामिमां प्रसारितवान्। किन्तु इदानीमहं शक्तिहीनः महान् वृद्धः सञ्जातः। अतएव समुद्रपारं गन्तुं नाहं क्षमः। इत्युक्त्वा जाम्बवान् हनुमतः स्मरणं कृत्वा तम् आहूतवान् उक्तवान् च यत् हे महावीर हनुमन्, रामेण सह तव निकटता वर्तते। तस्य त्वं प्रेयान् वर्तसे। त्रैलोक्ये त्वया सह कोऽपि योद्धुं न समर्थः। त्वं तु कामरूपः वर्तसे। कदापि मेरुपर्वताकारो भवितुं शक्नोसि। त्वं हि समुद्र तरणे शक्तः। आकाशमार्गेण च गमने सुदक्षः।

अतएव आकाशमार्गेण समुद्र तरणार्थं त्वं तत्परो भव। भगवान् तव सहायको भूयात्।

जाम्ववतः वचनं श्रुत्वा हनुमता विनम्र भावेन निवेदितम्। यद्यपि भवन्तः विशाल सागर तरणे समर्थाः सन्ति। सीताम् अन्विष्य रावणं च पराजित्य देवीं सीताम् आनयितुं सर्वथा समर्थाः सन्ति एव

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किन्तु यदा भवतः आज्ञा मिलिता तदा अहं स्व जन्म सफलं कर्तुम् अस्मिन् महति कठिने कार्ये संलग्नो भवामि । यावत् पर्यन्तम् उत्ताल तरङ्ग युक्ते विशालसागरमध्ये स्थितां लङ्कां प्रविश्य कार्यं साधयित्वा नागमिष्यामि तावत् पर्यन्तं भवन्तः मम प्रतीक्षायाम् अत्रैव तिष्ठन्तु । शीघ्रं मह्यम् आज्ञां प्रददतु ।

सर्वे अङ्गदादयः वर्धापनं कृतवन्तः । आकाशात् देवाः पुष्पवृष्टिं चक्रुः । हनुमान् च त्वरितमेव उत्कूर्दनं कृत्वा **'महेन्द्र'** पर्वतस्य गगनचुम्बिनं शिखरं प्राप्तवान् । हनुमतः वेगेन तत्पर्वतारूढे सति तस्य महेन्द्र गिरेः कियान् अंशः पृथिव्यां प्रविष्टः शिखराश्च यत्र तत्र विकीर्णाः जाताः । महेन्द्र पर्वतस्तु हनुमतः चरणतुल्यो दृष्टः ।

।। इति किष्किन्धाकाण्डम् ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अथ सुन्दरकाण्डम्

कडलुतावु पडलम् (समुद्रतरणपटलम्)

अस्मिन् पटले हनूमता समुद्रतरण वर्णनं यत्र मैनाक सुरसा प्रभृतिभिः साकं साक्षात्कार वर्णनं स्वकीय (हनुमतः) विशालता समुद्र शोभा वर्णनं च सविशेषं विद्यते ।

मङ्गलाचरणम् (मूलपद्यम्)

अलङ्गलिर् रोन्रुम् वायभूमे यरवन्प् पूद मैनदुम् ।
विलङ्गिय विशरप् पाट्रिम् बेरुपा उर्र्वीक्कम् ।
कलङ्गुव दवरव् कण्डा लबरत्ब कवि लेन्दि,
इलङ्गैयिर् पारुदा मरहलक् किददि यावार् ।

एतस्य संस्कृतानुवादः

पञ्चतत्त्वात्मक विश्व प्रपञ्च निर्माणकरः,
सर्पवद्रज्जुनिवारणसमो वरो ।
निर्गुण सगुणाकारो यः सर्ववन्द्यः,
जगदिदं रक्षतु स महान् रामचन्द्रः ।।

महेन्द्र पर्वतात् समुद्रतरणार्थं समुद्यतो हनूमान् व्योम्नि देवलोकं दृष्ट्वा इयमेव लङ्केति भ्रमात्मकं ज्ञानमनुभूय समुद्र तरणार्थमाकाशमार्गे प्रस्थितः । तदा तेन दृष्टं यदियं लङ्का विशाल प्राचीर-विजय-द्वार स्वर्णमय सौधाट्टालिका विविध वीथीयुता सुशोभना विराजते । आनन्दोत्साहेन तालिकां सम्मर्द्य भीषण गर्जनं कुर्वन् कूर्दयामास । यस्य गर्जनेन दशदिशाः कम्पिताः दिक्पालाश्च भयभीताः जाताः ।

हनुमतः पादभारेणान्दोलितः स महेन्द्र-पर्वतः अधः प्रवेष्टुमिव दृश्यते । तत्र पर्वते स्थिताः सर्पादयः सिंहव्याघ्रादयो भीषणजन्तवः विचलिताः कियन्तो वहिर्निर्गताः कियन्तश्च तस्मिन्नेव रुधिरं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वमन्तोऽधः प्रविष्टः मृताश्च। स च महेन्द्र पर्वतः यद्यपि विशालो विस्तृतश्चासीत् किन्तु विविध वृक्ष गुल्मलता पुष्पादिभिः सुन्दरपशु-पक्षिभिः हरिणसारसादिभिरपि सुशोभित आसीत्। ततः प्रस्थाय यदा पवनसुतः आकाशमार्गेण प्रस्थितः तदा देवर्षिगणाः गगने सम्मिलिताः सुगन्धकेसर युक्तानि पुष्पाणि ववर्षुः।

हनूमांस्तु पलके एव स्वाकारं विशालं स्वल्पं पुच्छादि प्रदर्शनं कुर्वन् अन्तरिक्षे प्रविवेश। तस्य द्रततरवेगेन वृक्षाः लताः पशवः असंख्य पदार्थाश्च इतस्ततः विकीर्णा अधस्तादुपरि उपरितोऽधः गताः।

तत्राकाशे देवगणाः स्तुवन्त आसन्, वेदज्ञमुनयः साधुवादान् प्रददुः, भूमिवासिनश्च नमश्चक्रुः। हनूमांस्तु मनसि चिन्तयन् व्रजतिस्य यदैव चन्द्रहासासिधारी रावणो मिलिष्यति तदैव तं स्ववक्षसा परिरम्य निपीडयिष्यामि।

यो दशशिराः रावणः इन्द्रियनिग्रहं विधाय सुदीर्घं तपस्यां कृत्वा वरदानं लेभे। तस्यान्तकालः समागतः। उत्तरदिशातो दक्षिण दिशां गच्छन् मारुतिः सूर्यवत् देदीप्तः सन् दृश्यते यत् पूर्वदिशां विहाय सूर्यः उत्तरस्यां दिशि एव उदयं प्राप्य रावणसंहारार्थं दक्षिणस्यां दिशि गच्छति।

यदा पर्वताकारो हनुमान् झान्झावातवेगेन गच्छन्नासीत् तदाकाश मार्गं स्पृशन् मैनाक पर्वतः समुद्रान्निर्गतः। स तथैव दृश्यतेस्म यथा क्षीरशायी सरस्रशीर्षा विष्णुः शेष शय्यातः समुत्थाय समागतोऽस्ति। यतः तस्यापि पर्वतस्य सहस्राणि रक्तमय शिखराणि सन्ति। मैनाक-स्यापरं नाम हिरण्यनाभः अपि विद्यते।

एकदा दुर्वासा ऋषिः प्रसन्नोभूत्वा इन्द्राय एकां मालां ददौ। इन्द्रस्तु तां मालां स्वगजस्य ऐरावतस्य मस्तके निःक्षिप्तवान्। दुर्वासा इदं स्वकीयापमानं मत्वा कुपितो भूत्वा समुद्रे निःक्षेपणस्य शापं ददौ। ततः सर्वे स्वर्गीयपदार्थाः समुद्रे समाविष्टाः। तदा विष्णुना प्रेरिताः देवाः असुराश्च क्षीर सागरमन्थनं चक्रुः। तेनैव मैनाकोऽपि वहिः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निर्गतः । स च मैनाकः आकाश मार्गे सर्वत्र व्याप्तः । इदं दृष्ट्वा हनुमान् विस्मितो जातः ।

क्रुद्धो भूत्वा वायु पुत्रो हनुमान् पादेन तथा प्रहारितवान् येन स मैनाकः अधःपतितः । येन तस्य शिखराणि नीचैः गतानि तलानि च उपरि आगतानि । एतेन मैनाकः दुखितः सन् पुनरूत्थाय हनुमतः समीपमागत्य प्रार्थितवान् । हे तात, शृणु नाहं तव विरोधी । यदा इन्द्रेण मम पक्षाः छिन्दिताः तदा तव पित्रा वायुना ममोपरि दयां विधाय समुद्रे निःक्षिप्तम् कथितं च यत् यदा रामचन्द्रस्याज्ञया सीतान्वेषणार्थं मम पुत्रः हनुमान् आगमिष्यति तदा तव उद्धारः भविष्यति, त्वं च तस्य साहाय्यं करिष्यसि । तस्य वचनेनैव अहं तव सेवार्थं समुपस्थितः । क्षणमत्र विश्रम्य गम्यताम् । अहं तव सर्वथा हितकारी ममातिथ्यं स्वीकुरू । फलादिकं भक्षय ।

हनुमता प्रोक्तम्, रामकार्य-सम्पादनं विना नाहं भक्षयिष्यामि । मधुतुल्यं तव वचनमेव ममातिथ्यं केवलं त्रिकूट पर्वत शिखरे स्थितां लङ्कां प्रति प्रथमं गन्तव्यम् इत्येव मम कार्यक्रमः । यदा कार्यं विधाय प्रत्यावर्तयिष्यामि तदा तवातिथ्यं प्राप्स्यामि, अधुना आज्ञां देहि । इत्युक्त्वा पवन पुत्रः प्रस्थितः । एतन्मध्ये देवाः सुरसा नाम्नीं राक्षसीं हनुमत् समीपं प्रेषितवन्तः हनुमतः बलं ज्ञातुम् । इयं **सुरसा यद्यपि राक्षसी तथापि गुणवती आसीत् । (बाल्मीकिना इयं नाग माता शब्देन कथिता)**

हनुमतः समीपमागत्य उक्तवती यदद्य देवैः मह्यं सामिषाहारः प्रेषितः । तव भक्षणेन मम बुभुक्षा शान्ता भविष्यति । हनुमान् अब्रवीत् । भवतु नाम तव मुखद्वारेणैव अहं गमिष्यामि । सुरसा च स्वमुखं तथा व्यादितवती यत्र असंख्याः लोकाः प्रवेष्टुं शक्ष्यन्ति । एवं दृष्ट्वा हनुमान् स्वकीयं लघुरूपं विधाय सुरसामुखं प्रविश्य त्वरितमेव वहिरागतः । इदमवलोक्य देवाः पुष्पवृष्टिं चक्रुः । सा सुरसा हनुमते आशीर्वादं प्रदत्तवती यत् तव कार्यसिद्धिः भविता । तदनन्तरं एका भीषणाकारा अङ्गतारा नामिका राक्षसी समक्षमागत्य वाधां चकार । हनुमान् तु तां प्रत्युक्तवान् यत् छायां संगृह्य कस्याऽपि समीपमानयने त्वं समर्था । इदमेव वरदानं त्वया लब्धम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किन्तु त्वं कथं मम मार्गमवरुध्य अत्र तिष्ठसि, किं कार्यं वर्तते इति स्पष्टं ब्रूहि । अङ्कतारा अवदत् मां सामान्यस्त्रीं न जानीहि यो मया सह संघर्षणं करोति स विनाशतां प्राप्नोति । एवं यावत् सा उक्तवती तावत् हनुमान् तस्याः उदरे प्रविश्य उदरस्थ सर्वाणि मांस-मज्जादीनि वस्तूनि नीत्वा आकाशे पक्षि तुल्यं उड्डीतवान् । इत्थं च **'अङ्कतारा' राक्षसी** मृता । यतोहि हनुमान् तस्य उदरं हृदयं च विदारितवान् इत्थं च सुग्रीवोक्तम् विविध विघ्न बाधां निःसार्य स्वर्ग तुल्यां सप्तशत योजन विस्तीर्णां समग्र सुख वैभव पदार्थ परिपूर्णां लङ्कां दृष्टवान् ।

उरुतेड्डु पडलम् (लङ्कानगर अन्वेषण पटलम्)

अस्मिन् समस्ते पटले लङ्कायाः शोभा वर्णनानि लङ्कायाः स्वर्ग-सुन्दरीणां नारीणां अनुपम शोभायाश्च वर्णनानि विद्यन्ते । यद्यपि वाल्मीकि रामायणस्य सुन्दरकाण्डेऽपि लङ्कायाः मनोहारिणीं शोभां नारीणां काम कलाश्च कविना वर्णिताः । किन्तु स्वकीय विशिष्ट काव्य शैली वर्णनक्रमे कम्बन् **कविः २३४ पद्येषु लङ्काशोभां वर्णितवान् ।** अत्र तेषां वर्णनानां महत्वपूर्णः कियान् अंशः एव वर्ण्यते ।

सूर्य रश्मि सदृशाः देदीप्यमानाः स्वर्ण निर्मिता मणि जटिताः लङ्का प्रासादाः समुद्भासन्ते स्म । यान् दृष्ट्वा नेत्राणि चाकचिक्ये निमीलितानि भवन्ति । अत्र देवाङ्गनाः दासी भावेन सेवन्ते । तत्रत्याः सर्वे तरवः कल्पवृक्ष सदृशाः सन्ति । देवाश्च स्वाधिकारं परित्यज्य दास्यभावं गताः तिष्ठन्ति स्म । केवलं श्रीविष्णुः शिवं च विहाय ब्रह्मा अपि रावणस्याज्ञायां तत्परः आसीत् । तत्र सर्वे गजाः सर्वप्रकारकाः अश्वाः कस्तूरि-मृगाः नवविकसितानि पुष्पाणि मधूनि च्यावयन्तः लताश्च शोभन्ते । लङ्का वैभवं दृष्ट्वा न कोऽपि निश्चेतुं शक्नोति यत् अत्र विश्वकर्मा प्रशंसनीयः रावणस्य तपः प्रशंसनीयम् अथवा विरञ्चि द्वारा प्रदत्त अमोघ-वरदानं प्रशंसनीयम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लङ्कायां चक्रवाताः न प्रविशन्ति मेघाः न गच्छन्ति अग्निः न तपते। विद्याधराः नृत्यन्ति, सुदीर्घकेशिन्यः राक्षस्यः यक्ष-स्त्रीभिः सह स्पर्धन्ते। नव निधयः निरन्तरं दासवत् अनुसरन्ति। अष्टसिद्धयश्च करबद्धेन निरन्तरं प्रार्थयन्ति। सर्वासां नारीणां ओष्ठ कपोल नासिका नेत्र स्तनादि सहिताः विशालाः कृष्णमेघ सदृशाः स्निग्धाः केशपाशाः निरन्तरं लोकान् आकर्षयन्ति। इति सर्वम् अवलोक्य हनुमता चिन्तितं यत् भगवतः रामस्य समीपं गत्वा मया किं कथितव्यं इति न ज्ञायते। हनुमान् चिन्तियति अत्र असंख्याकाः असीमिताः सैन्यबलाः सन्ति। रावणस्य पराक्रमस्य सीमा न वर्तते। तत्र तु मायविनो राक्षसाः अपि सन्ति। येषां हस्तेषु शूल परशु असि मुसल गदा वक्रदण्ड चक्रपुलिस कुन्त भिन्दिपाल भुशुण्डि अंकुश प्रभृतिभिः अस्त्रशस्त्राणि सन्ति।

सत्यामेवं स्थितौ सहसा लङ्का देवी नाम्नी राक्षसी समुपस्थिता। यस्याः नाम लङ्किनी आसीत्। तस्याः चतुर्मुखानि अष्टभुजाः सुतीक्ष्ण नेत्राणि आसन्। तस्याः हस्ते करवालः शूलः भयानक गदा पाशः शङ्खः धनुः प्रभृतयः अस्त्राणि च आसन्। सा पञ्चरंग युक्त वस्त्राणि आच्छादितवती आसीत्।

तां दृष्ट्वा हनुमान् अब्रवीत् हे भीषणरूपे अत्र आगच्छ। अहन्तु लङ्कां द्रष्टुम् आगतोऽस्मि। दीनोऽयं जनः कथं मां बाधसे यावत् हनुमता इत्युक्तम् तन्मध्ये एव सा ब्रूते। त्वरितं गच्छ कथं वाग्जालं करोसि अत्र तु त्रिपुरान्तकः देवः अपि नागन्तुं शक्नोति त्वं कः असि, गच्छ गच्छ त्वं दयापात्रमसि। एवमुक्त्वा सा **'अम्मारी''** इति वदन्ती हसन्ती आसीत् पुनः पुनः सा अब्रवीत् त्वं कस्य आज्ञया अत्र आगतः। हनुमता चोक्तम्। लङ्काम् अदृष्ट्वा नाहं गमिष्यामि त्वं यदि शक्ष्यसे तर्हि मां मारय इति श्रुत्वा सा अष्टभिः मुखैः अग्नि ज्वालां प्रज्वालयन्ती चीत्कारं कुर्वन्ती अग्निमुखं त्रिशूलं हनुमतः उपरि प्राक्षिपत्। हनुमान् तं त्रिशूलं स्व दन्तैः संगृह्य त्रोटितवान्। इदं दृष्ट्वा सा चिन्तितवती यत् एकदा ब्रह्मणा कथितं यत् यदा कश्चित् वानरः आगमिष्यति तथा त्वां स्पृष्ट्वा दण्डयिष्यति। तदा त्वं स्वकार्यं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विहाय मां निकषा आगच्छ। तत्पश्चात् अस्या: लङ्कायाः विनाशो भविष्यति। प्राय: स एव वानर: तथा स एव समय: समागतोऽस्ति।

हनुमन्तं प्रति उक्तवती यत् ब्रह्मण: वाणी चरितार्था जाता। धर्म: विजित: पापं पराजितं त्वं यदिच्छसि तत् कुरु सर्वं सेत्स्यति। इमां स्वर्ण नगरीं प्रविश। इति कथयन्ती सा निर्गता।

हनुमान् स्वकीय लघुरूपं धृत्वा लङ्कां प्रविवेश। तत्र स रावणान्तः पुरं प्रविश्य विविधालङ्कारयुक्तां मनोहारिणीं सुन्दरी दृष्टवान्। यस्या: आपादमस्तक वर्णनम् अनेकै: पद्यैः कविना कृतम्। ततश्च स कुम्भकर्णस्य भवनं दृष्टवान् यस्य भीषणता सुन्दरता च अभूतपूर्वा आसीत्। तदनन्तरं सीतामन्वेषयन् विभीषणगृहं प्राप्तवान्। यत्र देवा: ब्राह्मणा: वेदज्ञाश्च स सम्मानं तिष्ठन्ति स्म। विभीषणसमीपं गत्वा सर्वं ज्ञातवान्। ततश्च सीतामन्वेषणे संप्रवृत्तः जात:। तत् क्रमे विभिन्नेषु प्रासादेषु कतिपय सहस्र संख्याका: देवाङ्गना: अप्सरस: विविधा: यक्षिणीश्च दृष्टवन्त: याश्च अदृष्टपूर्वा: आसन्। अस्यां स्थितौ इयमेव सीता इति निश्चेतुम् असमर्थः हनुमान् चिन्तितवान् यत् सुग्रीवेण प्रदत्त समय: समाप्तो जात: किन्तु सीता दर्शनं न जातम्। स किंकर्त्तव्यविमूढ: चिन्तितो जात:। तदा एकस्मिन् सुवासिते उपवने चिन्तां कुर्वन् तस्थौ।

कार्चिप् पडलम् (सीतादर्शन पटलम्)

हनुमान् **'चैत्य'** नामक प्रासाद समीपस्थ वनं गत्वा चिन्तितवान् यदि अत्रापि सीता न मिलिष्यति तर्हि लङ्कामिमां विनष्टां कृत्वा स्वकीय प्राणान् त्यक्ष्यामि। नान्योपायो विद्यते। तदैव देवा: पुष्पवृष्टिं चक्रु:। अत्र कवि: सीताया: सौन्दर्यवर्णनं करोति यां वन्दिनीं विधाय रावण: अत्रैव स्थापितवान्।

सीता उन्निद्रावस्थायाम् आसीत्। तां निद्रा नायाति। व्याघ्रसमूहे समागता बालहरिणी सदृशा कोकिलालापा मयूरनिभा सा सीता दृश्यते। पुन: पुन: श्वसन्ती रूदती श्रीरामं स्मरन्ती सा वेदना-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पीड़िता । तस्याः नेत्रैः प्रवाहित अश्रुधारा स्तनमध्याभ्यां विगलिता वर्षा ऋतुसमा जाता । रामसदृशं श्याममेघम् अवलोक्य राममेव स्मरति । तस्याः मुखं तत् पार्श्वे स्थिताः विशालाः केशसमूहाः ग्रसन्तः तथा आसन् यथा तीक्ष्णदन्तः राहुः निष्कलकं चन्द्रं ग्रसति उद्वमति च । सीतास्व विशाल केशपाशानाम् एकवेणीं विधाय तान् केशान् निगृहीतवती । सा शोचते जटायुस्तं मारितः रावणेन मम सन्देशः केन कथयिष्यते रामाय इति न जाने । देवरं लक्ष्मणं कटुवाक्यं कथयती महापापिनी अहम् असंख्य पापान् कृतवती यस्येदं फलम् । दिवा रात्रिमध्ये तस्याः न कोऽपि भेदः आसीत् । निरन्तरं रूदती सा चिन्तयति । राक्षसैः मारिता अहम् इति विभाव्य रामः मत्समीपं नागच्छति । प्रायः भरतः पुनः समागत्य लक्ष्मण सहितं रामं परावर्त्तयिष्यति । जनकपुरे विवाह समये सप्तपदी काले सप्तवारमग्नि प्रदक्षिणविधौ रामस्य तद्रूपं स्मृत्वा रुदति । यदा रामचन्द्रः मया सह वनं प्रस्थितः तदा त्रिजट नामकः कश्चित् लोभी ब्राह्मणः तत्रागत्य गोदानं याचितवान् । ब्राह्मणेनोक्तम् ममेदं लकुटं (छड़ी) यावत् पर्यन्तं प्रक्षेपेण प्राप्स्यति तावत् पर्यन्तं स्थितं गवां समूहं मह्यं देहि । रामेणोक्तम् एवं कुरुष्व । दुर्बलः सः ब्राह्मणः चिरदूर पर्यन्तं लकुटं प्रक्षिप्तवान् । रामः विहस्य तावत् पर्यन्त स्थितां गां तस्मै ददौ । **(इयं कथा अयोध्याकाण्डे न विद्यते) ।**

पुनश्च सीता परशुराम विजय घटनां स्मरति, शिव धनुर्भङ्गं स्मरति । काकरूपस्य जयन्तस्य चञ्चुहत घटनां स्मरति । विराधादि राक्षस विनाशं स्मरति । तत्र भ्रातृतुल्य प्रियतमा त्रिजटा नाम्नी एका राक्षसी सीता समीपे विविध भीषण राक्षसीभिः सह आसीत् । अर्द्धरात्रौ समस्तां राक्षसीं समुहां सुप्तां दृष्ट्वा त्रिजटां प्रति सीता ब्रवीति, मातः, अद्य मम वामाङ्गानि तथैव स्फुरन्ति यथा विश्वामित्रेण महर्षिणा सह रामचन्द्रस्य मिथिलागमन वेलायां प्रस्फुरितवन्त्यः आसन् । कथय किं कारणं भवितुमर्हति ।

त्रिजटा अब्रवीत् । इदं शोभनं लक्षणं, मङ्गलकारी कालः समायाति इति निश्चितम् । इदमनुमीयते यत् तव प्राणपतिद्वारा प्रेषितः कोऽपि दूतः शीघ्रं समागमिष्यति । मया विगतरात्रौ स्वप्नः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दृष्टः यत् प्रायः सर्वथा सत्यमेव। रावणः रक्तवस्त्रधारी मस्तके तैल-मर्दनं कुर्वन् गर्दभ वाहन युक्त रथे समुपविश्य दक्षिणस्यां दिशि गच्छन्नस्ति। यत्र रावणस्य यज्ञाग्निः सदा प्रज्वलित एव तिष्ठति स एव अग्निः अधुना म्लानः जातः। वज्रपातेन प्रासादाः विनष्टाः आकाशे विद्युन्मालाः विद्योतन्ते नक्षत्राणि पतन्ति लङ्कायाः प्राचीराः भ्रमन्ति सर्वाः दिशश्च ज्वलिताः सञ्जाताः। रावणपत्न्याः मन्दोदर्याः वेणीरूपेण स्थिताः कबरी समूहाः विकीर्णाः तेभ्यः दुर्गन्धाः जायन्ते। इदं सर्वम् अनर्थस्य कारणम्।

एतस्मिन् एव समये रामदूतः हनुमान् तत्र समागतवान् सीता-स्थानं च दृष्टवान्। हनुमता दृष्टं यत् तत्र भयंकर दन्त युक्ताः गजाः शरभ नामकाः भीषणाकाराः जन्तवः केचित् दशहस्त युक्ताः केचित् विंशतिशिरसः केचित् शिरोरहिताः केचित् एकपादाः केचित् त्रिपादाः राक्षसाः सन्ति। विभिन्न शूलचक्र अंकुश तोमरादि शस्त्रादि युक्ताः राक्षसाः वर्तन्ते। तत्रैव एकस्यां वृक्षशाखाया-मारुह्य हनुमान् तस्थौ। तेन निश्चितं यत् इयमेव सीता इति सुप्रसन्नो जातः।

तदैव तस्मिन् पुष्पोद्याने अशोक नामके उपवने राक्षसाधिपतिः रावणः समुपस्थितः। यस्य विंशति भुजा मुकुट युक्तानि दशशिरांसि आसन्। यस्य पार्श्वतः असि धारिणी उर्वशी ताम्बूलवाहिनी मेनका उपानद्-वाहिनी तिलोत्तमा प्रभृतयः अप्सरसः विद्यन्तेस्म। तथा च कस्तूरी गन्ध द्रव्य मिश्रित घृत दीपैः सह शतशः सुन्दर्यः पृष्ठतः अग्रतश्च आसन्। तासां आपाद मस्तक केशाभरणादिकं नूपुर ध्वनिं च दिव्यमासीत्। यदा रावणः तत्रागतः तदा संकटस्याशंकां कुर्वन्तः देवगणाः भयभीताः जाताः यत् किमनिष्टं भवति, रावणः किं करिष्यति कां नीतिम् अनुसरति, तत् फलं किं भविष्यति ?

एकतः तु इदं दृश्यमासीत् तत्रैव अन्यतः रामभक्तः हनुमान् पापिनं रावणं निर्विकल्परीत्या पश्यन् उच्चैः घोषं चकार। राघवो जयतु, जानकी विजयतात् चतुर्वेदाः विजयन्तां, ब्राह्मणाः निर्विघ्नाः भवन्तु, धर्मो जयतु, किन्तु काममोहितः रावणः जयघोषं न श्रुतवान

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सीता समीपम् आगत्य सुदीर्घ केश युवतां सीतां प्रति उवाच । अहं त्रिलोकाधिपतिः कथं मम वैभवं तिरस्कुरुते । किं वनवासावधि समाप्य रामः अयोध्यां प्रत्यावर्तितो भविष्यति नेदं सम्भवम् । हे सीते, संसारे आयुः यौवनं च न चिरस्थायिनी । व्यतीतं यौवनम् अतीतम् आयुश्च न पुनः परावर्त्तयतः । यदि इयं यौवनावस्था व्यर्थमेव व्यतीता तर्हि जीवनस्य किं साफल्यम् ? इत्यादि रावणस्य पेशल वचनानि सीतायाः कर्णे तप्त तैलवत् तप्तशलाकावत् सञ्जातानि ।

पतिव्रता सीता एकं तृणं मध्ये संस्थाप्य रावणाय कथितवती (तृण रक्षण वर्णनं वाल्मीकिना अपि कृतम् अन्यस्मिन् राम काव्ये च इदं वर्तते राम चरितमानस रचयित्रा तुलसीदासेन अपि वर्णितम् तृण रक्षणम् । **अत्र कविः कल्पते सीता रावणं तृणवत् मन्यते स्म**) । हे पापाचारिन् मूर्ख रावण इदमशिष्टवचनम् उक्त्वा त्वं स्वकीय दशशिरांसि पातयसि । यद्येवं पराक्रमी विद्यते तर्हि कथं वंचकः त्वं मायामृगं संप्रेष्य मां जहार । तस्मिन् दिने त्वं एकेन जटायु नामकेन पक्षिणा पराजितः तदा शिवप्रदत्त चन्द्रहास करवालेन तं जटायुं निहतवान् । किं त्वं शिवस्य धनुर्भङ्गं न स्मरसि ? अतएव तव विचारः सर्वथा हीनः पाप युक्तः । यदैव रामः दण्डकारण्यमागतवान् तदैव तमिल व्याकरण रचयिता अगस्त्यः राक्षस नाशार्थं प्रार्थितवान् एतत् क्रमे खर दूषण त्रिशिराः प्रभृतयः राक्षसाः माया मृग मारीच सहिताः कवन्धादयश्च विनष्टाः त्वमेवाव शिष्यसे ।

इदं श्रुत्वा क्रोधाग्निना दग्धः रावणः कथितवान् यत् तव मरणस्य मासद्वयमेवावशिष्टम् । इत्युक्त्वा परावर्तितः । तदा भयंकर राक्षस्यः सीतां मारयितुं समुद्यता जाताः । तदा त्रिजटा निज स्वप्नदर्शन घटनां वर्णितवती । तां श्रुत्वा ताः राक्षस्यः शान्ताः जाताः ।

उरुक् काट्टु पडलम् (रूप प्रकटन पटलम्)

अस्मिन् पटले हनुमान् स्वकीय रूपं प्रदर्श्य रामस्य सविस्तरं परिचयं दत्त्वा सीताम् आश्वस्तवान् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यदा राक्षस्यः सुप्ताः जाताः तदा हनुमता स्वकीय विलक्षण मायिक विद्यावलेन तां राक्षस्यः **गाढनिद्रा-निमग्नाः कृता (इथं जादूविद्या-र्णर्णनं मूले वा० रामायणे न विद्यते)** । एवं कृत्वा रामागमन प्रतीक्षायां निरतां सीतां दृष्टवान् । सीता शोच्यमाना तिष्ठति यत् मया मायामृगम् आनेतुं पतिः प्रेषितः । पुत्र तुल्यः लक्ष्मणः भर्त्सितः । ममात्रावस्थानं निन्दयीयं मरणमेव वरम् । इत्थं मनसि विचार्य सीता तत्रत्य माधवी वने प्राणान् हन्तुं प्रस्थिता तदैव सहसा हनुमान् वृक्ष शाखातः अधः कूर्दयित्वा अञ्जलिबद्धः सन् सीतां निकषा समुपस्थितः उक्तवांश्च ।

हे भगवति देवि, रामचन्द्रस्याज्ञयया ममात्रागमनं जातम् भवत्याः अत्रावस्थानं रामेण न ज्ञायते । हनुमत् वचनं श्रृण्वती सीता शोचितवती । नायं राक्षसः कश्चित् वानररूपधारी ऋषिः कश्चित् देवः अथवा कश्चित् राक्षसएव । किन्तु राम नाम गृहणाति । तदा हनुमान् अब्रवीत् मातः, सुग्रीव नामकेन सूर्यपुत्रेण वानर-राजेन सह मित्रता कृता । यस्य मन्त्रिमण्डलस्य एकः गगनचारी वायुपुत्रः हनुमान् नामकः सदस्यः यश्च रामदूतरूपेण अत्र भवत्-समीपं समुपस्थितः अस्ति । सुग्रीवस्य अगणिताः भूमण्डल व्याप्ताः विशाल सेनाः सन्ति । तत्र भवती इदानीं चिन्तारहिता भवतु ।

भवत्या त्यक्तं वस्त्रादिकं अस्माभिः रामाय निवेदितानि । अवलोक्य रामः विचलितः सन् अवादीत् यत् एतानि आभरणानि सीतायाः एव सन्ति । इदं श्रुत्वा सीता आनन्दमग्ना सती पृष्टवती । रामस्य रूपलक्षणादिकं किमपि कथय । हनुमता चोक्तम् यद्यपि रामस्य कापि उपमा नैव सम्भाविता न च मम वर्णन योग्या तथापि तेषां कानिचित् चिह्नानि मया विनिवेद्यन्ते । यथा श्रीरामस्य चरणानि रक्त कमल तुल्यानि प्रवाल युक्तानि चन्द्र तुल्यानि नखानि विद्यन्ते । त्रिविक्रमावतारस्य तस्य चरण वर्णनं कठिनं चरणस्य महिमा कथं कथनीयः । तस्य वक्षस्थलं मरकत पर्वत तुल्यम् आजानबाहू स वर्तते । तेषां कुञ्चित् केशाः पुष्पहाराः अप्रमेया विद्यन्ते । मम प्रस्थान समये रामेण एका मुद्रिका प्रदत्ता, यस्यां रामनाम अङ्कितं विद्यते । कृपया इमां मुद्रिकां गृहणातु तत्र भवती भगवती ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सीता च तां मृद्रिकां पौन पुन्येन पश्यन् भूयो भूयः शिरसि नेत्रयोः कुचाग्रयोश्च स्पर्श कारयन्ती श्रीरामचन्द्रं स्मरन्ती तिष्ठति स्म। यथा बुभुक्षिताः अमृततुल्यं सुभोज्यं प्राप्य मुदिताः भवन्ति तथैव जीविताशादायिकाम् औषधितुल्याम् इमां मुद्रिकां प्राप्तवती।

इत्थं च हनुमता चोक्तम्। इतः प्रस्थाय रावणं राक्षससमूहं च वानर हस्तगतं पुष्पमाल्यसदृशं छिन्न भिन्नानि वयम् करिष्यामः।

चूड़ामणिप् पडलम् (चूड़ामणिपटलम्)

महतीं चिन्तामग्नां सीतां ज्ञात्वा हनुमान् कथयामास। व्यर्थं वार्तालापेन को लाभः। अधुना भवतीं नीत्वा त्वरितमेव अनाथनाथं श्रीरामचन्द्रं निकषा गत्वा त्वां प्रापयिष्यामि। हे भगवति, कृपया मम सुकोमल केशयुक्तं स्कन्धं आरुह्य प्रचलतु। अहम् अतिशीघ्रं रामसमीपं प्राप्स्यामि। मध्ये च यदि केऽपि राक्षसाः बाधां दास्यन्ति तर्हि तानहं निहनिष्यामि। मां किमपि कर्तुं ते न शक्ष्यन्ति। मह्यम् अमरता वरम् प्रदत्तमस्ति भगवता यदि भवत्याः विचारो भवति तर्हि दक्षिण हस्तेन सम्पूर्णां लङ्काम् उत्पाट्य रामसमीपं प्राप्स्यामि। मार्गे अवरोधकाः विनाशतां यास्यन्ति।

इति श्रुत्वा सीता अब्रवीत् हे तात, यद्यपि इदं कार्यं तव साध्यं वर्तते। त्वया सर्वथा समुचितं कथितम्। किन्तु मम तुच्छ बुद्ध्या स्त्रीत्वकारणेन भवतां पृष्ठे मम गमनं नैव युक्तं विभावये। अथ च रामस्य धनुः कलंकितं भविष्यति यत् स्वयं रामेण कार्यमिदं न कृतम्। तथा च त्वमपि वञ्चक रावण सदृशः एव भविष्यसि। यतोहि यथा रावणः वञ्चयित्वा गुप्तरूपेण माम् अत्र आनीतवान्। तथैव त्वमपि मां गुप्तरूपेण नेष्यसि। अतएव रामचन्द्र द्वारा एव रावण विनाशः समुचितः। यदा विजयशालिना रामचन्द्रेण राक्षसान् निहत्य तेषां स्त्रीणां मङ्गलसूत्राणि ग्रीवातः किष्कासयिष्यन्ति तदैव मम मनसि शान्तिः भविता।

हे हनुमन्! शृणु यदि अहं शापं दास्यामि तर्हि न केवलं लङ्का-सहिताः समस्त लोकाः विनाशं प्राप्स्यन्ति। किन्तु एवं कृते सति

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रामस्य विजय कोदण्डे कालिमा संलग्नो भविष्यति। अतएव अयं विचारः मया परित्यक्तः। त्वं जानीहि यत् हीन-मनाः रावणः मां न स्पृष्टवान्। स पर्णशाला-सहितां भूमिं समुत्पाट्य माम् अत्रानीतवान्। अतएव पुत्रसमः जितेन्द्रियः त्वमपि न मम स्पर्शयोग्यः। यतोहि अन्ततः त्वमपि पुरुष एव। **(नेदृशी कथा शृङ्खला वाल्मीकि-रामायणे दृश्यते)।**

ततः सीताऽवादीत्। मास पर्यन्तमेव मम जीवनं वर्तते। तत्र गत्वा रामाय निवेदयतु यत् अत्रैव मम मरणं श्रेयः। रामस्य कृते चतुर्दश वर्षाणि व्यतीय अयोध्यां परावर्त्य राज्यासनस्थो भूत्वा सर्वासां मातृणां सर्वेषां भरतादीनां च शोकमुक्त करणं सर्वथा श्रेयः। इत्थं श्रुत्वा हनुमान् ब्रूते। किं भवन्मरणं ज्ञात्वा रामचन्द्रः राज्यं गृहीष्यति ? एतत् सर्वं भवत्या कथनं केवलं शोक मूलकं वर्तते। एवं विविध वार्तालापं विधाय स्व मस्तकस्य सुरक्षितं चूड़ामणिम् आदाय हनुमते ददौ तथा उक्तवती यत् मम नेत्र-पुत्तलिका तुल्योऽयं चूड़ामणिः रामाय प्रदास्यसि। त्वमत्रागत्य मह्यं प्राणदानं कृतवान्। हनुमान् चूड़ामणिं गृहीत्वा तं सुरक्षितवस्त्रे निधाय सीतां प्रणम्य ततः प्रतस्थे।

पौलित्ति पडलम् (उद्यान विध्वंस पटलम्)

सीता प्रदत्त चूडामणिम् आदाय हनुमान् उत्तरस्यां दिशि प्रस्थानस्य विचारं कृतबान्। किन्तु पुनः निश्चितवान् यत् केवलं मातरं सीतां दृष्ट्वा परावर्त्तनं नोचितम्। लङ्कायां किमपि करणीयम्। यदि स्वकीय सुदीर्घ पुच्छेन विंशति भुजायुक्तं दशशिरसं रावणं बद्धवा कारागारे न निक्षिप्तं तथा रावणस्य पत्न्याः मन्दोदर्याः सुवासित-शृङ्गार युक्तान् केशान् विकीर्य तान् धृत्वा यदि कारागारे न निक्षिप्तं तर्हि किं कृतम् मया। अवश्यमेव यदा अस्याशोक वनस्य विनाशं करिष्यामि तदा इति ज्ञात्वा नूनमेव राक्षसाः समागमिष्यन्ति। तान् निहनिष्यामि ते जीविताः न परावर्तिताः भविष्यन्ति।

इति विचार्य हनुमान् स्वकीय विशालरुपं विधाय पादैः वृक्षान् मर्दितुं प्रारभत। तस्य प्रहारेण शतशः वृक्षाः पतिताः। कियन्तः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अधो नमिताः। अनेके च छिन्न भिन्नाः समूलम् विनष्टाः। एवं हि रत्न वेदिकाम् उत्खलित्वा प्राक्षिपत्। येन समुद्रे ते प्रस्तर खण्डाः मार्ग तुल्याः सञ्जाताः। अन्तरिक्षे उत्क्षिप्ता वृक्षाः मेघ सदृशाः दृश्यन्ते स्म। चन्दनादि वृक्षाः शाल वृक्षाश्च विध्वंसिताः इदं दृष्ट्वा लंकावासिनः भयभीता सन्तः यत्र तत्र पलायिताः।

सर्वमिदम् अवलोक्य चन्द्रमा प्रच्छन्नो जातः। अत्र कवेरुत्प्रेक्षा वर्तते यत् सीता स्नेहेन मया न किमपि कृतम् अतः रावणः मां परितापयिष्यति अतएव प्रच्छन्नो जातः। ततः सूर्योदयो जातः **उदयकालीनः स सूर्यः सीतायाः चूड़ामणि तुल्यः अदृश्यत। प्रायः अनुमीयते यत सीतायाः सघन-केश-पाशार्थं समुद्रेण पुनः एकं चूड़ामणिं सीतायै प्रददौ। इति कवि कल्पना वर्तते। (यत्र तत्राऽद्भुता विचित्रा कवि-कल्पना महनीया)।**

यदा राक्षसस्यः अशोकवन विध्वंसम् अपश्यन् तदा सीतां पप्रच्छुः। किम् एतं वानरं त्वं जानासि? सीता व्यङ्गचरूपेण कथितवती यत् दुर्जनः एव दुष्कर्माणि जानाति। सुजनः कथं दुष्कर्म ज्ञातुं शक्नोति। इदं तु राक्षसानाम् एव किमपि षड्यन्त्रं भवितुमर्हति। यथा स्वर्णमय मायामृगं दर्शयित्वा मां रावणः मोहितवान्।

हनुमता श्रुतमासीत् यत् रावणः कैलास पर्वतं समूलमुत्थापितवान्। कथं नाहं मेरू पर्वत सदृशं इमं चैत्यप्रासादमेव उत्थाप्य सागरे प्रक्षिपेयम्। इति विचार्य चैत्य प्रासादम् उत्थाप्य वेगेन लङ्कोपरि प्राक्षिपत् येन लङ्कायाः विशाल प्रासादाः सञ्चूर्णिताः जाताः। तस्मात् अग्नयः प्रज्वलिताः भयभीताः राक्षसाः महाबलिनं रावणं निकषा गत्वा तस्य पादेषु निपत्य च अशोक वन विध्वंसस्य सर्वाम् घटनां निवेदयामासुः। तैः कथितं यत् तेन वानरेण अशोक वाटिका विध्वस्ताः चैत्यप्रासादमपि उत्थाप्य प्रक्षिप्तम्। इत्थं च महानगरी लङ्का विध्वंसिता अस्ति।

किङ्गरर वदैप् पडलम् (किंकरवध पटलम्)

अशोक वाटिका विध्वंस कथां श्रुत्वा रावणः आश्चर्य चकितः सञ्जातः। किमिदं सत्यं कः विश्वसेत्। एतस्मिन् क्षणे एव हनुमता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तथा गर्जितं येन भूमौ व्योमस्थले च महान् नादः जातः। येन दिग्गजाः देवाश्च यत्र तत्र पलायिताः राक्षसीनां गर्भपातो जातः।

इदं ज्ञात्वा रावणेन सैन्याः दासाश्च आहूताः आज्ञा च प्रदत्ता यत् आकाश मार्गमपि अवरूद्धय येन केनापि प्रकारेण तं वानरं मत् समीपमानयस्व। इत्याज्ञां प्राप्य ते वीराः त्रिशूल-करवाल-शक्ति तोमर दण्डायुधानि अस्त्र शस्त्राणि गृहीत्वा प्रचलितवन्तः। ते च राक्षसाः महावलशालिनः इति वदन्तः गच्छन्ति स्म यत् कथम् एकाकी वानरः अशोक बाटिकां विध्वंस्य यज्ञमण्डपादिकमपि उत्खात्य प्रक्षिप्तवान्। पर्वत तुल्या अगणितास्त्र शस्त्र संचालन निपुणाः तत्रागतवन्तः। तत्र निवात कवच जातेः असुराः देदीप्ताः, नागाश्च युद्धार्थं समुपस्थिताः। एतान् दृष्ट्वा पर्वताकारः हनुमान् तत्रैव तस्थौ। ते राक्षसाः हनुमतः उपरि स्व स्व विशेष अस्त्रेण प्रहारं कृतवन्तः। हनुमान् तान् सर्वान् विखण्डितवन्तः तथा तान् राक्षसान् स्व विशाल पुच्छेन बद्ध्वा आकाशे भ्रामयन् भूमौ पातयामास। तत्र केचन पतिताः केषाञ्चित् प्राणान् जहार ये च हनुमन्तं धर्तुं गतवन्तः तान् आकृष्य हनुमान् जघान। तत्र ये च राक्षसाः यस्मिन् रूपे समागताः तान् तथैव व्यापादितवान्। यथा च इक्षुखण्डान् लौह यन्त्रे निपीड्य रसान् निःसारयति तथैव राक्षसान् धृत्वा निष्पीडितवान्। इत्थं च आहताः राक्षसाः रावणसमीपमागत्य सर्वं निवेदितवन्तः। रावणः अतिक्रुद्धः सञ्जातः। रावणस्य दशमुखेभ्यः अग्नि ज्वालाः निर्गताः। तथा च रावणः प्रोक्तवान्, कथमिदं जातम्? वनपालाः अञ्जलिं बध्वा निवेदितवन्तः यत् नायं वानरः सामान्यः। येन केनापि प्रकारेण वानरोऽयं न त्यक्तव्यः। तथा बद्ध्वा आनेतव्यश्च।

शम्बुमालि वदैप् पडलम् (जम्बुमालीबध पटलम्)

रावणः अशोक वाटिका विध्वंस सूचनां प्राप्य नितान्तं क्रुद्धः सन् जम्बुमाली-नामकं बलशालिनम् राक्षसं निर्दिष्टवान्। त्वं गजाश्वरथयुक्तसेनाभिः सह गत्वा तं वानरं धृत्वा मह्यं शीघ्रं समर्पय। रावणस्य साकार क्रोधरूपः जम्बुमाली सैन्यैः सह प्रस्थितः। तस्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पार्श्वे नाना विधानि शस्त्रास्त्राणि आसन् तथा महान्तः सैन्यबलाः तस्य परितः व्याप्ताः आसन्। तत्र गजाश्व रथयुक्त क्रूर सैनिकाः युद्धार्थं संनद्धाः स्थिताः।

अशोक वाटिका विध्वंसानन्तरं हनुमान् तत्र मौनं विचारयन् आसीत् यत् कथं न कोऽपि राक्षसः युद्धार्थं समायाति? सहसा तत्र जम्बुमाली स्व सैन्यान् विभिन्न खण्डेषु विभज्य व्यूहं रचितवान्। तदा हनुमान् अपि स्वकीय सैन्य व्यूहं रचितवान्। **हनुमतः सैन्याः तस्य शरीरे स्थिताः केशसमूहाः तथा नखानां समूह एव तीक्ष्ण करवालः। एवं च उभौ हस्तौ च द्वौ अक्षौहिणी सेनावत् बभूवतुः।** हनुमान् यत्रैव ये सैन्याः आसन् तत्रैव तान् मर्दयित्वा यमलोकद्वारं प्रेषयामास। राक्षसानां रक्तमज्जादिभिः अशोक वाटिका पंकिला जाता।

ततश्च जम्बुमालिनः सैन्याम् पातयित्वा तस्य पताकाध्वज तुरगयुक्त रथं भूमौ निपात्य नष्टं कृतवान्। एवं च सर्वेषां प्राणान् जहार। जम्बुमाली सैन्य रहितः अस्त्र-शस्त्र रहितः सञ्जातः। तं दृष्ट्वा वायुपुत्रः अवादीत् हे राक्षस, त्वं एकाकी वर्तसे प्राणान् रक्ष, इतः पलायध्वम्। जम्बुमालिना प्रोक्तम् तव व्यङ्ग्यबचनमपि शल्यतुल्यम्। हनुमता तदा शस्त्रमेकं तस्मै प्रदाय उक्तम् इदं गृहीत्वा युद्धं कुरु। जम्बुमाली क्रुद्धः सन् हनुमतः उपरि एकाकी एव आक्रमणं कृतवान्। हनुमान् कन्दुकवत् तं हस्ताभ्याम् आदाय भ्रामयन् पृथिव्यां पातयामास हतवान् च। इत्थं च भीषण गर्जनं च चकार। रावणः जम्बुमालिनः वध समाचारं श्रुत्वा महान् दुःखितः क्षुब्धः बभूव। तथा स्वयमेव तत्र गन्तुं समुद्यतो जातः।

पयूज़् शेनापतिहल् वदैप् पडलम
(पञ्चसेनापतिवध पटलम्)

हनुमता साकं युद्धार्थं स्वयमेव रावणं प्रस्तुतं दृष्ट्वा महाबल-शालिनः पञ्चसेनापतयः ऊचुः। हे प्रभो अस्मासु स्थितेषु भवतः सामान्य वानरेण सह युद्धार्थं गमनं कथं सम्भवम्। कथं च शोभनम् इति विचारयन्तु भवन्तुः। अञ्जलिं वध्वा वयं प्रार्थयामः यत् श्रीमन्तः अत्र तिष्ठन्तु, वयं गच्छामः। इति श्रुत्वा रावणः सन्तुष्टो जातः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रावणस्याज्ञया असंख्य रथाश्व गज पदाति वीर सैन्यैः सहिताः पञ्च सेनापतयः महाभूत-सदृशाः ततः प्रस्थानं कृतवन्तः। (वाल्मीकि रामायणानुसारम् एते पञ्च राक्षसाः विरूपाक्ष-यूपाक्ष-दुर्धर-मासकर्ण-प्रधस नामानः आसन्।) मेघ तुल्यं गर्जन्तः ते तथैव अदृश्यन्त यथा **इन्द्रेण** साकं युद्धं कुर्वन्तः रावणं पृष्ठतः इमे आसन्।

महाबलशाली हनुमान् आगच्छन्तं तं राक्षसं दृष्टवान्। हस्ते लौहदण्डम् आदाय तेषां गजाश्वादीनि निपात्य समुद्रे प्रक्षिप्तवान्। इदं दृष्ट्वा ते पञ्च सेनापतयः मिलित्वा हनुमतः उपरि वाणान् पेतुः। तान् दूरतः एव हनुमान् विनष्टं कृतवान्। तथा तेषां रथयन्त्रांश्च विखण्डितवान्। ततश्च तेऽपि पुनः अस्त्र शस्त्रैः प्रहारं कृतवन्तः। हनुमतः शरीरात् रक्तस्रावः सञ्जातः। क्रुद्धः हनुमान् तेषु एकं समुत्थाय आकाशे प्रक्षिप्तवान् अपरञ्च पादाभ्यां सम्मर्द्य यमलोकातिथिं कृतवान्। इत्थं च द्वौ मृतौ। अवशिष्टाः त्रयः समक्षमागतवन्तः तथा चोक्तवन्तः। अरे वानर कुत्र गन्तासि, आगच्छ। हनुमान् तेषु सेनापतिद्वयं स्व विशालपुच्छैः बद्ध्वा पातयामास। ततश्च अवशिष्टम् एकं तथा पातयामास यथा केशरी गजोपरि उत्क्षिप्य मस्तकं विदीर्य निपातयति।

इत्थं च यथा ज्ञानं पञ्चेन्द्रियाणि विजित्य नाशयति तथैव ज्ञानतुल्यः हनुमान् पञ्चेन्द्रियसदृशान् पञ्चराक्षस-सेनापतीन् पातयित्वा स्वयं सद्यः ज्ञानरूपमिव स्थितः हनुमान् (इयं महत्त्वपूर्णा कल्पना कम्बन् कवेः विशिष्टता विद्यते।)

इमं दुखदं समाचारं रावणः श्रुत्वा विक्षिप्तवत् विकलो जातः।

अक्क् कुमारन् वदैप् पडलम्
(अक्षयकुमार वध पटलम्)

पञ्च सेनापति विनाश समाचारं ज्ञात्वा क्रुद्धः विक्षिप्तो रावणः पुनः हनुमन्तं प्रति प्रस्थानस्य समुद्योगं कृतवान्। इदं श्रुत्वा रावणस्य महाबलशाली पुत्रः अक्षयकुमारः सम्प्राप्तः। यश्च मेघनादस्य अनुजः मन्दोदरीपुत्रः आसीत्। अक्षयकुमारः ब्रूते पितः! किमयं वानरः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

त्रिनेत्रस्य भगवतः शिवस्य वाहनः वृषभः किं विष्णोः वाहनः गरुडः अथवा विष्णोः शय्यारूपः गरुडः अथ च दिग्गजेषु कोप्येकः । नहि एवं किन्तु अयं क्षुद्रः वानरः । मयि तिष्ठति सति वानरेण साकं भवान् योद्धुकामः इति महान् चिन्ता विषयः । कृपया मह्यं तेन वानरेण सह योद्धुम् आज्ञां प्रददातु ।

यद्यद्य वानरः देवानां प्रपञ्चः स्वरूपः वर्तते तथापि अहं तं सरलतया निगृहीत्य भवत् समीपम् आनयिष्यामि । रावणः तं तीव्राश्वरथे समुपविश्य युद्धे गमनार्थम् आज्ञापयामास । अक्षयकुमारश्च विशाल चतुरङ्गिणी सेनाभिः साकं प्रस्थितवान् येषां सैन्यानां वर्णनं कठिनं वर्तते । तेन सह काकगृध्रभूतपिशाचादयश्च पापस्वरूपाः पृष्ठतः ययुः ।

अत्र लङ्कायां निहतराक्षसानां नार्यः क्रन्दन्त्यः आसन् । विशाल-सैन्य युक्तं तम् अक्षयकुमारम् अवलोक्य हनुमान् मनसि चिन्तयति यत् किमयं स्वयं रावणः अथवा इन्द्रजित् मेघनादः अस्ति । यदि एतयोः मध्ये एकोऽपि विद्यते तर्हि ममागमनं सफलं भवेत् किन्तु नायं दशशिराः रावणः अस्ति । अयं तु न तथा देवेन्द्रविजेता इन्द्रजित् अपि नास्ति । यतोहि यथातस्य रूपं वर्णितमस्ति न तथा अयम् । तर्हि कोऽयमिति चिन्तयामास हनुमान् ।

हनुमन्तं दृष्ट्वा अक्षयकुमारः हसन् अवादीत् । यत् किं अयमेव मर्कटः । एतद् वचनं श्रुत्वा अक्षयकुमारस्य सारथिः वक्तव्यं अनेनैन वानरेण अशोक वाटिका विध्वंसिता । जम्बुमाली हतः असंख्य सैन्य वलैः सह महावलशालिनः विरूपाक्षप्रभृतयः पञ्च सेनापतयः निहताः । अतएव सावधानेन तदग्रे गन्तव्यम् । अक्षयकुमारः वानर-वधार्थम् अस्त्राणां प्रहारं कृतवान् । किन्तु सर्वाणि अस्त्र शस्त्राणि हनुमता खण्डितानि तथा स राक्षसान् जघान । ततः अक्षयकुमारः हनुमतः समीपमागत्य योद्धुकामः सञ्जातः । तेन कुमारेण अमोघाः चतुर्दश वाणाः प्रक्षिप्ताः ये च हनुमता विनष्टाः कृताः । अक्षय-कुमारेण च तीक्ष्ण वाणेन हनुमतः लौहदण्डं खण्तिम् । हनुमान् रिक्तहस्तो जातः । अक्षयकुमारः पुनः अस्त्राणि हनुमन्तं प्रति प्रक्षिप्तवान् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हनुमान् तान् खण्डितवान्। ततश्च अक्षयकुमारः हनुमन्तं वाहुपाशे आवद्धवान्। हनुमान् च अक्षयकुमारं प्रति चपेटां चालितवान्। तथा मुष्टि प्रहारं कृतवान् येन अक्षयकुमारस्य उदरस्थ-मांस मज्जा प्रभृतयः वहिः निर्गताः। अक्षयकुमारश्च क्षयं गतः। इदं दृष्ट्वा वहवः राक्षसाः पलायिताः वहवश्च हनुमतः शरणं सम्प्राप्ताः।

वेदनापूर्णं समाचारमिमं श्रुत्वा मेघ सदृशविशाल केशपाशवेणीं विकीर्य उरः हस्ताभ्यां ताडयन्ती मन्दोदरी विलापं कृतवती। रावणोऽपि पुत्रवधस्य दुःखदसमाचारं प्राप्य हतप्रभः शोकनिमग्नः संबभूव।

पाशप् पडलम् (पाशबन्धन पटलम्)

स्वानुजस्य अक्षयकुमारस्य मरणं श्रुत्वा इन्द्रजित् मेघनादः अतिशयः शोकाकुलः सञ्जातः। येन मेघनादेन देवेन्द्रः विजितः समस्तं संसारं चकितः कृतः। स त्वरितमेव सुदृढं सुविशालं रथमास्थाय स्वपितरं निकषा वेगेन प्रस्थितः। यं दृष्ट्वा देवाः कम्पिताः। मेघनादः मनसि चिन्तयति यत् अक्षयकुमार नाशेन राक्षस-सैन्यनाशेन च किं मम पितुः यशः न नष्टम्।

एवं चिन्तयन् स पितुः समीपमागत्य तस्य चरणौ निपत्य भ्रातृमरणशोकेन भृशं रुरोद। रावणः तम् उत्थाप्य आलिङ्ग्य च सान्त्वनां ददौ। तदा मेघनादो ब्रूते। पूज्य पितः, किं भवन्तः निज हितं न शोचन्ते ? यदा भवद्भिः ज्ञातं यद् अयं वानरः न सामान्य वानरः किन्तु अद्वितीय वलशाली तदा भवद्भिराज्ञा प्रदत्ता गच्छ तं वानरं धृत्वा आनय। यदा किंकरः जम्बुमाली परं पराक्रम-शालिनः पञ्च सेनापतयः विनष्टाः। सर्वे सैन्याश्च निहताः इति दृष्ट्वा अपि भवता अक्षयकुमारः प्रेषितः। किं यदि भवान् स्वयमपि गत्वा तं वानरं मारयिष्यति तदापि किं भवतः प्रतिष्ठा वर्धिष्यते। किमिदं कार्यं बुद्धिमतां भवितुमर्हति ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सत्यामपि एवं स्थितौ अहं गत्वा तं बलशालिनं वानरं धृत्वा भवत्-समीपमानयिष्यामि। इति निश्चितम्। तत्र चिन्तायाः न किमपि कारणम् इत्युक्त्वा स इन्द्रजित् उत्थाय ततः प्रस्थितवान्। स हि विविधाश्वयुक्ते अस्त्र-शस्त्र संयुक्ते रथे उपविश्य समग्रां दिशं सैन्यगर्जनेन आपूरयन् प्रचलितवान्।

यत्र मृतः अक्षय कुमारः पतितः आसीत् राक्षसाश्च मृताः आसन् तत्रागत्य विपुल बलशाली मेघनादः विह्वलो भूत्वा रुरोद। भ्रातृ-शवं दृष्ट्वा स पुनः क्रुद्धो जातः। अक्षयकुमारश्च रक्तप्रवाहे निमग्नः मृतः आसीत् : यं दृष्ट्वा मेघनादस्य बुद्धिः विनष्टा जाता। पुनश्च साहसं कृत्वा वानर समीपं चलितः। हनुमता दृष्टं यत् सूर्य सम तेजस्वी महाबलशाली इन्द्रजित् समागच्छति। यः सर्वथा शोभायमानः देदीप्तः दृश्यते। हनुमता चिन्तितं यदि अयं मरिष्यति तर्हि रावणस्य मृत्युः निश्चिता। प्रायः स रावणः मेघनादवधं श्रुत्वा सीतां परित्यज्य रामाय प्रदास्यति। एतस्य मरणेन दुखी इन्द्रोऽपि शान्तिं लप्स्यते। एवं स्थितौ मेघनादस्य सैन्याः घोर गर्जनं कृतवन्तः। हनुमान् अपि स्वकीय विशालाकारं विधाय एकं शालवृक्षम् उत्पाट्य प्रहर्तुं समुद्यतो जातः। ततः परस्परयुद्धे कियन्तः अश्वाः गजाः सैन्याश्च हनुमतः पादमर्दनेन विनष्टाः जाता। केषाञ्चित् अश्वानां गजानां च अङ्गानि छिन्नानि केचन रथाः संचूर्णाः जाताः। इत्थं च तत्र स्थितः मेचनादः उक्तवान्। आगच्छ आगच्छ वानर त्वं तु महावीरः असि कुशलोऽसि किन्तु अद्य तव आयुः समाप्तप्रायं तस्य अन्तिमं दिनम्। इति श्रुत्वा हनुमान् अब्रवीत्। श्रृणु मेघनाद, राक्षसानां विनाशकालः समुपस्थितः। ततः मेघनादेन बाणेन प्रहारः कृतः येन हनुमतः शिरसः वक्षसश्च रक्तधाराः प्रवाहिताः जाताः। यमवलोक्य गगनचारिणः देवाः चिन्तिताः जाताः। हनुमान् क्रुद्धः सन् स्वकीय विशाल रूपं धृत्वा मेघनादोपरि प्रहारं कृतवान्। यश्च मेघनादः एकदा इन्द्रं बध्वा आनीतवान् आसीत्। हनुमतः सम्पूर्ण विशालरूपं मेघनादः द्रष्टुमपि न क्षमो जातः। इत्थं च उभयोर्मध्ये भीषणः युद्धः सञ्जातः। तत्र इन्द्रजित् सहसा भूमौ पतितः। पुनश्च उत्थाय रथहीनः मेघनादः चिन्तयति यत् ब्रह्मास्त्र प्रक्षेपणं बिना नान्यः कोऽप्युपायः वानरस्यास्य ग्रहणार्थम्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इति विचार्य इन्द्रजित् मनसा तं ब्रह्मास्त्रं सम्पूज्य हनुमतः उपरि प्रक्षिप्तवान् येनास्त्रेण सर्पाकार रूपेण विराटरूपः मारुतिः बद्धः। ब्रह्मास्त्रेण बद्धः सन् हनुमान् ज्ञातवान्, यत् ब्रह्मास्त्रस्यापमानं न विधेयम्। अतएव वासुकी नागेन परिवेष्टितः विन्ध्यपर्वताकाररूपः हनुमान् इन्द्रजिता मेघनादेन रावण-समीपमानीतः।

पिनिविडु पडलम् (बन्धनमुक्ति पटलम्)

यदा रावणसभायां हनुमान् आनीतः तदा राक्षसैः गर्जितं मारय मारय, छेदय, छेदय, मर्दय मर्दय, इमं वानरम्। केचन राक्षसाः अब्रुवन्। मम भ्रातरं परावर्तय मम पितरं परावर्तय मम पुत्रं परावर्तय अन्यथा तव प्राणान् वयम् हरिष्यामः। हनुमन्तं दृष्ट्वा अनेकाः स्त्रियः रोदनं चक्रुः। यासां पतयः निहताः जाताः। इत्थं सर्वं पश्यन् हनुमान् राक्षस समूहैः रावण समीपम् आनीतवान्। हनुमान् मनसि चिन्तयति रावणं किं कथयेम्।

रावणः ब्रह्मास्त्रेण कपिः बद्धः इति विज्ञाय प्रफुल्लितः सन् अवादीत्। यत् रे वानर, कस्त्वं कुतः कथमिहायातः। हनुमान् अब्रवीत्, अहं तु सर्वशक्तिमतः रामचन्द्रस्य दूतः वायुपुत्रः हनुमान्। यस्य रामचन्द्रस्य पत्नीं सीतां हृत्वा त्वमानीतवान् असि। तस्याः एव अन्वेषणं कुर्वन् अत्रागतोऽस्मि। अत्र च ये मया सह योद्धुं समुपस्थिताः तानहं यमलोकं प्रेषितवान्। अधुना तु ब्रह्मास्त्रस्य मर्यादां रक्षन् तव समीपं समुपस्थितोऽस्मि यतोहि रामचन्द्रस्य सन्देशं त्वां कथयेम्। अन्यथा इमं ब्रह्मास्त्रमपि खण्डयित्वा किमपि कर्तुं शक्नोमि।

अशोकवाटिकायां जानकी शोक निमग्ना सञ्जाता। कथमयं बलशाली मारुतिः मेघनादेन बद्धः सन् रावणसमीपं गतः। प्रायः रावणः तम् अवश्यमेव निहनिष्यति। एवं विचिन्तयन्ती सीता शोकनिमग्ना बभूव।

अत्र रावणसभायां सर्वे विविध तर्कवितर्के संलग्नाः आसन्। अत्र कविना रावणस्य पराक्रमशोभा रावणसभायाश्च शोभा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनेकानेक पद्यैः वर्णिता । यथा कम्बन् कवेः स्वाभाविक शैली वर्तते । अतः तद्वर्णनं परित्यज्य मुख्य कथां वर्णयामि । हनुमान् शोचते, यत् ब्रह्मपाशं छित्वा यदि अहं रावणं हनिष्यामि तर्हि रामचन्द्रस्य महिमा न परिलक्षितो भविष्यति । तथा च रावणः अपि न सामान्य बलशाली । अहमपि न तेन जेतुं शक्यः । अतएव रावणः किं करोति इति द्रष्टव्यम् । पुनः रावणेन पृष्टं न त्वं शिवः न त्वं ब्रह्मा न त्वं शेषनागः न त्वं कार्तिकेयः न त्वं यमः, न त्वं कालश्च, तर्हि कस्त्वम् । हनुमता चोक्तम् पूर्वमेवोक्तम् यत् महावलशालिनः रामचन्द्रस्य दूतोऽहं यस्य पत्नी त्वया हृता । यः रामचन्द्रः परात्पर ब्रह्मस्वरूपः वेदवन्दितः ज्ञानमूलम् । योहि ऋषीणां देवानां च रक्षणाय राक्षसवधार्थम् अवतारं गृहीतवान् तस्यैवाहं दासः, मम नाम हनुमान् । अहं च सूर्यपुत्रस्य वालिनः अनुजस्य सुग्रीवस्य सखा अस्मि । सुग्रीवः रामचन्द्रेण सह मैत्रीं कृतवान् । सोहि रामः महावलशालिनं वालिनं हतवान् । येन वालिना स्व पुच्छे वध्वा त्वं चिरदिनं भ्रामितः ।

इत्थं श्रुत्वा तस्य वधार्थं रावणः तं वानरं हन्तुम् आदिष्टवान् । तदा रावणस्य भ्राता नीतिज्ञः विभीषणः अवादीत् । नीति शास्त्रे दूताः सदा अवध्याः । दूतस्तु सन्देश वाहकः भवति, अतएव दूतस्य मारणं न विधेयम् । यथा रामः मम भगिनीं शूर्पणखां विरूपां कृत्वा त्यक्तवान् किन्तु न मारितवान् तथैव अयमपि वानरः त्यक्तव्यः ।

विभीषणस्य परामर्शं मानयित्वा वानरस्य पुच्छे तैलं दत्वा अग्निना दग्धुम् आदिष्टवान् । राक्षसाश्च तथैव कोलाहलं कुर्वन्तः हनुमतः पुच्छे अग्निं प्रज्वालितवन्तः । हनुमान् ज्वलितेन पुच्छेन युक्तः उत्कर्द्य लङ्कायाः अट्टालिकायां ययौ ।

इलङ्गै यँरिमुट्ट पडलम् (लङ्कादहन पटलम्)

प्रदीप्तपुच्छः हनुमान् रत्न जटित लङ्का प्रासादे स्वर्णमय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भवने इतस्ततः समुत्प्लवन् क्रमशः लङ्कां दग्धुं प्रारभत्। कियत्क्षणानन्तरमेव लङ्का प्रज्ज्वलिता जाता। सर्वत्र नर नार्यः चीत्कारं कुर्वन्त्यः इतस्ततः प्रलायितवन्त्यः। सर्वत्र हाहाकाराः सञ्जाताः। धूमेनाच्छादिते आकाशे दिशः ज्ञानं न जातम् यत् के कुत्र गच्छन्ति।

यथा वामनरूपधारी विष्णुः प्रथमं लघ्वाकारः सन् सम्पूर्णे ब्रह्माण्डे व्याप्तो जातः तथैव वानरपुच्छे लघुरूपः अग्निः समस्त लङ्कायां व्याप्तो जात किमिदं जातम् इति ज्ञातुमशक्ता नागरिकाः इतस्ततः पलायध्वं पलायध्वं इति वदन्तः यत्रतत्र पतितवन्तः। सर्वम् उद्यानं विनष्टं, सम्पूर्णा लङ्का भस्मीभुता जाता। अग्नि ज्वालाः गगने चन्द्रमण्डल पर्यन्तं गताः। येन चन्द्रमण्डलात् सुधा प्रवाहः सञ्जातः। तेन सुधाप्रवाहेण लङ्कायां मृताः कतिपय राक्षसाः संजीविताः। रावणश्च स्वकीयं विशालं स्वर्णमय भवनं अग्निज्वलया द्रवीभूतं दृष्ट्वा पत्नी सहितः पुष्पक यानमारूह्य अन्यत्र गतः। **(इयं कथा वाल्मीकिरामायणे नास्ति)।**

एवं हि लङ्का दग्धा जाता। न तत्र किमपि अवशिष्टं अग्निदेवश्च रावण भयात् कुत्रापि प्रच्छन्नो जातः। यतोहि रावणः पुनरागत्य दण्डं विधास्यति इति तु सर्वे जानन्ति एव यत् इन्द्र-वरुण-यम-कुवेर-वायु-अग्नि प्रभृततयः सर्वे रावणाधीनाः एव आसन्। इत्थं हि लङ्का भस्मीभुता जाता। हनुमान् स्वकीय पुच्छं समुद्रे निर्वाप्य पुनः अशोक वाटिकायां सीता समीपं समुपस्थितः। या अशोक वाटिका संरक्षिता एव आसीत्। न तस्याः कापि हानिः सञ्जाता।

तिरुवडितौलद् पडलम् (श्रीचरणवन्दना पटलम्)

अशोक वाटिकां प्राप्य हनुमान् तत्रत्य स्वादिष्टं मधुयुक्तं फलादिकं भक्षितवान्। पुनः सीतां प्रणम्य हनुमान् वेगेन समुद्रं समुल्लंघ्य तत्र समागतवान् यत्र अङ्गद जाम्ववान् प्रभृतयः वानरऋक्षादिकाः आसन्। हनुमन्तं दृष्ट्वा ते समुत्थाय तं अभिनन्दितवन्तः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तथा च सीतायाः स्तुतिं कृतवन्तः । तथा च प्रार्थितवन्तः यत् समस्तं लङ्कावृत्तान्तं श्रावयतु ।

हनुमान् यथाशीघ्रं भगवन्तं रामचन्द्रं प्रति प्रस्थानस्य विचारं कृत्वा सर्वे तत्रैव प्रस्थिताः यत्र सुग्रीव लक्ष्मण सहितः रामचन्द्रः आसीत् । यतोहि सीता वृत्तान्तं यथाशीघ्रं रामः जानातु इति सर्वेषां मतम । सुग्रीव प्रदत्त समयावधिः तु पूर्वमेव व्यतींतः । तेन सर्वे स्वभावतः चिन्तिताः तिष्ठन्तिस्म । सर्वेषां मनसि इत्येव आसीत् यत् प्रायः सीता मृता अतएव तस्याः मृत्युसमाचारं नीत्वा अत्रागमनं न वरम् । इति मत्वा ते वानरादयः यत्र तत्र गतवन्तः ।

एतन्मध्ये एव दक्षिण दिशातः हनुमान् आगच्छन् दृष्टःयथा पूर्व-दिशातः सूर्यः समुदेति । हनुमन्तं दृष्ट्वा सुग्रीव लक्ष्मण सहित रामः महान् प्रसन्नो जातः । हनुमन्तं दृष्ट्वैव रामः ज्ञातवान् यत् सा सुकेशिनी सीता स्वस्था सुरक्षिता विद्यते । हनुमता च सीतायाः समग्रं वृत्तान्तं माहात्म्यं च वर्णितवान् । तेनोक्तम् यत् सा यथार्थतः मिथि-लायाः राजा जनकस्य योग्या पुत्री चक्रवर्तिनः दशरथस्य आदरणीया पुत्रवधूः भवतां सर्वथा समुत्तमा धर्मपत्नी तथा च अस्माकम् आराध्या क्षमाशीला भगवती देवी वर्तते ।

इदमपि कथितं यत् रावणेन पञ्चवटीस्थ पृथ्वी सहितां सीताम् उत्थाप्य नीता । अतएव तस्याः शरीरमपि न तेन स्पृष्टम् कथं च लङ्कायाः अन्तःपुरं प्रविश्य सीतान्वेषणं कृतवान् कथं च अशोक वाटिकायां एकां लतां धृत्वा आत्महत्यार्थं समुद्यतां सीतां केनरूपेण दृष्टवान् । तव केनरूपेण वार्तालापं कृतवान् तथा च कथं भवत् प्रदत्त-मङ्गुलीयकं सीतायै मृतसंजीवनीवत् प्रदत्तवान् । यं दृष्ट्वा सीता सर्वथा सुप्रसन्ना जाता ।

तदनन्तरं सीतया प्रदत्तं चूडामणिमादाय अशोकवाटिका विध्वंस राक्षसादिवध लङ्कादहन वृत्तान्तं च वर्णितवान् । इत्थं च सीता प्रदत्त-चूडामणिं रामाय समर्पितवान् । तम् आदाय रामः नानाविधं पूर्व-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वृत्तान्तं स्मरणं कृत्वा चिन्ताकुलो जातः। अन्ते च सर्वे सुग्रीवादि सहिताः वानरसैन्याः दक्षिणस्यांदिशि प्रस्थिताः। हनुमान्-लक्ष्मण-सहितः श्रीरामः अपि प्रस्थितवान्। मार्गे च यत्र तत्र सुन्दरोद्याने तिष्ठन्तः सर्वे द्वादश दिन पर्यन्तं गच्छन्तः सागर तटं प्राप्तवन्तः। यतः त्रिकूट स्थितां लङ्कां ते दूरतः अवलोकितवन्तः। तथा तत्रैव सागर-तटे स्थितवन्तः।

॥ इति सुन्दरकाण्डम् ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

युद्धकाण्डम् पूर्वार्धम्

कड्ल् काण् पडलम् (समुद्र संदर्शन पटलम्)

मङ्गलाचरणम्—हे मातः ईश्वरस्य स्थितिः तस्याः व्याख्या च महती जटिला कठिना च। यतः स एकः अनेको वा यं मानयतु तं मानयतु, नेति-नेति कथयतु इति सहितः कथयतु, नास्ति वा कथयतु अस्ति वा कथयतु। इति सर्वं तु भवताम् इच्छा अनिच्छा वा। किन्तु तस्यैव ईश्वर-शब्दस्य मध्ये एव विश्वस्य ब्रह्माण्डस्य च सत्ता-विकाशः उद्भवः विनाशश्च निश्चितः। एवं भूतं परमात्मानं परमेश्वरं साष्टाङ्गम् नतशिरसा नमामि।

किष्किन्धा नगरीतः ऋष्यमूक-पर्वतात् प्रस्थाय विशाल वानर सैन्य सहिताः सुग्रीवादयः तथा लक्ष्मण हनुमत्-सहितः रामचन्द्रश्च समुद्रतटं प्राप्तवन्तः। तत्र विस्तृत सैन्य परिवृत्तो रामः स्वकीय उन्निद्र-नेत्राभ्यां समुद्रं ददर्श। सीतायाः अश्रुजलानि सागरे समागतानि। किन्तु सागरः स्वकीय मलयानिल मिश्रित जलकणैः रामस्य अभिषेकं चकार। यतोहि रामचन्द्रः समुद्रस्य जामाता आसीत। लक्ष्मी समुद्रकन्या वर्तते, लक्ष्मीपतिः विष्णु सीतापतिः रामः एक एव। अनेन गम्भीर सम्बन्धेन रामः सागरस्य जामाता। अतएव रामस्य सत्कारं चकार।

रत्नाकरः आनन्दातिरेकेन महता हर्षेण च रामचन्द्रस्य सत्कारार्थं समुपस्थितः तथा च स्वकीय तरङ्ग हस्तैः रामचन्द्रम् अभिवादयते। दुखितां सीतां (स्वपुत्रीं) समुद्धर्तुं समागतोऽस्ति इदमपि स्वागतस्य कारणम्।

इरावङ्ण मन्दिरप् पडलम् (रावणमन्त्रणा पटलम्)

कथ्यते यत् ब्रह्मणा सहितः देव शिल्पी अभियन्ता मयः कदाचित् लङ्कामागतवान्। तत्रागत्य मयेन लङ्केयं तथा निर्मिता येन सर्वेषां

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवानां चाकचिक्यं सञ्जातम्। लङ्का तु पूर्वतः एव मनोहारिणी आसीत् किन्तु रत्नादि परिपूरिता स्वर्णमयी लङ्का अधुना अतुलनीया जाता। तत्र राज सभायां दिव्य वस्त्रालङ्कार युक्तः राक्षसराजः रावणः समागत्य सिंहासने समुपविश्य अब्रवीत्। अयं तु महतः खेदस्य अपमानस्य विषयः यत् एकेन वानरेण महतीयं लङ्का विध्वस्ता। राक्षसाः बन्धुबान्धवाश्च मारिताः पुत्रः अक्षयकुमारश्च हतः। इतोऽप्यधिकं किमपि दुःखदं चिन्ताजनकं वस्तु भवितु मर्हति। मम समक्षमेव इमाः घटनाः सञ्जाताः, किन्तु अहं सशरीरी सिंहासनस्थः अस्मि।

अद्यापि कूपतः रक्तस्रावो जायते अग्नि-ज्वाला नाद्यापि पूर्णरूपेण शमिता। स्त्रीणां केशपाशैः कस्तूरी सुगन्धिस्थाने अग्नेः दुर्गन्धमायाति।

एवं कथयन्तं रावणं प्रति अतिक्रुद्धः सेनानायकः उत्थाय ब्रूते। हे महाराज पूर्वमेव मयोक्तं यत् कापुरुषरीत्या सीता हरणं न वरम्। किन्तु भवता तन्न श्रुतम्। खरदूषणत्रिशिराप्रभृतयः तव वीर-बान्धवाः तेन रामचन्द्रेण निपातिताः। शूर्पणखायाः नासिकाच्छेदकः पुनः तवापमानं कर्तुं समुद्यतः। अतएव यावत् पर्यन्तं तस्य विनाशं न करोमि तावत् पर्यन्तं शान्तिः न भविता। ततश्च महोदर नामक विशाल भुजबलः राक्षसः अवोचत्। अयमेवास्माकं निर्णयः कृपया आज्ञां ददातु वयं च भवतां दासतायाः मूल्यं समर्पयिष्यामः। तदनन्तरं 'दुर्मुख' नामकः राक्षस! ब्रूते। हे वीर राक्षसः किञ्चित् कालं प्रतीक्षस्व इत्युक्त्वा रावणं प्रति निवेदितवान्। यावत् पर्यन्तं भवान् स्वकीयोदासीनतां न त्यक्ष्यति तावत् पर्यन्तं वयं न प्रस्थानं करिष्यामः। रावणः प्रसन्नः सन् उक्तवान्। यूयं यथेच्छथ तथा कुरुध्वम् अहं प्रसन्नोऽस्मि। इति श्रुत्वा महाबलशालिनः विविध शस्त्रास्त्र संयुक्ता "महोदर-दुर्मुख-पिशाच-महापार्श्व-भानुकोप-यज्ञहा-धूम्राक्ष-प्रभृतयः राक्षसाः सुसन्नद्धाः संभूताः।

तदनन्तरं रावणस्यानुजः कुम्भकर्णः अवादीत् हे सर्वशास्त्र मर्मज्ञ अग्रज, भवान् लङ्का दहनेन दुखितः चिन्तितश्च वर्तते। किन्तु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परनारीं वञ्चनारूपेण हरणं कृत्वा आनीतवान् तत् किं सुखमयं कार्यम् ? किं तेन कर्मणा भवतां यशांसि न विनष्टानि ? भवत् पार्श्वे तु असंख्य-अनुपम सौन्दर्ययुक्ताः नार्यः सन्ति। किमनया सीतया ? अस्तु अधुना यदि तां सुकेशी सीतां समर्पयिष्यति तदापि निन्दा पात्रमेव भवान् चिरं स्थास्यति। अतएव अधुना सुसज्जिताः सैन्य-युताः संभूय ससैन्य बलस्य रामचन्द्रस्य विनाशार्थं प्रस्थानमेव वरम्। प्रस्थानात् पूर्वं मनसि धार्यं यत् युद्धे विजयः पराजयो वा भवतु। भवतुनाम किन्तु वयं युद्धक्षेत्रात् पलायनं कदापि न करिष्यामः।

इत्युक्त्वा तैरुक्तं यावत् पर्यन्तं रामः सैन्यैः सन्नद्धः स्यात् तावन् मध्ये एव वयं तदुपरि आक्रमणं कुर्याम। एतत् श्रुत्वा रावणः सुप्रसन्नः अवोचत्। यूयं धन्याः शीघ्रं गच्छध्वम्। शत्रून् निहत्य विजयध्वम्। कल्याणं भवतात्। ततश्च इन्द्रजित उवाच। यदि त्रिभुवनाधीशाः युद्धार्थं समागमिष्यन्ति तर्हि तान् निहत्य एव परावर्तयिष्यामि। अन्यथा नाहं तव पुत्रयोग्यः भवितुमर्हामि। आपाताल समुद्रं आस-मुद्रात् त्रिभुवनं ब्रह्माण्डमपि विजित्य शत्रून् निहनिष्यामि। तदनन्तरं महात्मा विभीषणः मेघनादम् अबोधं कथयित्वा रावणं प्रति निवेदयामास।

हे अग्रज. भवान् मम पितृतुल्यः अस्ति, अग्रजः अस्ति। यदि मम नीतिपूर्णविचारस्य उपेक्षां न करिष्यति तर्हि ममेदं वचनं ग्राह्यम्। भवताम् इयं विशाला राजधानी लङ्का एकस्याः सीतायाः कृते विनिष्टा। असंख्य सेनाः सेनापतयश्च परास्ताः इयं च सीता वेदवती भूत्वा समागता यां पूर्वं भवन्तं शापितवती। अथ च दशरथस्य वीर-वंशः आसीत्। रामश्च साक्षात् विष्णुस्वरूपः, तस्य हस्ते शिवस्य धनुः बाणाश्च विद्यन्ते। रामस्य बाणाः सर्पतुल्याः तस्य तूणीरः अक्षय-भण्डार रूपः। इत्थं च युद्धं विहाय रामेण सह सन्धिः विधेया।

एवं श्रुत्वा क्रोधोन्मत्तः रावणः उवाच त्वया चोक्तम् हितकारी वचनं कथयामि, किन्तु त्वयाशत्रोःअसीमा प्रशंसाकृता। त्वं न जानासि यत् सर्वे देवाः मया पराजिता, कैलाशः उत्थापितः। किं त्वं न जानासि महाबलिनं बालिनं रामः प्रच्छन्नोभूत्वा मारितवान्। स

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कथं वन्दनीयः । इति श्रुत्वा विभीषणः पुनरवादीत् । हे पूज्य अग्रज, इदं रहस्यं ज्ञायताम् । स रामः परात्पर-ब्रह्मस्वरूपः अस्मान्नाशयितुं अवतरितवान् । हठं मा कुरुध्वम् । पुनरपि अहमेकं पूर्वं वृत्तान्तं श्रावयिष्यामि कृपया शृण्वन्तु सावधानाः भवन्तः ।

इरणियन् वदैप् पडलम् (हिरण्यवध पटलम्)

पृष्ठभूमिः—अस्मिन् पटले भगवतः नृसिंहावतारस्य हिरण्यकशिपु-वधवृत्तान्तं वर्तते । यद्यपि राम कथाकाव्य वर्णने वाल्मीकि रामायणतः आरभ्य अन्यस्मिन् कस्मिन्नपि रामकथाकाव्ये नेदं वर्णनं उपलभ्यते । इयं दन्त कथा वर्तते यत् यदा कविः कम्बन् महाभागः 'श्रीरङ्ग'-मन्दिर-मण्डपे अस्य काव्यस्य (कम्बरामायणस्य) विमोचनं कृतवान् तदा तमिलनाडु क्षेत्रस्य प्रचलित परम्परानुसारं शङ्का-समाधानपूर्वकं विद्वन्मण्डलानुमोदितं काव्यमेव प्रकाशनयोग्यं प्रमाणयतिस्म । अस्मिन् क्रमे तत्रत्य विद्वांसः आपत्तिं प्रकटितवन्तः यत् हिरण्यकशिपुबध कथा मूल-कथायां वाल्मीकि रामायणादौ नहि वर्तते । अतएवेदं काव्यं दोषयुक्तम् ।

तदा तस्मिन् मन्दिरे भगवतो नृसिंहस्य स्थिता प्रस्तरमूर्तिः स्वशिरः प्रकमय निज गर्जन द्वारा कम्बन् लिखितांशं प्रमाणीकृतवान् । तदा तत्रत्य विद्वांसः सहमताः जाताः इदमपि कथ्यते यत् कम्बन् कविः भक्त प्रह्लादस्य प्रशंसायां काव्य रचनां कर्तुम् ऐच्छत् । ताम् इच्छाम् अस्मिन् एव रामकाव्ये समुचित स्थाने विनिवेश्य पूर्तिं कृतवान् ।

अस्यामेव पृष्ठभूमौ अस्य पटलस्य कथा वर्ण्यते ।

महाबलशाली हिरण्यकशिपुः ब्रह्मणः निर्देशने अनेक यज्ञान् सम्पादितवान् । ब्रह्मणः बलं प्राप्य कोऽपि तं नाशयितुं न शक्तः । केवलं त्रिदेवाः ब्रह्म विष्णु महेशा एव तस्य नाशः कथं भवेत् इति जानन्ति । इत्थं च स दानवः अजेयः सर्वाधिकारी सञ्जातः । अयम् आकाश गङ्गायां स्नाति, नागलोके नाग कन्याभिः सह भोजनं कृत्वा ताभिः सह रमते । ततः इन्द्रलोकं गत्वा देवैः स्तूयमानः दिनं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्यतीते। सायंकालं ब्रह्मलोकं गत्वा राजसभां कुरुते। अथ च आकाशयानमारुह्य चन्द्रलोकं गत्वा चन्द्रमसः कार्यं स्वयमेव कुरुते। सूर्यरथमारुह्य सूर्यस्य प्रकाशं स्वयमेव क्रियते तेन। दिग्गजानां कर्तव्यं स्वयमेव संचाल्यते। कदाचित् मेरोः शिखरमारुह्य राज्यशासनं संचाल्यते तेन महादानवेन।

एतस्य प्रभुतायां सृष्टिस्थितिसंहारकाः त्रिदेवाः क्रमं तत्यजुः। योगिनः अपि योगफलं त्यक्तवन्तः। उदयाचलः अस्ताचलश्च हिरण्याक्षस्य कर्णयोः कुण्डलतुल्यौ। अयं च हिरण्याक्षः हिरण्यकशिपोः भ्राता आसीत् उभौ यमलौ आस्ताम्। हिरण्याक्षं भगवान् वराहावतारः जघान।

हिरण्यकशिपोः एकः पुत्रः जातः। यः महान् ज्ञानी वेदादपि पवित्रतमः धर्मस्वरूपः सञ्जातः। यस्य नाम प्रह्लादः धृतं पित्रा **(प्रकर्षेण ह्लादयति-आह्लादयति-आनन्दं प्रददाति यः सः प्रह्लादः)।** एकदा तस्य पिता वेदज्ञान् ब्राह्मणान् आहूय तस्मै वेदशिक्षार्थं समादिष्टवान्। इयं धारणा वर्तते यत् वेदाः ईश्वरं न मानयन्ति किन्तु प्रकृतेः नियतेश्च शिक्षां ददति। यत्र ईश्वरवादिनः वेदान् प्रमाणं मन्यन्ते तथैव अनीश्वरवादिनो वेदः शास्ता-शासक निर्देशकः अस्ति इति कथयन्ति। पाठनक्रमे ज्ञानी स प्रह्लादः स्वयमेव "ओं नमो नारायणाय" इति मन्त्रं जपन् पुलकितः सन् ध्यानमग्नः सञ्जातः इदं श्रुत्वा अध्यापकः चिन्तितो जातः। उक्तवान् च यत् हे तात, कथं त्वया इदमुच्चार्यते। स्वयमपि विनष्टो भविष्यति मामपि नाशयिष्यसि। प्रह्लादेनोक्तम् मया स्वपितुः उद्धारः कृतः। स्वयमुद्धृतः भवानपि उद्धारितः यतः सर्वकारणभूताः वेदाः यं प्रतिपादयन्ति तस्यैव श्रीमन्नारायणस्य नामोच्चारितं मया। तत्र मे कोऽपराधः।

अध्यापकाः उक्तवन्तः। तव पिता त्रिदेवानामपि शास्तादेवः। अतएव स्वपितरमेव देवं जानीहि। प्रह्लादोऽब्रवीत् चतुर्वेद वर्णितः श्रीमन्नारायणः एव वेदतत्त्वम्। येन विष्णुना एकेन चरणेनैव भूतले व्याप्तो जातः। स एव विश्वात्मा वर्तते इति श्रुत्वा स अध्यापकः हिरण्यकशिपुं निकषा गत्वा प्रणम्य उक्तवान्। हे राजन्! तव पुत्रः स्वयमेव एवंरूपेण कुरुते। इति ज्ञात्वा पिता प्रह्लादम् आहूतवान्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तथा स्वक्रोडे उपाविश्य पृष्टवान् यत् त्वं किमुक्तवान् येन तवाध्यापकः श्रोतुं न शक्नोति। प्रह्लादेनोक्तम् मया वेदप्रतिपादितः **'ओं नमो-नारायणाय'** इति मन्त्रः समुच्चारितः। इदमेव नाम सर्वस्वम्। इदमेव नाम भवतां हृदयेऽपि स्थितम्।

इति श्रुत्वा पिता अब्रवीत्। यः नारायणः मया सह युद्धं कुर्वन् गरुडोपरि आरुह्य पलायितः सन् क्षीरसागरे प्रच्छन्नो जातः, यः अद्यापि वहिर्नगतः स कथं हितकारी वर्तते। येन मम भ्राता हिरण्याक्षः निहितः स कथं मम मित्रम्। मया तु तपः कृत्वा वरदानं प्राप्तं यत् अहमेव सर्वस्वम्। फलं स्वयमेव जायते। तस्य फलदाता न कोऽपि विद्यते। ब्रह्मा विष्णु महेश्वराः अपि स्वकर्माधीनाः वर्तन्ते। अतएव हे अज्ञानिन् बालक, अधुना मया क्षम्यते। गच्छ, अयं गुरुः यत् पाठयति तमेव पठ। पुत्रेणोक्तम् पितः, बीजं विना किं वृक्षो जायते। सावधानेन भवता ज्ञायतां यत् एकः परमात्मा एव सृष्टि-कारकः। सृष्टेः प्रपञ्चे विविध नाम रूपाणां विस्तरो विद्यते। तत्र सांख्य-योग मार्गः ज्ञान मार्गः कर्ममार्गश्च विद्यते। वेदानां तत्वम् उपनिषत्सु वर्तते तस्य तत्त्वं वेदान्त शास्त्रे वर्तते (प्रह्लाद कथनस्य रहस्यं गीता तत्त्वात्मकं विद्यते यस्य वर्णनं गीतायां वर्तते। अत्र प्रह्लाद द्वारा कविना सांख्य शास्त्र सिद्धान्तोऽपि प्रदर्शितः)। इदमपि तेनोक्तम् यत् **'ओंकार' एव वेदस्य प्राणाः**, मुख्य ध्वनिः, सृष्टेः **प्रथम-ध्वन्याकारकः शब्दः**,विभिन्न मतावलम्बिनः यथायोग्यं व्यर्थं विवदन्ति। परमार्थस्तु जलवीचीतरङ्गन्यायेन सर्वदृष्ट पदार्थाः भ्रमात्मकाः एव सन्ति। परमतत्त्वं तु परब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्दः वेद तत्त्वमूलकः **"प्रणवः ओंकार" एव।**

इमां व्याख्यां श्रुत्वा सहसा चकितः सन् चीत्कारं कुर्वन् हिरण्य-कशिपुः समुद्घोषितवान् यत् षड्यन्त्रकारी विधाता मम शत्रुरूपे समागतवान्। अतएव अस्य वधः एव समुचितः। इति विचार्य तेन वधिका आहूताः। तत्र यमादपि अधिकाः क्रूराः वधिकाः समागत्य प्रह्लादं सुदृढं धृतवन्तः तथा वाह्यक्षेत्रं समानीतवन्तः। तत्र विविध भीषण शस्त्रास्त्राणि तदुपरि प्रहारितवन्तः। किन्तु सर्वे निष्फलाः जाता। इति ज्ञात्वा तेन दानवेन आज्ञप्तम्। एकस्मिन् महति गर्ते

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इन्धनादिकं घृत तैलादिकं च दत्वा अग्निं प्रज्वाल्य तस्मिन् प्रज्वलिते अग्नौ प्रह्लादं निक्षिप । राक्षसाः तथैव कृतवन्तः ।

किन्तु यथा लङ्कां प्रदहतः हनुमतः पुच्छे पृष्ठे च अग्नि ज्वालाः शीतलतां गताः तथैव अत्रत्याः अग्निदाहाः प्रह्लादं किमपि कर्तुं नाशक्नुवन् । तदा च अष्टनागान् आहूय तं दष्टुं आदिदेश किन्तु गरुडं दृष्ट्वा यथा नागः पलायते तथैव एते नागाः तं दृष्ट्वा पलायितवन्तः । तदनन्तरं ऐरावत प्रभृतयः अपि पराजिताः जाताः । तेषां दन्ताः कदलीफलवत् प्रह्लादेन उत्खातिताः । इत्थं च स पितुः सर्वे उपायाः विखण्डिताः ।

सर्वमिममवलोक्य हिरण्यकशिपुः अवादीत् रे दुष्ट, यः भयभीतः तव हरिः सागरे प्रच्छन्नः जातः स कुत्र वर्तते किं स मम अस्मिन् स्तम्भे वर्तते । यदि स सर्वव्यापी अस्ति तर्हि निःसरतु इति कथनानन्तरमेव स स्तम्भः प्रस्फुटितः विदीर्णः सञ्जातः । तस्मात् एकः नरसिंहाकारः विकरालः पुरुषः निःसृतः । तं दृष्ट्वा प्रह्लादेनोक्तम् । पितः, किम् इमं नरसिंहं दृष्ट्वा अपि भवान् न किमपि ज्ञायते कृपया सर्वलोकाधिपतिं देवं प्रणमतु । क्षमां प्रदास्यति । किन्तु तेन कथितं यत् त्वरितमेव एतस्य पादान् हस्तांश्च छेत्स्यामि ।

इति सर्वं श्रुत्वा नरसिंहः तस्य दानवस्य उभौ पादौ धृत्वा उत्थाप्य परिभ्रामयामास तथा तं तस्य स्वर्णमयभवनस्य कपाट समीपमानीय स्वजंघायां स्थापयित्वा नखैः तं विदारयामास । इत्थं च तस्य महादानवस्य संहारः जातः । इदमवलोक्य सर्वे देवाः संतुष्टाः जाताः । प्रह्लादश्च स्तुतिं कृतवान् । स नृसिंहावतारः हरिः प्रह्लादस्य मस्तके राज्य मुकुटं धृत्वा तस्मै राज्यं प्रददौ ।

इत्थंरूपेण विभीषणः रावणं हिरण्यकशिपु पराक्रम वधकथा वर्णनं श्रावयामास ।

अस्मिन् पटले रावण विभीषण संवाद मध्ये कविना हिरण्यकशिपुनाशचर्चा कृता तथा प्रह्लादस्य श्रद्धाभक्ति ज्ञान योग कथा च वर्णिता **या च नूतन कथाऽस्मिन् राम काव्ये ।**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वीड्ण् नड्ैककलप् पडलम्
(विभीषण शरणागति पटलम्)

विभीषण द्वारा कथितामिमां कथाम् रावणः यद्यपि ध्यानेन श्रुतवान्, किन्तु सीताहरण मोहेन तस्य बुद्धिः विकृता जाता एव। अतएव विभीषणस्योक्तेः प्रभावः तदुपरि न सञ्जातः। रावणेनोक्तम् किं हिरण्यकशिपुः मम पूर्वजेभ्यः समधिकः बलवान् आसीत्? तस्य नाशकस्य त्वं भक्तिं करोषि? किन्तु मृत्युः तु सर्वेषामन्तं कुरुते। इति जानीहि। त्वं तु पूर्वतः एव रामलक्ष्मणोपरि स्नेहं विधाय अस्मान् प्रति वैरभावं करोषि। अतएव रामः तव शरण्यं वर्तते। प्रायः त्वं मम राज्यं लोभ दृष्ट्या पश्यसि।

इतः पूर्वं येन वानरेण अशोक वाटिका विध्वस्ता तस्य मारणं त्वया दूतः अवध्यः इत्युक्त्वा निवारितम्। फलतः त्वं यत्रेच्छसि तत्र गच्छ। तव विनाशकाले विपरीत बुद्धिः सञ्जाता। ततः विभीषणः उत्थाय आकाश मध्ये गत्वा उक्तवान् हे अग्रज, इदं ज्ञायतां यत् सर्वे मम बन्धुबान्धवाः रामेण निहताः भविष्यन्ति। इदं न विस्मर्त्तव्यं यत् मम बहवः सैन्याः सेनापतयः विनष्टाः। पुत्रः अक्षयकुमारः मारितः इति सर्वं स्मरन् यत् कर्तव्यं तद्भवता विधेयम्।

मया तु पूर्वं रामस्य दर्शनं न कृतम्, तेषां सम्बन्धे नाधिकं श्रुतं च। किन्तु तेषां स्मरणेन मनः शीतलं भवति। तथा स पतित पावनो वर्तते इति अनुमीयते। ब्राह्मण वंशे समुत्पन्नेन मया महत्तपः कृत्वा भगवती भक्तिः धर्मपरायणता नीतिमार्गे गमनं, सर्वभूतदया, ब्राह्मणानां कृपा च वरदाने प्राप्ता। तस्य वरदानस्य फलप्राप्ति समयः समुपस्थितः। अतएव तत्रैव तेषां शरणं प्राप्तव्यम् इति निश्चित्य राम शरणं ययौ। तदा सन्ध्या समायाता अतएव कुत्रापि स्थित्वा यापयामास।

इलङ्गै केल्विप् पडलम् (लङ्का श्रवण पटलम्)

सन्ध्या समायाता। तत्रैव स्थितो रामचन्द्रः सन्ध्या वन्दनादिकं विधाय रात्रिं यापयामास। तत्र कुर्वन् रामः विभिन्न भावनाया-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मभिभूतो जातः। सुकेशीं सीतां स्मरन् शोकनिमग्न आसीत्। समुद्रतटीय वालुका क्षेत्रे प्रसृत चन्द्रकिरणानि दुग्धतुल्य स्वच्छानि अदृश्यन्त। शीतल मन्द सुगन्धदायको मलयानिलः विषयुक्त सर्प सदृशः दष्टुमागत इवानुभूयते रामेण।

एवं व्यथितो रामः सुग्रीवं कथयामास। कार्यार्थी भवान् समागतेन विभीषणेन साकं परामर्शं विधायाग्रिम कर्त्तव्यपथं कथं न निर्धारयति। तत्रान्तरे विभीषणस्तत्रोपस्थितो जातः। रामेणोक्तम् लङ्कायाः सुरक्षा व्यवस्था प्रसंगे तत्रत्य निखिलं वस्तुजातं सुस्पष्टं वर्णयतु भवान्। विभीषणेनोक्तम् प्रकाशपुञ्जादपि उच्चैः स्थितायाः लङ्कायाः प्राचीराः सप्तशत योजना परिमिताः वर्तुलाकाराः गभीरता शतयोजन परिमिता यस्य प्राचीरस्य वस्तुकलाः निर्निमेष दृष्ट्या दर्शनीयाः। तस्योत्तरदिशायां षोडशकोटिसंख्याकाः रक्षकाः [वीर-सैनिकाः पश्चिम दिशि कोटि द्वय संख्याकाः वीराः दक्षिणदिशि षोडशकोटि संख्याकाः दुर्जेयाः वीराः पूर्वस्यां दिशि षोडशकोटि-संख्याकाः वीरसैन्याः तथाऽन्तरिक्षे द्वात्रिंशत्कोटिसंख्याकाः राक्षस-सैनिकाः विद्यन्ते विचरन्ति च। एते सर्वे दुर्जेयाः क्रूरतराः सन्ति। येषां भयात् न कोऽपि समक्षयायाति।

(अत्रत्याः संख्याः प्राचीर दैर्घ्य विशालाताश्च गवेषणाऽधीनाः। कम्बन् कवेः वर्णन क्रमे गजाश्वरथ सैन्य वानरवलानामगणित संख्या-प्रसंगे कविरेव जानाति। ऐतिहासिकाः भौगोलिकाश्च अनुसन्धानं कुर्युः)।

एवं भूतास्त्रयः ःप्राचीराः विराजन्ते। राजद्वारस्थाः द्वारपालाः चतुःपष्ठि (६४) कोटि परिमिताः सन्ति। दशसहस्र पद्म संख्याकाः रथाः ततोद्विगुणिताः गजाः ततो द्विगुणिताः अश्वाः ततश्च द्विगुणिताः उष्ट्राः सन्ति।

(इयती संख्या तु सर्वथा चिन्तनीया अनुसन्धेया च)।

एतदतिरिक्तं शिवप्रदत्त चन्द्रहास नामक करवालः रावणं निकषा निरन्तरं सन्निहितोऽस्ति। तस्य निकुंभ महोदर भानुकोप महापार्श्व वज्रदंष्ट्र पिशाच दुर्मुख विरूपाक्ष धूम्राक्ष-नामानः भीषण राक्षस-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सेनापतयः दुर्जेयाः क्रूरकर्म कारकाः सन्ति । येषां पार्श्वे कोटि कोटि संख्याकाः सैन्याः वर्तन्ते ।

ततश्च इन्द्रजित् मेघनाद नामा विश्वविजयी पुत्रोऽस्ति । देवान्तक नरान्तक त्रिशिरा नामानो त्रयः दुर्दान्ताः दैत्याः सन्ति ।

अयंहि रावणः ब्रह्मणः पुत्रस्य पुलस्त्यस्य पौत्रः विश्रवसः पुत्रः येन ब्रह्मणा शिवेन च स्वतपसा विविध वरदानं लब्धम् । रावणाद्भीताः यम कुवेर वायु प्रभृतयो देवाश्च तमनुसरन्ति । सूर्याचन्द्रमसावपि तदाज्ञामेवानुसरतः ।

एवं महाबलशालिनं रावणं जेतुं नाशयितुं च भवन्तएव क्षमाः । भवतां हस्तेनैवायं मरिष्यति । भवतां दासस्य हनूमतोऽपि पराक्रमोऽवर्णनीयः । येन हि लङ्कास्थ विशाल लौहस्तम्भमुत्पाट्यासंख्य राक्षसाः निहताः । अनेनैव हनुमता जम्बुमाली निहतः अक्षयकुमारः हतः । स्वर्णमयी विशाला लङ्का दग्धा ।

इत्थमाकर्ण्य रामः हनुमन्तं यथायोग्यमादिष्टवान् । तथा च विभीषणं प्रत्युवाच । सृष्टेः स्थिति-पालन-संहारस्तु सामान्य विषय एव । परन्तु सागरस्यास्य पारगमनोपायो विधेयः । विभीषणेनोक्तम् प्रथमं भवता सागरः निवेदनीयः । यतोहि अयं भवतामभिप्रायं पूर्णतो विजानाति । तथा भवत्पूर्वजस्य सगरपुत्रस्योद्धारं कृतवान् । रामो विभीषणवचांसि स्वीकृत्य तथैव कर्तुमुद्यतोऽभूत् ।

वरुणन् अडैक्कलप् पडलम्

(वरुणशरणागति पटलम्)

श्रीरामचन्द्रः समुद्रतटे दर्भासनमुपविश्य वरुण मन्त्रं जपन्नतिष्ठत् । दर्भशायी रामः एकाग्रचित्तेनसमुद्र तरणोपायार्थं वरुण-मन्त्र द्वारा तं प्रार्थितवान् । किन्तु सागर देवो वरुणः नागतः । रामेणानुभूयते यत् याचनया महानपि लघुतां याति । प्रायोऽनेनैव हेतुना सागरो नागतः, मम शक्तिमुपेक्षते । एतेन तस्य हीनस्वभावस्य धार्मिक-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भावनायाः ह्रासतायाश्च परिचयो जायते । भवतु नाम अधुना मम क्रोधः सहतां स समुद्रः ।

समुद्र शोषणमपराधः यतोहि तत्रासंख्य जीव जन्तवस्तिष्ठन्ति विशाल रत्नराशयश्च सन्ति इति मत्वैव मया समुद्रो न शोषितः याचना च कृता । एवमनुभवन् रामस्य धैर्यः च्युतः तस्य मुख्यमण्डलं रक्ताभ मयं जातम् लक्ष्मणादिमादिष्टवान् । मम धनुर्देहि. लक्ष्मणेन धनुर्दत्तम् । रामः सशरं धनुरादाय तीक्ष्ण वाणैः समुद्रं क्षोभयामास । धनुष्टंकारं श्रुत्वा सर्वे कम्पिताः जाताः । सागरस्था जल जन्तवः ईन्धन सदृशाः भस्मीभुता भवन्तिस्म । राम वाण ज्वाला मालया आकाशश्छन्नोऽभूत् । 'युगान्ते पृथ्वी जलमग्ना जायते, जलंचाग्निः शोषति इति कथनमद्य रामेण प्रमाणितम् ।

इदानीं तु रामस्य वाणेन सह महर्षेः अगस्त्यस्य समता जाता यतश्चागस्त्येन समुद्रः शोषितः ततश्च रामेण ब्रह्मास्त्रमंभिमन्त्रितम् । इति दृष्ट्वा सर्वे देवाः कम्पिताः वभूवुः । असहायो वरुणश्च स्तुतिं कुर्वन् राम समीपमुपस्थे प्रार्थनां च चकार । तेनोक्तम् हे पुराण पुरुष नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यम् । रोषं त्यज, प्राणान् रक्ष, क्षमां कुरु । भवन्त-एव भूमिरापोऽतलो वायुराकाश स्वरूपाः । भवन्तं कोऽपराद्धुं समर्थः ? अभयं देहि तव शरणागतोऽहम् ।

रामेण तथाऽस्तु इत्युक्तम् । ततो वरुण उवाच । सप्तसागरमध्ये मकराणां मध्ये युद्धः संजातस्तत्रैवाहं गतवानासम् । केनापि भवदा-गमनस्य चर्चा कृता । रामेणोक्तम् ममामोघ वाणस्य कागतिर्भवितेति कथय । वरुण उवाच, हे प्रभो एकं मकरान्तक द्वीपं वर्तते तत्र शतकोटि द्वय संख्याकाः दानवाः वर्तन्ते । तैर्लोकाः भक्ष्यन्ते । तदुपरि अमोघमिमं वाणं प्रक्षेपयन्तु भवन्तः । रामेण तथैव कृतम् । ते दानवाः विनिष्टाः जाताः ।

तदनन्तरं वरुणोऽवादीत् । यदि सागरस्य गौरवं भवद्भिः विलुप्यते तर्हि महत् अपयशः भविता । अतएव पर्वत खण्डान् संग्राह्य सेतुवन्धनं कारयन्तु । अयमेव प्रशस्तः पन्थाः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शेतुवन्दनप् पडलम् (केतुबन्धन पटलम्)

ततो रामेण सुग्रीवादिकमाहूय तथैव कर्तुमादिष्टम् यथा वरुणेनोक्तम्। सुग्रीवादयः सर्वे वानराः समागताः। विभीषणश्च समुपस्थितः। नलोऽप्यागतः जाम्ववान् तस्यनेता वभूव। नल प्रभृतयः वानराः सेतुबन्धनकार्ये संलग्नाः संजाताः। तत्र कोटित्रय वानराः सेतुबन्धन कार्ये व्यापृताः बभूवुः। तत्र गवाक्ष नामकेनैकेन वानरेण विशाल पर्वतमेकमुत्पाट्य समुद्रे प्रक्षिप्तम्। तेन समुद्रादुत्थिततरङ्गाः गगने व्यापृताः जाताः अन्येच कपयः वृक्षपर्वतादिकमुत्पाट्य सागरे प्रक्षिप्तवन्तः आसन्।

इत्थं च नलप्रमुखाः वानराः दिन त्रय मध्ये सागरे सेतु निर्माणं विधाय सुग्रीव विभीषण सहिताः सर्वे रामं निकषा समागत्य शतयोजन विस्तीर्णे सागरे सेतु निर्माण पूर्णतायाः सूचनां प्रदत्तवन्तः। एवं हि महानयं विधिः सुसम्पन्नः।

आररूक केलविप् पडलम् (चरश्रवण पटलम्)

सागर सेतु निर्माण परिपूर्णता-सूचनां प्राप्य रामोमोमुदीति। त्वरितमेवतद्दर्शनार्थमुत्कण्ठितो जातः। सैन्यैः साकमग्रे विभीषणः पृष्ठे च सकल शास्त्रज्ञः कुशलो विद्वान् हनूमान् पार्श्वयोश्च लक्ष्मण-सुग्रीवादयश्चासन्। एवंभूतो रामः सेतु समीपमागतवान्। सेतुमवलोक्य विस्मितो जातस्तथा सुग्रीवः सैन्य मध्ये महान्तमभियन्तारं नलं प्रशंसितवान्। यथा काबेरी नदी पृष्पचन्दन रत्नादिभिः समेता लङ्कां द्रष्टुं प्रस्थिता तथैवात्र सेतुवन्धो भयमागात्। विविध-रत्नपुष्पादि युक्त सामुद्रस्तरङ्गो लङ्कामभिगच्छति स्म। एभिः वानरैः सह सीतामनुचिन्तयन् रामः सेतुमार्गेण समुद्रमुल्लंध्य लङ्का समीपमुपागतः। तत्र सेनापतिं नलमादिष्टवान्। एतेषां सैन्य बलानां कृते मत्कृते च आवासादि व्यवस्थां विधेहि।

नलश्चाज्ञामादायैव रत्नादि परिपूरित शिविरान् त्वरितमेव ब्रह्मणोर्निर्मितिमिव निर्मितवान्। रामस्तत्र सुखेन न्यवसत। सर्वे सैन्यादयश्च समोदं तत्रावासं चक्रुः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ततो रावणप्रेरितो मायावीदानवः वानररूपं धृत्वा सुग्रीव-सैन्यमध्ये भ्रमन्नासीत् । यं विभीषणः ज्ञातवान् यदियं साक्षसीमाया । अणिमा लघिमा गरिमा प्रभृतयः अष्टसिद्धयः स्वकीय रूपं पिधाय तत्र भ्रमन्ति स्म । विभीषणः तामपि ज्ञातवान् । वानरास्तानवलोक्य मुष्टि प्रहारेण संताड्य लतारज्ज्वा बद्ध्वा रामसमीपमानीयोक्तवन्तः इमे कपट वेषधारिणः राक्षसाः । रामस्तानवलोकयत् । ते च दीन-भावेन राममपश्यन् । रामोऽवदत् कथं यूयमत्रागतवन्तः, तैरुक्तम् रावणाज्ञया भवतां गतिविधि ज्ञानार्थं वयमत्रागतवन्तः । योहि रावणः जगन्मातरं सीतामाहृत्यानीतवान् ।

रामस्तान् वन्धनमुक्तं कारितवान् तथा कथितवान् यत् त्वं मम शिविर विषये सर्वं ज्ञातवान्, ममाभयदानं च दृष्टवान् । गच्छ, रावणं ब्रूहि यदहं विभीषणं लङ्काधिपतिरुपेऽभिषिक्तवान् ।

अत्रान्तरे रावणोऽपि रामस्यागमनवृत्तात्तं सर्वं श्रुतवान् । चिन्तितः स त्रिविध मन्त्रणायां संलग्नो जातः । रावणेनोक्तं यदधुनाऽस्माभिः किं विधेयम् । तदा माल्यवान् रावणस्य मातामहः अब्रवीत् । हे राजन् भवता सर्वं दृष्टं दृश्यते च । एको वानरोऽत्रागत्य राक्षसान् निहत्य लङ्कां भस्मीकृतवान् । विशाल सागरे सेतुं निर्माय्य विशाल वानर सैन्य सहितो रामोऽत्र लङ्कासमीपमुपस्थितः । अतएव यथायोग्यमेव विधेयम् । रावणस्तच्छ्रुत्वाऽवादीत् भवान् अपि विभीषणेन साकं गच्छतु । ममाप्रतिमवलमविज्ञायैव भवानेवं वदति ।

एतन्मध्ये कश्चिद् गुप्तचरः समागतः । रावणस्तमब्रवीत् । सर्वं निःशेषं तत्रत्यवृत्तान्तं वद । गुप्तचरोऽवादीत् यथाऽमृतपानसमये सूर्येण दानवः संकेतितः तथैव विभीषणेनाहं परिज्ञातः । तेनहि रामाय सर्वं कथितम् । ततश्च रामः मयि दयां कृत्वामुक्तं कृतवान् येन केनापि प्रकारेणात्रोपस्थितोऽस्मि ।

रामो विष्णुस्वरूपो धर्मरक्षकः देवैः प्रेरितोऽत्र मानवरूपं धृत्वा समुपस्थितः इत्यपि जनाः कथयन्ति ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इति श्रुत्वा रावणोऽवोचत्। सर्वेदेवाः मिलित्वा स्वयं भगवान् महेश्वरो यद्यत्राच्छेर्त्तहि मया तैः साकं युद्धमवश्यमेव करिष्यते। परिणामस्यकोऽपि भयः प्रभावो वा न मयि विद्यते। अस्यां स्थितौ पलायनं तु नैव संभवम् इत्यवधार्यम्।

इलङ्गैकाण् पडलम् (लङ्का संदर्शन पटलम्)

अत्रान्तरे रामचन्द्रः त्रिकूट शिखरे स्थितां महामहिमशालिनीं मनोहारिणीं स्वर्णमयीं लङ्कां द्रष्टुं समुत्सुको जातः। यस्यां लङ्कायां पुरा सूर्योऽपि प्रवेष्टुं नार्हति। तस्यामेवाधुना रामचन्द्रागमनेन निर्भीकः सन् सूर्योऽपि प्रविष्टः। विभीषणः सुग्रीवश्च रामस्य एकैकं हस्तं गृहीत्वा क्रमशः सुबेलपर्वत शिखरमारुह्यतां लङ्कां दर्शयितुं आरभेताम्। लक्ष्मणष्च रामस्य पृष्ठतः आसीत्। अस्मिन् पर्वत-शिखरे रामः उदयगिरि परित्यज्य अन्यस्यां दिशि सूर्यगमनसदृशः अदृश्यत। अत्र सूर्यस्य उदयगिरि त्यागः रक्ताभं विहाय श्यामरङ्ग-धारणम् अशुभसूचकम् इति अत्र ध्वन्यते। यतोहि रामः सूर्य सदृशः श्याम वर्णः आसीत्।

रामः स्वकीय नेत्र कमलाभ्यां लङ्कां ददर्श। इयं लङ्का अमरा-वती नगर्याः अपि मनोरमा। रक्त किरणैः व्याप्ता लङ्का हनुमता दह्यमाना यथा तथा दृश्यते। अस्मिन् नगरे सर्वत्र महान्तः प्रासादाः सन्ति। येषु मध्ये रावणस्य सुसज्जितः प्रासादः विद्यते। हे लक्ष्मण, पश्य प्रवाल-प्रासादान् यत्र सुसज्जित पुष्पालङ्कृत केशपाशात् सुगन्धयितुं अगुरू धूपादिकं प्रददाति। येन श्यामल प्रासादः भगवतः अर्द्धनारीश्वरस्य तुल्यो जातः। एवं प्रकारेण लङ्कां दर्शं दर्शं रामः प्रसन्नतां लेभे।

इरावणन् वानरत्तानै काण् पडलम्
(रावण द्वारा वानरसेना संदर्शन पटलम्)

एतस्मिन् समये एव रावणः वानर सेनायाः विपुलतां द्रष्टुम् एकस्मिन् रक्तिमस्वर्णमय गोपुराग्रे समागतः। अयं गोपुरः स्वर्णमय मेरुपर्वत सदृशः आसीत् यत्र रावणः वासुकी नाग तुल्यः अदृश्यत।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुराणे इयं कथा प्रचलिता वर्तते यत् एकदा वायुशेषनागयोर्मध्ये बल परीक्षा जाता। तस्यां परीक्षायां वायुः मेरुशिखरम् उत्पाट्य प्राक्षिपत्। यस्य त्रयः शिखराः समुद्रे पतित्वा त्रिकूटाः सञ्जाताः। तस्मिन् एव त्रिकूट नामक पर्वते इयं लङ्का स्थिता। तत्रैव वायुसदृशः स रावणः आसीत्। रावणस्य अङ्ग रक्षकाः शतकोटि राक्षसाः क्रूराः भयंकराः विविध शस्त्र युक्ताः आसन्। एवंभूतः स रावणः रामचन्द्रं दृष्ट्वा क्रुद्धः सञ्जातः तस्य वामाङ्गानि वामनेत्राणि च परिस्फुटितानि यानि अशुभ चिह्नानि आसन्। रावणेन लक्ष्मणः दृष्टः शूर्पणखायाः नासिका च्छिद्यते स्म। अयं च सूर्यपुत्रः अङ्गदः। महावैयाकरणः ज्ञानिनामग्रगण्यः हनुमान्, अग्निपुत्रः त्रिशूलयुक्तः नीलः, पर्वत तुल्यः नलः, त्रिकालज्ञः ऋक्षराट् जाम्बवान् च अदृश्यन्त।

एवं च देव वैद्यस्य अश्विनी कुमारस्य पुत्रौ मैन्दद्विविद्वौ रामलक्ष्मण तुल्यौ आस्ताम्। तावपि रावणं ददर्शतुः। तथा च कुमुदाक्षगवयाक्ष-केशरी-ऋषभ सुषेण-दधिमुख-शङ्ख-प्रभृतयः प्रख्यात बलशालिनः सेनापतयश्च रावणेन दृष्टाः। तथा असंख्य वानर सैन्याश्च दृष्टाः। यथा समुद्रतटे विकीर्णा बालुकणाः गणयितुं न शक्याः तथैव एताः वानर सेनाः न गणयितुं शक्याः। इत्थं सर्वं दृष्ट्वा रावणः चिन्तितो जातः।

महुडगङ्गप् पडलम् (मुकुट भङ्ग पटलम्)

यदा रावणः राम शिविरं वानरसैन्यांश्च पश्यन् आसीत् एतन्मध्ये एव श्रीरामचन्द्रः विभीषणं पृष्टवान्। यत् अभेद्य प्राचीरे स्थितः यः अस्माकं वानर सैन्यान् पश्यति स कः वर्त्तते। विभीषेनोक्तम् पर्वततुल्ये गोपुरे त्रिलोत्तमादि-अप्सरोभिः परिवृत्तः हीनकर्मकर्त्ता स रावणः एव। रामविभीषणयोर्मध्ये कथितां कथां सुग्रीवोऽपि श्रृण्वन् आसीत्। सहसा सूर्यपुत्रः क्रोधाग्निना सन्तप्तः सुग्रीवः ततः रावणोपरि तथैव उत्कूर्दितः यथा एकदा पक्वफलं मत्वा हनुमान् सूर्यं ग्रसितुम् उत्कूर्दितवान्। तदा सुग्रीवः सूर्यसदृशः अदृश्यत।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुग्रीवः गोपुरस्थित-रावणोपरि आकाशमार्गात् तथा सम्प्राप्तः यथा जटायुः कृतवान् आसीत्। रावणः अपृच्छत् कस्त्वं कुतः कथमायातः ? किमपि उत्तरं प्रदानं विना सुग्रीवः सहसा रावणस्य स्वकठोर-हस्तेन मुष्टिकया प्रहारं कृतवान् येन रावणः क्रोधोन्मतः सञ्जातः तथा स्वकीय विंशति हस्तैः सुग्रीवोपरि कठोर रूपेण प्रहारं कृतवान्। येन प्रहारेण सुग्रीवस्य शरीरात् रक्तधारा प्रवाहिता। सुग्रीवोऽपि उन्मत्तरूपेण स्वकीय पादेन रावणस्य शिरसि मुखे च प्रहारं कृतवान्। रावणः तथा कुर्वन्तं सुग्रीवं हस्तेन सुदृढं धृत्वा भूमौ न्यपातयत् यथा सिंहः मदमत्तं गजं पातयति। एवं कृतेसति सुग्रीवः मूर्च्छामाप। चेतनां प्राप्य सुग्रीवः रावणं तथा न्यपातयत् येन तस्य मुखात् शोणित-धारा निर्गता। तं शोणितं सुग्रीवः स्वहस्ताभ्यां पपौ। इत्थं च रावण-सुग्रीवयोर्मध्ये परास्परं भयानकः युद्धः बभूव। यत्र कदाचित् सुग्रीवस्य पक्षः प्रवलः कदाचित् च रावणस्य पक्षः प्रबलः सञ्जातः।

इत्थं च सुग्रीवः गोपुरं विध्वंसितवान् तथा अधः कूदितवान्। अत्रान्तरे स्वकीय मित्रं सहायकं सुग्रीवं नागतं दृष्ट्वा रामः चिन्ता-मग्नः सञ्जातः। मनसि चिन्तयति रामः यदि रावणः सुग्रीवं मारयिष्यति तर्हि वयं कथं जीविष्यामः। यतोहि सुग्रीवस्यैव साहाय्येन सीतान्वेषणं जातम्। सागरे सेतु निर्माणं जातम् तथा लङ्काद्वार-पर्यन्तं ममागमनं जातम्। इत्थं चिन्तयति रामे सहसा सुग्रीवः आकाश-मार्गात् रामस्य चरणे निपत्य युद्धे रावण मस्तकात् गृहीतं किरीट-मुकुटं रामाय समर्पितवान्। इति दृष्ट्वा सर्वे स्वस्थाः प्रसन्नाश्च वभूवुः। रामेण स्ववक्षसि आलिङ्गितः सुग्रीवः, येन सुग्रीवस्य भीषण-युद्धे प्राप्त-शरीर व्यथा वहुधा विलुप्ता जाता।

रामेणोक्तम् हे मित्र, त्वया न साधु कृतम्। यदि रावण युद्धे तव विनाशः अभविष्यत् तदा अस्माकं कागतिः अभविष्यत्। कथं त्वया सहसा विना पूर्व विचारं लङ्का गोपुरे कूदितः तथा तेन दुर्दान्त-रावणेन सह युद्धः कृतः। अस्तु अधुना त्वया विश्रम्यताम्।

सुग्रीवेणोक्तम्, न मया जटायु सदृशः साधुकार्यं कृतम्, न च निषादराज-गुह सदृशं निश्छल प्रेम प्रदर्शितम्। मया तु न च सीता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आनीता, न च रावणस्य शिरांसि आनीतानि। रिक्त हस्तमेवागतम्। भवता तु मम शत्रवः घातिताः मया तु केवलं वानरोचित चञ्चलता प्रदर्शिता कृता च।

एतस्मिनेव महाबल बुद्धिशाली वैयाकरणः हनुमान् अवादीत्। हे राजन्! सुग्रीवः रावणस्य मस्तकेभ्यः रत्नजटित किरीट मुकुटादिकं निःसार्य आनीतम् तत् किं सामान्यं वर्त्तते? इतोऽप्यधिकं किमपि यशःकारकं कर्म भवितुमर्हति। इदं तु रावण विनाशस्य सूत्रपातः। अस्माकं विजयस्य च शिलान्यासो वर्त्तते। इत्थं च परस्परं वार्तालापं कुर्वन्तः ते आसन् तदा सन्ध्या समागता। किन्तु रावण मस्तकस्य रत्नेभ्यः तथा प्रकाशः जायतेस्म येन अन्धकारः पलायितः।

तत्र लङ्का गोपुरात् रावणः स्वकीय पराभवेन लज्जितः दुःखितः सन् स्वकीय भवनं प्रत्यावर्तितवान्।

अणिवहुप्पुप् पडलम् (व्यूह रचना पटलम्)

सुग्रीव युद्धे अपमानेन मर्माहतस्य रावणस्य मुखं म्लानं कमल-पुष्पसदृशं जातम्। स्व प्रासादे समागत्य नृत्य-गीत-पानादिकं परित्यज्य स्वकोमलशय्यायामुपरि विलुण्ठितः सन् आसीत्। तत्रान्तरे द्वारपालेनागत्य निवेदितं यत् भवत् प्रेषितगुप्तचरः शार्दूलः समागतोस्ति। तस्य प्रवेशार्थं रावणेनाज्ञा प्रदत्ता। शार्दूलः तत्रागत्य रावणस्य पादयोः पतित्वा रावणस्य म्लान मुखं दृष्ट्वा स्तब्धः सञ्जातः। तं दृष्ट्वा रावणः अब्रवीत् यत् निःशंको भूत्वा सर्वं कथय यत् यद् तत्र दृष्टं त्वया।

गुप्तचरेण शार्दूलेनोक्तम् राजन् तत्र महाबलशाली मारुतिः लङ्कायाः पश्चिम द्वारे आक्रमणार्थं सन्नद्धः तिष्ठति। यस्य परितः **सप्तदश 'वैल्लम'** कोटि परिमिताः सेनाः वर्त्तन्ते। स्वयं राजकुमारः अङ्गदः सप्तदश 'वल्लम' कोटि संख्याक वानरैः साकं दक्षिण द्वारि विराजते। महाबलशाली नीलश्च सप्तदश कोटि परिमित सैन्यैः सह पूर्वद्वारे अवतिष्ठते। रामश्च स्वयं स्वानुजेन लक्ष्मणेन सह उत्तर गोपुरे विराजते यत्र विभीषणः लङ्कायाः समस्तां स्थितिं विवृणुते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शार्दूलेन समाचारमिमं श्रुत्वा क्रोधोन्मतः रावणः स्वकीय दन्तान् घृष्टं धृष्टम् अवादीत्। अहं सैन्यसहितं रामं मृत्तिकायाः धूलिकणसदृशं भूभौ मर्दयिष्यामि। युगान्तकालीनं पवनं वाहयिष्यामि। रावणस्य क्रोधेन तस्य पुष्प शय्यायाः पुष्पाणि विदग्धानि। रावणः ततः उत्थाय अन्यस्मिन् रत्नजटिते आसने समागतवान्।

ततश्च रावणेन मन्त्रिगणाः समाहूताः। बहवः मन्त्रिगणाः समागताः। तानवलोक्य रावणः उवाच। सर्वस्मिन् द्वारि वानर-सैन्याः सन्नद्धाः तिष्ठन्ति। अधुना किंकर्त्तव्यमिति विचार्य परामर्शं देहि। तदा निकुम्भ नामकेन मन्त्रिणा प्रोक्तम्। किं सप्तदश बल्लम कोटि संख्याकाः वानराः किमस्माकं द्वाराणि उद्घाटयितुं समर्थाः सन्ति। न हि एवं भवितुमर्हति। विविध-शस्त्रास्त्र-युक्ताः वयं यदा युद्धार्थं समुपस्थिताः भविष्यामः तर्हि तेषां विनाशः निश्चितः अधुना तु युद्धकरणमेव श्रेयः। नान्योपायो मया दृश्यते। एतच्छ्रुत्वा रावणस्य मातुलः माल्यवान् उक्तवान्। अस्मिन् नगरे प्रविश्य येन राक्षसाः निहताः सेनापतयश्च पराजिताः। अक्षयकुमारश्च निहतः। स्वर्णमयी लङ्का च दग्धा। तस्य नायकेन महाबलशालिना रामचन्द्रेण साकं वैरं न वरम्। युद्धं परित्यज्य तस्य सुस्तनीं सुदीर्घकृष्णकेशीं पत्नीं सीतां तस्मै प्रदाय स्वस्य लङ्कायाः राक्षस कुलस्य च रक्षां विद्धातु।

इदं श्रुत्वा रावणः महान् क्रुद्धः सन् त भर्त्सितवान्। पुनश्च प्रहस्त नामकं भयंकर दैत्य सेनापतिं प्रति उक्तवान्। त्वम् स्वकीय-वीर सैन्यैः सह पूर्वस्यां दिशि गच्छ। हे महोदर महापार्श्वेन सह द्विशद कोटि सैन्यैः सह दक्षिणस्यां दिशि गच्छ। स्वपुत्रं इन्द्रजित्-मेघनादं कथितवान्। त्वम् द्विशत कोटि सैन्यैः सह सूर्योदयात् पूर्वं पश्चिम द्वारि गच्छ। ततश्च विरूपाक्ष नामानं भयंकरं सेनापतिं देवानां त्रासदायकम् आदिष्टवान् यत् त्वम् इमां विशालां लङ्कां संरक्षस्व। अहं तु स्वयमेव द्विशत-कोटि सैन्यैः सह उत्तरस्यां दिशि गच्छामि। एवं रूपेण रावणः सैन्य विभाजनं कृत्वा युद्धार्थं सुसन्नद्धो जातः। एवं प्रकारेण उभयोः पक्षयोः विशाल सैन्य समूहाः स्व स्व-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रतिनियोजित स्थानेषु समुपस्थिताः बभूवुः। एवं हि युद्धारम्भ-प्रक्रिया परिपूर्णा जाता।

अङ्गदन् तूदुप् पडलम् (अङ्गद दौत्य पटलम्)

अस्मिन् पटले रामचन्द्र द्वारा शान्तिदूत रूपेण प्रेषितस्य अङ्गदस्य रावणेन साकं वार्तालापः सर्वथातिशयते। यद्यपि रावणाङ्गदयोः सम्वादः सर्वस्मिन् रामकथा काव्ये प्रायः विद्यते किन्तु यथा अस्मिन् रामायणे गम्भीरोत्तेजक सम्वादो दृश्यते न तथा अन्यस्मिन् रामायणे। **एतेन इदं पटलं विशिष्टतामेति।**

युद्धार्थं समवेताः सुग्रीव सैन्याः समुपस्थिताः। रामचन्द्रोऽपि लङ्का प्राचीरं निकषा रावणप्रतीक्षायामुत्तरस्यां दिशि गोपुर समीपे स्थितः आसीत्। तत्र विभीषणं प्रति रामेणोक्तम् मम मनसि एकः विचारः समायाति यत् अन्तिमवारं दूतमेकं रावण समीपं सम्प्रेष्य सीता-परावर्त्तनार्थं कथयेम। इयं च राजनीतिः। विभीषणेनोक्तम् सुन्दरोऽयं विचारः। सुग्रीवेण कथितं यदि इदं राजोचित कार्यम्। तत्र लक्ष्मणे-नोक्तम् मम विचारे नेदं शोभनम्। रावणं प्रति दया नैव विधेया युद्धे एव साक्षात्कारः भविता। भवान् एव विचारयतु यत् येन रावणेन देवाः निहताः, ब्राह्मणा अपमानिताः जीवाः विनष्टाः, तथा देवी सीता वन्दिनी कृता तेन सह अधुना का वार्त्ता।

पुनः लक्ष्मणेन अति गम्भीर विचारः प्रकटितः। यदि रावणः देवीं सीतां परावर्त्तयिष्यति तर्हि भवता विभीषणाय प्रदत्तराज्यस्य किं भविष्यति दण्डकारण्य वासिभ्यः यद्वचनं प्रदत्तं भवता तस्य किं भविष्यति इति सर्वं विचारणीयम्। रामेण विहस्य उक्तं हे आयुष्मन् लक्ष्मण, त्वया यदुक्तं तत् सर्वं तथ्य पूर्णं, मया न किमपि विस्मृतम्। अन्ते तदेव भविष्यति यत् त्वया कथ्यते। किन्तु बृहस्पति शुक्रादि-प्रभृतयः नीतिशास्त्र विशारदाः विद्वांसः यं पन्थानं प्रदर्शितवन्तः तस्योपेक्षा न विधेया। यतोहि युद्धे सत्यपि भुजवलस्य महत्त्वे क्षमा-गुणः। विजये अयमेव राजधर्मः। अतएव अन्तिमवारं राजनीत्यनुसारं एकः दूतः सम्प्रेषणीयः इति वरम्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रामेणोक्तम् यदि पुनः मारुति प्रेष्यते तर्हि लङ्कायां सर्वे ज्ञास्यन्ति यदि एक एव वीरः वर्त्तते राम समीपे । अतएव कः अन्यः प्रेषणीयः । त्वरितमेव सुग्रीवेणोक्तम् अङ्गदः प्रेषणीयः । स कार्याणि विधाय परावर्तितो भविष्यति इति कृत्वा अङ्गदम् आहूतवान् । अङ्गदः समागत्य उक्तवान् यत् लङ्कां गत्वा मया किं करणीयं, किं च कथनीयम् । रामेणोक्तम् त्वम् तत्र गत्वा रावणाय विकल्पं दास्यसि । यत् सीतां परावर्त्तय अथवा युद्धे निज दशशिरांसि छिन्न भिन्नानि कुरुष्व । अङ्गदः आज्ञामादाय सहर्षं सोल्लासं च लङ्कां प्रस्थितः । अङ्गदस्य मनसि हर्षः आसीत् यत् ममापि स्थानं हनुमत् तुल्यं वर्त्तते । एवं च तीव्र गत्या आकाश मार्गेण गच्छन् लङ्कां प्राप्तवान् । तत्र युद्धार्थं प्रस्थितं रावणं दृष्टवान् । रावणं दृष्ट्वा तस्य विशाल सैन्य-बलं च दृष्ट्वा अङ्गदः मनसि चिन्तितं यत् एकदा मम पिता युद्धे रावणोपरि प्रहारं कृतवान् । पुनः तस्य पुत्र एव तत्समीपमागतवान् इति चमत्कारपूर्णम् । कियद्दिन पूर्वमेव मम पितृव्यः सुग्रीवः रावणस्य किरीट मुकुटादिकं नीत्वा रामाय प्रदत्तवान् । इति सर्वं विचिन्त्य स रावण समीपं समुपस्थितः । रावणेन पृष्टः कस्त्वं कुतः कथमत्र स्व-प्राणनाशार्थम् आगतवान् अङ्गदेन विहस्य उक्तम् । भूतभावनस्य भूमण्डले अवतरितस्य वेदैः वन्दनीयस्य सीतापतेः रामस्य दूतः बालिपुत्रः अङ्गद नामकः वानर सेनापतिः अहमस्मि ।

इति श्रुत्वा रावणेन विहस्य उक्तम् किं स रामः हरिः हरः ब्रह्मा वा ? न हि, स तु वानर सैन्यान् संगृह्य येन केनापि प्रकारेण समुद्रे सेतुं निर्माय अत्र आगतवान् । तव पिता बाली मम मित्रम् आसीत् । यस्य धर्मः साक्षी वर्त्तते इयं कथा अग्रे वर्तते । त्वम् तस्यैव रामस्य दूत कार्यं करोषि, यः तव पितृ हन्ता वर्त्तते । तव मतिः भ्रष्टा जाता । अद्य तु त्वम् पुत्र रूपे मां मिलितः सीतापि मिलिता । न किमपि अधुना असाध्यं वर्त्तते । तव राज्यं पुनः तुभ्यं दास्यते मया । त्वम् अत्रैव तिष्ठ । चिरकालं अत्र शासनं कुरु । देवगणाः तव स्तुतिं करिष्यन्ति । इत्थं च तव मस्तके अहं मुकुटं दास्यामि ।

इत्थं श्रुत्वा अङ्गदः विहस्य उक्तवान् । किमेवं मधुर वचनैः मां वशमानेतुं प्रयत्नं कुरुते भवान् । किं इदमेव दूतस्य कार्यं किं इयमेव

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शास्त्रपद्धतिः । **अथ च त्वं मह्यं शासनाधिकारं ददासि तथा च अहं स्वीकरोमि इति तु तथैव सञ्जातम् यथा कुक्कुरः ददाति तथा सिंहः गृह्णाति ।** इति श्रुत्वा सहसा रावणः अवादीत् । किं तुच्छ वानरार्थम् अहं शस्त्रं गृह्णीयाम । तदा अङ्गदेनोक्तम् रामः तवोपरि इदानीमपि करुणां न त्यक्तवान् । भवान् देवीं सीतां त्यजतु अथवा युद्धे प्राणान् त्यजतु । यस्मिन् दिने तव पितामही ताड़का रामेण मारिता तथा च गृध्राः तस्याः मांसं खादितवन्तः तथा च तस्य मातुलः सुबाहुः रामेण मारितः एवं च लक्ष्मणेन तव भगिन्याः नासिका छिन्ना, स्तनानि च खण्डितानि तद्दिने भवतः पौरुषः कुत्र आसीत् ? यदा हनुमान् लङ्कामागत्य राक्षसान् निहत्य अक्षयकुमारं च निहत्य स्वर्णमयीं लङ्कां दग्धवान् तदा तव वीरता कुत्र आसीत् ? यस्य रामचन्द्रस्य वन्दनां सर्वे कुर्वन्ति । येन रामेण तव भ्रात्रे विभीषणाय युद्धात् पूर्वमेव लङ्का-राज्यं प्रदत्तं तस्मै रामाय तस्य सुकेशिनीं पत्नीं सीतां प्रदाय निश्चिन्तो भवतु । आगच्छतु मया सह ।

इति श्रुत्वा रावणेन चीत्कारः कृतः यत् इमं वानरं मारयस्व । रावणस्य दूताः अङ्गदं परितः संवृत्ताः अङ्गदः सहसा उपरि उत्थाय तान् राक्षसान् रावणस्य गोपुर द्वार समीपं प्रक्षिप्तवान् । तथा राम-समीपमागत्य निवेदितवान् यत् स रावणः स्वहठं न त्यक्तुं शक्नोति अयमेव वार्तालापस्य सारांशः । **(अत्र अङ्गदपादरोपणकथा न वर्तते ।)**

मुदर पोरप् पडलम् (प्रथम युद्ध पटलम्)

उपर्युक्त क्रमेण युद्धस्य निश्चये जाते रामपक्षस्य सेनापतिना नीलेन घोषणाकृता अवश्यंभावी युद्धः अतएव सर्वे वानराः प्रस्थानं कृत्वा स्व स्व व्यूह रचनां यथास्थानं कुर्वन्तु । इदमपि कथितं यत् समुद्र बन्धन समये यथा पर्वतवृक्षादयः समुत्पाटिताः तथैव ततोऽपि त्रिगुण परिमिता पर्वतवृक्षादीन् समुत्पाट्य सज्जीकुर्वन्तु । तथा लङ्कां परितः याः संरक्षकाः गभीर जलाशयाः सन्ति तासां पर्वत-वृक्षेभ्यः पिधानं विधेहि । इत्थं च रामेणोक्तम् यत् वृक्षैः मार्गान्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अवरोधय, आवागमनं रुन्धन्यु तथा लङ्कायाः उत्तुङ्ग प्राचीर शिखरे गत्वा तं निजाधिकारे कुरु यत्र सूर्योऽपि नैव गन्तुं शक्नोति ।

इत्थं हि अष्टम सागर तुल्यः सप्तति कोटि संख्याकाः सैन्याः अस्मिन् कार्ये संलग्नाः जाताः येन जलराशयः लङ्कां प्रविविशुः । यतोहि रावणस्य प्राचीरं परितः गभीराणि लघु जल स्रोतांसि वानरैः पिहितानि । एवं च राम सैन्याः सुसमृद्धा आसन् ।

अथ च रावण सैन्यास्तत्र तत्र समुपस्थिताः जाताः, शंखध्वनयः जाताः असंख्याश्वाः प्रचलिताः गजाश्च भीषणं नदन्तः चलिताः । यत्र वानर सैन्या स्व दन्त-नखैः वृक्ष-पर्वतैश्च योद्धमुत्सुकाः । तत्र राक्षससैन्याः विविध शस्त्रास्त्र युक्ताः स्थिताःयैः च वानर प्रेरिताः पर्वताः सञ्चूर्णिताः वृक्षाश्च खण्डिताः । वानर प्रक्षिप्त शिलाखण्डैः राक्षसानां शिरांसि भग्नानि । राक्षस शरैश्च वानर शरीराणि व्रणयुक्तानि सञ्जातानि । इत्थं च उभयोः सैन्ययोर्मध्ये तुमुल युद्धम् प्रारब्धम् । यत्रोभयपक्षस्य असंख्य सैन्याः हताहताः जाताः एतन्मध्ये अस्मिन् भयानक युद्धे वानर सैन्य वलानां ह्रासः सञ्जातः । राक्षस सैन्यानि **'ढक्का गुरुडु'** नामक वाद्यानि, गुञ्जायमान **शङ्खः** प्रसंशा योग्यानि **"काहल" नामक** वाद्यानि **'आहुलि'** नामक लघु ढक्का अन्यानि विविध वाद्यानि च भीषणरवं कृतवन्तः । **(एतानि तमिलनामकानि वाद्यानि सन्ति) । इत्थं च राक्षस सैन्याः सुग्रीव-समीपमागतवन्तः ।**

स्व पक्षस्य क्षीणवलमवलोक्य क्रुद्धः सुग्रीवः एकं विशाल-शालवृक्षम् उत्पाट्य गृहीत्वा राक्षसानाम् उपरि पातयामास । येन सहस्रशः राक्षसाः भूमौ विलुण्ठिताः रक्तधाराश्च प्रवाहिताः जाताः । इत्थं च सुग्रीव-राक्षसयोर्मध्ये रोमाञ्चकारि युद्धं समभवत् । (क) यत्र रक्तधारा प्रवाहिताः (ख) शर वर्षाः जाताः । (ग) असंख्या वानरामृताः अगणिता राक्षसाश्च मृताः (घ) शोणिताः द्रवी भूताः । **अत्र १००५ पद्ये "पाणलपट्ट पलकण मारियिन्" अस्मिन् पद्ये पट्ट शब्दस्य उपर्युक्ताः चत्वारः अर्थाः विद्यन्ते ।**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राक्षस सैन्याः क्षीणं स्वबलं दृष्टवन्तः। तदा वज्र मुष्टि नामकः राक्षसः जलपोत-सदृशं स्वकीय वेगेन समुद्रमार्गेणानीय तीक्ष्ण वाणैः वानर सैन्यान् छिन्न भिन्नान् कृतवान्। येन सुग्रीवः चिन्तितो जातः। ततः सुग्रीवः तस्य रथोपरि उत्कूर्द्य तस्य वज्र मुष्टि राक्षसस्य धनुर्वाणान् खण्डितवान्। वज्र मुष्टिः च भूमौ पातितवान्। राक्षसाश्च **हलाहल तुल्यान् त्रिशूल-करवाल-परशु-,तोमर, चक्र, भिन्दिपाल, वाण,** प्रभृतीनि अस्त्रशस्त्राणि गृहीत्वा सञ्चाल्य युद्धं कृतवन्तः। यत्र कतिपय वानराणां पुच्छानि खण्डितानि पादाश्च त्रुटिताः। ततः वानर सैन्या यम तुल्याः राक्षससैन्यानामुपरि प्रहारं कृतवन्तः। येन तेषाम् अश्वा गजाश्च विनष्टाः जाताः। ततश्च अग्निपुत्रः महावलशाली नीलः एकं विशालं शालवृक्षम् उत्पाट्य तदुपरि प्रक्षिप्तवान्। येन कतिपय राक्षसाः विनष्टाः। **"कुम्भानु"** नामक राक्षसं **हिडिम्ब** नामकः रिक्षराजः निहतवान्। **प्रहस्त** नामकः राक्षससेनापतिः कुम्भानुं निहतं दृष्ट्वा सुमालिनामकस्य सेनापतेः पुत्रः प्रहस्तः चिन्तितो भूत्वा असंख्यान् शरान् वानर सैन्योपरि प्रक्षिप्तवान्। वानर सेनापतिः नीलः तान् विखण्डितवान्। तथा प्रहस्तं हस्ताभ्यां गृहीत्वा आकाशे उच्छाल्य भूमौ पातितवान्। इत्थं च नीलस्य प्रहारेण **प्रहस्तः मृतः**। अत्र कविः कथयति **अस्य** युद्धस्य वर्णनम् असम्भवम्। यत्र प्रहस्तः मृतः तत्रैव दक्षिणस्यां दिशि **अङ्गदेन 'सुपार्श्वः' मारितः।** पश्चिम द्वारे च **हनुमता 'दुर्मुखः' पातितः।** एवं च सैन्ययोर्मध्ये युद्धे सञ्जाते राम-रावणयोर्मध्ये युद्धः प्रारब्धः।

अनन्तरं दूताः समागत्य सर्वं वृत्तान्तं रावणाय न्यवेदयन्। सर्व-राक्षस सैन्यानां विनाशलीलामपि वर्णितवन्तः। यत्र प्रहस्त सुपार्श्व वज्रमुष्टि दुर्मुख प्रभृतयोऽपि मारिताः। सर्वमिदं श्रुत्वा रावणः क्रुद्धः सन् एकस्मिन् सशक्ते रथे समुपविश्य रावणः युद्धाय प्रस्थितः। यत्र सहस्राश्वाः संलग्ना आसन्। पृष्ठतः महान्तः सैनिकाः अनुसरणं कुर्वन्ति स्म। तथा च रावणः शिवस्य स्तुतिं प्रार्थनां कृतवान्। ततश्च स्वकीय विशाल वक्षसि कवचं परिधाय युद्ध सूचकं **'तुम्बै'** नामकं हारम् उद्धृतवान् **एवं च त्रिभुवन विजयी रावणः समराङ्गणे समुपस्थितः।**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ससैन्यं रावणं समराङ्गणे समायातं श्रुत्वा रामेणापि युद्धाय शरादिकं सन्धानितम्। रामस्य हस्ते धर्म-निर्मित हस्तत्राणं तथा दृश्यते स्म यथा कल्पवृक्ष शाखायां कृष्ण सर्पाः संलग्नाः स्युः। रामेण अगस्त्य पुष्पमाला तुलसी तथा "**तुम्बै माता**" च धारिता। अगस्त्य पुष्पं चोलवंशीय राज्ञां चिह्नम् वर्तते। **(कम्बन् कविः चोल वंशमपि सूर्यवंशमेव मानयति** तुलसी वृक्षः विष्णुप्रियः **'तुम्बै पुष्पं' युद्ध सूचकं तत् राम-रावणौ उभौ अपि धृतवन्तौ यत् युद्ध सूचकं आसीत्)।**

एवं च लक्ष्मण सहितः विशाल सैन्ययुक्तः संहारकारी रूद्ररूपः रामः समरक्षेत्रे प्रकटितो जातः। प्रारब्धे युद्धे उभयोः पक्षयोः वीराणां हस्तपादाः छिन्नाः उदरं विदीर्णं ततश्च मांस मज्जाः निर्गताः। रावणः स्वकीय धनुष्टङ्कारेण युद्ध भूमिम् आकाशं च परिपूरितवान्। सत्यामेवं स्थितौ विभीषणः सुग्रीवः लक्ष्मणश्च कार्यविधिं विचिन्तयामासुः। कैलाशोत्पाटकः रावणः इमां पृथ्वीम् उत्पाटयितुं क्षमो वर्तते। रामश्च प्रलयकर्तुं क्षमो वर्तते। अत्र किं भविता इति न निश्चेतुं कोऽपि समर्थः।

एतन्मध्ये एव सुग्रीवः वज्रतुल्यमेकं पर्वतखण्डम् उत्पाट्य रावणोपरि प्रक्षिप्तवान्। रावणेन तत्र तत्खण्डं विखण्डितं तथा च सुग्रीवोपरि शराः प्रक्षिप्ताः येन स आहतः शिथिलो जातः। अत्रान्तरे सहसा हनुमान् समागत्य रावणं व्यज्ञापयत्। मया सह युद्धं कुरु। इति उक्त्वा पर्वतमेकम् उत्पाट्य रावणोपरि प्रक्षिप्तवान्। रावणेन तमपि विखण्डितम्। पुनश्च हनुमता पर्वतखण्डमेकं प्रक्षिप्तं येन रावण-हस्तस्य बलयाः पतिताः। रावणश्च एकं तीक्ष्णवाणं हनुमतः उपरि प्रक्षिप्तवान्। यः वाणः हनुमतः वक्षसि प्रविष्टः ततश्च क्रुद्धः रावणः-पुनः हनुमन्तं वाणेन बेधितवान्। हनुमान् मूर्च्छितप्रायः सञ्जातः। रावणः व्यङ्ग्य वचनेन उक्तवान् यत् वानरवधः मत्कृते अपयश-कारणं भवितुमर्हति अतएव इमं वानरं त्यजामि। इत्थं च लक्ष्मणः वानरान् निहतान् दृष्ट्वा युद्ध क्षेत्रे समागत्य वाणैः राक्षसान् तर्जित-वान्। राक्षसाः अपि लक्ष्मणोपरि वाणाः प्रक्षिप्तवन्तः। ये च लक्ष्मणेन विखण्डिताः कतिपय सैन्यानां मस्तकानि छिन्नानि, पादाः विखण्डिताः दन्ताः त्रोटिताः वक्षांसि विचूर्णितानि जातानि। अश्वाः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गजाः सुसज्जित रथाश्च पातिताः लक्ष्मणेन । लक्ष्मणस्य तेजस्वितां दृष्ट्वा राक्षसाः चकिताः अभूवन् ।

तदनन्तरं लक्ष्मणः रावणम् आहूतवान् यत् अधुना तव जीवनं दुःसाध्यं वर्त्तते । एवं कृत्वा लक्ष्मणः वाणान् रावणोपरि प्रक्षिप्तवान् । रावणेन ते तीक्ष्ण शराः खण्डिताः । एतन्मध्ये हनुमतः मूर्च्छा विनष्टा जाता । सहसा समुत्थाय गर्जनं कृतवान् । हे रावण, तव कालः समुपस्थितः मृत्युः समागता इति जानीहि । (तमिल क्षेत्रे हनुमन्तं **'शिरिय निरुवडि लघुश्रीचरणं'** **वैष्णव सन्त जनाः कथयन्ति** तथा गरुडं **गुरू श्रीचरणं कथयन्ति ।**

स लघु श्रीचरणः हनुमान् युद्धार्थं समुपस्थितः भूत्वा कथितवान् यत् अधुना तव भुजवलं साहसं च नाशं कृत्वा तव प्राणान् हरिष्यामि । हे रावण, गम्भीर पौरूषेण सह त्वमत्रागतः । तव शस्त्र चारण सामर्थ्यं सप्तलोक नाश शक्ति यत्नशीलताम् अद्वितीय साहसं भुजवलं च तव यशसा सह एकस्मिन्नेव प्रहारे सञ्चूर्णयिष्यमि । इति श्रुत्वा रावणोऽब्रवीत हे महिमावान् हनुमान् त्वां विहाय को मम समक्षमायातुं शक्तः । त्वं तु एकाकी एव समुपस्थितः । नान्यः तव सदृशः कोऽपि वीरः रामपक्षे विद्यते । अहं विंशति हस्तयुक्तः त्रिभुवन-विजयी रावणः । यस्य सैन्यान् वालुकणवत् गणयितुं न कोऽपि क्षमः । तस्य समक्षम् आगत्य युद्धार्थं त्वं माम् उद्वेजयसि । कथं विलम्बिष्यसे शीघ्रं ममोपरि मुष्टि प्रहारं कुरुष्व ।

एवं श्रुत्वा हनुमता चिन्तितं विस्मितं च यदि इयं वीरता अद्भुता । इत्थं विचिन्त्य त्वरितमेव रावणस्य वक्षसि मुष्टि प्रहारं चकार । येन प्रहारेण हारकवचादयः चूर्णिताः जाताः । कवचस्य सन्धयः विलुप्ताः प्रकाशमय रत्नानि नक्षत्र सदृशानि विकीर्णानि । रावणः कियत् कालपर्यन्तं मूर्च्छितो जातः । इदमवलोक्य गगन-चारिणः देवाः आनन्दमग्नाः सञ्जाताः । वानराश्च सानन्दं ननन्दुः ।

रावणश्च चेतनां प्राप्य तथा समुत्थितः यथा कोऽपि सिद्धः परकायं प्रवेशं कृत्वा पुनरागत्य पूर्व शरीरे प्रवेशं करोति तथैव रावणः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चेतनां प्राप्य निःश्वासं स्वसितवान्। हनुमन्तं प्रति अवादीत् यत् तव पार्श्वे शक्तिः वर्तते। त्वं तु त्रिलोक विजयिनं रावणं मूर्च्छितं कृतवान्। येन त्वया सप्तलोकाः विजिताः इत्यहं मन्ये। अधुना तव वक्षसि अहमेकं मुष्टिप्रहारं कुर्याम्। तदनन्तरमपि यदि त्वं न मरिष्यसि तर्हि त्वं चिरंजीवः स्थास्यसि न कोऽपि तव शत्रुः भविता। इत्थं श्रुत्वा मारुतिः रावण समक्षमागत्य उक्तवान् यत् मम प्रहारेण यदि त्वं जीवित एवासि तर्हि त्वं विजेता सञ्जातः। इदं मम वक्षः संताडय ऋणमुक्तो भव। रावणः हनुमतः वक्षसि तथा प्रहारं कृतवान् येन विचलितः हनुमान् मूर्च्छितः सन् पृथिव्यां पर्वततुल्यं पपात। इदं दृष्ट्वा सर्वेदेवाः वानरादयश्च विचलिताः वभूवुः। ते च वानराः विशालपर्वतानुत्थाप्य रावणोपरि प्रक्षिप्तवन्तः। तान् पर्वतान् रावणः स्वशरैः खण्डितवान्। युद्ध भूमौ रक्तस्रावाः सञ्जाताः। ततश्च शराघातेन नीलः विचलितः, अनिलः, पतितः, गवयः मृत्यु तुल्यः सञ्जातः, अङ्गदः आहतः जातः तथा एकेनैव वाणेन जाम्बवान् स्पन्दहीनः जातः। एवं दृष्ट्वा सहसा लक्ष्मणः तत्र समुपस्थितः।

असंख्यान् वीरान् स्वशरैः राक्षसान् आहतवान् तथा रावणस्य दश हस्तेभ्यः निर्गतान् शरान् विखण्डितवान्। रावणः लक्ष्मणस्य प्रशंसां कृतवान् उक्तवान् च रामं इन्द्रजितं मां च विहाय न कोऽपि तव सदृशः अन्यः वीरः दृश्यते। इति उक्त्वा रावणेन ब्रह्मास्त्रं लक्ष्मणोपरि प्रक्षिप्तं येन लक्ष्मणः समरभूमौ मूर्च्छितः सन् पतितः। एवं दृष्ट्वा वानर सैन्याः विक्षुब्धाः जाताः देव गणाश्च चिन्तिता बभूवुः। लक्ष्मणः ब्रह्मास्त्र-शक्त्या न भयभीतः न मृतः किन्तु श्रान्तः सञ्जातः। रावणः लक्ष्मणसमीपमागत्य स्वविंशति हस्तैः स्वर्णगिरि-समं लक्ष्मणमुत्थापयितुं प्रयतितवान्। किन्तु कैलाश पर्वतोत्थाने शक्ताः रावण हस्ताः लक्ष्मणमुत्थातुं न शक्ताः जाताः। मध्ये एव हनुमान् आगत्य लक्ष्मणम् उत्थाप्य शिविरे आनीतवान् यत्र लक्ष्मणः स्वस्थः जातः।

इमं समाचारं श्रीरामसमीपं गत्वा हनुमान् निवेदयामास। त्वरितमेव रामः तत्रोपस्थितवान् यत्र रावणः रथमारूह्य युद्धं कुर्वन् आसीत् तत्र रामः पादाभ्यामेव चलित्वा युद्धे संलग्नः आसीत्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तत्र हनुमान् रामं स्वस्कन्धोपरि विनिवेश्य युद्धाय प्रस्थितः। एवं सति देवाः मारुतिं प्रशंसितवन्तः आशीर्वादांश्च प्रददुः। रामः रावणोपरि सप्तशरान् पुनः पञ्चशरांश्च प्रक्षिप्तवान्। यान् रावणः स्वपञ्चशरैः विखण्डितवान् तथा च रामोपरि दशशरान् चिक्षेप। रामश्च तान् विखण्डितवान् हनुमान् तु युद्ध क्षेत्रे रामं स्कन्धोपरि स्थापयित्वा मनोवेगेन इतस्ततः भ्रमन्नासीत्। रावणस्य वाणाः राघवस्य स्कन्धे संलग्ना तथा च रामस्य वाणेन रावणस्य धनुः खण्डितम्। रावणस्य अन्यानपि शस्त्राणि खण्डितानि। रावणस्य रत्नजटितः मुकुटः राम वाणेन समुद्रे पतितः। स निःशस्त्रः सञ्जातः। रिक्त हस्तः कृष्णमुखः रावणः तत्रस्थितः। एतां स्थितिं दृष्ट्वा श्रीरामचन्द्रः विचारितवान् कथितवान् च यत् त्वं शस्त्र-रहितः असि। अतएव त्वं न मारण योग्यः। अतएव अधुनाऽपि यदि जीवितेच्छा वर्तते तर्हि वन्दिनीं सीतां परावर्त्तय। स्वानुजं विभीषणं देवतुल्यं मत्वा परिचर्यां कुरु। अन्यथा तव शिरांसि शीघ्रमेव छेत्स्यामि। यदि मम वचांसि न मानयतुमिच्छसि तर्हि युद्धं कृत्वैव म्रियस्व। युद्धे नाहं मरिष्यामि इति मनोमोदकं मा भक्षय।

अद्य गच्छ, मम कथनं विचारय। यदि युद्धमेवेच्छसि तर्हि श्वः त्वया पुनरागन्तव्यम्।

कुम्बकरुणन् वदैप् पडलम् (कुम्भकर्ण वध पटलम्)

अस्मिन् विस्तृते पटले कुम्भकर्ण वधकथा वर्णिता किन्तु अस्मिन् पटले कुम्भकर्णस्य महानिद्रा विषये यादृश वर्णनं दृश्यते न तथा वर्णनं कस्मिन्नपि रामायणे वर्तते। तथा च कुम्भकर्ण-रावण संवादस्तु अति महत्वपूर्णो वर्त्तते। यद्यपि रावण कुम्भकर्ण संवादः विभिन्न रामायणेषु वर्तते एव किन्तु कम्बन् कविना यथा संवादः परिकल्पितः यथा च कुम्भकर्णेन रावणस्य सीताहरण विषये भर्त्सना कृता यथा च रामस्य वीरता ईश्वरता च प्रतिपादिता। नैतादृशं विवरणं व्याख्यानं च विभिन्न रामायणेषु अवलोक्यते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनेनैव कारणेन इदं पटलं ३५५ **पद्यात्मकं विस्तृतं वर्तते ।** विगत चतुर्दश पटलेषु प्रथम युद्ध पटले वर्णितमस्ति यत् रावणः रामेण पराजितः शस्त्र रहितः सन्ध्या समये नतमस्तकः सन् नगरे समागतवान् । अथ च अस्मिन् पटले कविः वर्णयति यत् **महापण्डितः** दश **मस्तक-विंशति-हस्त युक्तः शङ्करेण प्रदत्त** चन्द्रहास **हस्तः रावणः अद्य रिक्त-हस्तः नतमस्तकः पदातिना एव नगरं प्रविष्टः ।** इदं दृष्ट्वा अनुभूयते यत् सूर्यास्तो जातः । रावणागमन मार्गे उभयोः पार्श्वयोः सुदीर्घ केशपाश युक्ताः समलंकृताः दिव्याङ्गना अञ्जलिवद्धाः आसन् । यासांमुपरि दृष्टिनिक्षेपणमपि अकृत्वा रावणः अन्तःपुरम् प्रविवेश । **अयं स एव रावणः येन नवग्रहाः कारागारे वन्दीकृताः, दशदिक्पालाः सेवकत्वेन निगृहीताः, समस्ताः इन्द्रपुर्याः अप्सरसः वशीकृताः । तेनैव रावणेन तासां स्तनद्वये दृष्टिः न प्रदत्ता ।**

एकस्मिन् स्वर्णपीठे उपविश्य दूतान् आहूतवान् त्वरितमेव सहस्रशः वलशालिनो दूताः समुपस्थिताः येषु मनोगति-पवनवेग-मरुत-महामेघ-सदृश महावलशालिनः राक्षस सेनापतयः आसन् । येभ्यः शीघ्रमेव अष्टासु दिशासु विशाल सैन्यैः सह प्रस्थानार्थम् आदिष्टः । एतस्मिन् मध्ये एव रावणस्य मातामहः माल्यवान् समागत्य रावण-शय्यां निकषा एकस्मिन् पीठे समुपविष्टवान् । तेनोक्तम् हे राजन् कथं भवान् चिन्तितोऽस्ति । किं जातम् कृपया कथयतु । रावणेनोक्तम् अपयशसा साकं पराजयः प्राप्तः । तत्र लक्ष्मणस्य पराक्रमः अद्भुतः आसीत् । रामः ममोपरि वाणान् प्रक्षिप्य मां पराजितवान् तथा च अपमानितं कृतवान् । रामस्य मुखे क्रोधस्य न किमपि चिह्नम् मया दृष्टम् । रामस्य वाणान् मेरु पर्वत भेदने आपातालं पृथ्वी भेदने वाणैराकाशाच्छादने समर्थः । एवंभूतः महावलशाली स काकुत्स्थः रामः सर्वथा प्रशंसनीयः नैवं विधः वीरः पूर्वं मया दृष्टः । रामस्य वाणः धनुषः निर्गत्य चतुर्मुख ब्रह्मा-सदृशः जायते । यदा सवाणः गच्छति तदा सहस्रमुख विष्णु-सदृशः सञ्जायते । यदा च शत्रूणामुपरि गच्छति तदा प्रलयकारी-रुद्र सदृशः दृश्यते । **इत्थं च राम शराः ब्रह्मा-विष्णु-महादेव-तुल्याः वर्त्तन्ते ।**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इति श्रुत्वा माल्यवान् अब्रवीत्। मयातु पूर्वमेवोक्तम् त्वं त्वकारणमेव मह्यम् चुक्रोध। त्वं तु स्वानुजस्य विभीषणस्याप्युपदेशं नाश्रृणोः। वार्तालापेऽस्मिन् समुपस्थितः महोदरो नाम राक्षसोऽब्रवीत्। माल्यवान् कथमेव गौरवहीन लघुवार्ता भाषसे। इयं तु संसारस्य रीतिरेव वर्तते यत् कदाचित् विजयी पराजितो जायते, कदाचित् च पराजितो विजयी भवति। यदि तत्कालं महाराजस्य कश्चित् पराजयो जातः तेन समग्र युद्धस्य परिणामो नाङ्कनीयः। यदि सीतां त्यक्ष्यति तदा भवतः (रावणस्य) यशोवलं क्षीयेत। यदि यशः क्षयमाप्नोति तर्हि प्राणैरेव किं फलम्? अतएव चिन्तां विहायाग्रिमकर्तव्यस्य कार्यक्रमो विधेयः। अत्र सर्वप्रथमं भवता स्वानुजस्य महावलशालिनः कुम्भकर्णस्योपेक्षा कथं विहिता? न स कदाप्युपेक्ष्यः। अतस्त्वरितमेव कुम्भकर्णमाहूय यथायोग्यं कार्यं कर्तुमाज्ञा प्रदेया।

रावणेन चिन्तितं यदिदं कथनं सर्वथा समुपयुक्तम्। दूतानाहूय कुम्भकर्णभवनं गत्वा चिरनिद्रितं तं जागरयितु प्रयतन्त। कुम्भकर्णस्य दीर्घनिःश्वासैः समागताः दूताः इतस्ततः पतिताः। ते चिन्तितवन्तः यत् कथमयं जागरिष्यति। ते सर्वे विविधास्त्रशस्त्रादिभिः तस्य शरीरे वक्षसि कपोले हस्तयोः पादयोश्च प्रहारितवन्तः। किन्तु न तेषा कोऽप्रि प्रभावो जातः। तदा ते तस्य शरीरोपरि अश्वान् गजांश्च धावितवन्तः न तेनापि कोऽपि परिणामो जातः। तदा ते रावणं पुरतः प्रत्यावर्त्य सर्वं निवेदितवन्तस्तथा जागरणस्योपायं पप्रच्छुः। रावणेनोक्तं सुदृढत्रिशूलेन परशुना च प्रहर्तव्यं तदा स जागरिष्यति। सहस्रशः राक्षसाः पुनरागत्य तथैव कृतवन्तः। तदा कुम्भकर्णः पार्श्वपरिवर्तनं कृत्वा जागृतवान्।

कुम्भकर्णस्य जागरणानन्तरं लोकाः दिक्पालाश्च प्रकल्पिताः जाताः। तेनोक्तं किमिदं कथं मां जागरितवन्तः? का स्थितिः? कः समाचारः? एतन्मध्ये एव सुदक्षाः स्वभावपरिचिताः कुम्भकर्णानुचराः तत्समक्षं मांस मदिरायुक्तबहुव्यञ्जनादिसहित भोज्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पदार्थानुपस्थापितवन्तः । एवं हि तेन कुम्भकर्णेन शतशः घटाः मदिराः पीताः अपरिमेयान्नादीनि भक्षितानि । सदा सः प्रकृतिस्थोऽभूत् । ततश्च रावणदूताः तस्याज्ञां प्रोक्तवन्तः । त्वरितमेवोत्थाय कुम्भकर्णः रावणं निकषा प्रस्थितो भूत्वा रावणस्य चन्द्रस्पर्शिनं गगनचुम्बिनं प्रासादं प्राप्तवान् ।

कुम्भकर्णस्तत्रागत्य साष्टाङ्गं रावणं प्रणामं कृतवान् । रावणश्चोत्थाय हृदयेन वक्षसा तमालिङ्ग्य स्नेहं प्रदर्शितवान् उभयोर्मिलनं तु विशालपर्वतद्वयमिलनसदृशं दृश्यतेस्म । रावणस्तं निजसमीपमुपवेशयामास । कुम्भकर्णः प्रोवाच कथमिदं युद्धं वर्प्रातितम् कस्मै ? हिताय एते प्रयत्नाः । रावण उवाच, द्वौ नरौ वानरसैन्यैः सह लङ्कां प्रविश्य परिव्याप्तौ । त्वं तत्र गत्वा तान्निहत्य तेषां भक्षणं कुरु । इदं श्रुत्वा कुम्भकर्णः दुःखेन विस्मयेन च प्रोवाच । किमनन्तपातिव्रत्यशालिन्याः सीतायाः कष्टं न दूरीभूतम् ? किं तव विश्वविश्रुतं यशः विलुप्तम् ? किमस्माकं विनाशकालः समुपस्थितः ? किं सीता देव्याः कृते एव युद्धो जायते ? किं त्वया पूर्वकथित मम वचनेन सीता न परित्यक्ता ? धन्या विधेः प्रवलता । पुनः कुम्भकर्णः प्रोक्तवान् । विशालां भूमिं खनित्वा गर्त-करणं सुकरम् परन्तु अजेयरामस्य जयः सीतायाः समालिङ्गनं चेदं द्वयमसम्भवम् । न त्वं जेष्यसि, पौलस्त्यवंशस्य यशांसि विलुप्तानि भविष्यन्ति तव हस्तेनैव । अनेन कर्मणा तु त्वमिन्द्राय राज्यं परावर्तयितुमुद्यतः स्वनाशार्थं स्वकुलनाशार्थं च समुद्यतः । देवांश्च मुक्तवान् । हे भ्रातः धर्मे नष्टे कस्त्वां रक्षिष्यति ? वयं त्वधुना पापे वंचनायां च दक्षा समभूवम ।

अतएव हे ममाग्रज, महाप्रतापशालिन्, कृपयाऽविलम्बमेव सीतां मुञ्चताम् । रामस्य शरणं यातु विभीषणं परावर्तयतु । अयमेवोद्धारस्य पन्थाः । अन्यश्चैकः पन्थाः यत् सर्वान् वलानेकदैव प्रेषयतु । खण्डशः प्रेषणं नैव वरम् । **यद्यपि तद् भविष्यति ।**

कुम्भकर्णस्य नीति-धर्मयुक्तस्पष्टवचनमाकर्ण्य रावणो ब्रूते । हे मम प्रिय अनुज, कुम्भकर्ण नैतदर्थं महताश्रमेण त्वां जागरयित्वा समाहूतवान् । अतीतस्तु अतीत एव । अधुना तस्य चिन्ता नैव विधेया ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सा चिन्ता तु कापुरुषलक्षणम्। अधुनातु तेन साकं युद्धं कर्तुमेवैकः श्रेयान् पन्थाः। अपमानितैरुपक्रोशमलीमसैः प्राणैः किं प्रयोजनम्? नरवानरसमक्षमात्मसमर्पणात् प्राणत्याग एव श्रेयान् प्रेयांश्च। त्वमुत्तिष्ठ युद्धार्थं शस्त्राणि सन्धेहि शीघ्रं प्रस्थानं कुरुष्व।

कुम्भकर्णः भ्रातुराज्ञामादाय युद्धार्थं प्रस्थिते सति निवेदितवानन्तिमवचनरूपेण। युद्धार्थं गच्छामि विजयीभूत्वा पराजितो भूत्वावा मम पुनरागमनं नैव निश्चितम्। इदं तु विधेर्विधानम्। किन्तु पराजयानन्तरमपि भवता सादरं सीता रामाय प्रदेया। इदं तपः सदृश कार्यम् अनुमीयते यत् रामानुज लक्ष्मण शराघातैरिन्द्रशत्रुरिन्द्रजिन्मेघनादोऽपि प्राणांस्त्यक्ष्यति। ततश्च भवता स्वेच्छया कार्यं करणीयम्। हे भ्रातः, आज्ञां देहि मां क्षमस्व। एवमुक्त्वा महावलशाली महाज्ञानी विवेकी कुम्भकर्णः द्वारमागतवान्।

विशाल सैन्यैः साकं कुम्भकर्णः युद्धस्थलमागतवान्। तस्य सैनिकाः "तोमर चक्र शूल वाण परशु मूसल हल दण्ड करवाल कोदण्ड" प्रभृति विविधाशेषास्त्रैः सुसज्जिताः आसन्।

श्रीरामचन्द्रः समागच्छन्तमेव कुम्भकर्णमवलोक्य विभीषणेन पृष्टं यदयं विशाल पर्वताकारः कोऽस्ति? विभीषणोऽब्रवीत् अयं रावणस्यानुजः ममाग्रजश्च महावलशाली कुम्भकर्णः। यमराजसदृशोऽयं तीक्ष्ण शूलधारी वर्तते। रावणतुल्यमेव वलशाली युगान्तशायी विद्यते। शूलमेकमस्य पार्श्वेऽस्ति यश्च विषपायिना रूद्रेण प्रदत्तमस्मै। अस्य कथनं यदा रावणेन न स्वीकृतं तदाऽयं मरणं ध्रुवमिति मत्वा भवत्समीपं युद्धार्थमागतोऽस्ति। इति श्रुत्वा सूर्यपुत्रः सुग्रीवोऽवदत्। यद्ययमस्माभिः सह सन्ध्यर्थं शरणाऽऽगतोऽस्ति तर्हि तु सर्वथा वरम्। वयमनेन सह मिलित्वैव सर्वान् कार्यजातान् करिष्यामः।

श्रीरामेणोक्तं कस्तस्य समीपं गत्वा वार्तां करिष्यति। विभीषणः प्रोक्तवान् अहमेव गत्वा तस्य मनोभावं विचारं च ज्ञास्यामि। रामेणाज्ञप्तम् एवमेव विधेहि विभीषणस्तत्रगत्वा तं प्रणम्योपविष्टवान्। कुम्भकर्णः स्नेहेन वात्सल्यपूर्णभावेन च अश्रुजलान

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रवाहयन् उक्तवान् यत् अस्सासु त्वमेकाकी एवात्रगत्य उद्धृतोजातः। किं कार्यं विद्यतेऽधुना ? त्वं तु ज्ञानी वर्तसे, आनन्दं प्राप्नोसि। कथं यममुखे गम्यमानं मां निकषा समागतः ? किममृतं विहाय विषं पास्यसि। मम कुलगौरवस्तु विनष्टः केवलं त्वयैव पौलस्त्यस्य प्रतिष्ठा क्षीयमाणाऽपि रक्षिता।

विभीषणेनोक्तम्, सर्वेश्वरः सर्वप्रभुसत्तावान् रामः युद्धार्थं समुपस्थितः तस्यानुजो वीरलक्ष्मणोऽपि सहैवास्ति विशाल वानर-सैन्याश्चात्र विराजन्ते। फलतः राक्षसाः विनाशं प्राप्स्यन्त्येव। अतएव मां प्रति दयालुः रामः भवन्तं प्रत्यपि दयालुतां प्रदर्शयिष्यति। यदि भवन्तोऽपि तस्य शरणापन्नाः स्युः। भ्रातः, दुष्कर्मकर्त्रा साकं दुष्कर्म करणं नैव कदापि श्रेयः। भवान् तु विवेकी अस्ति। श्रीराम-शरणागतो भवान् स्वदीर्घ निद्रयाऽपि मुक्ति प्राप्स्यति। भवान् चिरंजीवो भूत्वा सुदीर्घ कालं राज्यभोग्यं करिष्यति अहं मन्ये यद्भवान् न कदापि नीच कार्याणि प्रवृतः स्यात्।

इति सर्वमाकर्ण्य कुम्भकर्णेनोक्तं यद् त्वत्कृते रामशरणमेव वरम्। मत्कृते तु निकृष्टमरणमेव श्रेयः यशस्करं च। यद्यविवेकी राजा सुमार्गे गन्तुं नैवोद्यतस्तदा युद्धे सर्वप्रथमं मरण वरणमेव सुकरम्। हे ममानुज लङ्कासम्पत्तिं शाश्वतं मत्वा भ्रातृ शत्रु शरणमागत्य तस्य स्तुतिकरणात् मरणं श्रेयः।

अहं तु युद्धे सुग्रीवाङ्गदहनुमत्प्रभृतिवानरकुलश्रेष्ठं पराजित्य रामलक्ष्मणाभ्यां साकं युद्धं कृत्वा जयं प्राप्स्यामि। यः कश्चिदपि मम समक्षं युद्धे समागमिष्यति तमहं जीवन्तं नैव त्यक्ष्यामि। हे विभीषण, त्वं गच्छ यदि रामशस्त्रेण मम मृत्युर्भविष्यति तर्हित्वं वेदोक्तरीत्या मम श्राद्धक्रियादिकं करिष्यसि, मां नरकादुद्धरिष्यसि इति मेऽनुरोधः। एवमुक्त्वा कुम्भकर्णः पुनरपि विभीषणमुत्थाप्य स्ववक्षसा चालिङ्ग्य रुदन् संप्रेषयामास। विभीषणोऽपि तस्य पादौ निपत्य प्रणम्य रुदन् परावर्तितवान्। कुम्भकर्णेन चिन्तितं वंचकं मां परित्यज्य प्रौढविचारवान् विभीषणः गतः। स तु धन्यो जातः। वयं च पतिताः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विभीषणो रामसमीपमागत्योक्तवान् कुम्भकर्णः यद्यपि परमज्ञानी विवेकी विद्यते किन्तु पापिनं दुराचारिणमपि स्वाग्रजं रावणं परित्यक्तुं नैवोद्यतो विद्यते । अतएव युद्धमवश्यम्भावि ।

एतन्मध्ये एव राक्षसैन्याः चतुर्दिक्षु परिवेष्टिताः बभूवुः । तानवलोक्य वानराः प्रस्तरखण्डान् चिक्षेपुः येन कियन्तो राक्षसाः आहताः निहताश्च । राक्षसाश्च बाणान् प्रक्षिप्तवन्तः । इत्थं च राक्षसवानरसैन्ययोर्मध्ये तुमुलं युद्धमारब्धम् । भीषण युद्धमारब्धम् । भीषणं युद्धमवलोक्य सेनापतिः नीलः मध्ये कूदितवान् हस्ते चैकमुन्नतं पर्वतमुत्थाय भ्रामयन् प्रक्षिप्तवान् । कुम्भकर्णस्तं संचूर्णयामास । ततश्च कुम्भकर्ण-नीलयोर्मध्ये हस्ताभ्यां युद्धमभवत् ।

एतन्मध्ये एव अङ्गदः समुद्रान्तर्गतमेकं महान्तं पर्वतमुत्थाप्य कुम्भकर्णोपरि प्रक्षिप्तवान् । कुम्भकर्णस्तं निवारितवान् । कुम्भकर्णस्तु वज्रदण्डमेकमादाय प्रक्षिप्तवान् यमङ्गदो हस्तेन धृत्वा कुम्भकर्णोपर्येव पातितवान् । इत्थं हि अङ्गदकुम्भकर्णयोर्मध्ये घोरतरं युद्धमभूत् । उभयोर्मध्ये व्यङ्ग्यवार्तापि जाता । अङ्गदेनोक्तम् मम पिता बाली स्वपुच्छे तव भ्रातरं रावणं बद्ध्वा भ्रामयामास । कुम्भकर्णेनाप्युक्तं यत् छलेन स्व पितृहन्तारं रामं निकषा शरणापन्नस्त्वं न लज्जसे ?

यदा कुम्भकर्णाङ्गदयोर्मध्ये युद्धं समभूत् तदैव मारूतिर्हनूमान् सगर्वेणोक्तवान् पर्वतखण्डमिमं रोधस्व । कुम्भकर्णस्त्वरितमेव पर्वतशिलान् खण्डशः विचूर्णितवान् । इत्थं च कुम्भकर्णः युद्धे संलग्नः सञ्जातः । वानरसैन्याः तस्योपरि प्रहारं कृतवन्तः किन्तु अविश्रान्तः कुम्भकर्णः सर्वम् आक्रमणं शीघ्रमेव निवारितवान् ।

ततश्च युद्धकेशरी लक्ष्मणः समागत्य युद्धमारभत् । यदा लक्ष्मणः स्वकीय धनुष्टङ्कारं चकार । तदैव राक्षसानां पत्न्यः स्वकीय सौभाग्यचिह्नानि पातयामासुः । **(अत्र कवेः चातुर्यं यत् लक्ष्मणस्य धनुष्टङ्कारं श्रुत्वैव राक्षसपत्न्यः निश्चयं ज्ञातवत्यः यदस्माकंसौभाग्यं विनष्टमेव ।)** लक्ष्मणकुम्भकर्णयोर्मध्ये तुमुलयुद्धमभवत् । येन असंख्याः अश्वाः गजाः रथाः सैन्याश्च आहताः हताश्च येषां रक्तप्रवाहेन युद्धभूमिः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पङ्किला जाताः रक्तधाराश्च प्रवाहिताः। तत्र केषाञ्चित् कराः केषाञ्चित् शिरांशि केषाञ्चित् पादाः छिन्नाः भिन्नाश्च बभूवुः।

पौलस्त्यः कुम्भकर्णः समरे लक्ष्मणस्यानुपम शौर्यंदृष्ट्वा राक्षसानां वधं च दृष्ट्वा रथोपरि आरुह्य विकरालयुद्धं प्रारभत्। यत्र कुम्भकर्णः रथे आस्ते तत्रैव लक्ष्मणः युद्धभूमौ पादाभ्यामेव चलितः सन् युद्धं कुर्वन्नासीत्। इदं दृष्ट्वा हनुमान् मध्ये समागत्य लक्ष्मणं स्वस्कन्धे विनिवेश्य युद्धे कारयितुं तत्परोऽभूत्। तदा कुम्भकर्णेनोक्तम् त्वं रामस्यानुजः अहं तु रावणस्यानुजः अतएव आवयोर्युद्धं द्रष्टुं देवगणाः आकाशे समागताः सन्ति। हे लक्ष्मण, येन हस्तेन मम भगिन्या नासिकाच्छिन्ना स हस्तः मयाधुनाच्छिद्यते। इत्युक्त्वा विविधान्यस्त्राणि प्रक्षिप्तानि यानि लक्ष्मणेन खण्डितानि। तथा च कुम्भकर्णस्य रथमपि लक्ष्मणः विखण्डितवान्। कुम्भकर्णः रथविहीनोभूत्वा भूमौ समागतवान्। ततः लक्ष्मणोऽपि हनुमतः स्कन्धादवतीर्य युद्धमारभत।

एतन्मध्ये सूर्यपुत्रः सुग्रीवः समागत्य विशालं पर्वतमेकमुत्थाप्य कुम्भकर्णोपरि प्रक्षिप्तवान्। कुम्भकर्णोऽपि तस्मादप्यधिकं विशालं पर्वतमेकमुत्थाप्य सुग्रीवोपरि प्रक्षिप्तवान्। इदं दृष्ट्वा सहसा हनुमान् समागत्य तं पर्वतं धृत्वा त्रोटितवान् दूरे प्रक्षिप्तवान् च। अतएव गर्जनं तथैव जातं यथा मिथिलायां सीतास्वयंवरे धनुर्भङ्गसमये प्रलयकारी ध्वनिः सञ्जातः। ततश्च कुम्भकर्णः सुग्रीवं हस्ताभ्यां धृतवान् सुग्रीवश्च तं धृतवान् एवं च उभयोर्मध्ये तुमुल युद्धं (कुस्ती) सञ्जातम् एवं च सुग्रीवं बद्ध्वा कुम्भकर्णः तं लङ्कां नेतुं प्रचलत्। इमां घटनां वानराः समागत्य रामचन्द्रं निवेदितवन्तः। शीघ्रमेव रामः धनुर्बाणान् गृहीत्वा लङ्काद्वारमागतवान्।

रामचन्द्रं दृष्ट्वा कुम्भकर्णः विहस्य अवादीत्। त्वं मां निर्बलं वालिनं कबन्धं च मत्वा सुग्रीवं विमोचयितुं (विमोक्तुं) समुपस्थितोऽसि। पश्य मे बलमैश्वर्यम्। रामेणोक्तम् यदि अहं तव स्कन्धं न छेत्स्यामि यस्मिन् स्कन्धे त्वं मम मित्रं सुग्रीवमुत्थाप्य नयसि तर्हि अहं पुनः कोदण्डं धनुः न गृहीष्यामि। एवमुक्त्वा रामः स्वबाणैः कुम्भकर्णं मूर्च्छितवान्। मूर्च्छितं कुम्भकर्णं दृष्ट्वा सुग्रीवः कुम्भकर्णस्य नासिकां कर्णं च विददार।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इत्थं च रामचन्द्रः सुग्रीवं संरक्षितवान्। ततश्च पुनः वाणैः कुम्भकर्णस्य मस्तकं चिच्छेद। येन तस्य मुखात् रक्तधारा प्रवाहिता। पुनः चेतनां प्राप्य वाणैः शीर्ण विशीर्णः कुम्भकर्णः पुनः युद्धार्थमुद्यतो जातः। तदा रामेणोक्तम् हे कुम्भकर्ण तव आयुः परिक्षीणम् त्वं मृत्युमुखे गन्तासि। यदि मनसि किञ्चित् वर्तते तर्हि कथय। कुम्भकर्णेनोक्तम् नाहं शूर्पणखा या छिन्न कर्णनासिकाऽपि जीविता वर्तते। नाहं जीवितुमिच्छामि ममेच्छा तु इयमेव आसीत् यत् युद्धभूमौ युवाम् भ्रातरौ निहत्य स्वाग्रजाय रावणाय आनन्दं प्रदेयम्। एवमुक्त्वा पुनः स शिवप्रदत्तं त्रिशूलमादाय रामोपरि प्रहारं कृतवान्। रामः च तं त्रिशूलं खण्डितवान् किन्तु तस्याभेद्यं कवचं खण्डितुं नाशक्नोत्। ततश्च कुम्भकर्णस्य हस्तौ खण्डितवान् पादौ च खण्डितवान् तांश्च उत्थाप्य समुद्रे प्रक्षिप्तवान्।

एवं सति कुम्भकर्णः प्रोवाच हे रामचन्द्र इयमेवान्ते मम याचना यत् ममानुजं शरणागतं विभीषणं नीतिज्ञं संरक्षस्व। तथा च मम ग्रीवायुक्तं मस्तकं छित्वा कृष्णसागरे प्रक्षेपय। यतोहि तव पूर्वजः महाराजः शिविः स्व शरीरमांसखण्डं दत्वा एकस्य कपोतस्य रक्षां चकार।

एवं श्रुत्वा रामचन्द्रेण तथैव कृतम्। यथा कुम्भकर्णेन प्रार्थितम्। सर्वमिदमवलोक्य वेदज्ञाः ब्राह्मणाः ऋषयो देवाश्च भयमुक्ताः जाताः। अप्सरसः मधुरगानेन नृत्यन्ति स्म। राक्षसाश्च कुम्भकर्ण-विनाश सूचनां प्रदातुं रावणं निकषा पलायितवन्तः। **(इत्थं चातिविस्तृतमिदं कुम्भकर्णबधपटलम् संक्षिप्त रूपेण मुख्य घटना-वर्णनयुक्तम् परिपूर्णम्।)**

मयाशनहप् पडलम् (मायाजनक पटलम्)

विगत विस्तृते पटले कुम्भकर्णस्य महतः चरित्रस्य वर्णनं तुमुलयुद्धवर्णनं तस्य वधवर्णनं च वर्णितम् इति सर्वं रावणेन श्रुतम्। सत्यामप्येवं कारुणिक घटनायां रावणः सीतां प्रति आकृष्टः सन् नीचता पूर्णं क्रूरमार्गं मायाजालं रचितवान्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'महोदर' नामकं राक्षसं पृष्टवान्। अधुना सीता प्राप्तेः कः उपायः। महोदरेणोक्तम् एकः सर्वथा सफलः समुपायः वर्तते। 'मरुत्' नामकः मम सहयोगी मायावी राक्षसः सर्वथा कुशलः वर्त्तते। स उवकीय मायां विरचय्य महाराज जनकस्य रूपं धृत्वा सीता-समीपमागत्य तस्यै आदेशं दास्यति यत् त्वम् रावणं स्वीकुरुष्व तस्य आदेशं प्राप्य निश्चितरूपेण भवन्तं स्वीकरिष्यति सीतेति मन्ये।

इदं श्रुत्वा रावणः महोदरं वक्षसा आलिङ्ग्य तथैव कर्तुम् आदिष्टवान्। महोदरश्च ततः प्रस्थितवान्। रावणश्च सीतां व्यथयितुं दृष्टि-निक्षेपणं कृतवान्। स अप्सरोभिः सहितः अशोक-वाटिकामागतवान् यत्र सीता स्थिता आसीत्। सकल राजचिह्न-युक्तः रावणः अब्रवीत्। हे सुन्दरि सीते त्वम् कदा ममोपरि दयां करिष्यसि। मां ऋतवः पुष्पाणि कोकिल-भ्रमर गुञ्जनानि कूजनानि च व्यथयन्ति। कामवाणेन पीडितोऽहं तव शरण-मागतोऽस्मि्। यद्यपि मया ज्ञायते यत् विष सदृशं त्वाम् अमृतं मत्वा आनीतवान् अस्मि। मम मनः प्रतिक्षणं क्षीयते तथापि त्वां विस्मृत्य प्राणान् त्यजेम इति न जायते। यतोहि मरणादहं विभेमि। अतएव हे सीते, अहं तव अक्षय निधिः अस्मि **(पद्येऽस्मिन् रावणः आन्तरिक-सदभावनां-वाह्य दुर्गुणानां च स्पष्टं सङ्केतं कृतवान्।)**

पुनश्च रावणेनोक्तम् अत्रत्याः सर्वा अप्सरसः स्त्रियश्च तवैव रूपे समाहिताः एकीभूताः सर्वाणि नामानि तव नाम्नि समाविष्टानि। मम सर्वाणि विंशति नेत्राणि त्वामेव पश्यन्ति। कामदेवस्य पञ्चवाणाः असंख्य वाणरूपे सञ्जाताः। सर्वे देवाः सर्वे दानवाः सर्वे वीराश्च रावणात् विभ्यति। अभिलाष, चिन्ता, स्मृति, उद्वेग, गुण, कथन प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता, मरणं चेति विरहस्य दशावस्थाः मत्कृते असंख्य सहस्र समवेताः अभूवन्। एवमुक्त्वा रावणः समुत्थाय दशाभिः मस्तकैः तां सीतां प्रणेतुं समुद्यतः। तदा सीता तृणमेकं गृहीत्वा अग्रे तं संस्थाप्य रावणाय कथितुमारभत। **(अत्र बाल्मीकिना सुन्दरकाण्डे लिखितं तृणमन्तरतः कृत्वा तमुवाच पतिव्रता तथा च "तृणधरि ओट कहत वैदेही" इति तुलसीदासेनापि मानसे कथितम्।)**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इदं तृणमन्तरतः कथनं पूर्व शास्त्रीय परम्परानुरूपं विद्यते । हे रावण, तवेयं कामवासना सर्वथा विपरीता विनाशकारिकाचास्ति । तव एते बन्धु बान्धवाः पुत्रादयश्च निहताः किन्तु तव नैव जातम् । यदि त्वम् इत्थंभूतः महान् विजयी वर्त्तसे तर्हि रामेण साकंयुद्धं कृत्वा प्रथमं पराजयस्व । अहं तु केवलं रामदर्शनस्याशया विहीना जीविता अस्मि । सीतायाः एवं वचनं रावणः परिहासस्वरेण प्रोक्तवान् । अस्तु, रामबधानन्तरं त्वं मां स्वीकरिष्यसि ।

एतन्मध्ये एव महोदरः 'मरुत्' नामकं राक्षसं मायारूपिणम् जनकं कृत्वा सीतासमीपमानीतवान् । स मायारूपी जनकः तत्रागत्य सीतां प्रति अवादीत् । हे सीते, त्वं रावणं स्वीकुरु । सीता इदं श्रुत्वा दृष्ट्वा च स्तब्धा सञ्जाता । सा न किमपि ज्ञातुमशक्नोत् यद इयं का घटना । सा च विचित्रां स्थितिं प्राप्तवती । सीता प्रोक्तवती हे पितः, नित्यकर्मानुष्ठाने संलग्नः भवान् कथमत्रागतः । भवान् तु इतः पूर्वं नागतवान् आसीत् । अहमपि स्वमातृभूमिं जनकपुरीं नैव गतास्मि । अधुना भवान् कारावद्धां मां द्रष्टुं कथमागतवान् इति नाहं जाने । इत्थं च सा निश्चितवती यत् अयं रावणः केनाऽपिरूपेण जनकमपि छलेन हृत्वा अत्रानीतवान् । अथ च भरतं शत्रुघ्नमपि आनयिष्यति । न जाने किं भविता । एतन्मध्ये राक्षसाः अब्रुवन् हे हंसगामिनि सीते, तुभ्यं महत् कष्टं प्रदत्तमस्माभिः । अधुना लङ्का राज्यं स्वीकृत्य अस्मान् क्षमस्व । यदि तव स्वीकृतिर्भविष्यति तर्हि साक्षात् लोक सर्जकः मम प्रपितामहः ब्रह्मा समागत्य त्वां निवेदयिष्यति ।

एतदनन्तरं कश्चिदागत्य रावणस्य कर्ण समीपं गत्वा कथितवान् यत् तव भ्राता कुम्भकर्णः रामेण हतः । इति श्रुत्वा रावणः महान् शोकितो भूत्वा तं भ्रातरं प्रति विललाप । यः भ्राता कदापि रावणात् पृथक् नाभूत् । स च चिन्तितवान् यत् यस्य कुम्भकर्णस्य शरीरं शिव-त्रिशूलेन विष्णुचक्रेण इन्द्रवज्रेणापि अभेद्यमासीत् तत् शरीरं रामेण छिन्न भिन्नं कृतम् इति किं जातम् । एवं स सर्वां पूर्व घटनां स्मृत्वा चीत्कारं कृतवान् येन तस्य **"रावण" इति शब्दः "रावयति पीडयति भीषयते जनान यः स रावणः" सार्थकः बभूव ।**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ततश्च मायारूपधारी जनकोऽब्रवीत् । त्वं रावणं स्वीकुरू सर्वेषां कष्ट निवारणं भवेत् । इत्थं श्रुत्वा सीता निश्चितवती न मम पिता जनकः । अपितु काचित् रावणस्य राक्षसी माया । वार्तालापमध्ये एव मायारूपी जनकः विलुप्तः । महोदरेणोक्तं हे राजन् येन रामेण वानर सैन्येन च एतावान् उपद्रवः कृतः तं प्रथमं विजयस्व तदनन्तरं सीता स्वयं तवाधीना भविष्यति । ततश्च तां दुःखिनीं सीतां त्रिजटा या सर्वदा सीतायाः रक्षां कुर्वन्ती आसीत् । सा अब्रवीत् । यत् 'मरुत्'-नामकः राक्षसः तव पितृरूपं धृत्वा समागतवान् आसीत् । इदं सर्वं मायाजालम् । त्वं मा भयं कुरु सर्वं पूर्ववदेव वर्त्तते । अधुना राम-रावणयोर्युद्धं शीघ्रमेव भविष्यति । यतोहि रामेण कुम्भकर्णः निहतः । इति ज्ञात्वा सीता शान्ता स्वस्था च संजाता ।

अदिकायं वदैप् पडलम् (अतिकाय बध पटलम्)

अस्मिन् विस्तृते पटले रावणस्य अन्यतमस्य वीरपुत्रस्य अतिकायस्य अद्‌भुता वीरगाथा युद्ध कौशल वर्णनम । अन्ते तस्य वध-वर्णनं च सविस्तरं सुदीर्घं च विद्यते । कम्बन् कविः स्वकीय-रचनाशैली क्रमे इदं पटलमपि तथैव लिखितवान् यथा कुम्भकर्ण बध-पटलम् वर्णितवान् । सर्वत्र तुमुल युद्धस्य विविध वर्णनं तथा वर्तते येन तेषां संख्यानां विवरणं नैव सम्भवम् न च सर्वथा विश्वसनीयं च । परन्तु कविकल्पना काव्य रचना शैली विभिन्नरस समावेश-शैली च सर्वथा महनीया वर्तते नात्र कश्चन सन्देहः ।

कुम्भकर्ण वध श्रवणानन्तरं रावणस्य क्रोधः पराकाष्ठां प्राप्तः । सोऽब्रवीत्, हे राक्षसाः यूयं पलायध्वम् । व्यर्थमेव निजबलस्य प्रलापं कुरुथ । यूयं कथितवन्तः यत् ससैन्यं राम लक्ष्मणं धराशायिनं कृत्वा वयमागमिष्यामः तत्तु नैव जातम् किन्तु मम प्राणप्रियं भ्रातरमपि यूयं रक्षितुं नैव समर्थाः अभूवन् । अहं तु युद्धम् अवश्यमेव करिष्यामि तत्र निश्चितं जेष्यामि च । किन्तु ते एव मया साकं प्रचलन्तु ये मृत्यु वरणं कर्तुं समुद्यताः सन्ति । इति निश्चित्यैव ते प्रचलन्तु । यतः युद्धे मरणं निश्चितम् न ततः पलायनं करिष्यामि । ये नैवं भूताः सन्ति ते मम सम्मुखात् पलायध्वम् । नाहं तान् द्रष्टुमिच्छामि ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ततः **अतिकाय** नामकः राक्षसः समुपस्थितः। यश्च रावणस्य अन्यतमः ज्येष्ठः पुत्रः आसीत् इति रामायणे वर्तते। किन्तु स 'अतिकायः' न मन्दोदरी पुत्रः किन्तु कस्याः अपि दास्याः पुत्रः अन्य पत्न्याः वा पुत्रः आसीत्। स महान् वलशाली आसीत्। रावणः तं केनापि कारणेन पूर्वं तिरश्चकार न स्मृतवान् नाहूतवान्। अधुना स अतिकायः स्व पितुः दुर्दशां श्रुत्वा वंशनाशं च विज्ञाय स्वयमेव समागतवान्।

अतिकायोऽब्रवीत् हे महानायक मम पितः नाहम् अक्षयकुमारः न चाहं कापुरुषः विभीषणः न चाहं खरदूषणः त्रिशिरा, न चाहं कुम्भकर्णः। अहं तु वानर सैन्यान् हनिष्यामि वीरभावेन युद्धं करिष्यामि भवतः भ्रातुः प्राणघातकं लक्ष्मणं निहत्य तस्य भ्रातरं रामचन्द्रं कठोरदुःखेन अभिभूतं कृत्वा तं वद्ध्वा भवन्तं निकषा आनयिष्यामि।

यदि नैवं करिष्यामि तर्हि नाहं तव पुत्र कथन योग्यः। यदि भवतः आज्ञा भवेत् तर्हि एकाकी एव गन्तुं शक्नोमि। अथ च सैन्य-सागरैः सह अपि गन्तुं शक्नोमि। भवतामाज्ञायाः प्रतीक्षा वर्तते। सुप्रसन्नो रावणोऽब्रवीत् धन्यस्त्वं साधु त्वया कथितम्। यदि त्वं लक्ष्मणं निहत्य आनयिष्यसि तर्हि अग्रिम दिने एव रामं निहत्य स्व-प्रतिज्ञां पूरयिष्यामि। रावणेन आज्ञा प्रदत्ता, विजयस्व गच्छ। अतिकायः रावणं प्रणम्य धनुर्वाणयुक्तः स्वर्णकवच-युक्तः युद्धार्थं प्रस्थितः। यत्र युद्धभूमौ रामचन्द्रः राक्षसान् निहत्य कुम्भकर्णं च विनाश्य प्रसन्नतया भ्रमन्नासीत्। तत्र अतिकायः समागतः। स्वकीय-सैन्य विफलतया अस्य व्यस्तः सञ्जातः। तेन दृष्टं यत् नायं विशाल-पर्वतः न च दिग्गजः न च सागरोपमः कश्चित् पदार्थः। किन्तु मम पितृ तुल्यस्य कुम्भकर्णस्य शरीरमस्ति। यत् शरीरं युद्धभूमौ निपतितमासीत्। क्रुद्धः सन् स भीषणः अतिकायः 'महिष' नामकं राक्षसं ब्रूते, गच्छ लक्ष्मणं ब्रूहि अहमद्य शीघ्रमेव तस्य शिरः छिन्नं कृत्वा तं स्वपितुः समीपं नेष्यामि।

नायं मम प्रतिकूल-विचारः अयं च राजधर्मः मम स्वभावश्च। यतोहि मम पितुः अयं च राजधर्मः मम स्वभावश्च। यतोहि मम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पितुः अनुजस्य नाशकस्य रामस्य अनुजं लक्ष्मणं हत्वा स्व पितुः ऋणात् मुक्तो भविष्यमि। अतएव त्वं स्ववाक्चातुर्येण लक्ष्मणम् आनयस्व। महिषः लक्ष्मणसमीपमागतः सर्वे वानराः तं प्रहर्तुमुद्यताः बभूवुः। ततः केनापि कथितुं नायं युद्धार्थं समागतवान् अयं हि दूतः। दूतस्य वचनं श्रोतव्यम्। अयं च शस्त्र रहितः अतएव तदुपरि प्रहारः नोचितः। तदा रामेणोक्तम् त्वं कोऽसि किमिच्छसि कथमागतोऽसि। महिषेणोक्तम् महाबलशाली अतिकायः भवत् वैरं साधयितुं भवदनुजं लक्ष्मणमन्वेषयति। तं लक्ष्मणं दर्शयतु। यतोहि त्वया रावणस्यानुजः कुम्भकर्णः हतः। अतएव अतिकायेनापि सोऽनुजः हन्तव्यः। अतएव तेन त्वं न मृग्यसे। ततश्च श्रीरामः लक्ष्मणम् आलिङ्ग्य गमनार्थमादिदेश। ततश्च त्वरितमेव विभीषणेनोक्तम् अस्माभिः सर्वैः लक्ष्मणेन साकं गन्तव्यं तदा लक्ष्मणः युध्येत। यतोहि सिंह-सदृशः महाक्रूरः निर्भयः अतिकायः दीर्घतपस्यां कृत्वा ब्रह्मणो वरं प्राप्तवान्, यत् नास्य बलम् कदापि क्षयं गमिष्यति। अयं विशाल-क्षीरसागरमन्थने समर्थः। एवंभूतः स भगवन्तं विष्णुमपि संतोष्य वरमाप्तवान् यत् यद्यहं मरिष्ये तर्हि आकाशस्य उपरि एव।

विभीषणेन यदा इदमुक्तं तदा रामः प्रोवाच। पश्य, विभीषण! यदि अष्ट-कोटिं रावणाः सर्वे ब्रह्माण्ड वासिनः साक्षात् त्रिमूर्त्तयः ब्रह्म विष्णु महेश्वराः अपि युद्धे समागमिष्यन्ति तदापि त्वं लक्ष्मणस्य वीरतां द्रक्ष्यसि। यदि ममानुजः क्रुध्येत तदा त्रिलोकाः कम्पायमानाः भविष्यन्ति। न कोऽपि अस्याग्रे स्थातुं शक्ष्यति। अस्तु त्वं लक्ष्मणेन सह गच्छ यदा लक्ष्मण बाणेन अतिकायस्य छिन्नं मस्तकं भूमौ पतिष्यति तथा च काक कंकाल वेतालाः तं मस्तकं भक्षयिष्यन्ति तदा त्वं द्रक्ष्यसि। केवलं ब्रह्म विष्णु महेश्वराः एव लक्ष्मणं जेतुं शक्ष्यन्ति नान्ये। अयं हि सर्वान् नाशयिष्यति।

लक्ष्मणः रामचन्द्रं त्रिःपरिक्रम्य युद्धस्थले समागतवान्। यत्र पर्वतकारः अतिकायः समुपस्थितः आसीत्। विभीषणश्च लक्ष्मणेन साकं गतवान्। तत्र वानराः अश्वान् गजांश्च धृत्वा तान् छिन्न-भिन्नान् कृतवन्तः। तथा च पर्वतान् वृक्षांश्च समुत्पाटयामासुः। इतश्च राक्षससैनिकाः वानरस्योग्रसैन्यान् अशान्तं कृतवान्। क्रमशः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वानरसैन्याः क्षीयमाणाः दृश्यन्ते स्म। तदा लक्ष्मणोऽब्रवीत् मा भैषीः स्व शौर्येण शत्रून् पातय। इत्थं च लक्ष्मणः राक्षस सैन्यानाम् अस्त्र शस्त्रान् खण्डितवान्। शास्त्रे चोक्तं यत्र अष्ट चत्वारिंशत् (४८) सहस्र संख्याकाः वीराः म्रियन्ते तत्रैकः कबन्धः उत्थाय नृत्यति। यदीदं सत्यं तर्हि अत्र अस्मिन् युद्धे असंख्य कबन्धाः नृत्यन्ति स्म। अयं हि लक्ष्मण पराक्रमस्य परिणामः।

इदं तु सर्वथा स्पष्टं तथ्यं च यत् रावणः सीतामानीय यमराजं निमन्त्रितवान्। फलतः तस्य सर्वे पुत्र पौत्रादयः भ्रातरः सैनिकाश्च लक्ष्मण वाणेन निहताः। ततश्च दारुक नामकः राक्षसः मेरु-पर्वताकारः अग्निसदृशः आक्रान्तकारी युद्धभूमौ समागतः। येन तत्रत्याः लक्ष्मणसैन्याः विक्षुब्धाः। लक्ष्मण समीपं च समागतवन्तः। लक्ष्मणः स्वतीक्ष्णशरैः दारूणं तं दारूकं शिरः विखण्डितवान्। राक्षस मध्ये हाहाकारः सञ्जातः। ततः काल कुलिस, कालशङ्ख, माली मरुत् नामानं पञ्च शूलान् परशुं च भ्रामयन् भिन्दिपालः राक्षसः समुपस्थितः। स चानेक शस्त्राणि प्रक्षिप्तवान् तान् लक्ष्मणः विखण्डितवान्। ततश्च स्वयं कतिपय सहस्र मत्त गजैः सह अतिकायस्य सैन्याः वानर सैन्यान् स्वपरिधौ आनयामासुः। ये च वानर सैन्यान् संक्षुब्धवन्तः। एतन्मध्ये लक्ष्मणः केषां गजानां शुण्डानि खण्डितानि वदन्तां च त्रोटितवान्। इत्थं लक्ष्मणः एकदैव विविधान् अस्त्रान् प्रक्षिप्तवान्।

मध्ये च हनुमान् असंख्य राक्षसान् मारितवान्। रक्तसमुद्रः प्रवाहितः शवानां पर्वताः तत्र अदृश्यन्त। एतन्मध्ये देवान्तकेन साकं हनुमान् युद्धं कृतवान् तथा च तं निहतवान्। इदमवलोक्य अतिकायः समुपस्थितः। तथा च अतिकाय-हनुमतोर्मध्ये रोमाञ्चकारि युद्धं सञ्जातम्। अतिकायेनोक्तम् त्वं स एव वानरः यः ममानुजम् अक्षय-कुमारं निहतवान्। अशोक वाटिकां विध्वंसितवान् समुद्रं विलंघ्य मम सैन्य सागरं प्रविश्य अतिवलशालिनं देवान्तकं निहतवान्। अतः अद्य अहं तव नाशकः समुपस्थितोऽस्मि।

तदा हनुमता चोक्तम् किं त्वम् अजेय लक्ष्मणेन साकं मया साकं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

च योद्धुमिच्छसि। अहं तु त्रिशिरसा सह त्वां भूमौ निपात्य संचूर्णयिष्यामि। इत्थं च हनुमान् पर्वताकारं त्रिशिरा नामकं राक्षसं जघान। तं हत्वा पश्चिम द्वारि गतवान्। तदा अतिकायेन चिन्तितं यत् लक्ष्मण वधस्य संकल्पं कृत्वा आगतोऽस्मि। अतएव विलम्बः नोचितः। इति कृत्वा अतिकाय-लक्ष्मणौ परस्परं समक्षमागतौ। तत्र अङ्गदः समागत्य लक्ष्मणं स्वस्कन्धे संस्थाप्य योद्धुं निवेदितवान्। यतोहि अतिकायः रथे आसीत् लक्ष्मणश्च पदातिरेवासीत्। अतश्च अङ्गदस्कन्धमुपविश्य युद्धं श्रेयस्करम्। उभयोर्मध्ये तुमुलं युद्धं समारब्धम्। लक्ष्मणेन पृष्टं तव का इच्छा केवलं स्वयमेव युद्धं करिष्यसि अथवा सैन्यैः साकम्। अतिकायेनोत्तरितम् मया स्वयमेव युद्धं करिष्यते। यद्यहं पराजितः स्याम तर्हि ते सैन्याः स्वयमेव पराजिताः भविष्यन्ति।

इति श्रुत्वा लक्ष्मणः सन्तापक नामकं वाणं चिक्षेप। अतिकायेन स वाणः विखण्डितः। ततश्च लक्ष्मण वाणेन अतिकायः मूच्छितः सञ्जातः। तन्मध्ये राक्षससैन्याः लक्ष्मणेन निहताः। एतन्मध्ये चेतनां प्राप्य उभयोर्मध्ये पुनः भीषणं युद्धं समारब्धम्। तत्र अतिकाय-प्रहारेण सर्वाः दिशाः विक्षुब्धाः। देवाश्च चिन्तिताः जाताः। अङ्गदस्य शरीरे वाणान् प्रक्षिप्तवान्। येन स व्यथितो जातः। तथा च लक्ष्मणोपरि वाणान् प्रचिक्षेप। अन्ते च लक्ष्मणः ब्रह्मास्त्रमादाय तेजः पुञ्जं विद्युत् तुल्यम् अस्त्रं प्राहरत्। यद् ब्रह्मास्त्रम् अतिकायस्य मस्तकं छित्वा आकाश मार्गेण निर्गतम्। आकाशात् पुष्प वृष्टिः सञ्जाता, ऋषयो देवाश्च हर्षिताः तदा नरान्तकः नामकः राक्षसः समायाताः। यं अङ्गदः निहतवान्। तदा कुम्भ नामकः राक्षसः दण्डायु राक्षसश्च समागतवन्तौ। यौ सुग्रीवेण निहतौ।

इत्थं च विभिन्न राक्षस सैन्यैः सह अतिकायस्य बध समाचारः रावणेन श्रुतः विक्षिप्तश्च जातः। अतिकायस्य माता **धान्यमालिनीं वत्स** रहित धेनु सदृशा जाता। रामश्च लक्ष्मण विजय समाचारं श्रुत्वा हर्षितो जातः। वानरसैन्याश्च ननन्दुः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नाहपाशप् पडलम् (नागपाश पटलम्)

अस्मिन् पटले लक्ष्मणमेघनादयोर्मध्ये प्रलयकारिणो युद्धस्य अति विस्तृतं वर्णनं विद्यते। अत्र कविना पूर्ववदेव युद्ध वर्णनं कृतम्। यत्र समाना शैली समानमेव राक्षस-सैन्यबलानां वानर-सैन्यबलानां च अपरिमित संख्या वर्णनं च वर्त्तन्ते। अस्मिन् युद्धे ब्रह्मणः वरदाने प्राप्तनागपाशास्त्र प्रयोगेण लक्ष्मस्य नागपाश-बन्धन कथा विस्तृता विद्यते।

अतिकाय बधोपरान्तं लङ्का नगर्याः नार्यः मुक्तमूर्धजाः विलपन्त्यः आसन्। इदं दृष्ट्वा श्रुत्वा च इन्द्रजित् मेघनादः चिन्तितवान् यत् किं युद्धे रावणः मृतः। येन एवं रूपेण शोकमग्नाः नार्यः विलपन्त्यः दृश्यन्ते। इत्थं विचारयन् इन्द्रजित् स्वपितुः समीपमागतवान् यत्र रावणस्य विचित्रां दशां दृष्टवान्। जीवितं प्रोवाच, किम् अभूत्। रावणेनोक्तम् तव भ्राता अतिकायः स्वर्गतः, कुम्भनिकुम्भौ च मृतौ। इति श्रुत्वा इन्द्रजित् कियत् काल पर्यन्तं क्रोधाभिभूतः सन् आसीत्। तथा च अवादीत् युद्धार्थं मां भवान् न प्रेषितवान् तेनैव कारणेन इयं स्थितिः सञ्जाता। यदा हनुमता अक्षयकुमारः निहतः तदा भवान् विभीषणवचसा तं दूतं मत्वा परित्यक्तवान्। तेनैव स्थितिरियं सञ्जाता। अस्तु अनया चिन्तया किम्। मया प्रतिज्ञा क्रियते अतिकाय नाशकं लक्ष्मणं यावत् पर्यन्तं न हनिष्यामि तावत् पर्यन्तं लङ्कां न परावर्तयिष्ये। अद्य नागास्त्र-पाशुपतास्त्र दिव्यास्त्र प्रभृतयः मां रक्षिष्यन्ति। यद्येवं न स्यात् तर्हि मम जीवनेन किं प्रयोजनम्? ततच्छ्रुत्वा रावणः प्रोवाच साधु वत्स, गच्छ, विजयी भव, मम कष्टं दूरीकुरु। न किमपि त्वया असाध्यम्।

एवमाज्ञामादाय शस्त्रास्त्र सहितः सैन्यबलयुक्तः इन्द्रजित् प्रस्थितवान्। इन्द्रजिता सह अगणिताः सैन्याः देवैः प्रदत्तास्त्राणि अमोघरूपाणि आसन्। येषां विस्तृतविवरणप्रदानम् अनावश्यकम्। इति तु सर्वं पूर्वं युद्धमिवैव ततोऽप्यधिकमासीत्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

युद्धभूमौ लक्ष्मणः शोचतेस्म। अतिकायः मृतः इति ज्ञात्वा स्वयं शत्रुः रावणः आगमिष्यति अथवा देवेन्द्र विजेता रावणिः (मेघनादः) आगमिष्यति। एतस्यां प्रतीक्षायामेव लक्ष्मणः युद्धभूमौ एव स्थितः आसीत्। इदं दृष्ट्वा विभीषणेनोक्तम् हे यशोभूषण लक्ष्मण, अस्मिन् युद्धे भवान् मारूति जाम्ववान् सुग्रीव अङ्गद नील प्रभृतिभिः बलशालिभिः सैन्यैः सह तिष्ठतु। यतः युद्धमिदं सुदीर्घकालीन भयकारकं भीषणं भावि इत्यहं चिन्तयामि। लक्ष्मणः विचारेणानेन सहमतो जातः। हनुमान् रावणि-सैन्यान् दृष्ट्वा भयभीतो जातः। भयात् च अक्षिणी निमीलिते, तथा च पश्चिमद्वारं विहाय लक्ष्मणसमीपमागतवान्।अङ्गदश्च समागतः तथा समुपस्थितो जातः। सूर्यपुत्रः सुग्रीवश्च समागतः तथा च विशाल वानरसैन्याश्च एकत्रीभूताः।

स्वर्गे देवैः विचारितं यत् अभूतपूर्वमिदं युद्धं द्रष्टुं पत्नीभि. सहितैः अस्माभिः गन्तव्यम्। एवं ते युद्ध क्षेत्रोपरि समवेताः बभूवुः। उभयोः सैन्ययोर्मध्ये तुमुलयुद्धमारब्धम् स्वभावानुसार घर्षयध्वं मारयध्वं, गृहाण निपातय अस्त्राणि प्रक्षेपय इत्यादि वाक्यैः धनुष्टङ्कारैश्च युगान्तकालीनाः वज्रनादसमाः ध्वनयः सञ्जाताः। इत्थं च युद्धमारब्धम्। अत्रत्यं सर्वं युद्ध वर्णनं कविना स्वशैलीमनुसृत्य पूर्ववदेव कृतम्। नात्र तद्विवरणं दीयते। इन्द्रजिता मेघनादेन वानर सैन्यान् छिन्न भिन्नान् अकरोत्। तदा सुग्रीवः तदुपरि आक्रमणार्थं विशालमेकं शालवृक्षमादाय समुत्पतितः। इन्द्रजिता शालवृक्षो विखण्डितः। तदा हनुमान् समागतवान्। तं दृष्ट्वा मेघनादोऽब्रवीत्। तिष्ठ तिष्ठ रे दूत, त्वां दृष्ट्वैवात्र समुपस्थितोस्मि। त्वां निहत्यैव अग्रे युद्धं कुर्याम्।

हनुमता प्रत्युक्तम् अरे मेघनाद, त्वमपि स्वभ्रातृ पितृव्यवत् स्वर्गं गन्तासि, पश्यमे भुजवलम्। इत्युक्त्वा हनुमान् स्वकीय विशालरूपं विधाय प्रोवाच किं त्वं स्वभ्रातृ पितृव्यघातकेन प्रभुणा लक्ष्मणेन सह युद्धं करिष्यसि। अथवा पुरूषोत्तमेन रामचन्द्रेण सह यः तव पितुः वधार्थं कृतसंकल्पो वर्त्तते। कथय किमिच्छसि तदेव करिष्यामि। इन्द्रजिता मेघनादेन कथितं कुत्र सः बुद्धिहीनः लक्ष्मणः? तेनैव सह युद्धं करिष्यामि। इत्थमुक्त्वा मेघनादः हनुमतः उपरि नवतिशत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(९०००) बाणान् प्राक्षिपत् । हनुमान् च विशालमेकं पर्वतं मेघनादोपरि प्राक्षिपत् । यं मेघनादः विखण्डितवान् ततश्च अङ्गद-नीलप्रभृतयोऽपि मेघनादेन साकं युद्धमकुर्वन् । यत्र मेघनाद प्रहारेण प्रायः सर्वे वानर सैन्याः छिन्न भिन्नाः सञ्जाताः तदा क्रुद्धः लक्ष्मणः विभीषणं कथयामास ।

हे राजन् ! ममोद्देश्यं विफलं जायते । मम सैन्याः म्रियन्ते किं कर्त्तव्यमधुना । विभीषणेनोक्तम् इन्द्रजिता सह भवन्तं विहाय नान्ये युद्धे समर्थाः । अतएव स्वयमेव भवान् अग्रे गच्छतु । इति श्रुत्वा लक्ष्मणः मेघनादसमक्षमागतः । इन्द्रजित् च यावत् लक्ष्मणोपरि प्रहारं कर्त्तुं शोचते तन्मध्य एव तस्य सैन्याः लक्ष्मणोपरि प्रहारं कृतवन्तः । यः प्रहारः लक्ष्मणं व्याकुलं कृतवान् । तदनन्तरं हनुमतः विशाल स्कन्धोपरि स्थित्वा लक्ष्मणः युद्धमारभत् । उभयोर्मध्ये अभूतपूर्व युद्धं सञ्जातम् ।

कम्बन् कवेरनुसारं पद्म, शङ्ख संख्याका सैन्या तत्र युद्धं कुर्वन्तः आसन् **(संख्येयं विचारणीया)** । लक्ष्मणश्च बहुभिर्बाणैः तेषां प्रहारं निष्फलं कृतवान् । इत्यवलोक्य देवाः शुभाशीर्वादं प्रदत्तवन्तः । एतन्मध्ये विभीषणेनोक्तम् हे महाबाहो लक्ष्मण, यदि त्वरितमेव मेघनादं न मारयिष्यति तर्हि रात्रिः समायाति । रात्रौ इमे मायाविनः कमपि मायाजालं रचयिष्यन्ति । मेघनादश्च आकाशे गमिष्यति स एव विजयी भविष्यति । यतोहि ब्रह्मवरदानेन निर्भयः मेघनादः सर्वं मायामन्त्रं जानाति ।

एतस्मिन्नेव काले नागपाशमेकं गृहीत्वा मेघनादः अदृश्यो जातः वानराः अनुभूतवन्तः यत् मेघनादः पलायितः । लक्ष्मणोऽपि एवमेव-मत्वा हनुमतः स्कन्धात् भूमौ अवतरत् । इदं दृष्ट्वा मेघनादः सहसा लक्ष्मणोपरि आकाशात् नागपाशान् प्राक्षिपत् येनामोघेन नागपाशेन लक्ष्मणः सर्वाङ्ग परिबद्धः सञ्जातः भूमौ निपतितश्च । लक्ष्मण-सैन्यमध्ये हाहाकारः सञ्जातः । सर्वे विभीषणं पृष्टवन्तः अस्य कः उपायः, विभीषणः मौनमासीत् । लक्ष्मणं भूमौ निपतितं दृष्ट्वा मेघनादः स्वपितरं निकषा गत्वा शुभसूचनामिमां प्रदत्तवान् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वानर सैन्याश्च राम समीपं गत्वा सर्वं घटनाचक्रम् विज्ञापितवन्तः । सर्वे किंकर्त्तव्य विमूढाः जाताः । रामचन्द्रश्च व्यथायुक्तः बभूव । सोऽपि त्वरितमेव उत्थाय युद्धभूमिं गतवान् यत्र नागपाशबद्धः लक्ष्मणः भूमौ निपतितः आसीत् ।

तथाभूतं लक्ष्मणं दृष्ट्वा रामः भृशं विललाप किंकर्त्तव्यविमूढः सञ्जातः । वारं वारं लक्ष्मणमालिङ्ग्य रुरोद । विभीषणं पृष्टवान् यत् कोऽयं देवः नागपाशदायकः तस्य नाम कथय तमेवाहं नाशयिष्यामि । विभीषणेनोक्तम् ब्रह्मणा प्रदत्तोऽयं नागपाशः । एतन्मध्ये एव आकाश मार्गात् महाबलशाली विष्णोर्वाहनः गरूडः समायातः । इमं दृष्ट्वा रामेण चिन्तितं यत् सहस्र वर्षानन्तरमपि एतस्य सर्वे पक्षाः पूर्ववदेव सुरक्षिताः विद्यन्ते । गरूडः समागत्य अचिरमेव नागान् खण्डितवान् नागपाशैः लक्ष्मणं विमुक्तवान । रामचन्द्रः लक्ष्मणमालिङ्ग्य सीमातीतः प्रसन्नो जातः । गरूडश्च रामचन्द्रं प्रणम्य प्रोक्तवान्-अहं तु भवतः एव पार्श्वसेवकः वाहनरूपः अधुना गच्छामि आज्ञां प्रददातु । युद्ध समाप्तेरनन्तरं पुनर्दर्शनं करिष्यामि । इत्थं च रामचन्द्र पक्षे महान् हर्षनादः अभूत् । तं महानादं श्रुत्वा रावणः चिन्तितवान् यत् किमिदं जातम् ।

यत्र विजयोत्सवे संलग्नः मेघनादः अन्ये च विविध विलास क्रीड़ायां नारीभिः सह निरता आसन् तदेव केचन दूताः समागत्य नागपाश विमुक्ति घटनां श्रावितवन्तः । इदं ज्ञात्वा सर्वे आश्चर्यचकिताः बभूवुः । रामचन्द्रोऽपि युद्धक्षेत्रात् लक्ष्मणं नीत्वा स्व शिविरं समागतवान् ।

पडैत्तलैवर वदैप्पडलम् (सेनानायक वध पटलम्)

विगत पटले लक्ष्मणस्य नागपाशात् विमुक्ति घटना वर्णिता । अधुना अस्मिन् पटले अग्रिमे मकराक्ष-वध पटले च रावणस्य केषाञ्चित् महतां सेनानायकानां विपुल युद्ध वर्णनं तेषां विनाशवर्णनं च विद्यते । युद्ध वर्णनं तु स्वकीय शैलीमनुसृत्यैव कविना कृतम् । केवलं प्रमुख सेनानायक-वधवर्णनं विशेषरूपेण विराजते ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लक्ष्मण नागपाश मुक्ति घटनां श्रुत्वा रावणः विचलितः क्रुद्धः चासीत् । तदैव विकरालः "धूम्राक्षः" समागत्य रावणस्याज्ञां ययाचे । रावणः क्रुद्धः सन् तं दृष्ट्वा अब्रवीत् । ततश्च 'महापार्श्व-' नामकः महासेनानायकोऽपि समुपस्थितः । रावणः आज्ञां प्रदत्तवान् कथितवांश्च यत् पूर्वं ये सैन्याः पलायिताः ते पुनः समागताः । किमिमे न कापुरूषाः ? एभिः किं कार्यं भवितुमर्हति । रावणेनोक्तम् एतान् वीरतारहितान् राक्षसान् गृहाण, तथा असिना एतेषां नासिकां छित्वा नगरे परिभ्रामय येन जनाः ज्ञास्यन्ति यत्ते निर्बलाः भयभीताः पलायिताः सैनिकाः सन्ति ।

एतन्मध्ये एव 'माली' नामकः सेनापतिः अवादीत् । नैवं विधेयं घटना इत्थं वर्तते । लक्ष्मणस्य नागपाशाः विच्छिन्नाः । महती सेना विनष्टा । लक्ष्मणशब्देनैव सैनिकाः सन्त्रस्ता आसन् । अतएव ते भयभीताः पलायन्ते । यथा त्वया निश्चितं न तथा युद्धमभूत् । राम-लक्ष्मणौ तु कुशलिनौ वर्त्तेते एव तथा कथन्न कस्यापि वीरस्य नासिकाच्छेदस्याज्ञा प्रदत्ता भवता ।

इदं श्रुत्वा रावणः शान्तो जातः । महापार्श्वधूम्राक्षौ ऊचतुः । आज्ञां देहि वयं युद्धे विजयीभूता जाताः मृताः वा जाताः इत्येव भवान् श्रोष्यति । अस्माकं पलायनं न श्रोष्यति । इत्थमुक्त्वा उभौ प्रचलितौ राम-रावणसैन्ययोर्मध्ये तुमुलः युद्धं सम्बभूव । युद्ध समये विभीषणेन तेषा परिचयः रामाय प्रदत्तः । यथा अयं महावलशाली महापार्श्वः, अयं विकरालाक्षः धूम्राक्षः अयं च महाद्रंष्ट्रः, असौ हि भानुसदृशः भानुकोपः । तथा च अयं मालाधारी महावलशाली माली नामकः सेनापतिः । एवं क्रमशः सर्वेषां परिचयं प्रदत्तवान् ।

एते सर्वे अङ्गदेन सुग्रीवेण नीलेन हनुमता सह भयंकरं युद्धं कुर्वन्तः अन्ते पराजिताः जाताः । मध्ये च महापार्श्वस्य कालपाश-सदृशमेकं शूलं समागच्छन्तं दृष्ट्वा रामेण एकेन विषाक्त वाणेन शूलः खण्डितः । इत्थं च सर्वे पूर्वोक्ताः राक्षस सेनापतयः यमलोकं गताः । राम शिविरे हर्षोल्लासः सञ्जातः । अवशिष्टाः रावण-सैनिकाः घटनामिमां रावणाय निवेदयामासुः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महरक्कणड़ण वदैप पडलम् (मकराक्षवध पटलम्)

सेनानायकानां वध समाचारं श्रुत्वा सर्प सदृशः फूत्कारं कुर्वन् रावणः विक्षिप्तः बभूव। इमां स्थितिं दृष्ट्वा मकराक्षराक्षसः समुपागत्य प्रोवाच हे पितः, मम पितरं खरं सैन्येन सह युद्धे रामचन्द्रः हतवान्। अतएव माम् आज्ञापयतु अहं तं विजित्य भवतः समीपमागमिष्यामि। मम माता नित्यं दुखमग्ना रुदती वदति यत् मम पत्युः घातकस्य मस्तकपात्रमतिरिक्तं न केनाप्यन्य पात्रेण जलमादाय तर्पणं करिष्यामि। अतवाहं युद्धे गन्ता।

रावणेनोक्तम् साधु एवमेव विधेहि। विकरालो मकराक्षः पूर्ववत् विपुल सैन्यैः सह युद्ध भूमिं समागतवान् यत्र पूर्ववत् अश्वाः गजाः रथाः विशाल सैनिकाश्च मकराक्षं पृष्ठतः आसन्। मकराक्षः युद्ध भूमौ समागत्य साक्षात् रामचन्द्रं प्रति उक्तवान्। यदहं त्वया सहैव युद्धं करिष्यामि। पितुः प्रतिशोधं प्राप्स्यामि। रामचन्द्रेण विहस्योक्तम् त्वं धन्योऽसि किं त्वमेव खरतुल्यस्य खरस्य पुत्रोऽसि। इदं सर्वथा उचितं पुरुषोचितं कर्म प्रतिशोध करणम्। मकराक्षः वज्रतुल्यं धनुः निःसार्य तस्मात् सहस्रशः वाणान् रामकण्ठे प्राक्षिपत्। ये रामेण त्वरितमेव विखण्डिताः। ततश्च रामचन्द्रः विहस्य वाणेनैकेन तस्य अश्वसहितं रथं विखण्डयित्वा मकराक्षस्य उरसि वाणं प्रचिक्षेप। येन रूधिरं वमन् मकराक्षः कालकवलितो जातः। भूतले तस्य छिन्नं शिरः विलुण्ठतिस्म।

सत्यामप्येवं स्थितौ रामचन्द्रः मकराक्षस्य वीरतायाः प्रशंसां कृतवान् तथाचोक्तम् यत् कस्यापि राक्षसस्य नैवं वीरता मया दृष्टा। यद्यपि रामेण कन्दुक-क्रीडावत् मकराक्षः निपातितः। ततश्च अवशिष्टाः सैनिकाः रावणाय मकराक्ष-वध घटनां सूचितवन्तः।

॥ इति पूर्वार्द्धं युद्धकाण्डम् ॥

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उत्तरार्धं युद्धकाण्डम्

(१) पिरमात्तिरप् पडलम् (ब्रह्मास्त्र पटलम्)

महाबलशालिनः खर पुत्रस्य मकराक्षस्य शोणिताक्षस्य तथा अन्येषां राक्षस सैन्यानां विनाश समाचारं श्रुत्वा रावणः क्रुद्धः सन् स्वपुत्रम् इन्द्रजिन्मेघनादं समानेतुं समादिष्टवान्। दूतवचनं श्रुत्वा इन्द्रजित् पितरं निकषा त्वरितमेवागतवान्। तेनोक्तम् पितः शोकं माकुर्वीत। सकल वानर सैन्यैः सह रामलक्ष्मणौ मृतौ सीता द्रक्ष्यति देवाश्च विलोकयिष्यन्ति।

इत्थमुक्त्वा इन्द्रजित् पितुः रावणस्य परिक्रमां विधाय असंख्य-रथ गज तुरङ्ग सिंह सैन्यादि सहितः युद्ध भूमिमागतवान्। मेघनाद-समीपे तमिलभाषायां प्रसिद्धानि **कुम्बिकै, तिमिलै, शणडै, पम्बै, पाण्डिल, मारू, तक्कै, करडिकै, शकडे** प्रभृतीनि शस्त्रास्त्राणि आसन्। एभिः विभूषितः चतुरङ्गिणी सेना सहितः इन्द्रजित् भयानक युद्ध-स्थले समागत्य **क्रौञ्च-व्यूह** नामके व्यूहे स्व सैन्यान् सुबद्धां कृतवान्। ततश्च स शङ्खनादं कृतवान्। तं शङ्खनादं श्रुत्वा देवाः कम्पिताः भयत्रस्ताश्च बभूवुः सर्वाः दिशः अस्तव्यस्ताः जाताः। यं श्रुत्वा वानरसैन्यानां कर्णे विस्फोटो जातः।

राम सैन्यमध्ये सुग्रीवः अङ्गदः मारुतिः अरुणाश्व विभीषणः लक्ष्मणश्च आसन्। स्वयं हि रामचन्द्रोऽपि समुपस्थितः आसीत्। उभौ रामलक्ष्मणौ हनुमतः अङ्गदस्य स्कन्धोपरि स्थितौ वृषभ-गरुडोपरि स्थितौ विष्णु-शिवसदृशौ सुशोभाते स्म। तत्र रामचन्द्रेणोक्तम् यदा इन्द्रजित् दिव्यास्त्रं संचालयिष्यति तदा यूय तत्र स्थातु न शक्ष्यथ। अतएव मम पृष्ठभागे तिष्ठथ।

रामलक्ष्मणौ युद्धं प्रारभेताम्। तत्र रथोपविष्टः इन्द्रजित् प्रस्तरवत् स्थितः जातः। अर्थात् राम लक्ष्मणयोः तुमुल युद्धारम्भम् अवलोक्य मेघनादः स्तब्धः सञ्जातः तथा च राम शरवर्षा स्व सैन्य-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रक्तधारां च पश्यन् किंकर्त्तव्यविमूढो जातः । इन्द्रजित् उरः ताडयन्तीं रूदतीं भूमौ लुठन्तीं स्व सैन्य विधवामपि ददर्श । अङ्गद हनुमतोः तेजः इन्द्रजित् ज्ञातुं नाशक्नोत् । तस्य दृष्ट्या एकः हनुमान् एकः अङ्गदः सहस्रसंख्यकः जातः । यतोहि उभौ तथा तीक्ष्ण वेगेन युद्धं अकुरूताम् येन स्थितिरियं समायाता ।

एवं च असंख्याः राक्षस सैन्याः निहताः । हनुमतश्च उत्साहः संवर्द्धितः । तदनन्तरं इन्द्रजिता ते भर्त्सिता सहस्रशः मेघनादरथाः तत्रागताः उभयो सैन्ययोर्मध्ये तुमुल युद्धं प्रारब्धम् । रामेण लक्ष्मणः प्रोत्साहितः यत् तव समक्षं न कोऽपि स्थातुं शक्नोति । एवं राक्षस-पुत्राणां छिन्नानि शिरांशि तेषां पितुः क्रोडे निपतितानि । ततश्च इन्द्रजिन्मेघनादः रामलक्ष्मणाभ्यां कथितवान् किम् उभौ युवाम् युद्धं करिष्यथः । अथवा एकैकमागत्य स्व सैन्य वलैः सह यमलोका तिथिः भविष्यति । इतिश्रुत्वा लक्ष्मणेनोक्तम् मया तव वधस्य प्रतिज्ञा कृता अतएव अहमेव युद्धं करिष्यामि । तदा रावणिः मेघनादः अब्रवीत् अद्य मया अग्रजानुजयोः वैपरीत्यं क्रियते मथा अनुजः त्वं मरणे अग्रजः भविष्यति । अग्रजः रामः मरणे अनुजः भविष्यति । यतोहि यः अग्रे गच्छति जायते वा सैवाग्रजः" यः पश्चात् जायते गच्छति वा सोऽनुजः कथ्यते । एवं कथनं साहित्मिक चमत्कारमयं विद्यते ।

तव नाम लक्ष्मणो वर्तते । लक्ष्मण शब्दस्य **तमिल भाषायां "इल कुवण भवति ।' 'इलकु' शब्दस्य लक्ष्यम् इति** अर्थः । अतएव हे लक्ष्मण त्वमेव लक्ष्यं भविता **(अत्रापि श्लेषालङ्कारस्य चमत्कारिता वर्त्तते)** । पुनश्च तेनोक्तं अहं रावणस्यान्यपुत्राद् भिन्नः तथा च नाहं कुम्भकर्णः । अहं तु तव रक्तेन भ्रातृपितृव्यं तर्पयिष्यामि ।

लक्ष्मणेनोक्तं मृतान् राक्षसान् तर्पयितुं च पूर्वतः एव विभीषणः मम शिविरे वर्त्तते स एव यूयं तर्पयिष्यति । ततश्च लक्ष्मण मेघनाद-योर्मध्ये युद्ध जातम् । यदतिभीषणम् आसीत् रामश्च लक्ष्मणं पश्चात् समुपस्थितः आसीत् । लक्ष्मणेन इन्द्रजितः कवचादयः विखण्डिताः । रामाय लक्ष्मणो निवेदितवान् किम् अहं ब्रह्मास्त्रं चालयेम् । रामेणोक्तं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहि ब्रह्मास्त्रचालनेन त्रिलोकस्य विनाशो भविष्यति। अतएव एभिरस्त्रैरेव युद्धेत्। लक्ष्मणः तथैव कृतवान्।

एतन्मध्ये एव इन्द्रजित् प्रच्छन्नो जातः तथा ब्रह्मास्त्र प्रक्षेपणस्य संकल्पं कृतवान्। रामलक्ष्मणौ च इन्द्रजितः इमां विशेष शक्तिं दृष्ट्वा विस्मितवन्तौ। ततश्च सहसा सूर्यास्तो जातः। अत्र कविः कल्पनां करोति यत् सूर्यः स्व वंश प्रभवस्य लक्ष्मणस्योपरि ब्रह्मास्त्र-प्रहारात् पूर्वमेव अस्तं गतवान्। अत्र रामेणोक्तं शीघ्रं सर्वे गत्वा भोजनं कुर्वताम्। अहं पूजां कृत्वा आगच्छामि। तावत् पर्यन्तं त्वं व्यूहं रक्षस्व। एतदन्तराले एव इन्द्रजित् स्व पित्रा साकं मन्त्रणां कृत्वा ब्रह्मास्त्रप्रक्षेपणस्य विमर्शं कृतवान्। मध्ये च अङ्गद हनुमत्-प्रभृतयः युद्ध्यमानाः आसन्। हनुमान् लक्ष्मणसमीपमागतवान्।

सहसा इन्द्रजित् ब्रह्मास्त्रं प्राक्षिपत् तेन सर्वे वानर प्रमुखाः मूर्च्छिताः जाताा। क्षणमध्ये एव अघटित घटना सञ्जाता। सर्वे मूर्च्छिताः जाताः। न कोऽपि कस्याऽपि जिज्ञासां कर्त्तुमपि अशक्नोत्। इति सूचनां रावणाय सैन्याः निवेदितवन्तः। रावणेन पृष्टः किं रामो हतः। दुताः कथितवन्तः नैवम्। किन्तु युद्धक्षेत्रे वानर सेनापतयः मूर्च्छिताः जाताः। लक्ष्मणश्च मृततुल्यः भूमौ पतितः अस्ति।

(२) पिराट्टि कलङ्गाण् पडलम्

(देवी युद्धस्थल दर्शन पटलम्)

तत्र लङ्कायां रावणः लक्ष्मण नाश समाचारं श्रुत्वा सीतासमीप-स्थितां राक्षसीम् आज्ञापितवान् यत् पुष्पकविमाने सीतामारोप्य मृतं लक्ष्मणं मृतान् वानर सैन्यान् दर्शय। राक्षस्यः तथैव कृतवत्यः। युद्धस्थले समागत्य मूर्च्छितं श्रीरामचन्द्रं मृतवत् लक्ष्मणं तथा मूर्च्छितान् वानर सैन्यान् अवलोक्य असह्य वेदनया व्यथिताः सञ्जाताः। सीता भृशं रूदन्ती तथा दृश्यते स्म। यथा साक्षात् पार्वती महालक्ष्मी भगवती गङ्गा वाग्देवी सरस्वती तथा साक्षात् दुर्गादेवी सर्वाः रुदन्ति। सीता स्व उरः सन्ताडयन्ती विललाप। सर्वथा विक्षिप्ता सती म्लाना सञ्जाता। एवं स्थितां सीतां पुष्पक-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विमाने नीत्वा पुनः अशोक वाटिकायां समागतवत्यः। मध्ये च सीताया संरक्षिका त्रिजटा कर्णे मुखं दत्वा निवेदितवती यत् इयं राक्षसी माया वर्त्तते त्वं धैर्य रक्षस्व सर्वं कल्याणं भविष्यति। इत्थं च सीता शोकसागरे निमग्ना अशोक वाटिकायां समागत्य स्थिरा जाता।

(३) मरूत् तुमुलैप पडलम् (औषधिवर्वत पटलम्)

अत्र राम शिविरे महान् कोलाहलः सञ्जातः लक्ष्मणस्य स्व-सैन्यानां च दशां श्रुत्वा रामः विचित्र कारुणिक रूपेण चिरं विललाप। न कोऽपि सान्त्वनां दातुमपि समर्थः। शोक सागरे पतितं रामचन्द्रं दृष्ट्वा येन केनापि प्रकारेण हनुमान् समागत्य पृष्टवान् यत् महाज्ञानी जाम्बवान् कुत्र वर्त्तते। जाम्ववान् मिलितः। विभीषणः सुप्रसन्नो जातः। जाम्बवता पृष्टं भगवान् रामः कुत्र वर्तते। विभीषणेनोक्तम् स तु दुःखप्रवाहे मूर्च्छितो वर्त्तते।

तदा जाम्बवान् उक्तवान्। हे हनुमन् समुद्रं लङ्घयित्वा नव सहस्र योजन गमनानन्तरं **हिमालय** नामकः पर्वतः अस्ति। तं विलङ्घ्य नव सहस्र योजनानन्तरं **'हेमकूट'** पर्वतः ततः नव सहस्र योजनानन्तरं **'निषध'** नामकः पर्वतः वर्त्तते ततश्च पुनः नव सहस्र योजनानन्तरं **"मेरु"** **पर्वतः** वर्तते। तस्मात् पर्वतात् नव सहस्र योजनानन्तरं **"नीलगिरिः"** वर्तते तस्मात् गिरेः चतुः सहस्र योजना-नन्तरं **"कृष्णपर्वतः"** वर्त्तते तत्र ब्रह्मास्त्र निवारकाः औषधयः सन्ति। तान् यदि गृहीत्वा सूर्योदयात् पूर्वम् अत्र आगमिष्यति तर्हि लक्ष्मणस्य प्राणरक्षा भवितुमर्हति।

अथ च रामः विलपन् अवादीत्। यत् अनुजस्य लक्ष्मणस्य मरणोपरान्तं मम जीवनेन किं प्रयोजनम्। सर्वं विनष्टं जातम्। सर्वान् प्रति कृतज्ञतां ज्ञापयन् कथयामास। कृपया सर्वे मां क्षमध्वम्। मम शोके पिता स्वर्गतः भरतः अपि चतुर्दश पर्यन्तं मम प्रतीक्षायां तपस्वि जीवन यापनं करोति। अहं तु पत्नीप्रेममग्नः अनुजं प्राणप्रियं लक्ष्मणं विलोपितवान् हा महाकष्टम्!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एतन्मध्ये सोत्साहः हनुमान् समुद्रं विलङ्घ्य लक्षयोजनानन्तरं "**कृष्णपर्वतं**" प्रति लक्ष्मणाय सञ्जीवनौषधिमानयनार्थं ततः प्रतस्थे। अत्र संजीवनी नामक औषधिम् आनेतुम् तेन प्रकारेण जाम्ववान् कथितवान्। तथा च यथा हनुमान् तत्र गत्वा आनीतवान् तन्मध्ये च यत् अश्रुतपूर्वम् अदृष्टपूर्वम् च दृश्यम् आसीत् तस्य वर्णनम् सविशेषेण कवि कम्बन् रीत्या विधीयते। वर्णनमिदं सर्वथा नूतनं चमत्कारपूर्णं च।

जाम्ववान् उक्तवान् उत्तरस्यां दिशि पूर्वोक्त मेरु क्षेत्रान्तर्गत कृष्णपर्वते या सञ्जीवनी वर्तते तस्याः स्थितिरेवम् अस्ति। तत्र चतस्रः औषधयः सन्ति। एकस्य फलं मृतकं सञ्जीवनं द्वितीयस्य छिन्न शरीरान् एकीकरणं, तृतीयस्य शरीरे प्रविष्ट अस्त्र शस्त्रानाम् निष्कासनं, चतुर्थस्य च युद्धे विकारप्राप्त स्वरूपस्य मूलरूपकरणम्, एतानि चत्वारि फलानि तस्याः औषधेः वर्तते। इयं औषधिः तदा प्रकटिता यदा समुद्रमन्थनं जातम्। एतस्याः शक्तिम् ज्ञात्वा तत्र गोपनीयता रक्षिता। एतस्य गुणान् प्राचीन ऋषयो मुनयश्च विवृतवन्तः। अस्याः औषधेः असंख्य देवगणाः तस्य रक्षार्थं तत्र तत्पराः विद्यन्ते। किन्तु ते त्वां न निवारयिष्यन्ति।

एतत् श्रुत्वा हनुमता प्रोक्तं यद्येवं वर्तते तर्हि तु लक्ष्मणेन साकं सर्वे जीविष्यन्ति। एवमुक्त्वा हनुमान् स्वकीय शरीर विशालाकारं विधाय उत्तरस्यां दिशि प्रतस्थे। तत्र एवम् दृश्यमासीत् यत् समुद्रः हनुमतः पश्चात् पृष्ठभागेन प्रचलति, पवनः अग्रे गच्छति। महाज्ञानिनः अपि नेदं ज्ञातुम् शक्नुवन्ति यत् किमिदम्। कैश्चन ज्ञातम् यत् अयं साकार रविः केचन ज्ञातम् इयं ज्योतिः, कैश्चन ज्ञातम् यत् अयं पवनः कैश्चन च ज्ञातम् यत् अयं निराकारः कश्चित् परमात्मनः स्वरूपः। केचन ज्ञातवन्तः यत् ब्रह्माण्ड-पारे स्थितं लोक-सृष्टेः कारणम्। इत्थं च विभिन्नरूपेण विभिन्न लोकैः अनुमानितम्।

अत्र महाकवेः माघस्य श्लोकमिमं स्मारयति—

गतं तिरश्चीन मनूरुसारथेः प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः।
पतत्यधो धाम विसारि सर्वतः किमेतदित्याकुलमोक्षितं जनैः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इत्थं च हनुमान् हिमालयं त्वरितमेव प्राप्तो यत्र क्षमाशीला यतयः तस्मै शुभकामनां प्रदत्तवन्तः। तदनन्तरं हनुमान् कैलास पर्वतं प्राप्तवान्। यत्र अर्द्धनारीस्वरूपेण साक्षात् "**गौरीशङ्करः**" विराजते। तम् कैलाश पर्वतं नत शिरसा हस्ताभ्यां प्रणामं कृतवान्। तत्र महेश्वरः स्नेहदृष्ट्या भगवतीं पीनस्तनीं पार्वतीं दर्शयामास। यद् अयं हनुमान् रामदूतः रामकार्यार्थं गच्छति। अथ च निश्चितं यत् राक्षसानां विनाशः निश्चितः। श्वः वयं भीषण युद्धं द्रक्ष्यामः।

ततश्च क्षणमात्रमेव हनुमान् मेरु पर्वतं प्राप्तवान्। यत्र स महान् "जम्बू" वृक्षः आसीत् येन तस्यनाम **जम्बूद्वीपः** सञ्जातः। तत्र लोकस्रष्टारं ब्रह्माणं चतुर्मुखं दृष्ट्वा तं ननाम। ततश्च श्रीमन्नारायणस्य दर्शनं जातं यत्र वेदज्ञाः वेदपाठं कुर्वन्ति स्म। तदनन्तरं उत्तरपूर्वस्याम् दिशि अष्टभुजरुद्रदर्शनं कृतवान्। हनुमान् यत्र सहस्र सूर्य किरणानाम् प्रकाशः आसीत्। पूजा पुष्पैः आवृता सर्बा स्वर्णाभरणभूषिता पार्वती विराजते स्म।

हनुमता चिन्तितं यत् किम् प्रभातो जातः तर्हि तु निखिलः परिश्रमः व्यर्थः। यतोहि सूर्योदयात् पूर्वमेव मम औषधिम् नीत्वा लङ्का युद्धक्षेत्रे प्रत्यावर्त्तनमावश्यकम्। ततश्च स्मृतवान् सूर्यस्तु पूर्वस्याम् दिशि उदेति इयं तु उत्तरदिशा वर्तते। तनन्तरं स हनुमान् तं "**नीलपर्वतं**" प्राप्तवान् यत्र संजीवनी औषधिः आसीत्।

हनुमन्तं दृष्ट्वा देवाः ऊचुः। हे दूत त्वं स्वकार्यं कुरु। शीघ्रं गच्छ स्वकार्यं समाप्य पुनः इमाः औषधयः परावर्तयस्व। हनुमता चिन्तितं यत् औषधविषये कोऽपि तर्क वितर्कः व्यर्थः। सर्वं नीत्वा आकाशमार्गेण प्रस्थितः।

अत्र लङ्कायां रामचन्द्रस्य दुर्दशावर्णनम् विलापं च महत् कष्टजनकम् आसीत्। रामः नेत्राणि उन्मील्य जाम्बवन्तं विभीषणं च दृष्टवान्। यौ अञ्जलिबद्धौ रुदन्तौ आस्ताम्। रामेणोक्तं किं जाम्बवान् जीवितोस्ति। अहं तु पत्न्या सीतायाः कारणेन बुद्धिविहीनो जातः। मम मनः विकृतं जातं अनुजेन लक्ष्मणेन निवारितोपि मया

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मायामृगं पश्चात् धावितः । स्त्री मोहेन मया एवं कृतः । इदं तु मम पूर्वजन्मनः फलं वर्त्तते यत् मम सर्वे वन्धु वान्धवाः मृताः । ममानुजः मृतः । अधुना केन सह मम कः सम्वन्धः ? वेदविहित चरित्रपालनेन किम् ? मम सत्यनिष्ठायाः किम् फलम् ? मदीया दया व्यर्था मम भ्राता मृतः अधुना राक्षस वधेन किं फलम् ? भविष्ये संसारे जनाः कथिष्यन्ति रामकारणेन दशरथः मृतः जटायु मृतः मित्राणि विनष्टानि सहोदरः मृतः । तथापि स्त्रीकारणेन जीवितोऽस्ति । न हि एवं भविष्यति । अहं प्राणान् त्यक्ष्यामि ।

सर्व जन साधारण मानुषं विलापं श्रुत्वा जाम्ववान् रामचन्द्रस्य चरणद्वये पतित्वा उवाच । भगवन् एकां वार्ता कथयामि कृपया शृणोतु । हे अज्ञेय यद्यपि भवान् अज्ञेयः किन्तु स्वकीय विषयेऽपि भवान् अज्ञेयोजातः । अतएव अहं तं स्मारयामि । हे परात् परब्रह्म तद् ब्रह्मास्त्रं देवान् नरांश्च नाशयितुम् समर्थः । किन्तु तत् भवन्तं न किमपि कृत्वा गतवान महावीरः हनुमान चेतनां प्राप्तवान् । तं संकट-निवारणाय संजीवनीम् आनेतुम प्रेषितवान् यस्य विषये माम विहाय अत्र न कोऽपि किमपि जानाति । इयं औषधिः समुद्रमन्थन समये यथा निर्गता अधुना च मेरु क्षेत्रे श्याम पर्वते देवैः सुरक्षिता वर्तते । तत् सर्व वृत्तान्तं उपर्युक्तरीत्या वर्णितवान् ।

एतन्मध्ये एव आकाशे महान् रवः संजातः येन नादेन सर्वाः दिशाः व्याप्ताः समुद्रजला उच्छलितानि ब्रह्माण्डव्यापी स नादः । तं श्रुत्वा जाम्ववता उक्तं आगतः आगतः । हनुमतः शरीरस्य वायुना स्पृष्टाः सर्वे वानरसैन्याः संजीविता । राक्षसास्तु सागरे पतिता अतएव ते न जीविता । इयं तु विचित्रा घटनाजाता यत् स्वयमेव लक्ष्मणशरीरात् शराः निर्गताः । तस्य पीड़ा विनष्टा । सहसा प्रज्ञा-सहितः लक्ष्मणः पूर्ववत् उत्थितः यथा कश्चित् शयनात् उत्तिष्ठति । सर्वे प्रसन्नाः वभूवुः । देवाः स्तुतिं कृतवन्तः । श्रीरामचन्द्रः अनुजं भुजाभ्याम् आलिङ्गितवान् । मुनयः चतुर्वेदान् गायन्ति स्म ।

(अत्र संजीवनीसम्बन्धित कथा वर्णनम् कम्बन् कवेः सर्वथा नूतनां घटनां प्रदर्शयति या च घटना पूर्वं कस्मिन्नपि रामायणे नैव दृश्यते ।)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(४) कलियाट्टु प् पडलम् (विनोदोत्सव पटलम्)

तत्र लङ्कायां लक्ष्मण वध समाचारेण महान् उत्सवः सञ्जातः। यस्य उत्सवस्य पारावारः नासीत्। तत्र रावणः आनन्दोत्सवे नारीभिः अप्सरोभिश्च नानाविध काम क्रीडायां सुरापाने च निमग्नः सञ्जातः। विभिन्नाभूषणालङ्कार युक्ताः मेनकाः तिलोत्तमा-रम्भा-उर्वशी प्रभृतयः अप्सरसः सुन्दराकर्षकस्तनयुक्ताः नृत्यन्त्यः आसन्। तत्र तासां सुदीर्घाः केशपाशाः पादपर्यन्तं विलम्बिताः दृश्यन्ते स्म। यैः तासां नारीणां नितम्ब प्रदेशा प्रच्छन्नाः वभूवुः। येन वस्त्र-रहितानां तासां कियती लज्जा संरक्षिता। **(अत्र सुदीर्घ केशपाश-वर्णनमद्भूतम्।)**

तत्र काचन नृत्यन्त्यः हसन्त्यः आसन्। काचन रुदती आसीत् प्रणामं कुर्वती आसीत्। यतोहि ताः रतिखिन्नाः सञ्जाताः। काश्चन नार्यश्च गाढ़ालिङ्गने आबद्धाः। काश्चन नार्यः निर्वस्त्रा भूत्वा स्वकेशानां शृङ्गारं कुर्वन्त्यः दृष्टिगोचराः सञ्जाताः। **(विचित्रमत्र कामक्रीडा वर्णनम्)।**

इत्थं च कामक्रीडायां संलग्नः रावणः सहसा वानराणां तर्जनं गर्जनं च श्रुतवान् इदं च ज्ञातवान् यत सर्वे वानर सैन्याः पुनर्जीविताः। लक्ष्मणश्च पुनर्जीवितः। सञ्जीविनीमानयित्वा हनुमता इत्थं चमत्कारः कृतः। शत्रवः निरापदाः सञ्जाताः। स शीघ्रमेव विलासमण्डपात् समुत्थाय मन्त्रणागृहमागतवान्।

(५) मायाशीदैप् पडलम् (मायासीता पटलम्)

अस्मिन् पटले इन्द्रजिता मेघनादेन पित्रा सह मन्त्रणां विधाय मायामयीं सीतां निर्माय तां रणभूमौ मारयिष्यति। तथा घोषणां करिष्यति यत् अयोध्यां गत्वा भरत शत्रुघ्नादीनि हत्वा अयोध्यां निर्मूलां विधास्यामि। एतेन रामलक्ष्मणौ स्वयमेव लङ्कां परित्यज्य अयोध्यां परावर्त्तयिष्यथः। अहं तु निकुंभिलां पूजयित्वा यज्ञं करिष्यामि। किन्तु अन्ते **इयं योजना न सफलीभूता** इति सारांशः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रावणो मन्त्रणागृहमागत्य अधुना किं करणीयम् इति विचारयितुं समारभत् तथा स दुःखानि च सविस्तरं वर्णितवान् । तत्र पुनरेकवारं माल्यवान् उक्तवान् । हे राजन् यः अशेषज्ञानवान् अस्ति यश्च लङ्कातः सुदूरतरं मेरुपर्वतं क्षणमात्रमेव प्राप्तवान् सम्पूर्ण औषधि पर्वतं समुत्थाय आनीतवान् पुनश्च तं तत्र परावर्तितवान् किं स हनुमान् सामान्यो वानरः ? यः एतावन्तं विशालं पर्वतं समानीतवान् । किं यदि स सम्पूर्णं मेरुपर्वतमेवानीय लङ्कायाः उपरि पातयिष्यति तर्हि किं भविष्यति ?

शास्त्रे लोके च इदं प्रसिद्धं यत् ब्रह्म विष्णु महेश्वराः त्रयो देवाः त्रिगुणात्मकाः सन्ति, किन्तु मम विचारे इदं तु न तथ्यम् आदिदेवतुल्यः हनुमान् चतुर्थो वर्त्तते । अतएव चत्वारो देवाः न नतु त्रयो देवाः । ये मृताः ते तु मृताः एव । ये जीवन्ति ते पुनर्जन्म प्राप्तवन्तः । अतएव अधुनाऽपि ममैवं विचारः यत् सादरं जानकीं रामाय समर्पयतु तथा च भवान् रामलक्ष्मणयोः शरणं गच्छतु । पुनश्च भविष्यवेत्ता माल्यवान् प्रोक्तवान । सर्वे वीराः मृताः केवलं भवान् वर्त्तते मेघनादो वर्त्तते तथा लङ्का नगरी विद्यते शोभते च । अतः अग्रे का विजयकामना । शान्तो सुभव स्थिरो भव हे राजन् ।

इदं श्रुत्वा रावणस्य नेत्राणि क्रोधज्वलितानि सञ्जातानि । तेनोक्तं मया सीता स्वकामनापूर्णं विना नैव त्याज्या । यूयं भयभीताः नाहं कापुरुषः भयाक्रान्तो वा । यद्यपि विभीषणेन सत्यमेवोक्तं नायं रामचन्द्रः नरः मुनिः नारायणो वा । अयं तु परात्पर ब्रह्मस्वरूपः परमेश्वरः । इति तु तथ्यम् । वीरतायाः इदमेव लक्षणं यद् गतं तद्गतम् । यत् शेषं वर्तते तेनैव सर्वं कार्यं करणीयम् । तत्र न किमपि चिन्तनीयम् । यद् भावि तद् भविष्यति । अहं निकुंभिला मन्दिरं गत्वा यज्ञं करिष्यामि । सम्पन्ने यज्ञे सर्वं दुःख विनंक्ष्यति । तदा इन्द्रजिता पृष्टं किं विभीषण द्वारा मार्ग दर्शनेन मम यज्ञः पूर्णो भविष्यति । रावणेनोक्तम् अस्तु अन्यो न कोपि उपायः ।

तदा इन्द्रजिता कथितं यत् मया मायामयी स्वर्णमयी सीता रचयिष्यते । तां सीतां युद्धक्षेत्रे असिना छेत्स्यामि । इदमवलोक्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रामः निश्चयं करिष्यति। अधुना अत्र किं प्रयोजनम्। इदं ज्ञात्वा अयोध्यायामपि समस्त पारिवारिकसदस्याः नाशं प्राप्स्यन्ति। अयोध्या नगरी विनष्टा भविष्यति। अतएव रामलक्ष्मणौ निश्चितमेव परावर्तयिष्यतः। एतन्मध्ये अहं निकुंभिलां गत्वा यज्ञं सम्पन्नं करिष्यामि। रावणेनोक्तं साधु वत्स एवमेव कुरु इदमेव शोभनम्।

एतन्मध्ये सुग्रीवेण रामाय परामर्शितं यत् अस्माभिः पुनः लङ्का दग्ध्वा तस्याः स्वरूपं च निर्मूलयितव्यम्। यावदेवं विचार विमर्शो जायतेस्म तावदेव औषधि पर्वतं सुमेरू क्षेत्रे विनिवेश्य हनुमान् समागतवान्। तथा च घोर नादं कृतवान्। येन लङ्कायां भूकम्पो जातः। वायुपुत्रः पश्चिम द्वारमागतवान् यत्र इन्द्रजित् आगत्य मिलितः। स च मायवी इन्द्रजित् जानकीसदृशीमेकां नारीं एकेन हस्तेन तस्याः केशं धृत्वा द्वितीयहस्तेन रुधिर-मांसयुक्त करवालं धृत्वा हनुमन्तम् अब्रवीत्। श्रृणुरे वायुपुत्र, अधुना तव समक्षं सीतां हनिष्यामि। एवं दृष्ट्वा हनुमान् विचलितो जातः। तेन चिन्तितं यत् इयं सैव सीता या मया अशोकवटिकायां दृष्टा। चिन्तितः हनुमान् अब्रवीत्, हे इन्द्रजित् ब्राह्मणकुलोत्पन्नः त्वं स्त्रीवध सदृशं पापं कथं कुरुषे। तव प्रपितामहः ब्रह्मा आसीत्। इन्द्रजिता प्रोक्तं पापपुण्ययोर्विचारः मया परित्यक्तः। अधुना इमां हत्वा लङ्कां सुरक्षितां शत्रुरहितां विधास्यामि। इमां तु मृतामेव जानन्तु। यदि सम्भवं तर्हि गच्छ अयोध्यां रक्षस्व अहं तत्र गन्तास्मि। तत्रायोध्यायां न कोऽपि जीवितः स्थास्यति।

अत्र सीता विलपन्ती आसीत् तदैव तां मायारूपणीं सीताम् असिना छेदितवान्। तस्याः शिरः छिन्नम्। इति कृत्वा अन्येन मार्गेण निकुम्भिलां गतवान्। हनुमान् सर्वं दृष्ट्वा किं कर्त्तव्यविमूढो जातः। शोचतेस्म यत् पापिना मेघनादेन लक्ष्मीस्वरूपा सीता निहता। अहं तु निरीहः पश्यन्नेव स्थितः स्व प्राणान् नात्यजम्। किं कुर्याम् इति न ज्ञायते मया। इत्यपि हनुमता चिन्तितं यत् इन्द्रजित् अयोध्यां गत्वा नाशं करिष्यति। यदि अहं तदनु अयोध्यां गमिष्यामि तर्हि रामः घटनामिमां न ज्ञास्यति अतएव अन्ततः रामसमीपमागत्य अश्रुधारां प्रवाहयन् हनुमान् भूमौ निपतितः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सहसा रामचन्द्रः भूमौ निपतितं तम् उत्थाप्य पृष्टवान् किं जातम् । हनुमता सर्वं निवेदितम् । रामः स्तब्धः निष्पन्दः संज्ञाहीनो जातः । किमिदं जातम् इति न कोऽपि ज्ञातवान् । तदा व्यग्रः सन् विभीषणः चिन्तितवान् तथा शीतल जलेन रामं चेतनाम् आनयत् । तत्र लक्ष्मणस्याऽपि स्थितिः विचित्रासीत् मेघनादः सर्वं नाशयिष्यति । मया सर्वं विनिष्टम् । अधुना तु केवलम् अस्मान् लौहनगरे रावणः पातयिष्यति । सर्वे परस्परं मौनीभूताः आसन् । तदा हनुमता उक्तं उभौ भ्रातरौ मम स्कन्धे स्थित्वा प्रचलताम् । त्वरितमेव अहम् अयोध्यां प्राप्स्यामि । तत्र गत्वा सर्वान् राक्षसान् नाशयिष्यामि । तस्मिन् काले तु सीतावधं दृष्ट्वा अहं चेतनारहितः जातः । तदैव इन्द्रजित् पलायितः । इदं सर्वं श्रुत्वा विभीषणं सविनयं निवेदितवान् । मया अनुमीयते यद् इयं मायामयी घटना वर्त्तते । मया स्वयं लङ्का गम्यते तत्र सर्वं दृष्ट्वा शीघ्रमागमिष्यामि तदा अग्रे किं करणीयम् इति निश्चयं करिष्यामः ।

एवं विभीषणः लङ्कां प्रविष्टः । तत्र स सीतां दृष्टवान् सा पूर्ववत् वर्त्तते अत्र त्रिजटा तां सान्त्वनां दत्तवती । इन्द्रजित् निकुम्भिलायाम् यज्ञार्थम् गतवान् सर्वे सैन्याश्च तत्रैव गच्छन्ति स्म । एवं दृष्ट्वा सहर्षं विभीषणः रामसमीपं परावर्त्त्य सर्वं निवेदितवान् । सर्वे सुस्थिराः जाताः । इन्द्रजितः माया न सफलीभूता ।

(६) निहुम् बिलै याहप् पडलम्

(निकुम्भिलायागपटलम्)

अस्मिन् पटले लङ्का देव्याः भगवत्याः निकुम्भिलायाः स्थाने इन्द्रजित् द्वारा विजयार्थं यज्ञ विधान वर्णनं सविस्तरं वर्त्तते । यत्र पुनः वानरराक्षससैन्ययोर्मध्ये तथा च लक्ष्मणमेघनादयोर्मध्ये तुमुल-युद्धस्यापि वर्णनं वर्तते । यद् वर्णनं कम्बन् कविना स्वकीय शैल्यामेव पूर्ववत् कृतम् इति सारांशः ।

भगवान् रामचन्द्रः मायासीता वध प्रदर्शन सम्बन्धिनीं कथां श्रुत्वा सन्तुष्टो जातः । तथा च विभीषणं हृदयेन आलिङ्ग्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीरामचन्द्रः उवाच। यत्र त्वम् असि, मारुतिः अस्ति, मम कृता तपस्या अस्ति तथा च ईश्वरोऽस्ति तत्र दुःखस्य किं स्थानम्। इति श्रुत्वा विभीषणेनोक्तं यदि आज्ञा भवेत् तर्हि लक्ष्मणं नीत्वा इन्द्रजितः निकुंमिला यज्ञं ध्वंसं करिष्यामि। रामेण तथैव आदिष्टम्। पुनश्च रामः भ्रातरम् उपदिष्टवान्। यत् ब्रह्मास्त्रं चालयेत् तर्हि त्वं तस्य प्रतिरोधं कुरुष्व। स्वयं ब्रह्मास्त्रं मा चालय। यदि त्वं चालयिष्यसि तर्हि त्रिभुवनं विनंक्ष्यति यदि स पाशुपतास्त्रं नारायणास्त्रं च प्रक्षिपेत् तदापि त्वं तद्विफलं करिष्यसि। स्वयं तदस्त्रं न चालय केवलं शत्रुणा सह युद्धं कृत्वा तं विनाश्य परावर्त्तय।

इदं तु ध्येयम् इन्द्रजित् महान् बलशाली मायावी च वर्त्तते। अतएव यदा स स्थग्नो भविष्यति तदा त्वया अस्त्रं चालयितव्यम्। एवं प्रकारेण रामचन्द्रः विविध प्रकारकं युद्धरहस्यं लक्ष्मणाय कथितवान्। इत्युक्त्वा एकं धनुः लक्ष्मणाय ददौ। यदधनुः श्रीविष्णोः एव सत्यं धनुः वर्त्तते। एतद्विषये तमिल ऋषिणा अगस्त्येन पूर्वमेव विवरणं प्रदत्तम्। इत्थं लक्ष्मणः युद्धार्थं प्रस्थितः। देवाः जयघोषान् मङ्गलशब्दान् च व्याहृतवन्तः। आशीर्वादं च प्रदत्तवन्तः। अङ्गद-मारुति-नील प्रभृति सेनापतयः हस्तेषु उल्कान् गृहीत्वा लक्ष्मणं पश्चात् प्रचलितवन्तः।

राक्षस सैन्यपक्षे बहवः सैन्याः विविध युद्धवाद्यैः अस्त्रशस्त्रादि सहितैः समुपस्थिताः सन्नद्धाः आसन्। अत्र २८-६७ पद्यैः **पल्लार पडै निनर्दु पल्लरियाय पल्लार पडै निर्नदु पल्लिपरैवण्" इति पद्ये यमकालंकारस्य चमत्कारः दर्शनीयः**। लक्ष्मणः लङ्कातः दक्षिणस्यां दिशि युद्धं कर्तुं प्रतस्थे यत्र तस्य वाण सञ्चालनेन प्रचण्ड पवन झञ्झावात तुल्येन सर्वाः दिशः व्याप्ताः वभूवुः। लक्ष्मण द्वारा छिन्न शत्रु शिरांसि गगनमध्यं गत्वा भूमौ नक्षत्रवत् पतितानि।

इन्द्रजिता दृष्टम् यत् मम सैन्याः छिन्न भिन्नाः जायन्ते। अतएव यथायोग्यं करणीयम्। निकुंमिला स्थाने यज्ञे कर्मणि संलग्नः इन्द्रजित् दृष्टवान् यत् होमकुण्डस्य अग्नि ज्वालाः शेषिताम्र-कुशप्रभृति यज्ञ साधनानि विशीर्णानि। मन्त्रोच्चारणं विस्मृतं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जातम् । सर्वं विहाय स युद्धस्थलमागतवान् । तेन इत्यपि निश्चितं यत् यज्ञः विध्वस्तः अतएव विजयस्याशा परिक्षीणा । लक्ष्मणेन साकं युद्धमेव श्रेयः । युद्धक्षेत्रे हनुमता इदमुद्वेजकवचनं प्रोक्तम् । किं तव मया कुत्रगता किं अयोध्यानगरी विनष्टाः किं भरतशत्रुघ्नौ निहतौ किं रामे नागपाशं ब्रह्मास्त्रं पाशुपतास्त्रं नारायणास्त्रं सञ्चालयिष्यसि । तव माया गता । तव यमराजः समुपस्थितः । स्वप्राणान् संरक्षस्व ।

इति श्रुत्वा मेघनादोऽब्रवीत् त्वं पद् वीरतायाः वचनं वदसि-यज्ञ विध्वस्तः, वयं विजिता इति सर्वं परित्यज्य मया सह युद्धं कृत्वा वीरतां प्रदर्शय । इत्थं च उभयोः सैन्ययोर्मध्ये तुमुलयुद्धं प्रारब्धम् । यत्र इन्द्रजित् द्वारा संचालितास्त्रेण हनुमान् निर्बलो जातः । तदा अङ्गदं मेघनादः दृष्टवान् यत् किं हनुमान् स्वर्गं गतः । इति श्रुत्वा अङ्गदः क्रुद्धः सन् युद्धाय सन्नद्धः । तदा पुनश्च मेघनादेनोक्तम् किं हनुमता अधिकं बलशाली असि गच्छ गच्छ इत्युक्त्वा स लक्ष्मणेन साकं युद्धार्थं समुपस्थितः । एतन्मध्ये एव मूर्च्छितः मारुतिः पुनः चेतनां प्राप्य पूर्ववत् सुप्रसन्नः तत्रोपस्थितः तथा लक्ष्मणं स्वस्कन्धोपरि संस्थाप्य युद्धं कर्त्तुं निबेदितवान् । ततश्च इन्द्रजित्-लक्ष्मणयोर्मध्ये उभयपक्षात् नाना दिव्यास्त्रसंचालनं जातम् येन इद् मपि युद्धं महत् प्रलयंकारी संबभूव । अत्र युद्धवर्णनं पूर्ववदेव कृतं कविना यस्य पिष्टपेषण न क्रियते ।

(७) "इनदिरशितु वदैप् पडलम्"
(इन्द्रजित् वध पटलम)

अस्मिन् पटले रावण मेघनादयोः कटु संम्वादः लक्ष्मणमेघनादयोर्मध्ये तीव्रतरं युद्धं तथा इन्द्रजित् मरणं सविस्तरेण वर्णितमस्ति इति सारांशः ।

युद्धक्षेत्रे केचन वानराः कथितवन्तः यत् इन्द्रजित् आकाशे विलीनः । स वञ्चकः मायावी वर्तते किमपि कर्त्तुं शक्नोति । तत्र

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सहसा रावणः समुपस्थितः। पुत्रं दृष्ट्वा रावणः प्रोवाच ज्ञायते यत् यत् तव यज्ञः नैव पूर्णतां प्राप्तः। अतएव इयं स्थितिः। इन्द्रजिता कथितं लक्ष्मणः यज्ञस्थलं स्वपरिधौ कृत्वा यज्ञं ध्वंसमकरोत्। मया च त्रीणि दिव्यास्त्राणि प्रयुक्तानि ब्रह्मास्त्र पाशुपतास्त्र नारायणस्त्राणि लक्ष्मणेन अवरुद्धानि। तत्र नारायणास्त्रं लक्ष्मणं परिक्रम्य निर्गतम्। इदं तु अस्माकं पापस्य फलम्। अधुना निश्चितं स माम् हनिष्यति।

इदं श्रुत्वा रावणः विहस्य अब्रवीत्। पुत्र चिन्ता मा कुरु। अहमद्यैव तव शत्रून् जेष्यामि मया शत्रुता निज बलेन कृता। न च सैन्य बलेन न च पुत्र बलेन वा। किं सत्यपि विंशति हस्ते सीता परित्यागः वरम्। यदि यावत् पर्यन्तं वेदाः स्थास्यन्ति सूर्याचन्द्रमसौ स्तः तावत् पर्यन्तं यदि **'रामनाम'** स्थास्यति तर्हि ममापि नाम स्थास्यति। एकस्मिन् दिने तु मरणं निश्चितम् न कोऽपि अमरो वर्तते। अतः यशसा साकं मरणं श्रेयः। यदि मया जानकी रामाय प्रदीयते तर्हि देवाः समागत्य बन्धने दास्यन्ति, मम निन्दां करिष्यन्ति। मां तिरस्करिष्यन्ति। अतएव यथासम्भवं शत्रून् निर्मूलं कृत्वा मरणं वरिष्यामि।

अधिककथनेनालम् त्वं स्व प्रासादं गच्छ। अस्त्राणि शरीरतः निष्कासय तथा रात्रि यावत् विश्रामं कुरु। एवमुक्त्वा रावणः स स्वरथमुपविश्य प्रचलितः। तदा इन्द्रजित् स्व पितरं प्रणम्य सविनयमुवाच कृपया भवान् क्रोधं परित्यजतु। मया यत् सत्य-हित-वचनं कथितं तत् क्षमस्व। मम पराजयानन्तरमेव भवद्भिः युद्धे गन्तव्यम्। इत्थमुक्त्वा मेघनादः सदिव्यरथमुपविश्य पुनः युद्धक्षेत्रं प्रस्थितवान्। राक्षससैन्याः गर्जितवन्तः।

तदा विभीषणेनोक्तम् यदि अस्मिन् काले इन्द्रजितं भवान् त्यक्ष्यति अथवा केनापि प्रकारेण स न मृतः तर्हि विजयः संदिग्धः। वीराग्रगण्यः वीरः दिव्य धनुर्धारी वर्तते। तदुपरि देवानां पुष्पवृष्टिः जाता अतएव त्वर्यतां भवद्भिः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ततः लक्ष्मणो विस्मृतो जातः। यान्यस्त्राणि लक्ष्मणः सञ्चालयति तानि मेघनादः विनाशयति। तत्र पुनः विभीषणः प्रोक्तवान् हे वीर इदमपि सम्भवं यत् स इन्द्रजित् आकाशे गन्तुं शक्नोति। कामापि वञ्चनां कर्तुं शक्नोति। स अन्धकारे न मरिष्यति। दिने एव तस्य मारणं नात्र चिन्ता विधेया। इत्थं च उभयोर्मध्ये क्रूरतरं युद्धम् अभूत्। उभयोः सैन्ययोर्मध्ये च घोरतरं युद्धमभवत्।

तत्राद्भुत संग्रामे इन्द्रजितः करः प्रथमं छिन्नः। तदनन्तरं तस्य शिरः छिन्नं। लक्ष्मणेन। यत् शिरः वक्त्र विद्युत् सहितं कृष्ण मेघ सदृशं छिन्नं भूमौ पतितम्। वानराः ननन्दुः देवाः पुष्पवृष्टिं चक्रुः। लक्ष्मणश्च विजय श्री प्राप्य रामचन्द्र समीपं समागतवान्। रामचन्द्रः आनन्देन विह्वलो जातः। तस्य नेत्राभ्यां आनन्दाश्रूणि निर्झरितानि। लक्ष्मणं हृदयेनालिङ्ग्य तस्य युद्ध कष्टं पीड़ां च विनष्टवान् रामचन्द्रः। यथा च पुनश्च रामेणोक्तम् अस्य विजयस्य गौरव न तव वर्तते न च हनुमतः वर्तते, न च देवानां विशेषता वर्तते सत्यंत्विदं यद् अयं गौरवः विभीषणस्य निष्ठायाः तत्परतायाश्च एव। नात्र कश्चन सन्देहः। इदं वृत्तान्तं राम शिविरस्य। रावण शिविरस्य वृत्तान्तमग्रिम पटले पठन्तु।

(८) इरावणन् शोहप् पडलम् (रावण शोक पटलम्)

इन्द्रजित् वधानन्तरं रावणसैन्याः पलायिताः लङ्कां प्राप्तवन्तः। राक्षसनार्यः प्राङ्गणे समुपविश्य करः सन्ताडयन्त्यः रुदत्यः आसन्। तत्र कश्चन गत्वा रावणाय न्यवेदयत्, तव पुत्रः मृतः। इदं श्रुत्वैव क्रोधाभिभूतः रावणः तस्य दूतस्य मस्तकं चिच्छेद। यतोहि तस्य मनसि पुत्रवियोग दुःख-क्रोधौ सममेव गतौ। तेनेयं घटना जाता। ततश्च रावणः चीत्कारं कुर्वन् हा तात, हा पुत्र, हा प्राणप्रिय, त्वं कुत्र गतः। किमभूत्, किं मया कृतम्, एभिः करुणविलापैः लङ्कां प्राचीरं गुञ्जितमभूत्।

पुनः रावणोऽब्रवीत् रामपक्षे हर्षोल्लासः सञ्जातः। वानरा ननन्दुः। देवाः दुन्दुभयः नेदुः। भष्मधारी . शिवः, चक्रधरः विष्णुः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यः तव भयात् क्रमशः कैलाशे क्षीरसागरे च प्रच्छन्नः आसीत् तौ सानन्दं वहिर्गतौ। इति त्वयाभीताः आकाशचारिणो देवाः पुनर्निर्गताः। एवं ब्रुवाणः कदाचित् रावणः उत्तिष्ठति, कदाचित् तिष्ठति, कदाचित् धावति। कदाचित् भूमौ पतति, लुण्ठति च येन भूमिः कम्पिता जाता।

अत्र रावणः **क्रमशः दशशिरोभिः विभिन्न प्रकारक वचनैः शोकं व्यनक्ति। एकेन शिरसा** प्रोक्तं, हा तात आगच्छ, **द्वितीयेन प्रोक्तं** कथं मया राज्यं करिष्यसि, **तृतीयेन प्रोक्तं कुत्रासि ? चतुर्थेन** प्रोक्तम् आगत्य ममालिङ्गनं कुरु, **पञ्चमेन कथ्यते** किं हरिणः व्याघ्रस्य प्राणान् हरति, **षष्ठेनोक्तं** नीलकण्ठस्य तदस्त्रं कुत्र गतम्, **सप्तमेन** पृच्छ्यते किं "त्वं सत्यमेव मृतः" **अष्टमं शिरः ब्रूते** 'इन्द्रस्य कीरीटं विजित्य त्वं स्वशिरसि धृतवान् तत् शिरः कुत्र ? **नवमं शिरः ब्रूते किम्** अत्र नार्यः स्व मङ्गल सूत्राणि त्यक्ष्यन्ति ? **अन्ते च दशमेन शिरसा** प्रोक्तं हा तात्, हा पुत्र, मां परित्यज्य त्वं कस्मिन् लोके गतः।

ततश्च युद्धक्षेत्रे समागत्य रावणः पुत्रस्य सकलाङ्गानि स्पृशन् विलापं चकार। सखीभिः सहिता माता मन्दोदरी तत्रागत्य यादृशं विलापं कृतवती तद् वर्णनं हृदयविदारकं महत् कारुणिकं च। अत्र पृथक् पृथक् दशभिः मुखैः दशप्रकारकं विलाप वर्णनमदभुतं चमत्कार पूर्णम्।

(६) पडैककाट् चिप् पड्लम (सेना सन्दर्शन पटलम्)

अस्मिन् पटले राक्षसाः रावणाय यथायोग्यं सान्त्वनां प्रददुः। तथा च कथितवन्तः यत् विभिन्न देशेभ्यः विपुल वलशालिनः योद्धारः भवतां साहाय्ये समागताः सन्ति। तान् कृपया पश्यन्तु भवन्तः तथा च यथायोग्यं तेभ्यः निर्देशं ददतु। इति सारांशः।

रावणेन पृष्टः किं सैन्याः समागतवन्तः ? दूताः ऊचुः, एवम्, कथं ते एकत्र स्थास्यन्ति तेषां कृते स्थानं नैव पर्याप्तम्। तथापि सागर-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सदृशान् विभिन्न देशेभ्यः समागतान् वीरान् क्रमशः रावणः स्वकीय-प्रासादस्थ गोपुरं गत्वा सैन्यान् ददर्श क्रमशः सैन्यैः तेषां परिचयः प्रदत्तः ।

(क) अयं **शाकद्वीपवासी** महाबलशाली मेघस्पर्शी **'मायावी'** वर्तते ।

(ख) अयं **कुशद्वीपवासी** साक्षात् **'विजयमूर्तिः'** वर्तते ।

(ग) अयं **शालममलीद्वीपवासी 'देवविजयी'** वर्तते ।

(घ) अयं **कौञ्चद्वीपवासी 'देवानां भयकारकः'** वर्तते ।

(ङ) अयं च **प्रवालपर्वतवासी** शुक्राचार्यस्य **'जारजपुत्रः'** ।

"नूतनमिदं वर्णनम्" । अथ च केचन मुद्गरहस्ताः, केचन त्रिशूलधारिणः, केचन भुशुण्डिधारिणः, केचन धनुर्हस्ताः केचन पुष्करद्वीपवासिनः, केचन च प्लक्षद्वीपवासिनः विद्यन्ते । तथा च वहवः पातालवासिनः यमसदृशक्रूराः वासुकीनाग सदृश विषधराः वर्तन्ते ।

तान् दृष्ट्वा रावणः स्वकीयसीताहरणादारभ्य मेघनादवध पर्यन्तं सर्वं घटनाचक्रं तेभ्यः कथयामास । इदं श्रुत्वा ते सैन्याः अवदन् तिष्ठन्तु भवन्तः वयं युद्धक्षेत्रं गच्छामः ।

(१०) मूलबल वदैप् पडलम् (मूलबल वध पटलम्)

एतदनन्तरं सेनानायकान् प्रति रावणेनोक्तम्, एकेन मार्गेण गत्वा मया वानर सेना विध्वंसयिष्यने । यूयं द्वितीयेन मार्गेण गत्वा रामलक्ष्मणौ हनिष्यथः । एवमुक्त्वा रावणः प्रचलितः तथा च विचारितवान्, यत् मम महती मूलवलसेना पर्याप्ता वर्तते । अतएव मूलवलान् संप्रेष्य स्वयं रथमारूह्य वानर सैन्यानामुपरि आक्रमाणार्थं गतवान् ।

एतावती महती सेना लङ्कायां तथैव अतिष्ठत यथा समस्त ब्रह्माण्डम् अन्तः कृत्वा वामनावतारः विष्णुः प्रकटितवान् । अर्थात्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मूलबलसेना तथा विशाला आसीत्, यस्याः उपवेशनं स्थानं लङ्का नगर्याम् असम्भवम्। एते मूलबलाः स्वकीय विशाल हस्तैः समुद्रं विदार्य स्वेच्छानुसारं मत्स्यान् मकरग्राहांश्च मुखेन निगलिताः। एतान् सैन्यान् अवलोक्य देवाः भयभीताः जाताः। तथा भगवन्तं नीलकण्ठं निकषा गत्वा निवेदितवन्तः यत् वयं कुत्र तिष्ठेम इति स्थानं न दृश्यते। एते सैन्यबलाः अस्मान् प्राणान् सहसा नाशयिष्यन्ति। अस्माकं शक्तयः क्षीणाः। यदि सहस्रशः अपि रामचन्द्राः आगच्छेयुः तथा चतुर्विंशति वर्षपर्यन्तं युद्धं कुर्युः तथाप्येते निशाचराः न नाशं प्राप्स्यन्ति।

तदा नीलकण्ठेन भगवता शिवेन प्रोक्तम्। मा भैषीः, ईश्वरेच्छया एव एते एकत्रीभूताः जाताः। विधेर्विधानेनैव एकदैव एते नाशं प्राप्स्यन्ति। एतान् सैन्यान् दृष्ट्वा वानराः तथैव पलायिताः यथा मूषिकाः पलायन्ते। केवलं सुग्रीवाङ्गद सहितः हनुमान् रामचन्द्रं परित. आसीत्। अन्ये सर्वे इतस्ततः भयभीताः पलायन्ति स्म।

एवं दृष्ट्वा रामचन्द्रः विभीषणाय प्रोक्तवान् यत् एते सैन्याः कुत्र आसन्? विभीषणः प्रोवाच, सप्तद्वीपे स्थिताः सागरतुल्याः इमे राक्षसाः दशदिशाभिः समानीताः रावणेन। इमे एकदैव मरिष्यन्ति इति ममान्तरात्मा कथयति। तदनन्तरं रामः अङ्गदं प्रोवाच, स्व-सैन्यान् शीघ्रमेव परावर्तयस्व, न किमपि भयस्थानम्। अङ्गदः गत्वा तान् परावर्ततितवान्। इत्थं च सर्वे वानरसैन्याः समावित्ताः बभूवुः। ते चोक्तवन्तः पूर्वं तु एक एव रावणः आसीत्, यस्य दश शिरांसि विंशति हस्ताः सन्ति, अधुना तु असङ्ख्यशिरांसि अगणित कराः वर्तन्ते, न जाने किं भविता।

तदनन्तरं वानराः अब्रुवन्, एतेषां सैन्यानामग्रे हनुमतः सुग्रीवस्य अङ्गदस्य च भुजबलानि क्षीण-तराणि दृश्यन्ते। एतच्छ्रुत्वा जाम्बवान् ब्रवीति हे बुद्धिमन्तः **येन हनुमता साक्षात् सूर्यदेव ऐन्द्र व्याकरणाध्ययनं कृतम्,** तथा च रामचन्द्रः साक्षात् क्षीरसागरशायी विष्णुरेव। ततः भवतां भयस्य न किमपि कारणं, कथं वयं कातराः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भवेम। राक्षसानां सङ्ख्या भवन्तु नाम असङ्ख्याका, किन्तु तत्र पापानि वर्तन्ते धर्मो नास्ति। पापानामुपरि सदा धर्मस्य विजयो भवति इति निश्चितम्। ततः पुनः वानराः अब्रुवन् वयं माल्यवन्तं, मालिनं, कालनेमिम्, हिरण्यकशिपुं, मधुकैटभम्, हलाहलं च दृष्टवन्तः, किन्तु तेऽपि नैतावन्तः बलवन्तः। तदुपरि इमे मायाविनः वरदानेन उन्मत्ताः। अतएव वयं एतान् मूलबलान् अवलोक्य चिन्तिताः स्म। अस्तु सत्यामप्येवं स्थितौ वयं युद्धं करिष्यामः। किन्तु पुनः रामचन्द्र दर्शनं भविता न वेति संशयः। इत्थं च अङ्गदेनोक्तम्-शत्रूणामुपरि विजयः अथवा शत्रोः पराजयः किन्तु ताम् चिन्तां विहाय वयं सर्वे सन्नद्धाः भवेयुः इति वरम्।

रामचन्द्रः भयभीतान् वानरान् दृष्ट्वा लक्ष्मणं कथितवान् लक्ष्मण! भवन्तुनाम् असङ्ख्याः राक्षसाः, किन्तु ममाग्रे न ते स्थातुं शक्ष्यन्ति इति तु निश्चितम्। केऽपि सैन्याः भयभीताः युद्धरताः दृश्यन्ते। अतएव त्वं हनुमता सुग्रीवेण साकं त्वरितं गत्वा सेना-संरक्षणं कुरुष्व। लक्ष्मणेन तथैव कृतम्। तदा हनुमान् लक्ष्मणं स्व-स्कन्धे संस्थाप्य युद्धे प्रचलितः। एवमवलोक्य रामेणोक्तम्, हे भक्त हनुमन् त्वया न किमपि असाध्यं यावत् पर्यन्तं त्वं युद्धभूमौ लक्ष्मणेन साकं स्थास्यसि तावत् पर्यन्तं न कोऽपि किमपि कर्त्तुम् शक्नोति। तव साहाय्येनैव लक्ष्मणेन इन्द्रजित् घातितः। त्वं गच्छ, रामचन्द्रः पुनः विभीषणं प्रोक्तवान्, त्वमपि लक्ष्मणेन सह गच्छ। क्रूर राक्षसानां मायां त्वमेव जानासि। यथासमयं लक्ष्मणं सावधानं विद्ध्यात्। विभीषणः तथैव कृतवान्।

सूर्यपुत्रः सुग्रीवः रामेण साकं प्रचलितः। भगवान् रामचन्द्रः धनुर्गृहीत्वा प्रत्यञ्चामाकृष्टवान्, किन्तु मुनयः धार्मिकाः वेदज्ञाः देवाश्च एकाकिनं रामं दृष्ट्वा अधीराः सञ्जाताः। तेषां नेत्राणि अश्रुपूर्णानि सञ्जातानि। ते प्रार्थितवन्तः यत् रामो विजयताम् अथ उभयोः सैन्ययोर्मध्ये विशालं युद्धं समारभत यस्य विस्तृत वर्णनम् नावश्यकम्। यतोहि पूर्ववत् कम्बन् कविः स्वकीय वर्णनशैल्यामेव तुमुल युद्धवर्णनम् कृतवान।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रामवाणेन राक्षससैन्याः क्रमशः विनष्टाः जाताः। किन्तु कोटिशः गजाश्वयुक्ताः रथाः राक्षसपक्षे आसन्। रामस्तु एकाकी आसीत्। किन्तु रामः कस्मिन् क्षणे कस्यां दिशि कुत्र कथं याति आयाति प्रयाति इति कोऽपि तस्य तीव्रतायां ज्ञातुं नाशक्नुवन्। राक्षसाश्च चकित चकिताः सञ्जाताः, रामवाणेन तत्र रक्तधाराः प्रवाहिताः।

शास्त्रे वर्णितं यत् **घृत, दधि, मधु, दुग्ध इक्षु**, लवण, **शुद्धजलमयाः** इति **सप्त समुद्राः वर्तन्ते।** किन्तु ते सप्त समुद्राः एकेन **रामधनुः कारणेन सप्तसङ्ख्यान् परित्यज्य एकमेव रक्तमयं जातम्।** इत्थं च रावणस्य मूलबल सैन्याः विनाशतां प्राप्तवन्तः। देवाः पुष्पवृष्टिं चक्रुः। देवेन्द्रः जयमालां दधौ। **अपौरुषेयाः वेदाः सुरक्षिताः, आदि शेषः स्व शिरः समुन्नतं विधाय, दुःख निवृत्तो जातः।** वानरसैन्याः निर्भयाः जाताः। सर्वेषां परिश्रमाः दूरीभूताः। इति विदांकुर्वन्तु विद्वांसः।

(११) वेलेर् र् पड्लम्-शक्ति सहन (धारण) पटलम्

मूलबलवध पटले रामस्य भयङ्कर युद्धं दृष्ट्वा श्रुत्वा च रावणः असङ्ख्य गजाश्वयुक्तः देव संहारकं धनुः वाणं तुणीरमादाय युद्धभूमौ प्रस्थितवान्। असङ्ख्य कोटि रथाश्व सैन्ययुक्तः रावणः सिंहसदृशः त्रिभुवनं कम्पायमान वज्रसदृश ध्वनिं कृत्वा युद्धभूमौ समागतवान् येन चतुर्दश भुवनानि कम्पितानि। पुनश्च वानराः कम्पिताः भयाक्रान्ताः सन्तः अपि लक्ष्मणं पृष्ठतः तथा चावलोकितवन्तः यत् यथा यथा लक्ष्मण शराः गच्छन्ति तथा तथा ते दानवाः रक्त स्रोतांसि मृताः तीर्णमाणाः अदृश्यन्त।

स्वसैन्यनाशम् अवलोक्य रावणः चिन्तितवान्। यत्र वानराः केवलं वृक्षैः पर्वतखण्डैश्च युद्धं कुर्वन्ति, तत्र असङ्ख्य परशुशूल-भुशुण्डि, असिकरवालैः युद्धचन्तः अपि मम सैन्याः सम्पतिताः जायन्ते। तदा रावणः स्वयं शस्त्रास्त्राणि प्राक्षिपत्। येन वानराः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छिन्नभिन्नाः पलायिताः तदा लक्ष्मणेनोक्तम् हे हे वानरसैन्याः, भयं परित्यजेथाः। शीघ्रमेव एतेऽपि सैन्याः लक्ष्मणश्च समाहताः सञ्जाताः। यतोहि रावणेन मन्त्रपूरितम् अद्वितीयं मोहनास्त्रं प्रक्षिप्तम्, तमलोक्य विभीषणः लक्ष्मणं मन्त्रितवान्, यत् भवान् त्वरितमेव नारायणास्त्रं संचाल्य रावणस्य मोहनास्त्रं विखण्डयतु। लक्ष्मणेन तथैव कृतम्। रावणः विभीषणोपरि महान् क्रुद्धः सञ्जातः यतोहि तेनैव सङ्केतितः लक्ष्मणः मोहनास्त्रं विखण्डितवान्।

इत्थं च रावणः अमोघास्त्रं विभीषणोपरि प्रहारितवान्। लक्ष्मणः तम् दृष्ट्वा विभीषणं प्रोक्तवान् भयं मा कुरुष्व। अहमेवास्त्रमिदं खण्डयिष्यामि। एवं हि रावणः आकाशे मायया निलीनः सञ्जातः। तथा च आकाशादेव विभीषणोपरि दशामोघ-बाणान् संचालितवान्। हनुमतः उपरि सहस्त्रशरान् प्रक्षिप्तवान्। रावणेन ज्ञातं यत् युद्धे मम विजयो जातः।

सर्वामिमां घटनां दृष्ट्वा जाम्बवान् समागत्य हनुमतः शरीरात् सर्वान् बाणान् निष्कासितवान्। हनुमान् त्वरितमेव पुनः उत्तरस्यां दिशि गत्वा औषधिपर्वतमानीतवान्। तस्य औषधिगन्धेनैव सर्वे सैन्याः समुज्जीविताः लक्ष्मणश्च समुत्थाय हस्ताभ्यां हनुमन्तं समाङ्कितवान् जिज्ञासितवान् च यत् विभीषणः कुत्र वर्तते? तेनोक्तम् भवत् पार्श्वे एव विभीषणः विद्यते। इत्थं च रावणसैन्याः निहताः सर्वां घटनां गत्वा रामचन्द्राय निवेदितवान्। इत्थं च लक्ष्मण विभीषण सुग्रीवाङ्गदादि सहितः रामचन्द्रः एकस्मिन् पर्वते विश्रामार्थं गतवान्।

(१२) वानरर् कलङ्गाणपड्लम्-वानर समराङ्गणदर्शन पटलम्

श्रीरामचन्द्रस्य विश्रामानन्तरं कपिराजः सुग्रीवः श्रीरामसमीप-मागत्य यथाविधि प्रणामादिकं कृत्वा मृत्तान विपुल राक्षसान् दृष्ट्वा विस्मितो जातः। ततश्च सूर्यपुत्रः सुग्रीवः रामं पृष्टवान् कथमेते विशाल राक्षसाः मृताः। रामचन्द्रः सुग्रीवं नीत्वा युद्धस्थलं दर्शयितुं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रचलितः। विभीषणोऽपि युद्धस्थलं गत्वा तत्र भूतप्रेतादिकं गृध्र-श्रृगालादिकं च भ्रमन्तं दृष्ट्वा भयभीतो जातः। एतस्मिन् क्षणे विभीषणस्य या स्थितिः जाता सा अवर्णनीया। वानराश्च विभीषणं पृष्टवन्तः यद् भवानेव एतेषामपार-सैन्यानां वध कारण विवरणं ददातु।

विभीषणेनोक्तम्-एते पर्वताकाराः रावणगजाः मृताः सन्ति। यत्र पर्वतं मत्वा मेघाः समापतन्ति। एते च निहताः क्रूराः राक्षसाः मृताः पर्वतोपरि सुप्ताः इव दृश्यन्ते। एते च अश्वयुक्ताः रथाः वज्रतुल्य सामवाणेनाहताः समुद्रे निपतिताः, ये च तत्र नौकासदृशाः इव दृश्यन्ते। राक्षसमांसान् भुक्त्वा एते भूतगणाः नृत्यन्ति। राक्षस-रक्तैः व्याप्ताकाशे चन्द्रोऽपि सूर्यवत् रक्तरञ्जिता दृश्यन्ते। इत्थं च चतुर्दश कोटि परिमिताः मृताः गजाः सन्ति। येषां मदनीराः अधुनाऽपि न शुष्यन्ति।

इत्थं च ते वानराः विभीषण सहिताः श्रीरामचन्द्रं निकषा समागत्य रामस्य युद्धवल कौशलं विचार्य, तथा रामचन्द्रस्य युद्ध-परिश्रमं च विचार्य चिन्तां कृतवन्तः।

(१३) इरावणन् कलङ्गाण पड्लम्-रावणयुद्धस्थल सन्दर्शन पटलम्

रावणस्तु लक्ष्मणं मृतं ज्ञात्वा अमन्दानन्दे मग्नः प्रसन्नचित्तः आसीत्। तस्य मनसि तीव्रा इच्छा जाता यत् मां प्रति ये केचन योद्धारः समागतवन्तः युद्धे च संकटान् सहजान् कृतवन्तः तेभ्यः भोज्य पदार्थं भक्षयेम। इति निश्चित्य देवलोकवासिनं शीघ्रमाहूय आज्ञापयामास यत् देवलोके यथा भोज्य पदार्थाः निर्मीयन्ते तथैव निर्मीयताम्। अन्यथा यूयं दण्डभागिनः भविष्यथ। ते तथैव मद्य मांस खाद्यपदार्थान् वस्त्र चन्दनादिकं पुष्प स्नानयोग्य सुगन्धित जलादिकं शोभन शय्यादिकं च त्वरितमेव समानीतवन्तः। तथा च स्वर्गवासिन्यः अप्सरसः सेवार्थं समागतवत्यः, यासु काश्चन गायन्ति स्म, काश्चन नृत्यन्ति स्म, काश्चन च शोभन-शय्यायां तैः राक्षसैः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साकं सम्भोगं-कृतवत्य: । इत्थं च रावण: भोगविलासे, संलग्न: आसीत् ।

एतन्मध्ये एव अङ्गरक्षका: दूता: रावणं निकषा समागत्य तस्य कर्णे सूचितवन्त: यत् समस्तं मूलबलं रामेण विनष्टम् । तेषां दूतानां जिह्वा श्लथा जाता श्वासाश्च परिक्षीणा: शरीराणि कम्पितानि । एवं च ते कथितवन्त: यत् अस्मिन् नगरे ये सन्ति ते एव जीविता: सन्ति नाय: कोऽपि । अतएव भवन्त: मृतबलि-प्रबन्धं कुर्वन्तु न भोज्य प्रबन्धम् ।

इति श्रुत्वा रावण: क्रोधसंयुक्त: कम्पमान: स्तब्ध: सञ्जात: । रावण: मनसि चिन्तयति यत् मूलबलवीरास्तु मत्त: अपि बलवन्त: आसन् कथं ते मृता: । कथं तेषु नैकोऽपि जीवति इति न कदापि विश्वसनीयो वर्तते । तदा माल्यवान् कथितवान् । नायं समाचार: अविश्वास योग्य: । एते दूता: न् असत्यवादिन: । यथा युगान्ते रूद्ररूप: महादेव: क्षणमात्रे चतुर्दश लोकान् नाशयति तथैव रामेण कृतम् । यतोहि क्षीरसागरशायी देवाधिदेव: राम: साक्षात् परमात्मा । यथा अग्नि: सर्वं भक्षयति सर्वं भस्मी करोति यथा च प्रलयकालीन: पवन: वृक्ष पर्वतादिकं नाशयति तथैव राम: सर्वं नाशितवान् ।

रावणेनोक्तम्, मया तु लक्ष्मण: निहत: । कथं स जीवितो जात: । माल्यवान् उक्तावान् हनुमता समानीता संजीवनी लक्ष्मणं संजीवितवतीनात्र विलम्बो जात: । तथाऽपि रावण: विश्वासं नैव कृतवान् तथा स्वकीय गोपुरे आरूह्य ददर्श यत् मम सेना मृता: सन्ति छिन्नभिन्ना: सन्ति । इत्थं हि क्रोधयुक्त: रावण: मन्त्रणामण्डपे समागत्य राज्यसिंहासने उपविवेश ।

(१४) इरावणन् तेरेरूपड्लम्-रावणरथारोहन पटलम्

रावण: भूधराकारं 'महोदर' नामानं राक्षसम् आज्ञापयामास यत् सैन्यान् सज्जय । ये सैन्या: अवशिष्टा: सन्ति ते युद्धे प्रचलन्तु । गजोपरि-दुन्दुभि स्थापयित्वा सर्वत्र दुन्दुभिनादेन सन्देशं प्रसारयतु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यत् रायण: स्वयमेव योद्धुकाम: प्रचलति । इत्थं श्रुत्वा तत्र असङ्ख्य कोटि पदाति सैन्या: एकत्रीभूता: सञ्जाता: पुनश्च लङ्कापुरी सैन्येन सुशोभिता जाता । तत: रावण: भूतभावनं भगवन्तं शिवं वेदमन्त्रै: पूजयामास । तथा च सुदीर्घयुद्धार्थं प्रस्तुतो जात: । स्वकृत यज्ञे ब्रह्मणा प्रदत्तं कवचं सन्धार्य अस्त्रशस्त्रयुक्त: **किं-पुरीं नामकम् आभरणम्** च धारयामास । क्रमबद्धरूपेण युद्ध संचालनार्थं मन्दराचल पर्वतसदृशं सुशोभितवान् ।

स्कन्दपुराणे-**वेलरपुराणे**-च एका कथा वर्तन्ते एका सुन्दरी मुनि-पत्नी आसीत् । एकदा स मुनि: कुत्रापि गच्छति स्म । तदा इन्द्र: सूर्यश्च तया सह सम्भोग कामनया तत्र समागतवन्तौ । तत्र सूर्य: तया सह भोगं कृतवान् । एतन्मध्ये मुनि: समागतवान् तथा सूर्यं शापितवान्, यत् त्वं निस्तेजो भव । तदा विश्वकर्मा सूर्यं स्वकीय-मन्त्रेण पुन: साणितं कृत्वा प्रकाशमयं कृतवान् । एवं च रावण: त्रैलोक्य विजय कामनया रथमास्थाय युद्धार्थं प्रस्थित: । तेन शपथ: कृत: यत् अद्य रामवधानन्तरं सा सुकेशिनी सीता राममरणं ज्ञात्वा मां स्वीकरिष्यति । अथवा मन्दोदरी एव विधवा भविष्यति । उभयोर्मध्ये एकं तु निश्चितमेव ।

एवं च रावण: युद्धार्थं प्रस्थितवान् । एवं ज्ञात्वा विभीषण: रामं निवेदितवान् यत् रावण: विशाल सैन्यै: सह युद्धार्थं समुपस्थित: । मम सैन्या: कम्पिता: निर्बलाश्च सञ्जाता: । अतएव यथायोग्यं शीघ्रं युद्धार्थं तत्परो भवतु ।

(१५) इरामपिरान् तेरेरु पड्लम्-श्रीरामरथारोहणपटलम्

विभीषणवचनं श्रुत्वा राम: सहसा उत्थाय युद्धार्थं सन्नद्धो जात: । स दु:खितान् वानर सैन्यान् अवलोक्य तथैव प्रोक्तवान् यथा विष्णुरूपे शेषनाग शय्यात: समुत्थाय तेविभ्य: अभयदानं ददौ । स राम: य: साक्षात् परमतत्वस्वरूप: वर्तते । स एव संसारस्य कवच-तुल्यरक्षक: । तेनैव रामेण स्वकीय शरीरे कवच: धारित: । एतेन ज्ञायते तत् कवचम् ईश्वरतुल्यम् । एवं भूतं रामं दृष्ट्वा सिद्धा:

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुनयः देवाश्च निश्चितवन्तः यत् रावणस्य शीर्षगुच्छं-मस्तकसमूहं विनाशतां प्राप्स्यति ।

तदा चतुर्भुजः ब्रह्मा अब्रवीत्-युद्धोऽयम् एकस्मिन् दिने एव समाप्तो भविष्यति । रामः विजयी भविष्यति, भयं परित्यत्य केवलं शीघ्रं स्वर्णरथं राम समीपं संप्रेषय । इति श्रुत्वा देवेन्द्रः सारथिं मातलिम् आज्ञापयामास यत् त्रिभुवनभ्रमणशालिनं सर्वसाधनयुक्त रथं शीघ्रमानीय रामं निकषा गच्छतु ।

तस्य रथस्य **"काडियजु"** नामके भागे सप्त कुलगिरीणां वलमासीत् तथा च तस्य रथस्य रज्जु समूहः अष्टमहानागसदृशः विद्यते । तत्र **कैलाश-हिमालय-मन्दर-विन्ध्य-निषध-हेमकूट-नील नामानः सप्त गिरयः** तथा च **वासुकी-अनन्त-दक्ष-शङ्कपाल-गुलीक पद्म कर्कोटक नामानश्च अष्टौ महानागाः आसन्** । सर्वेषां विध्वंसनाय विनाशाय च शक्तिः एतस्मिन् रथे विद्यते । एवम् भूतः दिनमास वर्ष भूत भविष्य कालादि अङ्गरूपः नक्षत्र-रत्नजटितः स विजयी रथः आसीत् । तथा च **रथोऽयम् चतुर्वेदपूर्णः पूर्णयज्ञस्वरूपः क्षीर, दधि, घृत, इक्षु, मधु, मदिरा, लवण नामक सप्त समुद्रतुल्यः पूर्वोक्त सप्तपर्वतसदृशः पञ्चभूत अग्नित्रय, पञ्चान्तःकरण पञ्चाग्नि चतुर्दिक त्रिगुण संचरणशीलः दश पवने सुदीर्घ दिनरात्रौ गमनशीलः स रथः आसीत्** ।

इत्थं रथवर्णनं वाल्मीकीय रामायणादौ न दृश्यते इयं च कम्बन् कवेः नवीना गुरूतरा गरिमामयी महिमामयी परिकल्पना विद्यते ।

एवम् रथम् समागतम् दृष्ट्वा श्रीरामचन्द्रः सारथिं मातलिं पृष्टवान् । केन स्वर्णमय रथमिदं कथं प्रेषितम् । सारथिना मातलिना प्रोक्तम् रथमिदं पुराब्रह्मणा शिवेन च निर्मितं सहस्र सूर्यसमः प्रकाशमानमय रथः युगपरिवर्तनेऽपि न विनाशतां यास्यति । इन्द्रस्याज्ञया मया अत्र आनीतः । रथोऽयं **दृष्टया, मनसा, वायुनाप्यधिकतेजस्वरूपः । रथोऽयं भूतले तले जले गगने च समानरूपेण गन्तुं भ्रमितुं शक्नोति** । नायं कदापि परिवर्तितो भवति ब्रह्मणा प्रेरितः सुरेन्द्रः रथमिदं भवतः समीपं प्रेषितवान् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीरामचन्द्रः लक्ष्मणेन सह परामर्शं कृत्वा तद्रथं स्वीकृत्य तस्मिन् रथे आरूढ़वान्। तथा च पापं पातालं पुण्यं च गगनं गतवान् तथा सर्वे अञ्जलिं बद्ध्वा प्रणामं चक्रुः।

(१६) इरावणन् वदैप् पड्लम् -रावणवध पटलम्

अस्मिन् विस्तृते पटले **२४६ पद्यानि सन्ति** एतेषु पद्येषु रामरावणयोर्मध्ये अलौकिकाद्वितीय युद्धवर्णनं विराजते। एतद्वर्णनं कम्बन् कविना स्व विस्तृताद्भुत शैल्याम् पूर्ववत् वर्णितम्। यद् वर्णनं विद्वत् कुवेरस्य सामान्यं स्वभावानुरूपम्। रावण वधानन्तरं रावणस्यान्तिम संस्कारार्थं विभीषणाय आज्ञाप्रदान घटनावर्णनं च सर्वथा महत्वपूर्णं नीतिप्रदं, ज्ञानयुक्तं, कारुणिकं च विद्यते।

समेषामेतेषां विशद वर्णनं नात्र सम्भवम् नापेक्षितं च। फलतः संक्षिप्तरूपेण प्रमुख युद्धवर्णनमत्र विधीयते प्राचीनेयमुक्तिः सर्वथा साधीयसी "रामरावणोर्युद्धम् रामरावणयोरिव"। **अस्मिन् रामायणे विलपन्ती मन्दोदरी मृता इयमपि कथा सर्वथा नूतना वर्तते यतोहि वाल्मीकि रामायणतः आरभ्य कम्बरामायण पूर्वं न कुत्रापि मन्दोदरीमरणवर्णनं दृश्यते। न चापि ततः परं कस्मिन्नपि रामायणे मन्दोदरीमरणवर्णनं विद्यते।**

अथ श्रीरामचन्द्रः देवेन्द्रप्रेषित रथमारूह्य युद्धार्थं समुद्यतो जातः। ऋषयो देवाश्च सर्वे सुप्रसन्नाः वभूवुः तथा ते मनसि प्रार्थितवन्तः यत् अस्माकं सर्व बलानि रामे प्रविशन्तु। रावणश्च देवेन्द्र प्रदत्त रथं दृष्ट्वा क्रुद्ध नेत्राभ्यां रामचन्द्रमवलोक्य स्व सारथिमाज्ञापत् यत् मम रथं रामं प्रति नय।

रामचन्द्रः स्व सारथिं मातलिं प्रोक्तवान् यावत् पर्यन्तं आनन्दमुक्तः रावणः सर्वं कुकृत्यं म समापयति तावत् पर्यन्तं मम रथं नैव तत्र नय। शीघ्रतायाः न किमपि प्रयोजनम्। मातलिना प्रोक्तम् यदि अश्वानां गमनं शत्रूणां मनसि तेषां उद्दण्डता तस्याः दुष्फलं तथा च कालस्य ऋजु वक्रगत्या स्व कार्यं यः न निश्चिनोति न सः सारथिः। रामोऽब्रवीत्, साधु।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रावण पक्षे पर्वताकारः महोदरः राक्षसः प्रोक्तवान् पश्यतु महाराज, रामः देवेन्द्रस्य रथमास्थाय प्रकटितः। उभयोर्मध्ये तुमुलं युद्धं भविष्यति। अतएव प्रथमं युद्धं कर्तुं मह्यम् आज्ञां ददातु। रावणेनोक्तम् अहम् तु रामचन्द्रं हनिष्यामि। त्वम् रामस्य पृष्ठतः समागच्छन्तं तस्यानुजं लक्ष्मणं अवरोधय। महोदरः तथैव कर्त्तुमुद्यतः। महोदरः स्वसारथिं कथितवान् यत् मम रथं तथा संचालय येन लक्ष्मणस्य रथेन सह संघर्षो न भवेत्। सारथिः अवदत् हे स्वामिन् रामचन्द्रं पश्यतु। असङ्ख्य रावणाः अपि तेन साकं **युद्धं** कर्त्तुं नैव समर्थाः अतएव मार्गान्तिरे पलायताम्।

इति श्रुत्वा क्रुद्धः सन् महोदरः प्रोक्तवान्। अरे दुष्ट, किमिदं जल्पसि एतन्मध्ये एव श्रीरामचन्द्रस्य रथं महोदर समीपं समागतम्। युद्धं प्रारब्धम्। महोदरस्य समस्ता सैन्याः छिन्न भिन्नाः जाताः। केवलं महोदरः एकाकी एव अग्रे गच्छन् सहसा रामवाणेन निहतः। इति सर्वे दृष्टवन्तः। रावणोऽपि महोदरस्य मृत्युं दृष्टवान्। तेन सारथिः समादिष्टः त्वरितमेव अग्रे गन्तव्यम्।

अत्र रामः मनसि शोचते स्म, यत् यावत् पर्यन्तं वालुकाकण सदृशाः विस्तृताः रावण सैन्या न विनष्टाःस्युः ताघत् पर्यन्तं रावणस्य विनाशः न सम्भवः। अतएव सुतीक्ष्ण वाणैः रावणसैन्यान् विनाशितवान्। यं रावणः द्रष्टुमपि न समर्थो जातः। सर्वत्र रक्तवर्षाः, कर्कश वज्रपातो जातः। पर्वताः विच्छिन्नाः। रावणस्य रथाश्वाः मृताः, धनुः प्रत्यञ्चा विछिन्ना। रावणस्य जिह्वा शुष्का जाता। सर्वत्र रावणस्य पताकायां गृध्राः वायसाश्च समुपविष्टाः। एवम्भूतानि दुःशकुनानि जातानि। सत्यामप्येवं स्थितौ रावणः इत्येव शोचते यत् किं नरः मां जेतुं शक्नोति जेष्यति वा?

श्रीराम रावणौ तत्र परस्परं तथा दृश्येते यथा विद्याऽविद्ये, पाप-पुण्ये परस्परं सम्मिलिते जाते। यतोहि सहस्रशीर्षाः पुरुषः परमेश्वरः तथा भीमाकारः गरुडः परस्परं सम्मुखौ जातौ। **अथ च रात्रिमध्याह्नौ सम्मुखौ जातौ**। एवं च अत्र कविना दार्शनिक दृष्टया उपमा प्रदत्ता अथ च रावणः शङ्खनादं चकार येन ब्रह्माण्ड कम्पनं जातम्। ततश्च विष्णोः पाञ्चजन्यं शब्दं चकार। इमं श्रुत्वा देवाः अपि विस्मृताः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तदा सारथिः मातलिः वासवस्यशङ्ख फूत्कृतवान् येन त्रिभुवनं कम्पितम् । इत्थं भीषण युद्धं दृष्ट्वा हनुमत्-प्रभृतयो वीराः निष्प्रभाः सञ्जाताः ।

रावणः चिन्तयति एनं निर्बलं अर्द्धवयस्कं रामं प्रति धनुःप्रयोगः न शोभनम् । अपितु मम हीनता स्यात् । अतएव इन्द्ररथेन सहितम् रामं समुत्थाय आकाशे भ्रामयित्वा भूमौ पातयिष्यामि । तस्य अस्त्र-शस्त्राणि छिन्न भिन्नानि करिष्यामि, रथं संचूर्णयिष्यामि तथा कोदण्डेन साकं तं नर नीच रामं वन्दिनं करिष्यामि । इत्थं च रावणः युगान्तकारिणं शरं संचालयामास । यं दृष्ट्वा शिवं विहाय सर्वे देवगणाः भयातुराः सन्तः निज नेत्राणि निमीलितवन्तः, तथा यत्र तत्र पलायितवन्तः । वानरसैन्याश्च विकीर्णाः बभूवुः ।

एवं दृष्ट्वा रामचन्द्रः स्व तीक्ष्ण बाणान् तथा प्रेरितवान् येन रावणस्य समग्रशस्त्रास्त्राणि खण्डितानि जातानि । अथ च रावणः स्व रथम् आकाशमार्गमानीय शरवर्षा कृतवन्तः । तदा रामः मातलिं कथयामास । अधुना अहम् रावणस्य किरीट सहितं मस्तकं छेत्तुं बाणं संचालयामि । त्वं रथं सुरक्षितरूपेण आकाशमार्गे अवतारय । इत्थं च मातलिः रथं सूर्यमण्डलं लंघयामास । एवं च आकाशे एव उभौ तुमुल युद्धं कुर्वन्तौ आस्ताम् । देवाः इत्यपि ज्ञातुं नाशक्नुवन् यत् इमे रथे सूर्यमण्डले चन्द्रमण्डले वा विद्येते ।

एवं रूपेण रामरावणयोर्मध्ये विविध शस्त्रास्त्र प्रहारेण अनेकानेक शक्ति प्रदर्शनेन तुमुल युद्धमकुर्वाताम् । यस्य वर्णन नावापेक्षितम् । रामस्य तीक्ष्ण बाणेन रावणस्य शरीरात् रक्तधारा तीव्रवेगेन प्रवाहिता । रावणः संज्ञाविहीनो जातः । इदमवलोक्य देवगणाः हर्षिताः जाताः । रावणस्य सारथिः रथं पश्चात् कृतवान् । रामस्य सारथिः मातलिः अब्रवीत् । भगवन्, यदा रावणः प्राप्स्यसि तदा किमपि करणं कठिनं स्यात् अतएव अधुनैव तस्य नाशं कुर्वन्तु । इति श्रुत्वा रामचन्द्रः कथयति निरस्त्राय संज्ञविहीनाय अस्त्र प्रक्षेपणं युद्धधर्म विरुद्धम् । नेदं श्लाध्यम् । यदा रावणः मूर्च्छात्यक्ष्यति शस्त्रं च ग्रहीष्यमि तदैव मम प्रतीकारः भविता ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रावणः चेतनां प्राप्य स्वरथं राम सम्मुखं नावलोक्य सारथिं तर्जयामास उक्तवान् च यत् अरे वञ्चक, त्वं मां कातरं मन्यसे। अहम् त्वां अनेन असिना हन्मि। सारथिः चरणौधृत्वा प्रोक्तावान्। सारथेः अयं धर्मः यत् स्वामिनः प्रत्येक दशायाः ज्ञानं तत् कृते अनिवार्यम्। अतएव नायं ममापराधः। ततः रावणाज्ञया पुनः रथं रामं सम्मुखमानीतवान्।

रावणश्च पुनः भीषण युद्धं प्रारभत्। रामः रावणस्य धनुः खण्डद्वयं कृतवान्। अथ च रामः रावणवधार्थं स्व तीक्ष्ण वेगयुक्तेन बाणेन रावणं वेधयामास। येन रावणः भूमौ पतितः। इत्थं च रामचन्द्रः मातलिं प्रोक्तवान् यत् रथं भूमौ अवतारय। मातलिः तथैव कृतवान्। रामः रावणस्य क्षत विक्षत शरीरं सम्पूर्णम् अवलोकितवान्। तत्र लक्ष्मणः अन्ये वानरसैन्याश्च समागतवन्तः ये सर्वे मृतं रावणं दृष्टवन्तः। यश्च रावणः न कदापि कस्मिन्नपि युद्धे पृष्ठं प्रदर्शितवान्।

श्रीरामचन्द्रः रावणस्य पृष्ठं दृष्टवान्। यत्र अनेकानि शस्त्रचिह्नानि आसन्। इदमवलोक्य रामः चिन्तयति यत् रावणस्य पृष्ठे यानि शस्त्रचिह्नानि सन्ति तानि मत्कृतान्येव। अयं तु मम गौरवं कलंकतुल्यम्। यतोहि पलायमानं शत्रुं पृष्ठतः शस्त्र संचालनम्। तदा विभीषणः अवदत्। एकदा कार्तवीर्येण सह युद्धे रावणस्य पृष्ठे शस्त्रचिह्नमासीत्। न तद् चिह्नं भवद्भिः कृतम्। इयं दुर्दशा तु सीताहरण कारणेनैव जाता। अन्यथा न कोऽपि रावणं जेतुं क्षमः। इत्थंच रामस्य संशयः दूरीभूतः।

तदनन्तरं लङ्कानिवासिनः तत्रागत्य हाहाकारं चक्रुः। रावणपत्नी मन्दोदरी रावणस्य वक्षसि पतिता तथा वेदनापरिपूर्णा विलपन्ती उरः ताडयन्ती विलापं कृतवती। तथा च अन्ते रावणं आलिङ्ग्य दीर्घं निःश्वस्य स्वप्राणान् अत्यजत्। इदम् दृष्ट्वा देवाङ्गनाः विद्याधर्यः ऋषिपत्न्यः पतिव्रताः मानवस्त्रियश्च तस्याः मन्दोदर्याः प्रशंसां स्तुतिं च कृतवत्यः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तदनन्तरं रामस्याज्ञया विभीषणः वेदोक्तरीत्या विधिवत् रावणस्यान्तिम संस्कारं विधाय अन्येषां मृत वीराणामपि अग्नि-संस्कारं जलसंस्कारं च कृतवान् । ततश्च रामस्य समीपमागत्य तस्य चरणौ प्रत्यपीड़यत् । रामः तं विविधप्रकारकं सन्तोषं प्रदाय प्रोक्तवान् यदिदं विधेर्विधानम् । इयमेव रीतिः, न तत्र शोकः कर्त्तव्यः । अनेनाश्वासनेन विभीषणः शान्तो जातः ।

इत्थं च महत् रामरावणयोर्युद्धं समाप्तम् रावणः स्वर्गतः, संसारस्य हाहाकारः शान्तो जातः ऋषयो देवाश्च भयाद्विमुक्ताः बभूवुः ।

अत्र मन्दोदरी प्राणत्यागघटना रामस्यौदार्यविचारसारिणश्च सर्वथा महनीया विद्यते ।

(१७) मीटचिप् पड्लम् (प्रत्यागमन पटलम्)

रावण वधानन्तरं रामचन्द्राज्ञया विभीषणेन रावणस्यान्तिम संस्कारादिकं विधिवत् वेदविहितरीत्या विहितम् । सहैव स्ववंश-जानामन्येषामपि श्राद्धादिकं सम्पादितम् । किन्तु विभीषणः स्ववंशनाशे विशेषतो रावणवधेन भृशं शोकार्णवे मग्नो जातः । इदमपि तथ्यं यत् विभीषणकारणेनैव रावणः, कुम्भकर्णः मेघनादश्च निहताः । किन्तु इदमपि स्वाभाविकं यत् स्व वंश विनाशानन्तरं मानवीय दुर्बलता स्वरूपं दुःखं तु जायते एव ।

सत्यामेवं स्थितौ रामचन्द्रेण विभीषणः सम्बोधितः । इयमेव संसारस्य गतिः, इयमेव रीतिः, अतएव शोकं मा कुरू । अग्रिम कार्यं कुरू । एवं सम्वोध्य लक्ष्मणमादिष्टवान् यत् विभीषणाय लङ्का राज्यसिंहासनं विधिवत प्रदेयम् । तदनन्तरं वेदोक्तरीत्या ऋषिभिः देवैः मन्त्रेण संस्तुतं विभीषणं सिंहासने स्थापितवान् । देवाः पुष्प-वृष्टिं चक्रुः । मुनयश्च आशीर्वादं प्रददुः ।

तदनन्तरं विभीषणं, रामचन्द्र निकषा समागत्य तस्य चरणयोः पतित्वा प्रणामं कृतवान् । रामश्च तं वक्षसा आलिङ्ग्य विभीषणाय उपदेशं प्रददौ ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(क) त्वं तथा राज्यं कुरु येन जनाः त्वां स्तुवीयुः।

(ख) देवानामादरः धर्ममार्ग यशः पुण्यं च तव शासने अचलं तिष्ठतु।

(ग) सर्वैः सह मिलित्वा जीवनयापनं राज्यशासनं च कुरु।

एवमुक्त्वा रामचन्द्रः हनुमन्तं प्रोक्तवान्। त्वं लङ्कां गत्वा रावणवधादि वृत्तान्तं सीतां सूचय। मारुतिः हनुमान् आज्ञामादाय त्वरितमेव अशोक वाटिकायां गत्वा सीतायै सर्वं निवेदयामास। कथं केन प्रकारेण रावणः निहतः इति सविस्तरं वृत्तान्तं निवेदिसवान्। सीता सहसा प्रसन्ना सती अवाक् सञ्जाता। तदा सीता कियत् कालानन्तरम् उक्तवती हे तात् त्वया पूर्वमेवोक्तम् यत् मां उद्धरिष्यसि, तत् त्वया कृतम्। अधुना तुभ्यं प्रत्युपकारे किं कथयेम् इत्यपि न जाने, अतएव अवाक् सञ्जाता। हनुमता प्रोक्तम् मया शोचते यत् त्रिजटां विहाय समस्त राक्षसीसमूहा नाशयिष्यते।

जगञ्जननीं सीता प्रोवाच। ताः राक्षस्यः तु रावणाज्ञया तथा चक्रुः, न स्वेच्छया। अतएव न तासां कोऽपि दोषः। अतः सर्वाः यथावत् तिष्ठेयुः। तथा च राक्षसीं प्रति सीता कथितवती, मा भैषीः। मारुतिः किमपि न करिष्यति। एतन्मध्ये एव रामचन्द्रः विभीषणम् आज्ञापयामास यत् सीता देवीं श्रृङ्गारं कारयित्वा अत्र आनय। एवमादिष्टः विभीषणः सीता समीपं गत्वा प्रोवाच। भवति, दुःखं दूरीकरोतु। श्रृङ्गारं करोतु तथा मया सह भगवन्तं रामचन्द्रं निकषा प्रचलतु।

सीता प्रोक्तवती एवं रूपेणैव मम तत्र गमनं वरम्। श्रृङ्गारादिकं तु मम दृष्ट्वा नैव श्लाध्यम्। पुनः विभीषणेनोक्तं, भगवतो रामचन्द्रस्य इयमेव आज्ञा वर्तते यत् श्रृङ्गारं कारयित्वा सीतामानय। सीता कथितवती एवमेव भवतु। इत्थं च त्वरितमेव सीतायाः श्रृङ्गारार्थं मेनका, रम्भा, उर्वशी, तिलोत्तमा प्रभृतयः अप्सरसः सीता समीपं समुपस्थिताः विविध श्रृङ्गारोपकरणैः सहितम्। तां सीतां कस्तूरी, कुङ्कुमजलेन स्नापयित्वा तस्याः विशिष्ट केश-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विन्यासं चक्रुः। स च केशविन्यासः अभूतपूर्वः क्रमबद्धः सञ्जातः। अथ च सर्वेषु अङ्गेषु यथायोग्यं अलङ्करणादिकं चन्दनादिकं च विधाय तां सीतां रथयाने समारूह्य रामचन्द्र समीपमानेतुम् प्रस्तुतोऽभूत। तस्याः परितः अप्सरसः अपि आसन्। यां सीतां द्रष्टुं नगरनिवासिनः पुरुषाः तत्रत्याः नार्यश्च समवेताः बभूवुः। तत्र विशाल जनसमूहं दृष्ट्वा राक्षसाः तान् मार्गतः अपाकर्त्तुं स्वल्परूपेण यष्टिकां भ्रामयामासुः। इत्थं च सीता रामसमीपं समागतवती।

अत्र रामेण तु तथा नाटकं कृतम् येन सुग्रीवादयः, लङ्का-निवासिनः, महर्षयः देवाश्च चकिताः स्तब्धीभूताः सञ्जाताः। विभीषणं प्रति रामः कथितवान् यत् ये केचन ऋषयो देवा अन्ये च युद्धभूमिं द्रष्टुमुत्सुकाः ते अनुज्ञापनीया। विभीषणः तथैव कृतवान्। तत्र सीता हनुमतः शीलस्य कर्त्तव्यस्य वीरतायाश्च महती प्रशंसां कृतवती। तदनन्तरं सीता सा अनिन्द्य सुन्दरी अखण्ड पतिव्रता रामं प्रणामं चकार। रामः उपेक्षया निष्ठुरतया च प्रोक्तवान्-त्वम् राक्षस रावणस्य नगर्य्यां लङ्कां चिरं निवसती चरित्रभ्रष्टा सञ्जाता। त्वम् कथमत्रागतवती, मया तु एतावान् महान् परिश्रमः कोलाहलश्च केवलं स्वपत्नीहारकस्य विनाशार्थं कृतम्। येन न कोऽपि कथयतु यत् रामः स्वपत्नीहारकमपि न किमपि कर्त्तुं शक्नोत। त्वां मोक्तुं मया नैवेदं सर्वं कृतम्। त्वम् तु भूमिजा वर्तते। यथा भूमिजाः कीटादयः सन्ति तथैव त्वमसि।

इदं श्रुत्वा सर्वे ऋषयः, देवाः, देवाङ्गनाः, राक्षसाः, सुग्रीवाङ्गद, जाम्बवान्, हनुमत् प्रभृतयः उच्चैः रोदनं चक्रुः। सीता तु अधोमुखी सञ्जाता तथा व्रणे कंटक प्रवेशसम पीड़या संज्ञाहीना सञ्जाता। ततश्च चेतनां प्राप्य सीता हनुमतं कथितवती यत् त्वं तु मम सर्वां स्थितिं न निवेदितवान्। हनुमता प्रोक्तं मया तु सर्वं पूर्वमपि निवेदितम्, अधुनापि निवेदितम्। रामस्य वचनं श्रुत्वा लक्ष्मणोऽपि हतप्रभोजातः। रामः लक्ष्मणं सङ्केतेन आज्ञापयामास। लक्ष्मणः तत्र अग्निं समानीतवान्। भगवती सीता तत्र गत्वा अग्निं प्रदक्षिणं कृत्वा निवेदितवती। हे अग्निदेव, यदि मनसाऽपि अहम् कलङ्किनी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तदा मां भस्मीभूतां कुरू। तथा च अग्निप्रवेश समये रामस्य च वन्दनां कृतवती।

एवं कृत्वा सीता ज्वलिते अग्नौ प्रविवेश। तस्मिन् काले रामं विहाय तत्रत्याः जनाः आकाशस्थाः देवाः देव्यश्च विदीर्णाः सम्भूताः। त्वरितमेव साक्षात् अग्निः प्रकटीभूय रामं प्रति उक्तवान्। मया कः अपराधः कृतः कथंममोपरि भवान् क्रुद्धः। रामेणोक्तम्, त्वम् कः असि कथं नेयं स्त्री अग्नौ ज्वलिता। सोऽब्रवीत्। अहम् अग्निः, अस्याः देव्याः पातिव्रत्याग्निज्वालया अहं स्वयमेव दग्धः जातः। सर्व वेदविहित कर्म **साक्षी अस्मि।** कथं भवद्भिरेवं कृतम्।

रामः विहस्य अवोचत्। त्वम् लोकस्य अक्षय साक्षी। इयं सीता त्वया कलङ्करहिता कृता। इयं मम धर्मपत्नी, मम प्राणप्रिया, अत्याज्या। एवं श्रुत्वा सर्वे देवगणाः महर्षयः कपयश्च प्रसन्नतायाम् नर्तितवन्तः। देवैरुक्तम् यद् अयं रामचन्द्रः स्व मायापाशे लोकान् भ्रामयति। तेनैव इदम् कठोरतमं नाटकं प्रदर्शितम्। येन वयम् भ्रान्ताः आसन्। **सीता च यावत् चन्द्रदिवाकरौ पतिव्रता पूजनीया महनीया श्लाघनीया च सञ्जाता।**

देवाः ब्राह्मणः कथितवन्तः यत् रामचन्द्रः न केवलं सूर्यवंशे समुत्पन्नः एकः महामानवः विद्यते अपितु वेद वेदान्त द्वारा प्रतिपादितं परमतत्वमपि। अयमेव पुरातन-तत्वस्वरूपः, मूलप्रकृतिरूपः। इदम् चराचर प्रपञ्चं तस्यैव। यः अविद्यामायातः निःसरति स तम् आदिकारणं मन्यते। तथा च रामः एव मोक्षस्य बीजम्। अयं रामचन्द्रः पञ्चविंशति तत्त्वतः पृथक् उपरि वर्तते। (**पञ्चविंशति-तत्त्वे पञ्चतन्मात्रा, पञ्चभूतानि, पञ्चकर्मेन्द्रियाणि, पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि मनः, चित्तम्, अहङ्कारः, महत् तथा जीवश्चेति**)। इदं पञ्चविंशति तत्त्वं सत्यम्। किन्तु **परमतत्त्वं तदुपरि वर्तते स रामचन्द्रः।** अत्र प्रमाणेप्रमाणस्यावश्यकता न विद्यते। अतएव दशरथपुत्रः रामचन्द्रः केवलं मायांरूपः पुरुषः। वस्तुतः स अजन्मा, मूलप्रकृतिरूपः यस्मात् समस्तं विश्वं प्रपञ्चम् विस्तृतम्। अत्र कम्बन् कविना रामचन्द्रं परब्रह्मरूपे साधितम् प्रमाणितं च।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अथ लङ्कातः प्रस्थान समये परमेश्वरेण शोचितं तथा च बैकुण्ठे स्थितं मोक्षरूपे स्थितं दशरथ समीपं गत्वा कथितम्। भवान् स्वपुत्र-समीपं गच्छतु तथा स्वकीय पुत्रवियोगजन्यं दुःखं दूरीकरोतु। **महाराजः दशरथः शिवस्याज्ञयया रामचन्द्र समीपं समागतवान्।**

रामचन्द्रः सहसा तं दृष्ट्वा तस्य चरणौ निपतितवान्। दशरथः तम् उत्थाय आलिङ्गितवान्। तेनोक्तं मम जीवनं सार्थकं, ममोद्धारः जातः, मम दुःखं दूरी भूतं, कैकेय्या येन वरद्वयेन अहंपीडितः या पीड़ा मरणोपरान्तमपि न गता सा पीड़ा अद्य विलुप्ता। हे महावाहो, मम सदृशः को भाग्यवान् यः दुर्लभं मोक्षं विशालं यशश्च प्राप्तवान्। इत्युक्तवा पुनः सीता समीपं गत्वा तां करूणया आलिङ्ग्य तस्यै यथोचितम् उपदेश प्रदत्तवान्। तेन कथितम् यत् यथा अग्नौ सुतप्त-मेव स्वर्णं विशुद्धं जायते। तथैव रामेण त्वाम् अग्नि परिशुद्धां कृत्वा तव महिमा वर्धितः। इत्यपि तेन प्रमाणितम् येन त्वम् पतिव्रता श्रेष्ठा।

ततश्च दशरथः लक्ष्मणं स्वाश्रुधारया स्नापितवान्, आलिङ्गनं कृतवान् तथा च तं सम्बर्धयामास। पुनश्च दशरथः राम समीप-मागतवान्। तथा चोक्तवान्। तुभ्यं किं देयम्, त्वम् तु स्वयमेव सर्वदायकः। तथापि कमपि वरं गृहाण। रामेणोक्तं मम मनोव्यथा दूरीभुता। अहम् तु स्वर्गं गत्वा भवद्दर्शनार्थं मनसि विचारित-मासीत्। किन्तु अत्रैव भवतां दर्शनं ज्ञातम्। अत्रैव न किमपि शेषं वर्तते यद्वरम् अहम् याचिष्ये। तथापि यदि भवतां आज्ञा वर्तते र्तहि मह्यम् वरद्वयं ददातु। दशरथेन "तथास्तु" इत्युक्तम्।

प्रथमं वरं यत् यां मम मातरं कैकेयीं दुष्टां मानयित्वा भवान् त्यक्तवान् तां पुनः तेन शापेन मुक्तां करोतु तथा च ममानुजं भरतं यद् भवत्ता समुपेक्षितम् तं पुनरपि गृह्णातु।

अर्थात् पूज्या कैकेयी पूर्ववत् मम मातृरूपेण तिष्ठतु तथा भरतः अनुजरूपेण स्थास्यति। दशरथेनोक्तम् भरतं तु अहम् मुक्तं कर्तुं शक्नोमि किन्तु तां दुष्टां मुक्तं कर्तुं नैव शक्नोमि। रामचन्द्रेणोक्तम्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भवता सत्य पालनार्थं पूर्वं यथा कृतं तथैव अधुना स्व वचन पालनार्थं मह्यम् अपि वरद्वयम् प्रदत्तम् । यतोहि भवद्भिः वरयाचनार्थम् अहम् आदिष्टः । दशरथेन, तथास्तु, इत्युक्तम् । सर्वे देवादयः इदम् श्रुत्वा दृष्ट्वा च प्रशंसां कृतवन्तः हर्षितवन्तश्च । इत्थं च दशरथः पुनः बैकुण्ठलोकं जगाम । (अत्र स्वर्गतो दशरथागमनकथा) नूतना मनोहारिणी च) अत्र तत्रोपस्थिताः देवाश्च रामं निवेदयामास । भवद्भिः यद्रोचते तदिच्छां कृपया प्रकटयतु । रामोऽब्रवीत् राक्षसयुद्धे ये वानराः सैन्याश्च मृतास्ते सर्वे पुनर्जीवन्तु । सहैव पर्वतीयप्रान्ते, वने, उद्याने च इमे वानराः स्वेच्छानुसारं मधूनि, मधुरफलानि, कन्दमूलादीनि, पेयजलानि च निरन्तर प्राप्नुयुः ।

तदा देवैरुक्तम्, भवत्कृपयैव भवता याचितं वरं ते सर्वे वानराः प्राप्नुवन्तु ।

तदनन्तरं पुनरूज्जीविताः वानराः सैन्याश्च तत्रागत्याब्रुवन् । हे भगवन्, भवन्तः सर्वे कृतवन्तः । भातृवचनात् वनागमनमारभ्य सवंश रावणविनाश पर्यन्तं विशालम् अगणितम् महत् कार्यं कृतवन्तः । अधुना इति स्मर्यताम् यत् अद्य भवतां वनागमनस्य चतुर्दश वर्षाणि पूर्तिमाप्स्यन्ति । यतोहि अद्य पञ्चमी तिथिर्वर्तते । यदि अद्य सायं पर्यन्तं भवान् भरतेन न मिलिष्यति तर्हि भरतः अग्नौ प्रविश्य आत्मदाहं करिष्यति । अतएव तद्वारणार्थं भवान् अद्यैव अयोध्यां प्राप्नोतु ।

रामेण चिन्तितम् इदम् तु सत्यं यदि अद्य अहम् न तत्र प्राप्स्यामि तर्हि भरतः प्राणत्यागं करिष्यति । येन मम वंशः विनक्ष्यति इति विचारेण कथं तत्र गच्छेम इति विभीषणेन पृष्टवान् । विभीषणेनोक्तम् एकं विमानं विद्यते येन अद्यैव भवन्तः तत्रायोध्यां प्राप्स्यन्ति । रामः आज्ञापयामास तम् आनयतु । विभीषणः सङ्केतं कृतवान् । क्षणेनैव तद् विमानं तत्रोपस्थितम् । इदम् विमानं ब्रह्मणा यक्षराज कुबेराय प्रदत्तम् । यद् विमानं निर्लिप्त ज्ञानिनः मनसः तुल्यं पवित्रं देवानां विस्मयकारकम्, मनोवेगेन गमनशीलं च । यस्य नाम "**पुष्पकम् ।**"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समागते विमाने रामः स्नेहेन करूणया च प्रोक्तवान्। हे विभीषण भवान् सकुशलं लङ्काराज्यस्य शासनं करोतु यस्याः लङ्कायाः आदिपुरुषः चतुर्मुख वेदनिर्माता ब्रह्मा एव। हे सुग्रीव तव साहाय्येन मया दशग्रीवः हतः अधुना त्वम् स्व राजधानीं किष्किधां परावर्तय। अङ्गद, जाम्बवान, पनस, नल, नील, प्रभृतयः योद्धारः अपि स्व स्व स्थाने परावर्तयेयुः तथा च स्वपादेन समुद्र लंघयिता हनुमान् अपि स्व स्थानं भवद्भिः साकं प्रत्यावर्तयतु। इदं सर्वं रामचन्द्रेण महत्या करूणापूर्ण स्नेह दृष्टया प्रोक्तम्।

इदं श्रुत्वा सर्वे सुग्रीवादयः कम्पिताः। तेषां नेत्रे अश्रुधारा प्रवाहिता। ते रुदन्तः कथितवन्तः यदि भवान् अस्मान् स्वसमीपात् वियुक्तं करिष्यति तर्हि वयं न जीविष्यामः। यावत् पर्यन्तं वयं भवता साकं अयोध्यां गत्वा तत्र भवतां श्रीमताम् राज्याभिषेकं न द्रक्ष्यामः तावत् पर्यन्तं अस्माकं युद्ध स्थगनता कठिनता न दूरी-भविष्यति। अतएव निज साकं अयोध्यागमनस्य आज्ञां प्रददातु। परावर्तनस्य चर्चा तु पश्चाद् भविष्यति।

इदमाकर्ण्य रामः कथितवान्, मां चिन्तां कुरू, मया सह प्रचलन्तु। ममापि इयमेव इच्छा आसीत् केवलं भवतां प्रवन्धस्य ज्ञानार्थं मया तथा कथितम्। इति श्रुत्वैव सर्वे तस्मिन् पुष्पक विमाने सानन्दम् उपविष्टवन्तः। ततः पुष्पक विमानं तथा आसीत् यत्र चतुर्दश भुवनानां सर्वे जीवाः यदि तस्मिन् समारूढा स्युः तदापि तस्य स्थानं रिक्तमेव स्थास्यति। इत्थं च तद् विमानं लङ्कातः अयोध्यां प्रस्थितम्।

विमानोपरि गच्छन् रामचन्द्रः मार्गे समागतम् तद् तद् विशेष स्थानं महत्वपूर्णं वस्तु सीता दर्शयति। रामः कथयति हे सीते पश्य, अयं गन्धमादन नामक कन्दरा सहितः पर्वतः अस्ति यः इन्द्रात् भीतः समुद्रे विलीनः आसीत्। मदीय सेतु बन्धनेन पावनोयं पर्वतः।

(क) इमाः च गङ्गा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी प्रभृतयः नद्यः सन्ति। ताः पापं हरन्ति। परन्तु मदीय सेतु बन्धने तीर्थस्थानं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गतं समुद्रं यः पश्यति तस्य पापं दूरी भवति। अत्र च मया स्वधनुषा नौकाचालन सुविधार्थं मार्गं निर्मितवान्। अत्र पवित्रताम् ज्ञात्वा गङ्गाऽपि पश्चात्तापं करोति।

(ख) पश्य इदं तदेव स्थान यत्र वरुणः ममाग्नेयास्त्र भयात् मम शरणमागतः आसीत्।

(ग) हे वैदेहि, पश्य, इदं तदेव पवित्रं स्थानम् अयं स एव पवित्र गिरिः यत्र **तमिल वैयाकरणस्य ऋषेः अगस्त्यस्य वासस्थलमस्ति।**

(घ) इदं तु रत्नमयः "तीरुमालिरुजलोलय मलय" नामकः श्रीविष्णोः पर्वतः ततः एव समुन्नतः वेंकटाचलपर्वतः दृश्यते।

तदा सीता अपृच्छत्। हनुमता सह कुत्र भवत् साक्षात्कारः जातः। रामोऽब्रवीत्, पश्य, अस्मिन् एव ऋष्यमूक पर्वते अत्रैव महाबलशाली बाली आसीत् यं अहम् स्वर्गं प्रेषयमास। अत्रैव सूर्यपुत्रः सुग्रीवः तिष्ठति। तदा सीता अब्रवीत् अयमेव किष्किंधा तर्हि अहम् तु एकाकिनी एव नारी अस्मि। अस्मिन् पुष्पक विमाने अन्ये सर्वे पुरुषाः सन्ति अतएव पुष्पमाल्यैरलंकृत सुदीर्घ केशयुक्तानां नारीणाम् अपि गमनं वरम्। रामः सुग्रीवं सङ्केतितवान्। त्वरितमेव सुग्रीवाज्ञया हनुमान् सुदीर्घ नीलिमामय केशयुक्ताम् अनेकां नारीं तत्रानीतवान्। ताः सुगन्धित केशयुक्ताः वानर पत्न्यः सीतारामं वन्दितवत्यः। पुनश्चरामेणोक्तम् इयमेव गोदावरी नदी। अस्याः एव तटे स्थितः उन्नतः पर्वतः यः वर्तते तस्मादेव त्वं वियुक्ता जाता। इदमेव गण्डक वनम्, अयमेव चित्रकूट पर्वतः वः सदा वन्दनीयः। तदग्रे गच्छन् रामोऽब्रवीत्। अयमेव भारद्वाज ऋषेः आश्रमः यत्र वयम् वनागमन समये विश्रामं चक्रुः। तत्र रामः कथितवान् यत् अत्र किञ्चित् कालार्थं पुष्पक विमानम् अवतारय। विमानं त्वरितमेव अवतरितम्। रामः विमानादवतीर्य ऋषेः चरणयोः पपात। ऋषिः तमुत्थाप्य आशीर्वचनैः आलिङ्ग्य रामस्य शिरः वात्सल्येन जिघ्राय। तदनन्तरं सुदीर्घ कृष्ण कचयुक्ता सीता ऋषेः समीपं गतवती लक्ष्मणश्च अञ्जलिं बद्ध्वा गतवान्। ताभ्यामपि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऋषिः शुभाशीर्वचनं प्रददौ। अन्येभ्योऽपि सुग्रीव, जाम्ववान् अङ्गद, हनुमत् प्रभृतिभ्यः आशीर्वचनं ऋषिः प्राददत्।

ततः ऋषिणा प्रार्थितं यत् अद्य भवान् स्व वर्ग सहितः अत्रैव ममाश्रमे निवासं कुरु। रामः भरतस्य प्रतिज्ञां श्रावयामास। रामः ऋषेः वचनमुपेक्षितं नैव शक्नोति। अतएव हनुमन्तं कथितवान् त्वं शीघ्रं गत्वा भरताय सूचय यत् वयमद्य भारद्वाजाश्रमे वर्तामिहे। श्वः प्रातः वयम् तत्रागमिष्यामः। हनुमान् तथैव कृतवान्। मार्गे निषादराजं गुहं रामागमन सूचनां सूचयन् अयोध्यां गतवान्।

अधुना कविः अयोध्यां गच्छति। तत्र भरतस्तु पूर्वमेव दुःखामग्नो दग्धमेवासीत्। अद्य रामागमनस्य अन्तिम दिनं वर्तते। अर्थात् घनगमनस्य चतुर्दश घर्षाणि अद्य व्यतीतानि रामागमनस्य अद्य दिनं वर्तते यथा रामेण प्रतिज्ञातम्। तथापि भरतः गणितज्ञान् ज्योतिषशास्त्र विशारदान् समाहूतवान् तथा पृष्टवान्। ते गणितज्ञाः प्रोक्तवन्तः रामवनवासस्य अद्यैवान्तिमं दिनम्। तत्र नन्दिग्रामे भरतः रामपादुकां पूजयन् स्मृतवान् यत् अद्यैव रामस्य परावर्तन-समयः। इत्थं मनसि विविध विचारं कुर्वन् भरतः शत्रुघ्नमाहूतवान् त्वरितमेव शत्रुघ्नः तत्रागत्य प्रणम्य स्थितः। भरतेनोक्तं हे तात अहमेकं वरं याचे यत् रामः यद् दिनं निश्चितरूपेण कथितवान् तद् दिने नागतवान्। अतएव स्वप्रतिज्ञानुसारं अहमद्य अग्नौ प्रविश्य प्राणान् त्यक्षामि। त्वम् इदम् राज्यम् ग्रहणातु।

इदम् श्रुत्वैव शत्रुघ्नः स्व हस्ताभ्यां कर्णौपिधाय स्तब्धो जातः। स भूमौ पतितः। अश्रुपातैः नेत्राणि परिपूरितानि, कण्ठावरोधो जातः। येन केनापि प्रकारेण शत्रुघ्नः अब्रवीत्। मया कः अपराधः कृतः येनेदं कठोर वचनं भवता कथितम्। भवन्तस्तु अयोध्यां परित्यज्य नन्दिग्रामे तपस्यां कुर्वन्तः आसन्। मम सम्बन्धे इदमेव प्रायः भवता निश्चितम्। ततः भरतः उक्तवान् त्वम् शीघ्रम् अग्निं प्रज्वालय। समाचारोऽयं अयोध्यां प्राप्तः। सहसा माता कौशल्या वक्षः ताड़यन्ती तत्र समागता। ततश्च क्रमशः मन्त्रिसेनापति ब्राह्मणाः तत्रत्यस्त्रियः सहसा समागत्य भरतं परितः स्थिताः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कौशल्या भरत समीपं समागतवती यो भरतः ताम् प्रणम्य अग्नौ प्रवेशार्थं समुद्यतः। माता कथितवती किमिदं करोषि। यद्येवं त्वया कृतम् अयं देशः विनाशे यास्यति। तव तिस्त्रः भ्रातरः अपि अग्नौ प्रविश्य प्राणान् त्यक्ष्यन्ति। यदि त्वम् न जीविष्यसि तर्हि समस्त जीवाः विनंक्ष्यन्ति। इति तु निश्चितं यत् रामः नहि अद्य न श्वः आगमिष्यति एव।

तदा भरतः कथयति। अहं तस्य पुत्रः अस्मि यः सत्यरक्षार्थं प्राणान् तत्याज। अहम् तु स्वप्रतिज्ञाम् अवश्यमेव पालयिष्यामि। एतन्मध्ये एव तत्र पर्वताकारः हनुमान् समुपस्थितः। तेनोच्चैः उद्घोषितं, प्रभुः रामचन्द्रः आगतवान्। कथं भवान् प्राणान् त्यजति। इत्युक्त्वा स्वहस्ताभ्यां अग्निं निर्वापयामास हनुमान्। तदनन्तरं भरतस्य पादौ पतित्वा प्रोक्तवान् यत् रामचन्द्रागमन समय-व्यतीते अधुना चत्वारिंशत् (४०) घटिकाः अवशिष्टाः। इदं मम कथनं यद्यसत्यं स्यात् तर्हि स्वयेवाहम् अग्नौ प्रविश्य प्राणान् त्यक्ष्यामि। इदम् अङ्गुलीयकम् प्रभुणा प्रदत्तं तत् कृपया पश्यतु।

प्रभुः रामचन्द्रः भारद्वाजस्य प्रार्थनया तत्रैव स्थितः। श्वः प्रातः आगमिष्यति। भरतः तम् अङ्गुलीयकम् पुनः पुनः प्रणम्य आनन्देन उच्छलितः। आनन्दविभोरः भरतः क्षणं हसति, क्षणं रोदति, क्षणं मुद्रिकां प्रणमति, क्षणं उत्कूर्दते एवं च स्वेदक्लिन्नः जातः। सर्वे मन्त्रिणः राजानः अमात्यभृत्या स्तब्धाः अतिष्ठन्। स्नेहस्य इयमेव प्रकृतिः।

तदनन्तरं भरतेन पृष्टः हनुमान् स्वपरिचयं प्रदत्तवान्। भरतस्याज्ञया शत्रुघ्नः तस्य स्वागत सत्कारं चकार। अथ च भरताज्ञयया सम्पूर्णा अयोध्यानगरी विविध पुष्पादियुक्तैः तोरणद्वारैः सुसज्जिता जाता।

सर्वत्र दुन्दुभिः (ढोल) द्वारा सूचना प्रदत्ता यत् भगवान् रामचन्द्रः समागच्छति। इति ज्ञात्वा अयोध्यानगरी वेदध्वनिभिः जनकोलाहलैश्च परिपूर्णा जाता। ततश्च रामस्य स्वागतार्थं तिस्रो मातरः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवीं स्तुतिं कुर्वन्त्यः स्वर्णनिर्मितशिविकायां प्रस्थितवत्यः। भरतश्च मुनिगणैः परिजनैः हनुमता च सह पादाभ्यां प्रचलितः यः स्वमस्तके रामस्य पादुकां धारितवान् तथा चोभाभ्यां हस्ताभ्यां चामरं वीज्यमानः आसीत्।

मार्गे भरतः हनुमता जिज्ञासां कृतवान् यत् श्रियः पतिः आर्यः वने कदा कुत्र-कुत्र कथं निवसति स्म। तत् सविस्तरं कथयतु। हनुमान् संक्षिप्तरूपेण चित्रकूटं वृत्तान्तमादाय रावणवध पर्यं वृतान्तपर्यन्तं सर्वं वृत्तान्तं निवेदितवान्। अस्मिन् एव क्रमे चित्रकूट परित्यागानन्तरं दशवर्षं यावत् दण्डकारण्ये निवसति स्म। ततश्च समुद्र शोषकस्य अगस्त्यस्य आश्रमं गतवान्। यत्र अगस्त्यः रामचन्द्राय सुतीक्ष्ण धनुः, शराङ्ग, तूणीरं, कवचं तथा तीक्ष्ण छूरिकां प्रदत्तवान्। ततश्च शूर्पणखा वृतान्तं सीताहरण वृत्तान्तं जटायु मरणं तस्य दाह संस्कारवर्णनं शवर्या आतिथ्य-सत्कारवर्णनं वरुणस्य क्षमायाचनावर्णनं समुद्रे सेतुबन्धनवर्णनं इति सर्वं यथावत् निवेदयामास।

एतद्नन्तर भरतेन प्रोक्तम्। राम सैन्यस्य शब्दाः न श्रूयन्ते। भारद्वाजाश्रमं तु इतः योजनद्वयम् एव वर्तते कथं न वानरसैन्यानां कोलाहलः श्रूयते। हनुमता प्रोक्तम्। भारद्वाजेन वरं प्रदत्तं यत् अधुना यानि फलानि, पुष्पाणि, मधूनि भवद्भिः प्राप्यन्ते तानि भक्षयित्वा ते किञ्चित् कालं विश्रामं कुर्वन्तु। तत्र भरद्वाजाश्रमे ससैन्यः निषादराजः गुहः समागत्य रामचन्द्रस्य चरणौ पतितः। इत्थं च भरद्वाजाश्रमे सपरिकरः रामचन्द्रः तत्र रात्रिं निनाय।

प्रातः पुष्पक विमानमारुह्य पूर्ववत् रामचन्द्रः सीता लक्ष्मण सहितः विभीषण सुग्रीवादि सहितश्च प्रस्थितवान्। आकाशमार्गे समागन्तं पुष्पक विमानं दर्शयन् हनुमान् प्रोक्तवान्, हे सूर्यकुलभूषण महामहिमशालिन, पश्यन्तु भवन्तः, सीता लक्ष्मणाभ्यां सहितः प्रभुः समागच्छति। सर्वे सावधानाः बभूवुः। रामचन्द्रः कियद्दूरमेव पुष्पकविमानात् अवतरितः तथा पादाभ्यां एव स्वनगरीं प्रविवेश। सहसा तिस्त्रः मातरः गुरु वशिष्ठश्च तत्रोपस्थिताः आसन्। रामः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सर्वप्रथमं महर्षि वशिष्ठं प्रणम्य मातृणां चरणेषु पतितवान्। क्रमशः सीता लक्ष्मणौ च यथायोग्यं प्रणामं चक्रतुः। भरतश्च रामपादुकां भक्त्या रामाय समर्प्य चरणेषु दण्डवत् प्रणामं कृतवान्। रामः तम् उत्थाप्य आलिङ्गन कृतवान्। मातृणां स्थितिः तु विचित्रा आसीत् यथा वत्स वियुक्तानां धेनूनां वत्सप्राप्तनन्तरं जायते।

सुमन्त्रस्य ज्ञानन्दाश्रुणा संवर्धनं रामस्यालिङ्गनम् सर्वम् अवर्णनीयम्। तत्रत्य दृश्यवर्णनं न कवि वाणी वर्णितुं शक्नोति। तथा च आकाशात् पुष्पवृष्टयः सञ्जाताः। पुष्पक विमानं च नन्दिग्रामं समागतवान्। एवं हि सीता लक्ष्मणाभ्यां सहितस्य विशाल वानरादि सहितस्य रामचन्द्रस्य अयोध्या परावर्तनं महत् सुखदं जातम्।

(१८) तिरुमुडि शूट्टु पड़लम् (श्रीकिरीटधारण पटलम्)

अखण्ड विश्वास भक्ति श्रद्धाकर्त्ता कारयित्रा भरतेन लक्ष्मणेन शत्रुघ्नेन च साकं प्रभुः रामचन्द्रः नन्दिग्राममागतवान्। तत्र सर्व प्रथमं वनगमन समये श्रृङ्गवेरपुरे निर्मितां जटांनिःसार्य केशकर्तनादिकं कारितवान्। तथा च पवित्र सरयू नद्यां स्नात्वा यथायोग्यं चन्दनादि लेपनैः श्रृङ्गारं कृतवान् यमवलोक्य देवाः हर्षिताः जाताः। ततश्च रामचन्द्रः रथमास्थितवान्, लक्ष्मणः श्वेतछत्रं धारितवान्, शत्रुघ्नः चामरं वीज्यमानः आसीत् तथा च भरतः स्वयमेव सारथ्यं कृतवान्। तत्र विभीषणः सूर्यपुत्रः सुग्रीवः गजारूढो जातः। अङ्गदः मारुतिः च सर्वं पश्चात् प्रचलितः। अथ च ये राजानः विभिन्न राज्यात् समागतवन्तः तेऽपि रामं पृष्ठतः प्रचलितवन्तः। किष्किधातः समागताः वानरपत्न्यः अप्सरसदृशाः शिविकामारुह्य प्रचलिताः मध्ये च सुवर्णनिर्मितयाने मैथिलीं हंससदृशा सीता मध्ये आसीत्।

अयोध्यानगरी पुष्पैः तथालङ्कृत्ता आसीत् येन सर्वत्र पुष्पमयमेव परिलक्षते स्म। अयोध्यामागत्य रामचन्द्रः सर्वप्रथमं मातृणां वन्दनां कृतवान्। ततः विष्णुमन्दिरमागत्य **इष्टदेवस्य श्रीरङ्गनाथस्य पूजां** कृतवान्। पुनश्च गुरू वशिष्ठस्य अभिनन्दनं चकार। तदानीम् अयोध्यावासिनः पुरूषाः तत्रत्या-नार्यश्च तथा उच्छलिताः आसन् येन ते ताश्च वस्त्ररहिता बभूवुः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आनन्दसागरे निमग्नाः केचन राजानः वेश्यानां शाटिकां परिधत्तवन्तः। केचन ब्राह्मणाः स्ववस्त्रं विस्मृत्य स्त्रीणां वस्त्राणि धारितवन्तः। ये च ब्रह्मचारिणः सन्यासिनः च चन्दनादिलेपनं विनैव समागतवन्तः तेऽपि विशाल जनसमूहानां शरीरमर्दने चन्दनादियुक्ताः जाताः। काश्चन नार्यः सीतावियोगे चतुर्दश वर्षपर्यन्तं शृङ्गारं न कृतवत्यः ताः अद्य तथा शृङ्गारेण सुसज्जिताः सञ्जाताः। इदं दृष्ट्वाकस्यापि मनः विचलितम् जातं जायते च।

रामचन्द्रेण प्रोक्तम्, हे भरत, विभीषण सुग्रीवाङ्गद निषादराज प्रभृतिम् अयोध्या राजभवनस्य अन्तःपुरे शोभां विशेषतां च प्रदर्शय। भरतः क्रमशः सर्वं यथायोग्यं प्रदर्शितवान्। तैः उक्तं रामस्य रक्षा-बन्धन समय मुहूर्त्तं कदा वर्तते। भरतेनोक्तम् सप्तसमुद्राणां तीर्थ-जलानयनं केवलं अवशिष्टम् तदुपायं मया शोच्यते। त्वरितमेव सुग्रीवः हनुमन्तं प्रति दृष्टि चिच्छेप। हनुमान् सहसा समुद्रमेखलां पृथ्वीं सप्तसमुद्र जलानयनार्थं लंघयामास।

भरतः सुमन्त्राय आज्ञां ददौ यत् मुनिश्रेष्ठं वशिष्ठं मन्त्रपूतान् ब्राह्मणांश्च समानय। सुमंत्रेण त्वरितमेव तथैव कृतम्। वशिष्ठः समागतवान् तथा प्रोक्तवान् यत् मुकुटधारणस्य शुभ बेला श्वः भविता। सर्वे तथास्तु इति कथितवन्तः।

ततश्च सा शुभ बेला समागता तत्र यथायोग्यं ऋषयो ब्राह्मणा वेदज्ञाः मन्त्रिणः ज्ञानिनः सर्वे मिलित्वा पवित्र तीर्थजले रामं स्नापितवन्तः। ततश्च वशिष्ठः रामस्य मस्तके मुकुटं धारयामास। तत्क्षणे इत्यनुभवो जातः यत् त्रैलोक्यस्य दुःखं गतम् आनन्दः समायातः। त्रैलोक्यं समुच्छलितम्। तत्र हनुमता सिंहासनं धृतं अङ्गदः खड्गः धृतः भरतः श्वेतच्छत्रं धृतवान्। लक्ष्मणशत्रुघ्नौ चामरं वीज्यमानौ स्तः। इत्थं च रामचन्द्रः भूमिपतिः भू, पति बभूव। भूमिसुता सद्यः पत्नी सञ्जाता अतएव दम्पत्योः सुख भोग-विलास वैभवादिके रामः संलग्नोऽभूत्। ततश्च वशिष्ठस्याज्ञयया यथाविधि त्रयाणामनुजानां मस्तकेषु रत्न किरीटान् रामः धारयामास परिधापयामास। स्वयं च विलासे निमग्नो जातः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(१६) विड्कोडुतत् पडलम् (अनुमतिप्रदान पटलम्)

राज्यसिंहासनानन्तरं सीतासहितः रामचन्द्रः अयोध्यावासिने दर्शनं प्रदत्तवान् । तत्र भूलोकवासिनः नागलोकवासिनः व्योमवासिनश्च सर्वे यथायोग्यं स्तुतिं चक्रुः । मङ्गल गीतानां ब्राह्मणाशीर्वादानां मृदङ्ग शङ्ख ध्वनिनां विविध वाद्यानां च रमणीसमूहानां मयूर नृत्यं दर्शनयोग्यमासीत् । अपार सुन्दर्यः स्त्रिश्च युगयुगान्तपर्यन्तं चिरंजीव इति गायन्त्यः आसन् । मैन्द द्विविद् अङ्गदादि प्रभृतयः सप्तषष्ठि कोटिमिताः योद्धारः विभीषणादश्च समागत्य प्रणामं कृतवन्तः ।

सर्वैः सह सानन्दं मिलित्वा प्रभुः रामचन्द्रः यः दशरथपुत्ररूपे साक्षात् ब्रह्मस्वरूपः आसीत् स विभीषणाय, सुग्रीवाय, अङ्गदाय विभिन्नोपकरणानि, प्रदत्तवान् । हनुमते तु महतीं कृपादृष्टिं प्रदाय स्वर्णादीनि प्रदत्तवान् । भगवती सीता सरस्वतीप्रदत्ता मुक्तामालां हनुमते ददौ । श्रीरामचन्द्रः जाम्ववते मुक्ताम् माला गजान् अश्वान् विविधाभरणान् तथा च अग्निपुत्राय नीलाय तीव्रगामिनम् अश्वं मनोहरं गजराजं चप्रदत्तवान् । इत्थं च यथायोग्य उपहारं सर्वेभ्यः प्रदाय निर्वाधं सुखेन तिष्ठन्तु इत्याशीर्वादम् निषादराजाय गुहाय मृदु वचनैः सन्तोष्य विविधाभरणानि प्रदत्तवान् ।

ततश्च रामचन्द्रः हनुमन्तं अङ्गदं जाम्बवन्तं सुग्रीवं निषादराजं च कथितवान् यत् ममाज्ञयया यूयं स्व स्व स्थानं गत्वा निज कार्यं कुरुत । यद्यपि कथनमिदम् अति अप्रियम् कठिनम् च आसीत् । किन्तु आज्ञामादाय सर्वे यथायोग्यं परिक्रमां कृत्वा प्रणम्य पुष्पक विमानेन अयोध्यातः प्रस्थितवन्तः । तत्कालीनं दृश्यं महत् कारुणिकम् आसीत् ।

रामश्च भ्रातृभिः सहितः सीतासहितः मानवीय लीलां कुर्वन् राज्यशासनं कृतवान् । लौकिक रीतिं च विहितवान् । चतुर्दश भुवनान् च पालितवान् । एवं च रामराज्यं रामराज्यमेव । न तस्या काऽपि तुलना आसीत्, अस्ति, भविष्यति वा ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एवम् च महामहिमशालिनः आदिपुरुषस्य रामचन्द्रस्य कथां शृणोति, वर्णयति च स नराधिपतिः राजा भवति । तथा च यमराजस्य भयं तस्मै न जायते ।

॥ इति कम्बरामायणम् ॥

॥ जय श्रीराम ॥

अस्मिन् विशिष्टे कम्बरामायणे उत्तरकाण्डं नास्ति । न च सीतापरित्याग सदृश कठोरकथा चर्चाऽपि विद्यते । केवलमग्नि परीक्षापूर्वं लङ्कायां सीताभर्त्सनानाटकं रामेण कृतम् । यस्य वर्णनं सविशेषं तत्र सन्निहितमस्ति ।

❀ ★ ❀

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भारतीयवाङ्मयेषु रामकथावर्णनम्

द्वितीय खण्डम्

१. रघुवंशम्

२. महावीरचरितम्

३. उत्तररामचरितम्

४. अनर्घराघवम्

५. कुन्दमालानाटकम्

"द्वितीयो भागः"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रसिद्ध संस्कृत काव्यनाटकेषु रामकथा वर्णनम

द्वितीय खण्डस्य

द्वितीयो भागः

अस्मिन् खण्डस्य प्रथमे भागे प्रख्यात "कम्बरामायणस्य" काण्डानुसारं तत्पटलानुसारं संस्कृतगद्यमयं संक्षिप्तविवरणं सोद्धरणं समुल्लसति ।

अस्मिन् द्वितीयभागे सागरवद्-विस्तृतस्य संस्कृत वाङ्मयस्य कतिपय प्रख्यान काव्य-नाटकेषु समुलब्ध रामकथावर्णनस्य तत्तद ग्रन्थानुसारं संक्षिप्त विवरणमत्र दीयते ।

यद्यपि मया परियोजना परिकल्पना विशाला आसीत् किन्तु कालचक्रवशात्तत्र महत्परिवर्तनं विहितम् । यस्योल्लेखः "भारतीय वाङ्मयेषु रामकथा बर्णनम्"—प्रथम खण्डम्—भागे कृतः । यद्ग्रन्थस्य विमोचनं ६-८-१९८९ दिनाङ्के भारतस्य महामहिमशालिना उपराष्ट्रपतिना डॉ० शङ्करदयाल शर्मणा नयी दिल्लीस्थित निजावास सभागारे महता समारोहेण सम्पादितम् ।

तस्यां संक्षिप्त परिवर्तित परियोजनायां द्वितीयखण्ड लेखनस्य कार्यमारब्धम् । तत्र समस्त कम्बरामायणस्य संस्कृतानुवादः सुसम्पन्नः यश्चास्य खण्डस्य प्रथसो भागः । द्वितीय भागे क्रमशः रघुवंशम्-महावीरचरितम्-उत्तररामचरितम्-अनर्घराघवम्-कुन्दमाला-नाटकम्-एतानि पञ्च काव्य-नाटकानि सन्ति ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रघुवंशम्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अस्मिन् खण्डस्य द्वितीयभागे सर्वप्रथमं महाकवि कालिदासस्य रघुवंश महाकाव्ये समागत रामकथावर्णनं विव्रियते। वाल्मीकि-रामायण अध्यात्मरामायणविभिन्न पुराणानन्तरं कालिदासस्य रघुवंश महाकाव्यमेव समक्षमायाति यत्काव्यं ईसातः प्रायः द्विशत वर्ष पूर्वमेव राजते स्म। कालिदासस्तु ईसातः कतिपयवर्षपूर्वमेवाभूदित्य-प्यस्माकं सुदृढ़ं सप्रमाणं मतम्।

रघुवंश महाकाव्ये दशम सर्गतः पञ्चदश सर्गपर्यन्तं रामकथा षट् सर्गेषु विराजते। कथेयं सर्वथा "बाल्मीकिरामायण" कथास्वाधारिताऽतिसंक्षिप्तया। सा च सरस काव्यानुगुण गुम्फिता नैसर्गिक-मनोहारिणी कालिदासरचनानुरूपा।

●

दशमः सर्गः

सर्गेऽस्मिन् दशरथपुत्ररूपेण कौसल्यागर्भ संभूतस्य "रामावतारस्य" वर्णनम्। पुत्राभावसन्तप्तो दशरथः कुलगुरू वसिष्ठाज्ञया महर्षि ऋष्यशृङ्ग द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञं कारीतवान्। यज्ञाग्नि समुद्भूतो देवः चरूं प्रददौ। तं चरू दशरथः कौसल्यायै कैकेय्यै च भागद्वयं विधाय प्रदत्तवान्। सुमित्रां विस्मृतवान्। किन्तु कौसल्या कैकेयी च स्वांशादुद्धृत्य सुमित्रायै प्रदत्तवती। ततः कौसल्या गर्भात् रामः, कैकेयी गर्भात् भरतः तथा सुमित्रा गर्भात् लक्ष्मण-शत्रुघ्नौ च अजायन्त।

अत्र सर्वाः घटनाः वाल्मीकि रामायण वदेव सन्ति। यथा—

रघुवंशे—

ऋष्यशृङ्गादयस्तस्य सन्तः सन्तान काङ्क्षिणः।
आरभिरे जितात्मानः पुत्रीयामिष्टिमृत्विजः॥

१०।४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सोऽहं दाशरथिर्भूत्वा रणभूमेर्बलिक्षमम् ।
करिष्यामि शरैस्तीक्ष्णै सान्छिरः कमलोद्यमम् ।।

१०।४४

स चतुर्धा बभौ व्यस्तः प्रसवः पृथिवीपते ।
धर्मार्थ काम मोक्षाणामवतार इवाङ्गभाक् ।।

१०।८४

बाल्मीकि रामायणे—

तथा वसिष्ठवचनान् ऋष्यश्रृङ्गस्य चोभयोः ।
दिवसे शुभनक्षत्रे निर्यातो बालकाण्ड ।।

१३।३९-४०

ततः पद्म पलाशाक्षः कृत्वात्मानं चतुर्विध ।
पितरं रोचयामास तदा दशरथं नृपम् ।।
बालकाण्ड १५।३

इत्थं च बाल्मीकि रामायणस्य कथानुसारमेव कालिदासस्य रामजन्मवृत्तान्तं परमात्मनो ब्रह्मणः एव चतुर्भिरूपैः—राम-भरत-लक्ष्मण-शत्रुघ्न-रूपैः—अवतारवर्णनं सर्वथा समानमेव ।

●

एकादशः सर्गः

अस्मिन् सर्गे विश्वामित्र द्वारा दशरथात् यज्ञरक्षार्थं रामलक्ष्मणयोर्याचना, रामलक्ष्मणयोः विश्वामित्रेण साकं गमनं ताडकाप्रभृति राक्षसीवधवर्णनं गौतम पत्न्याः अहल्याया उद्धारवर्णनं च विराजते ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ततश्च मिथिला महीपतेः जनकस्य राज्ञे विश्वामित्रेण साकं मिथिलागमन वर्णनं तत्र शिवधनुभङ्ग वर्णनं, परशुरामपराजयवर्णनं, सीतया सह रामस्य विवाहवर्णनादिकं सर्वं संक्षिप्तरूपेण ९३ श्लोकेषु वर्णितमस्ति। यद्य वाल्मीकिरामायणेऽति विस्तृतं कथानकमस्ति ततोऽत्रातिसमासेनैव विद्यते।

इमाः घटनाश्च वाल्मीकिरामायणमधिकृत्यैव विद्यन्ते। किन्तु प्रायः सर्वस्मिन् श्लोके काव्यमाधुरी, अलङ्कारचातुरी च चमत्करोति चेतः। यथा—

रघुवंशे—

कौशिकेन स किल क्षितीश्वरो राममध्वरविघातशान्तये।
काकपक्षधरमेत्य याचितस्तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते॥

११।१

ज्यानिनादमथ गृह्णती तयोः प्रादुरास बहुलक्षपाछविः।
ताडका चलकपालकुण्डला कालिकेव निबिडा बलाकिनी॥

११।१५

प्रत्यपद्यत चिराय यत्पुनश्चारु गौतमवधू शिलामयी।
स्वं वपुः स किल किल्बिषच्छिदां रामपादरजसामनुग्रहः॥

११।३४

दृष्टसारमथ रुद्रकार्मुके वीर्यशुल्कमभिनन्द्य मैथिलः।
राघवाय तनयामयोनिजां रूपिणीं श्रियमिव न्यवेदयत्॥

११।४७

प्रत्युवाच तमृषिर्न तत्त्वतस्त्वां न वेद्मि पुरुषं पुरातनम्।
गां गतस्य तव धाम वैष्णवं कोपितो ह्यसि मया दिदृक्षुणा॥

११।८५

राघवोऽपि चरणौ तपोनिधेः क्षम्यतामिति वदन्समस्पृशत्।
निर्जितेषु तरसा तरस्विनां शत्रुषु प्रणतिरेव कीर्तये॥

११।८८

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अथ पथि गमयित्वा क्लृप्तरम्योपकार्ये
कतिचिदवनिपालः शर्वरीः शर्वकल्पः।
पुरमविशदयोध्यां मैथिलीदर्शनीनां
कुवलयितगवाक्षां लोचनैरङ्गनानाम्।।
११।९३

माण्डव्याः भरतेन साकं उर्मिलायाः लक्ष्मणेन साकं श्रुतिकीर्तेश्च शत्रुघ्नेन साकं विवाह विधिरपि सम्पन्नः। यस्य चर्चा रघुवंशे नास्ति। बाल्मीकि रामायणे सविस्तरं वर्तते।

●

द्वादशः सर्गः

१०४ श्लोकात्मकेऽस्मिन् सर्गे दशरथेन रामराज्याभिषेकविचारः, कैकेय्या पूर्वप्रदत्त वरद्वययाचना, सीता-लक्ष्मणाभ्यां सहितस्य रामस्य वनगमनं, दशरथमृत्युः, रामस्य चित्रकूटनिवासः, तत्र भरतागमनं, पादुकां नीत्वा भरतपरावर्तनं, रामस्य पञ्चवटी-निवासः, तत्र शूर्पणखाविरूपकरणं, रावणद्वारा सीताहरणं, सुग्रीवमैत्री, बालिवधः, समुद्रलङ्घनं, लङ्काविनाशः, मेघनाद-कुम्भकर्णादि-वधसहितो रावणवधादिकं चातिसंक्षिप्तरूपेण विद्योतते। किन्तु तत्र तत्र काव्यसुषमा नितरां सौरभप्रदायिनी, यथा—

तं कर्णमूलमागत्य रामे श्रीर्न्यस्यतामिति।
कैकेयीशङ्कयेवाह पलितच्छद्मना जरा।।
१२।२

तयोश्चतुर्दशैकेन रामं प्राव्राजयत्समा।
द्वितीयेन सुतस्यैच्छद्वैधव्यैकफलां श्रियम्।।
१२।६

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स सीतालक्ष्मणसखः सत्याद्गुरुमलोपयन् ।
विवेश दण्डकारण्यं प्रत्येकं च सतां मनः ॥

१२।६

चित्रकूटवनस्थं च कथितस्वर्गतिर्गुरोः ।
लक्ष्म्या निमन्त्रयांचक्रे तमनुच्छिष्टसंपदा ॥

१२।१५

सा सीतासंनिधावेव तं वव्रे कथितान्वया ।
अत्यारूढो हि नारीणामकालज्ञो मनोभवः ॥

१२।३३

पर्णशालामथ क्षिप्रं विकृष्टासिः प्रविश्य सः ।
वैरूप्यपौनरूक्त्येन भीषणां तामयोजयत् ॥

१२।४०

स हत्वा वालिनं वीरस्तत्पदे चिरकाङ्क्षिते ।
धातोः स्थान इवादेशं सुग्रीवं संन्यवेशयत् ॥

१२।५८

तेन मन्त्रप्रयुक्तेन निमेषार्धादपातयत् ।
स रावणशिरःपङ्क्तिमज्ञातव्रणवेदनाम् ॥

१२।९९

रघुपतिरपि जातवेदोविशुद्धां प्रगृह्य प्रियां
प्रियसुहृदि विभीषणे संगमय्य श्रियं वैरिणः ।
रविसुतसहितेन तेनानुयातः ससौमित्रिणा
भुजविजितविमानरत्नाधिरुढः प्रतस्थे पुरीम् ॥

१२।१०४

उपर्युक्त क्रमेण प्रायः सर्वं विवरणं वाल्मीकिरामायण सदृशमेव । १०४ पद्येषु एतावद्विस्तृतविवरणं कवेरुत्कर्षतामुद्भावयति ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अत्र कालिदासेन स्वर्णमय मायामृगस्य चर्चा न कृता तथा सीतायाः लक्ष्मणं प्रति दुर्वाक्यस्याऽपि वर्णनं नैव कृतम् । महाकविना कालिदासेन सर्वत्र कोमलकान्त पदावली द्वारा रामकथा वर्णिता ।

त्रयोदशः सर्गः

रावणवधानन्तरं सीतालक्ष्मणाभ्यां सहितो रामः लङ्कातः अयोध्यां प्रति प्रस्थितवान् तत्र दैवीशक्तियुतं विमानमेकमासीत् यस्य नाम "पुष्पक"—मित्यासीत् । सर्व-सौविध्य-सौख्यसंयुतेऽस्मिन् विमाने विभीषण-सुग्रीव-जाम्बवान्-अङ्गद-नल-नील-हनुमत्प्रभृतयः सकल-रामचन्द्र पार्षदाः अपि समुपविश्य रामेण साकमेवायोध्यामागतवन्तः ।

आकाशमार्गादागच्छन् रामः सीतां प्रति समुद्रादारभ्यायोध्यापर्यन्तं मार्गे समागतं तत्तत् स्थानविशेषं परिदर्शयन् तत्रत्यवैशिष्ट्यमपि स्मारितवान् ।

क्रमशः समुद्रे सेतुबन्धनादारब्धरामेण वर्णितम् । यथा—

वैदेहि पश्यामलयाद्विभक्तं मत्सेतुना फेनिलमम्बुराशिम् ।
छायापथेनेव शरत्प्रसन्नमाकाशमाविष्कृतचारुतारम् ।।
१३।२

सीतापरित्यक्ताभूषणस्थलवर्णने तु महाकविना तथा चमत्कारः प्रदर्शितः येनायं श्लोकः विश्वकाव्येषु महत्वपूर्णपद्येनावगम्यते, यथा—

सैषा स्थली यत्र विचिन्वता त्वां भ्रष्टं मया नूपुरमेकमुर्व्याम् ।
अदृश्यत त्वच्चरणारविन्दविश्लेषदुःखादिव बद्धमौनम् ।।
१३।२३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सीतावियोगे विक्षिप्तवद्रामः स्वकीय वियोगव्यथां प्रकटयति—

इमां तटाशोकलतां च तन्वीं स्तनाभिरामस्तबकाभिनम्राम् ।
त्वत्प्राप्तिबुद्ध्या परिरब्धुकामः सौमित्रिणा साश्रुरहं निषिद्धः ।।
१३।३२

ततः पञ्चवटी निवास शोभां वर्णितवान्—

एषा त्वया पेशलमध्ययापि घटाम्बुसंवर्धितबालचूता ।
आनन्दयत्युन्मुखकृष्णसारा दृष्टा चिरात्पञ्चवटी मनो मे ।।
१३।३४

तदनन्तरं शरभङ्गाश्रमवर्णनं विधाय महतश्चित्रकूटस्य माहात्म्यं शोभां च वर्णयन् मन्दाकिनी वर्णनमपि स्नेहेन श्रद्धया भक्त्या चकार। यथा—

अदः शरण्यं शरभङ्गनाम्नस्तपोवनं पावनमाहिताग्नेः ।
चिराय संतर्प्य समिद्भिरग्निं यो मन्त्रपूतां तनुमप्यहौषीत् ।।
१३।४५

धारास्वनोद्गारिदरीमुखोऽसौ शृङ्गाग्रलग्नाम्बुदवप्रपङ्कः ।
बध्नाति मे बन्धुरगात्रि चक्षुर्दृप्तः ककुद्मानिव चित्रकूटः ।।
१३।४७

एषा प्रसन्नस्तिमितप्रवाहा सरिद्विदूरान्तरभावतन्वी ।
मन्दाकिनी भाति नगोपकण्ठे मुक्तावली कण्ठगतेव भूमेः ।।
१३४८

ततश्चित्रकूटे भरतागमन वृत्तान्तं विराजते यथा—

असौ पुरस्कृत्य गुरूं पदातिः पश्चादवस्थापितवाहिनीकः ।
वृद्धैरमात्यैः सह चीरवासा मामर्घ्यपाणिर्भरतोऽभ्युपैति ।।
१३।६६

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ततोऽयोध्यासमीपं भरततपः पूतं स्थानं नन्दिग्रामागमनवृत्तान्तेन साकं साकेतागमनपर्यन्तं संक्षिप्त वर्णनं विद्यते, यथा—

दुर्जातवन्धुरयमृक्षहरीश्वरो मे
पौलस्त्य एष समरेषु पुरः प्रहर्ता।
इत्यादृतेन कथितौ रघुनन्दनेन
व्युत्क्रम्य लक्ष्मणमुभौ भरतो ववन्दे ।।
१३।७२

क्रोशार्धं प्रकृतिपुरःसरेण गत्वा
काकुत्स्थः स्तिमितजवेन पुष्पकेण।
शत्रुघ्नप्रतिविहितोपकार्यमार्यः
साकेतोपवनमुदारमध्युवास ।।
१३।७९

इत्थं चास्मिन् सर्गे सर्वे श्लोकाः काव्यरसमाधुरी-परिस्यूताः रमणीकाः गभीराशययुक्ताः विराजन्ते ये च भारतीय वाङ्मयेषु सुचिरं स्मरणीयाः सन्ति।

चतुर्दशः सर्गः

रामराज्याभिषेकोपरान्तं निर्विघ्नं राज्यं शासिते रामेण सर्वे प्रजाजनाः नितरां प्रमोदमाप्तवन्तः। सर्वे भ्रातरः सकलास्तिस्रो मातरश्च हर्षान्विताः सुसन्तुष्टाश्चासन्। रामोऽपि सीतया सह आनन्दं समयं यापयन् राज्यं शास्ति स्म। ततो रामो ज्ञातवान् यत्सीता गर्भवती वर्तते। रहसि तया सह वार्तालापप्रसङ्गे गर्भावस्थायाः कामनामिच्छां च पप्रच्छ रामः। सा सुरम्ये भागीरथीतीरे तपोवनं द्रष्टुमिच्छां प्रदर्शितवती, यथा—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सा दष्टनीवारवलीनि हिंस्रैः संवद्धवैखानसकन्यकानि।
इयेष भूयः कुशवन्ति गन्तुं भागीरथीतीरतपोवनानि ।।

१४।२८

एतन्मध्ये एव कश्चित् गुप्तचरः समागत्य निभृते (एकान्ते) रामेण सुस्पष्टं पृष्टोऽवादीत् । यद्यपि समस्त पौरजनाः सुप्रसन्नाः तत्र भवन्तं स्तुवन्ति । किन्तु कियन्तो जनाः राक्षसराज रावण गृहोषिता-सीतापुनर्ग्रहणं सन्दिग्ध दृष्टा शोचन्ते, यथा—

निबन्धपृष्टः स जगाद सर्वं स्तुवन्ति पौराश्चरितं त्वदीयम् ।
अन्यत्र रक्षोभवनोषितायाः परिग्रहान्मानवदेव देव्याः ।।

. १४।३२

इदं श्रुत्वा रामस्य चित्तं दोलायमानं सञ्जातम् । यदियं वार्ता मयोपेक्ष्याऽथवा सा परित्याज्या, यथा—

किमात्मनिर्वादकथामुपेक्षे जायामदोषामुत संत्यजामि ।
इत्येकपक्षाश्रयविक्लवत्वादासीत्स दोलाचलचित्तवृत्तिः ।।

१४।३४

रामेण चिन्तितं यत् कलङ्कं परिमार्ष्टुं नान्योपायोऽस्ति सीता-परित्यागमन्तरा यतोहि यशोधनानां हि यश एव श्रेयः प्रेयश्च । यथा—

निश्चित्य चानन्यनिवृत वाच्यं त्यागेन पत्न्याः परिमार्ष्टुमैच्छत् ।
अपि स्वदेहात्किमुतेन्द्रियार्थाद्यशोधनानां हि यशो गरीयः ।।

१४।३५

रामेण सर्वे भ्रातरः समाहूताः, भ्रातरस्तं दृष्ट्वा स्तब्धाः सञ्जाताः, यथा—

स संनिपात्यावरजान्हतौजास्तद्विक्रियादर्शनलुप्तहर्षान् ।
कौलीनमात्माश्रयमाचचक्षे तेभ्यः पुनश्चेदमुवाच वाक्यम् ।।

१४।३६

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भ्रातृभिः सह कठिनतमेऽस्मिन् विषये तर्क वितर्कक्रमे रामोऽवादीत् यत् मया रावणादि वधस्तु प्रतिशोधे कृतः। यथा—

रक्षोवधान्तो न च मे प्रयासो व्यर्थः स वैरप्रतिमोचनाय।
अमर्षणः शोणितकाङ्क्षया किं पदा स्पृशन्तं दशति द्विजिह्वः॥
१४।४१

अतएव सीता परित्याज्यैव।

भ्रातृभिः साकं बिचार विमर्श चर्चा वाल्मीकिरामायणादौ न विद्यते। इति नूतना कथाऽत्र।

तदनन्तरं राजा रामचन्द्रः लक्ष्मणमादिदेश यत् सीता वाल्मीकि मुनेराश्रमे भागीरथी तटे परित्यज्यागम्यताम्। यथा—

प्रजावती दोहदशंसिनी ते तपोवनेषु स्पृहयालुरेब।
स त्वं रथी तद्व्यपदेशनेयां प्रापय्य वाल्मीकिपदं त्यजैनाम्॥
१४।४५

लक्ष्मणेन राजाज्ञया तथैव कृतम्। यथा—

आश्वास्य रामावरजः सतीं तामाख्यातवाल्मीकिनिकेतमार्गः।
निघ्नस्य मे भर्तृनिदेशरौक्ष्यं देवि क्षमस्वेति बभूव नम्रः॥
१४।५८

अयोध्यां परावर्तयन्तं लक्ष्मणं सीता कथितवती यत् "सकल-कल्याणकारी रामः मनसा मां नात्यजदपितु ममैव पूर्वजन्मनो दुष्कृतेरिदं फलम्"। यथा—

कल्याणबुद्धेरथवा तवायं न कामचारो मयि शङ्कनीयः।
ममैव जन्मान्तरपातकानां विपाकविस्फूर्जथुरप्रसह्यः॥
१४।६४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तदनन्तरं भगवान् वाल्मीकिरागत्य तां प्रबोध्य स्वाश्रमं नीतवान् च तस्याः मनोऽनुरञ्जनार्थं भोजनादि व्यवस्थार्थ च ऋषि कन्यां प्रतिष्ठापितवान् । यथा—

तवोरुकीर्तिः श्वशुरः सखा मे सतां भवोच्छेदकरः पिता ते ।
धुरि स्थिता त्वं पतिदेवतानां किं तन्न येनासि ममानुकम्प्या ॥
१४।७४

पुष्पं फलं चार्तवमाहरन्त्यो बीजं च बालेयमकृष्टरोहि ।
विनोदयिष्यन्ति नवाभिषङ्गामुदारवाचो मुनिकन्यकास्त्वाम् ॥
१४।७७

इत्थं च सीता तस्मिन् पावने आश्रमे समयं शान्त्या यापितवती । ८७श्लोकात्मकेऽस्मिन् सर्गे समग्रकथातिसंक्षिप्ततय वाल्मीकिरामायणवदेव वर्तते । केवलं सीता परित्यागाय भ्रातृभिः सह विचार विमर्शं तथा सुस्पष्टरूपेण वाल्मीकेराश्रमे तस्याः परित्यागकथा नूतन कवेरुद्भवना स्वकीया ।

पञ्चदशः सर्गः

१०३ श्लोकात्मकेऽस्मिन् सर्गे महाकविना वाल्मीकिरामायणानुसारमेव रामाज्ञया शत्रुघ्न द्वारा लवणासुर बध, राम द्वारा शम्बूकवध, ब्राह्मणपुत्र पुनर्जीवनादि वर्णनं कृतम् । यथा—

आदिदेशाथ शत्रुघ्नं तेषां क्षेमाय राघवः ।
करिष्यन्निव नामास्य यथार्थमरिनिग्रहात् ॥
१५।६

तपस्यनधिकारित्वात्प्रजानां तमघावहम् ।
शीर्षच्छेद्यं परिच्छिद्य नियन्ता शस्त्रमाददे ॥
१५।५१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स तद्वक्त्रं हिमक्लिष्टकिञ्जल्कमिव पङ्कजम् ।
पश्चान्निववृते रामः प्राक्परासुर्द्विजात्मजः ।।

१५।५२

तं दधन्मैथिलीकण्ठनिर्व्यपारेण बाहुना ।
पश्चान्निववृते रामः प्राक्परासुर्द्विजात्मजः ।।

१५।५६

लवणासुरनाशार्थं प्रस्थितः शत्रुघ्नः रात्रौ विश्रामार्थं बाल्मीकेराश्रमे तस्थौ । तस्यामेव रात्रौ सीता पुत्रद्वयं प्रसूतवती । शत्रुघ्नः पुत्रजन्मनः समाचारेण प्रसन्नो जातः । यथा—

सन्तानश्रवणाद्भ्रातुः सौमित्रिः सौमनस्यवान् ।
प्राञ्जलिर्मुनिमामन्त्र्य प्रातर्युक्तरथो ययौ ।।

१५।१४

लबणासुरवधानन्तरं परावर्तनसमये शत्रुघ्नः बाल्मीकेराश्रमं न ययौ न चायोध्यामागत्य पुत्रजन्मनः शुभसमाचारं रामाय निवेदितवान् । यतोहि शत्रुघ्नः बाल्मीकिना निषिद्धः समाचार-प्रदानेन । "यथासमयमहं बालकद्वयं रामाय प्रदास्यामि" इत्युक्तवान् । यथा—

स पृष्टः सर्वतो वार्तमाख्यद्राज्ञे न संततिम् ।
प्रत्यर्पयिष्यतः काले कवेराद्यस्य शासनात् ।।

१५।४१

मन्त्रद्रष्टा भगवान् बाल्मीकिः सीतायाः प्रसववेदनां गोपुच्छेन कुशैश्च दूरीकृतवान् । अतएव कुशप्रक्षालनेनोत्पन्नः "कुश" इति नाम्ना गोपुच्छ द्वारा प्रक्षालनेनोत्पन्नः "लव" इति नाम्ना प्रख्यापितो ऋषिणा । यथा—

स तौ कुशलवोन्मृष्टगर्भक्लेदौ तदाख्यया ।
कविः कुशलवावेव चकार किल नामतः ।।

१५।३२

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(उपर्युक्त घटनाद्वयवर्णनं बाल्मीकि रामायणे न दृश्यते। कवेरियमुत्कृष्ट कल्पना।)

वाल्मीकिना ताभ्यां शिशुभ्यां वेदवेदाङ्गानां शिक्षा प्रदत्त, स्वनिर्मित रामायणगान शिक्षयाऽपि शिक्षितम्। यथा—

साङ्गं च वेदमध्याप्य किंचिदुत्क्रान्तशैशवौ।
स्वकृतिं गापयामास कविप्रथमपद्धतिम्॥

१५।३३

भरतलक्ष्मणशत्रुघ्नानां च क्रमशः पुत्रद्वयं जन्म लेभे। यथा—

इतरेऽपि रघोर्वंश्यास्त्रयस्त्रेताग्नितेजसः।
तद्योगत्पतिवत्नीषु पत्नीष्वासन्द्विसूनवः॥

१५।३५

तदनन्तरं रामोऽश्वमेधयज्ञस्यायोजनं कृतवान्। यस्मिन् यज्ञे भूमण्डले स्थितास्तु सर्वे ऋषि महर्षयः समुपस्थिता एव बभूवुः स्वर्गस्थाः अन्तरिक्षस्था अपि ऋषि-मुनयः समुपस्थिताः तत्र रामचन्द्रः पत्न्या सहैव यज्ञकर्मकरणस्य शास्त्रीय विधानेन सीतायाः स्वर्णप्रतिमां निर्माय्य यज्ञविधानं चकार। यथा—

श्लाघ्यस्त्यागोऽपि वैदेह्याः पत्युः प्राग्वंशवासिनः।
अनन्यजानेः सैवासीद्यस्माज्जाया हिरण्यमयी॥

१५।६१

लवकुशौ इतस्ततो भ्रमन्तौ रामायणगानं सस्वरं कूर्वन्तौ अश्वमेधयज्ञस्थले समागतवन्तौ। तत्र रामेण पृष्ट स्तौ ऊचतुः यद् वाल्मीकिना आवाम् शिक्षितौ।

तदा रामः स्वयमेव बाल्मीकेराश्रमे गत्वा तस्मै समस्तं राज्यं समर्पितवान् यथा—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अथ सावरजो रामः प्राचेतसमुपेयिवान्।
उरीकृत्यात्मनो देहं राज्यमस्मै न्यवेदयत्।।

१५।७०

(नेयं कथा वाल्मीकि रामायणे वर्तते।)

तदा वाल्मीकिना प्रोक्तम्, इमौ द्वौ तव पुत्रौ वर्तेते सीतागर्भ-समुत्पन्नौ। अधुना भवान् साध्वीं सतीं सीतां स्वीकरोतु।

रामेणोक्तं मया तु पूर्वमेव सर्वं ज्ञायते, यत् सीता सर्वथा पवित्रा। किन्तु सामाजिकैस्तथा तदैव विश्वासं करिष्यन्ति यदा सीता स्वपवित्रतां तत्र सभायां प्रमाणयिष्यति। यथा—

स तावाख्याय रामाय मैथिलेयौ तदात्मजौ।
कविः कारूणिको वव्रे सीतायाः संपरिग्रहम्।।

१५।७१

ताः स्वचारित्रमुद्दिश्य प्रत्याययतु मैथिली।
ततः पुत्रवतीमेनां पतिपत्स्ये त्वदाज्ञया।।

१५।७३

ऋषेराश्रमात् रामः परावर्त्याऽयं यस्मिन् दिने प्रजाजनान् आहूतवान्। सभायां सर्वे समुपस्थिताः वभूवुः। तत्र सीता प्रोक्तवती "यदि मया मनसावाचा-कर्मणा पातिव्रत्यं रक्षितं न कथमपि भङ्ग कृतम् तर्हि इमाः तः पृथिविऽमाम् स्वक्रोड़े नयतु। यथा—

वाङ्मनः कर्मभिः पत्यौ व्यभिचारो यथा न मे।
तथा विश्वंभरे देवि मामन्तर्धातुमर्हसि।।

१५।८१

ततश्च पृथिवीं विदारयन्ती सिंहासनस्था तेजोमयी पृथ्वीमाता प्रादुर्बभूव तथा सीतां क्रोड़े कृत्वा तिरोभूता। यथा—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सा सीतामङ्कमारोप्य भर्तृप्रणिहितेक्षणाम् ।
मा मेति व्याहरत्येव तस्मिन्पातालमभ्यगात् ।।

१५।८४

रामस्तां घटनां दृष्ट्वा विस्मयविमुग्धो जातः। पृथिवीं प्रति च क्रोधः किन्तु तन्मध्ये एव स्वयं ब्रह्मा समुपस्थाय रामेण सह गुप्तमन्त्रणां कृत्वा तं सान्त्वयामास । यथा—

धरायां तस्य संरम्भं सीताप्रत्यर्पणैषिणः ।
गुरुर्विधिबलापेक्षी शमयामास धन्विनः ।।

१५।८५

तदनन्तरं महाराजः रामचन्द्रः त्रिभि मातृभिर्मध्ये यथास्थानं राज्यं प्रददौ ।

तदनन्तरं मुनिवेशधारी महाकालः रामं निकषा समागत्य ब्रह्मणः सन्देशं श्रावयामास। एतन्मध्ये एब सुलभकोपो दुर्वासा ऋषिः समागत्य शापभयं प्रदर्शयन् द्वारस्थ लक्ष्मण निषेधमुपेक्ष्य रामसमीपं गतवान् ।

लक्ष्मणश्च राजाज्ञाभङ्गदोषेण रामस्य देशनिष्कासनाज्ञां स्वयं मत्वा सरयू नदीतटमागत्य तत्र प्रविश्य स्वप्राणान् अत्यजत् । यथा—

स गत्वा सरयूतीरं देहत्यागेन योगवित् ।
चकारावितथां भ्रातुः प्रतिज्ञां पूर्वजन्मनः ।।

१५।९५

ततश्च रामः भ्रातृभ्यां सह उत्तरस्यां दिशि प्रस्थितः । सर्वेऽयोध्यावासिनः राममनुसृत्य प्रस्थिताः । यथा—

जगृहुस्तस्य चित्तज्ञाः पदवीं हरिराक्षसाः ।
कदम्बमुकुलस्थूलैरभिवृष्टां प्रजाश्रुभिः ।।

१५।९९

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रामस्तु विमानमारुह्य वैकुण्ठं ययौ। अन्येषां कृते सरयूं स्वर्ग-सोपानमिव कृतवान्।

समस्तायोध्यावासिनः तस्यां सरयूनद्यां स्नात्वा प्रविश्य सद्यः स्वर्गं गतवन्तः। यथा—

उपस्थितविमानेन तेन भक्तानुकम्पिना।
चक्रे त्रिदिवनिःश्रेणिः सरयूरनुयायिनाम्॥

१५।१००

सर्वे ऋक्षवानरादयः स्वकीयं देवरूपं कृत्वा यथास्थानं ययौ। देवा एव ऋक्षवानररूणेणावतरिताः आसन्। भगवान् रामचन्द्रः स्वर्गे स्थानाभावेन अयोध्यावासिनां कृते तत्रापरं स्वर्गं निर्मितिम्। यथा—

स विभुर्विबुधांशेषु प्रतिपन्नात्ममूर्तिषु।
त्रिदशीभूतपौराणां स्वर्गान्तरमकल्पयत्॥

१५।१०२

सहैव हिमालय क्षेत्रे हनूमन्तं दक्षिणगिरौ चित्रकूटे विभीषणं च कीर्तिस्तम्भद्वयरूपे स्वयं रामः स्वकीय विराट् ब्रह्मशरीरे निलीनो बभूव। यथा—

निर्वर्त्यैवं दशमुखशिरश्छेदकार्यं सुराणां
विष्वक्सेन स्वतनुमविशत्सर्वलोकप्रतिष्ठाम्।
लङ्कानाथं पवनतनयं चोभयं स्थापयित्वा
कीर्तिस्तम्भद्वयमिवगिरौ दक्षिणे चोत्तरे च॥

१५।१०३

इत्थं च महाकवि कालिदासेन स्वकीय रघुवंश महाकव्ये दश १० सर्गतः १५ पञ्चदश सर्गपर्यन्तं षट्सर्गेषु सम्पूर्ण रामकथाऽतिसंक्षिप्त रूपेण वर्णिता। या च कथा काश्चित् घटनाः विहाय प्रायः वाल्मीकिरामायणकथानुरूपा विद्यते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तत्र सर्वत्र कालिदास काव्यसुषमा मनोहारिणी काव्य-रस-मनोज्ञा च राजते ।

उपर्युक्त विवरणे समागतोद्धरणै सादृज्ञातुं शक्यते काव्यमर्मज्ञैः ।

●

रामकथायामस्यां महाकविना मैथिली, मैथिल, मिथिला शब्दानां प्रयोगाः विशेषरूपेण कृताः । येनानुभूयते यत् मैथिलीं मिथिलां, मैथिलं च प्रति कवेर्विशेषेणानुरागोऽस्ति ।

यतोहि वैदेही, विदेह, भूमिजादि शब्दमपहाय मैथिलीति शब्दं प्रति भावात्मिकाऽनुभूतिः कवेः विद्यते । यथा—

एकादश सर्गः—

व्यादिदेश गणशोऽथ पार्श्वगान्कार्मुकाभिहरणाय मैथिलः ।
तैजसस्य धनुषः प्रवृत्तये तोयदानिव सहस्रलोचनः ॥४३॥

दृष्टसारमथ रुद्रकार्मुके वीर्यशुल्कमभिनन्द्य मैथिलः ।
राघवाय तनयामयोनिजां रुपिणीं श्रियमिव न्यवेदयत् ॥४७॥

आससाद मिथिलां स वेष्टयन्पीडितोपवनपादपां वलैः ।
प्रीतिरोधमसहिष्ट सा पुरी स्त्रीव कान्तमरिभोगमायतम् ॥५२॥

एवमात्तरतिरात्मसंभवांस्तान्निवेश्य चतुरोऽपि तत्र सः ।
अध्वसु त्रिषु विसृष्ट मैथिलः स्वां पुरीं दशरथो न्यवर्तत ॥५७॥

मैथिलस्य धनुरन्यपार्थिवैस्त्वं किलानमितपूर्वमक्षणोः ।
तन्निशम्य भवता समर्थये वीर्यश्रृङ्गमिव भग्नमात्मनः ॥७२॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अथ पथि गमयित्वा क्लृप्तरम्योपकार्ये
कतिचिदवनिपालः शर्वरीः शर्वकल्पः।
पुरमविशदयोध्यां मैथिलीदर्शनीनां
कुवलयितगवाक्षां लोचनैरङ्गनानाम् ।।९३।।

द्वादश सर्गः—

स जहार तयोर्मध्ये मैथिलीं लोकशोषणः।
नभोनभस्ययोर्वृष्टिमवग्रह इवान्तरे ।।२९।।

संरम्भं मैथिलीहासः क्षणसौम्यां निनाय ताम्।
रूपं शूर्पणखा नाम्नः सदृशं प्रत्यपद्यत ।।३६।।

स रावणहृतां ताभ्यां वचसाचष्ट मैथिलीम्।
आत्मनः सुमहत्कर्म व्रणैरावेद्य संस्थितः ।।५५।।

त्रयोदश सर्गः—

तत्रेश्वरेण जगतां प्रलयादिवोर्वीं
वर्षात्ययेन रूचमभ्रघनादिवेन्दोः।
रामेण मैथिलसुतां दशकण्ठकृच्छ्रा-
त्प्रत्युद्धृतां धृतिमतीं भरतोववन्दे ।।७७।।

पञ्चदश सर्गः—

भूयस्तपोव्ययो मा भूद्वाल्मीकेरिति सोऽत्यगात्।
मैथिलीतनयोदीप्तनिःस्पन्दमृगमाश्रमम् ।।३७।।

तं दधन्मैथिलीकण्ठनिर्व्यापारेण बाहुना।
पश्चान्निववृते रामः प्राक्परासुर्द्विजात्मजः ।।५६।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अथ प्राचेतसोपज्ञं रामायणमितस्ततः ।
मैथिलेयौ कुशलवौ जगतुर्गुरुचोदितौ ।।६३।।

स तावाख्याय रामाय मैथिलेयौ तदात्मजौ ।
कविः कारुणिको वव्रे सीतायाः संपरिग्रहम् ।।७१।

ताः स्वचारित्रमुद्दिश्य प्रत्याययतु मैथिली ।
ततः पुत्रवतीमेनां प्रतिपत्स्ये त्वदाज्ञया ।।७३।।

उपर्युक्त मधुमय पद्यैर्विपश्चिदपश्चिमाः मनीषिणोगवेषकश्च स्वयमेवावगमिष्यन्ति कालिदासस्य भव्यभावनाम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महावीरचरितम्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महाकवि कालिदासस्य रघुवंश महाकाव्यान्तर्गत रामकथा वर्णनानन्तरं संस्कृत वाङ्मये महाकवि भवभूतेर्नाम सर्वप्रथमं समक्षमायाति। अष्टम शताब्दयांस्थितोऽयं महाकविः काव्याकाशे व्याप्तं प्रकाशमान नक्षत्रमिवाद्यापिविद्योततेऽनन्त कालपर्यन्तं च प्रकाशिष्यते च नात्र कश्चिन्मतभेदलवोऽपि।

महाकवेः भवभूतेः रामकथा प्रसङ्गे विश्वविख्यातं नाटकद्वयं विराजते। 'महावीरचरितम्' 'उत्तररामचरितम्' इति च। तत्र 'महावीरचरितम्' रामचन्द्रस्य पूर्वचरितं जन्मनः आरभ्य रावणवधानन्तरं राज्याभिषेकपर्यन्तं वर्णन परिपूतं चकास्ति। "महावीर" शब्देनात्र रामचन्द्रस्य ग्रहणं वर्तते। यद्यपि "महावीर" शब्दः हनूमतः पर्यायवाचित्वेनप्रसिद्धः किन्तु तत्रापि विशेषणरूपेण समागतः महावीर शब्दो विशेष्यतां गतः तथैवात्र विविध वीरता प्रदर्शनेन "महावीर" विशेषण विशिष्टो रामः 'महावीर' शब्देनात्र विशेष्यरूपे रूढो विद्यते। यतो कविना रामचन्द्रस्य चरितमत्र वीरभावेन चित्रितम्।

अस्य नाटकस्य कथावर्णनादिकमपि बाल्मीकि रामायणमाधारी कृत्यैव विराजते किन्तु यत्र तत्र कविना मौलिक रूपेणापि परिवर्तनं विधाय नूतन घटना वर्णिता। यस्य स्वातन्त्र्यं काव्य शास्त्रनिर्माण-परम्परायां कस्यापि वर्तते।

नाटकेऽस्मिन् निम्नोद्धृतं घटनाचक्रं नवीनतामाद्यत्ते :—

(क) रामस्य वनगमनं विवाहानन्तरं मिथिलात एव दृश्यते किन्तु सर्वस्मिन् रामायणेऽयोध्यातो विद्यते।

(ख) कैकेय्याः दासीरूपेण मन्थरा मिथिलायां जनकपुरे एव समागता, तत्रैव कैकेय्याः वरदानद्वयं तया याचितम्। विवशेन राज्ञा दशरथेन स्वीकृतम्। रामस्तत एव सीता-लक्ष्मणाभ्यां सहितो वनं प्रतस्थे।

(ग) अस्मिनू नाटके रावणेन रामवधार्यं वाली प्रेषित इति नूतना कथा विद्यते। या चान्यत्र नैवास्ति।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(घ) माल्यवान महानुभावस्य सम्पूर्ण मन्त्रणा भवभूतेरूद्भावना।

(ङ) किष्किन्धायामेव विभीषणस्यागमनं, तेन सह मैत्री वालि द्वारा विभीषणस्य प्रशंसा, सुग्रीवाङ्गदयोः रामाय समर्पणादिक वर्णनमपि नूतनशैल्यामेव परिदृश्यते।

उपर्युक्त संक्षिप्त विवरणेन कविविभूति भवभूतिः सर्वत्र स्वकीय काव्यकलाकौशलं चातुर्यं च प्रदर्शितवान्, यद्यपि रामकथा वर्णनं तु रामायणानुसारि एव।

अत्र प्रत्येकाङ्कस्य संक्षिप्त कथा वर्णनं कियन्ति पद्योद्धरण सहितं सरल संस्कृत गद्ये विधीयते। अनेन सर्वसामान्यजनैरपि विभिन्न कविवर्णिता रामकथा सुगमतया ज्ञास्यते येषां विविधास्वादेन संतृप्ताः भविष्यन्ति रामकथानुरागिणः। इत्येव ममास्याः परियोजनायाः मुख्यं लक्ष्यम्।

प्रथमोऽङ्कः

अथस्वस्थाय देवाय नित्याय हतपाप्मने।
त्यक्तक्रम विभागाय चैतन्यज्योतिषे नमः॥

(मङ्गलाचरणम्) मङ्गलाचरणेऽस्मिन्नेव महाकविः गम्भीर पाण्डित्यं प्रदर्शयन् अन्याधारनिरपेक्षाय उत्पत्तिविनाशादि क्रमरहिताय परब्रह्मस्वरूपाय चैतन्यज्योतिः पुञ्जाय रावणकुम्भकर्ण-ताडका-खरदूणादि पापरूपनाशमूर्तये देवाय रामचन्द्राय नमः इत्युक्त्वा शब्दतोऽर्थतश्च काव्यार्थ सूचनां प्रददाति।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अङ्केस्मिन् विश्वामित्र यज्ञरक्षार्थं रामलक्ष्मणौ प्रतिनियुक्तौ राज्ञा दशरथेन । तत्र यज्ञे कुशध्वजोऽपि सीता उर्मिला सहितस्तत्रोपस्थितो विश्वामित्रामन्त्रेण । वार्तालापक्रमे विश्वामित्रेण तयोः रामक्ष्मणयोः परिचयं प्राप्य प्रसन्नतां गतः कुशध्वजः । एतन्मध्ये एव एव रामः अहल्यायाः उद्धारं कृतवान् । "अहल्या नाम गौतमस्य महर्षेः धर्मपत्नी । यस्याः शतानन्द आङ्गिरसश्चाजायत तामिन्द्रश्चकमे । तस्मात् गौतमो मन्युमवाप । तस्य शापेनाहल्याऽन्धतामिस्रमभ्यगात् (अन्धतामिस्रम्-काष्ठपाषाणभावम्) सेयमद्य रामचन्द्रतेजसा तस्मादेनसः (पापात्) निरमुच्तत" ।

अनेन वचसा रामस्यालौकिकशक्तित्वं देवत्वं प्रतिपादितं कविना ।

तदा रावणदूतः रावणेन सह सीता विवाहार्थं प्रस्ताव नीत्वा समागतवान् । राजा कुशध्वजः पुनः पुनः प्रस्तावमिमं समुपेक्षितवान् ।

विश्वामित्रः रामाय दिव्यास्त्रं प्रददौ । मध्ये रामेण सुबाहुताडका-मारीचादयः निहताः । विश्वामित्राज्ञया शिवधनुस्तत्रानीतं, रामेण शिवधनुर्भङ्ग कृतम् । तथा च रामस्य सीतया साकं, भरतस्य माण्डव्या सह उर्मिलायाः लक्ष्मणेन साकं, शत्रुघ्नस्य श्रुतिकीर्त्या सह विवाहः सुसम्पन्नः । संक्षिप्तेयं कथा प्रथमेऽङ्के विराजते । अत्र सर्वत्र रामस्य वीरतायाः दिग्दर्शनं जायते ।

विश्वामित्रप्रसङ्गे कवि वर्णयति "तुरीयो मेध्याग्निराम्नायाः पञ्चमोऽपिवा, अथवा जङ्गमं तीर्थं धर्मो वा मूर्ति संचरः ।" अर्थात् विश्वामित्रः गार्हपत्य-दक्षिणा-हवनीयरूपाग्नि त्रय विलक्षणः पवित्रः अग्निः अथवा पञ्चमवेदस्वरूपः अथवा संचरण शीलं तीर्थरूपम् अथवा जङ्गमोमूर्तिरूपः धर्म एव ।

"अश्रान्त पुण्य कर्माणः पावन प्राय कीर्तयः ।
महाभाग्य विदस्तेषां यूयमेवं स्तवक्षमाः ।।"

अशेष पुण्यकर्ता पवित्रकीर्तिरूपः सर्वज्ञो भवान् जनक एव सर्वथा क्षमः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्फूर्जद्वज्र सहस्रनिर्मितमिव प्रादुर्भवत्यग्रतो
रामस्य त्रिपुरान्त कृद्धि विषदां तेजोभिरिद्धधनुः
शुण्डारः कलमेन यद्वचले वत्सले दोर्दण्डक-
स्तस्मिन्नाहृति एव गर्जित गुणं कृष्टं च मानं च तत्

अर्थात् देदीप्यमानं सहस्रवज्र निर्मितं तेजोमयं शिवधनुः राममग्रे प्रकटीभूतम् यदुपरि पर्वतोपरि हस्तिशावकेन शुण्डपरिपातवत् रामेण करं (हस्तं) धृतम् धनुः प्रत्यञ्चामाकृष्ट त्वरितमेव भग्नं च कृतम् ।

इत्थं च जनकप्रतिज्ञानुरूप एव सीता विवाहो रामेण सह सुसम्पन्नः ।

द्वितीयोऽङ्कः

अस्मिन्नङ्के रावणप्रेरितः परशुरामः शिवधुनुर्भङ्ग समाचार-मवगत्य क्रोधोन्मत्तः सन् मिथिलां प्राप्तवान् । यतोहि मिथिलातः परावर्तितो राक्षसः रावणाय तत्रत्य सीताविवाहवर्णनं सविस्तरं निवेदितवान् । तेनैव कारणेन परशुरामः प्रेरितः । यत्र संक्षत्रियकुल कुठारः जामदग्न्यः शिवधनुर्भङ्गकारणेन रामवधार्थमुद्यतोऽभूत् । तत्र शतानन्द-वसिष्ठ-जनक-विश्वामित्र प्रभृतयः महर्षयः तस्मै सान्त्वनां प्रदद्दुस्तथा शिवधनुर्भङ्गस्य स्थितिं वर्णितवान् किन्तु परशुरामः शान्तो न जातः ।

अत्र सद्यः परिणीतः रामः कन्यान्तः पुरे सखीभिः सहितया सीतया सह विविध मधुर वार्तालापे संलग्नः आसीत् । परशुरामः रामेण साक्षात्कारार्थमेवाग्रहवान् आसीत् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इति ज्ञात्वा रामः सभास्थलमागत्य परशुराम दृष्ट्वा शिष्टाचारं प्रदर्शितवान् । परशुरामस्तु तं रामं वध्यश्रेण्यामेव परिगणयन्नासीत् ।

शतानन्द जनक प्रभृतयः पुनस्तं क्रोधस्वरूपं विविध प्रकारेण सान्त्वयितुं प्रयतितवन्तः । न तेन स शान्तो बभूव । ततश्च स्वयं जनकः शस्त्रं ग्रहीतुं शतानन्दश्च शापार्थं कमण्डलं ग्रहीतुमुद्यतो जातः ।

तृतीयोऽङ्कः

अस्मिन्नङ्केऽपि परशुरामक्रोधवर्णनं, परशुरामपराजयवर्णनं तथा तस्य तपः कर्त्तुं परावर्तनवर्णनमेव मुख्यतो विद्यते ।

अन्ते च वसिष्ठ-विश्वामित्रौ मिलित्वा परशुरामं वोधयियुं निखिल प्रयासं कृतवन्तौ । तथापि न तेनापि स परशुधारी प्रकृतिस्थो जातः । स रामबधार्थमेव कृतप्रतिज्ञः सन्नद्धश्चासीत् ।

इति सर्वमवलोक्याकर्ण्य च रामः परशुरामं पराजेतुं निजप्रतिज्ञां श्रावयामास । परशुरामः त्वरितमेव रामेण पराजितो जातः यथा—

"पौलस्त्य विजयोद्दाम कार्तवीर्यार्जिनद्विषम् ।
जेतारं क्षात्रवीर्यस्य विजयेयं नमोऽस्तु वः ।।" ३।४५

अत्र द्वितीयतृतीयाङ्कयोर्विशदरूपेण परशुरामागमनवर्णन, तस्य हठवादितावर्णनं, जनकशतानन्द-विश्वामित्र-वसिष्ठादि वरिष्ठ विद्वद्भिः ऋषिभिश्च परशुराम सान्त्वनावर्णनं ततश्च रामचन्द्रद्वारा सहजरूपेण परशुरामपराजयवर्णनं विद्यते ।

विस्तरेण एतद्वर्णनमस्मिन्नेव नाटकेऽवलोक्यते । इदं तु भवभूतेरेव पाण्डित्यं वैशिष्ट्यं चानुभूयते । सर्वत्र वीररसस्य प्राधान्यं दृश्यते ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सत्यामप्येवं स्थितौ दृश्यकाव्ये कठिनमिदं रसभङ्गतामुत्पादयति इति मे विचारः ।

चतुर्थोऽङ्कः

पराजितः परशुरामः तपः कर्त्तुं गतवान् । परशुरामः ज्ञातबान् यत् अयं रामः साक्षात् विष्णोरवतारः । परशुरामस्य पराजयसमाचारेण रावणस्यमन्त्री 'माल्यवान' महान चिन्तितोऽभूत् । स शोचते स्म यत् कथं रामस्य पराजयः स्यात् यतोहि रामोभ्युदयेन तस्य मनसि महती चिन्ता समायाता ।

माल्यवान शूर्पणखामाहूय बिचारितवान यत् इन्द्रादयः सर्वे देवाः राममेव स्तुवन्ति । कथं स वश्यो भवेत् । शूर्पणखा प्रोक्तवती, सत्यमिदं, अहमप्यधुना भीतास्मि किं करणीयमिति न स्फुरयति ।

माल्यवान कथितवान्, अधुनैव अयोध्यातः कैकेय्याः दासो मन्थरा मिथिलां समायाति । त्वम् तस्या हृदि प्रविश्य मन्थरायाः बिचारः परिवर्तनीयः । तन्मुखात् मिथिलायां स्थितः दशरथः शुच्यतां, भवता पूर्वमेव मम राज्ञै वरदानं द्वयं प्रदत्तं । तत् वरदानद्वयं कृपया अधुना प्रदेयं । अत्र वरदानद्वयस्य नाम माल्यवान शूर्पणखाया कर्णे कथयति यत् भरताय राज्यम्, रामाय चतुर्दशवर्ष यावत् वनवासः इति । (अत्र नाटकीय कठिन वस्तुनः अभिनये कथनं स्पष्टं न शोभनं इति मत्वा कविना माल्यवता कर्णे गुप्तरूपेण कथितः । इति कवेश्चमत्कारः ।)

माल्यवान—या सा राज्ञा दशरथेन प्राक्प्रतिश्रुतवरद्वया राज्ञो भरतमाता कैकेयी, तया 'मन्थरा' नाम परिचारिका दशरथस्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वार्ताहारिणी मिथिलामयोध्यातः प्रेषिता मिथिलोपकण्ठे वर्तते इति संप्रत्येव मम निवेनितं चारैः । तस्यास्त्वया शरीरमाविश्यैवमेवं च कर्त्तव्यम् ।

शूर्पणखा—किमन्यथा करिष्यत्येवं राम इति ।

इत्थं च वने समागतं रामं आक्रम्य सीताहरणं कृत्वा रावणेच्छां वयं पूरयिष्यामः शूर्पणखा विरोधं कृतवती यत् दूरस्थं रामं समीपमानयनं न शोभनम् । किन्तु माल्यवता नायं विचारः स्वीकृतः । अत्र माल्यवान-शूर्पणखा मध्ये विस्तृतो वार्तालापो सञ्जातः ।

एतन्मध्ये दशरथ-वसिष्ठ-विश्वामित्र प्रभृतिमध्ये विवाहमङ्गलोत्सवक्रमे रामपरशुरामौ अपि तत्र समुपस्थितौ । अत्र पुनः परशुरामः समागत्य स्वकृतापराध स्वीकृत्य क्षमा याचतेस्म । सहसा तत्र मन्थरा समागता यस्य हृदये स्थिता शूर्पणखा ब्रूते । मन्थरा-कैकेय्याः पत्रमेकं वर्तते तत् गृहाण यथा—

रामः—(उपसृत्य) अयि मन्थरे, अपि कुशलमम्बायाः ।

शूर्पणखा—कुशलं सुखं च । वत्स, सा सदा प्रस्नुतस्तनी मध्यमाता ते माता परिष्वज्याज्ञापयति—"पुत्रक ! पुरा प्रतिज्ञातौ द्वौ वरौ महाराजं ज्ञापयामि । तत्र मे विज्ञप्तिहारको भव ।" एष ते तातस्य कार्यलेखः ।

लक्ष्मणः—(गृहीत्वा वाचयति)

अस्त्वेकेन वरेण वत्सभरतो भोक्ताधिराज्यस्य ते
यात्वन्येन बिहाय कालहरणं रामो वनं दण्डकाम् ।
तस्यां चीरचरश्चतुर्दशसमास्तिष्ठत्वसौ तं पुनः
सीतालक्ष्मणमात्रकात्परजनादन्यो न चानुव्रजेत् ।।४१।।

रामः प्रसन्नो भूत्वा लक्ष्मणं साकं तत्रैव पितुः दशरथस्य समीपमागत्य याचते—"योऽसौ वरद्वयन्यासस्तं माता मेऽद्य मध्यमा :

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यथेष्टं नाथते तात तत्प्रसादार्थिनो वयम्, अर्थात् मध्यमा माता भवत् समीपे भवद्भिः प्रदत्तं यत् वरदानन्यस्तं तद्वयं अद्य सा याचते। तस्याः इच्छा पूरणीया इति मे प्रार्थना।" दशरथेनोक्तम् रघुकुलोत्पन्ना सत्यसंधा जायन्ते, तदा तव सदृशे याचके समुपस्थिते, कः रघुकुलोद्भवः प्राणामपि न दास्यति कथय का याचना। लक्ष्मणः कैकेयी पत्रं पुनः वाचयति।

इति श्रुत्वा राजा दशरथः मूर्च्छति। मूर्च्छामपगते रामः कथयति—भवतां सत्यं प्रियं रामो वा प्रियः तत्र का विचिकित्सा। मम मध्यमा माता पूर्णकामा अस्तु। कथं भवद्भिः शोचते। दशरथेन 'एवमस्तु' इत्युक्त्वा मौनी भूतः। तत्र जनकः सीतामपि रामेण सह गन्तुं समादिष्टवान्।

एतस्यां कारुणिक स्थितौ रामः तत्रोऽपस्थित "युधाजित" नामकं मातुलं (कैकेयी भ्रातरं) प्रति प्रोक्तवान् यत् अयं तातः दशरथः अयं तातः जनकः, इमाः मातरः अस्मिन् शोके एते भवता आश्वासनीया वयं तु प्रचलामः। यथा :—

"एष तातश्च तातश्च प्रियापत्याश्च मातरः।
आश्वासनीया शोकेऽस्मिन् भवतैव गता वयं इति ॥"

ततः राम-भरत-लक्ष्मण-युधाजितः दशरथ-जनकानां मध्ये महान वार्तालापः सञ्जातः। तस्मिन् तर्क वितर्के रामः पितुराज्ञां शिरसि निधाय भरतं च युधाजित हस्ते समर्प्य सीतालक्ष्मणाभ्यां सहितो वनं प्रस्थाय चित्रकूटं प्राप्तवान्।

अस्मिन् अङ्के महाकविना भवभूतिना सर्वाः कथाः घटनाश्च स्वकोय कल्पनैव वर्णिता। नैवं रूपा कथा कस्मिन्नपि रामायणे दृश्यते। अतएव नाटकेऽस्मिन् यति विशेषता नूतनता च विद्यते। अस्य मूलतः परिवर्तनस्य कः आधारः इति तु कविरेव जानाति। मया अनुमीयते यत् कविः कैकेयीचरित्रं दूषयतिं नेच्छति। अथ च मन्थरामपि दोषमुक्तं कर्तुमहितिवे। यतोहि तस्या हृदि प्रकृतप्रवेश शक्तिमती शूर्पणखा राक्षसी प्रविष्टा। तथा च कैकेयी सद्यः राजानं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

न किमपि कथितवती। इत्थं हि जनकपुरतः—मिथिलातः एव रामवनगमनकथां परिकल्प्य अयोध्यां तत् कष्टदर्शनेन् मुक्तवान्। भवतु वा कविकल्पना मम विचारेण तु यति परिकल्पना नैव श्लाघनीया यतोहि मूलभूत रामकथातः दूरीभूतमिदं नाटकम्।

पञ्चमोऽङ्कः

अस्मिन् अङ्के सम्पाति-जटायु नाम्नोः द्वयो ग्रिद्धभ्रातरोर्मध्ये वार्तालापप्रसङ्ग प्रथमम्। यत्र जटायुः वार्धक्यस्य विवेचनां कुर्वन् कथयति—"शक्तिर्हि कालस्य विभोरजराख्या शक्तित्यन्तराणां प्रतिबन्ध हेतुः", अर्थात् कालशक्तिः सर्वोपरि वर्तते। किन्तु वृद्धावस्था तु कालशक्तेरपि अधिका वर्तते या जरा सर्वकार्यं प्रतिबन्धिका। तदनन्तरं रावणेन मायामृगरूपधारिणं मारीचं संप्रेष्य रामं तम् स्वर्णमृगं अनुसक्तं दृष्ट्वा मध्ये छलेन सीतां जहार।

आकाशमार्गे सीतां नीत्वा गच्छन्तं रावणं जटायु दृष्ट्वान्। जटायुना धिक्कृतः अवरुद्धश्च रावणः तेन सह तूर्युद्धं कृतवान् यत्र जटायुः पक्षहीनः सन् भूमौ न्यपतत्। युद्धक्रमे जटायुना कथितम् यत् हे पौलस्त्य तव पूर्वजेन प्रलयकाले वेदाः रक्षिता, त्वयापि वेदाः पठिता, महाबलशालिना त्वया सर्वे देवादयः पराजितः। कथमस्मिन् दुश्चरित्रे प्रवृतः। यथा—

"धर्तारः प्रलयेषु ये भगवतो वेदस्य विद्येश्वरा—
स्तेपामन्वयकेतनस्य भवतः स्नातस्य वेदव्रतैः।
जेतुर्वैतलसद्मनोऽपि तपसा दीपतस्य राज्ञः सतो
निन्द्या दुश्चरितावतारजननी जाता कथं दुर्मतिः॥"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रावणः पिशाचमुख सहस्रगर्दभयुते रथे सीतामास्थाय गच्छति इति नूतन कथा कविना कथिता। गदर्भयानवर्णनं न कुत्रापि दृश्यते। यथा—

परः सहस्रैरायुक्तं पिशाचवदनैः खरैः।
रथं वधूटीमारोप्य पापः क्वाप्येष गच्छति॥

अनन्तरं "दनुः" नाम कश्चित् जनः रामचरणपरिपूतः शापान् मुक्तः दिव्यपुरुषरूपः रामं निकषा समुपस्थितः। येन् कथितं यत् माल्यवता प्रेरितः महाबलशाली बाली तव वधार्थं रावणेन् प्रेषितः। रामेणोक्तं—भद्रं कृतं तेन। का क्षतिः? तदा राम-वालिमध्ये युद्धः सञ्जातः। वालि पराजितः। पराजयानन्तरं वालिना सुग्रीवाङ्गदौ रामाय सर्मपितवान्। ततः एव राम-सुग्रीवं मैत्री सञ्जाता। (इत्यपि नूतन कथा विद्यते या कवि कल्पना परिकल्पिता) यथा—

मद्रदोहाच्छपथात्प्रसीदतु मतिः पौलस्त्य सुग्रीवयो—
र्हे वीराः कपयः रामोऽस्तु भवतामीशः स एवास्मिचेत्
रामात्प्राप्तमहार्घ्यवीरमरणस्याशास्तिरेषाद्य मे
योऽहं सूर्यसुतः स एव भवता योऽयं स वत्सोऽङ्गदः॥

तदनन्तरं रामः स्वपितुः मित्रस्य महाबलशालिनः जटायु-ग्रिद्धस्य अन्तिम संस्कारादिकं विधाय सीतान्वेषणे सुग्रीवादिभिः सह तत्परो बभूव।

षष्ठोऽङ्कः

वालिनः मरणोपरान्तं माल्यवान् चिन्तितो जातः यतोहि तस्य पक्षः दुर्बलो जातः। तेन प्रयासः कृतः यत् रावणः कोऽपि समुप्युक्तः प्रयासः कुर्यात् येन एतस्य महत्या स्यायाः समासमधानं स्यात्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किन्तु हठी-दुराग्रही-भीषणः रावणः मन्त्रिणोमाल्यवतः कथने न किमपि ध्यानं दत्तवान्। रामः लङ्कायां आक्रमण कृतवान्। राम-रावणसैन्योर्मध्ये तुमुलं युद्धं सञ्जातं। उभयोः सैन्यानां हताहत सङ्ख्या महती सञ्जाता।

एतत् क्रमे महाकविः एकस्मिन् अतिविशिष्टरूपकालङ्कारयुवते पद्ये प्रोक्तवान् यत् अस्य दुर्विपाकस्य विषवृक्षस्य वीजं रावणस्य अविनयः यस्य आदिकारणं सीताप्राप्तेरिक्षा, रामलक्ष्मणौ परिवञ्चितुं शूर्पणखाया प्रस्थानं अङ्कुरः, मारीच छलप्रयोगः पल्लवः सीताहरणं शाखासमुदायः, वानराः शिष्य बालिनः वधः तथा विभीषणस्य रामशरणगमनं च कलिकाः सन्ति। फलतः रावण-विनयविषवृक्षस्य लङ्कानाशः फलं, यथा—

वीजं यस्य विदेहरा जतनयायाच्ञाङ्रोऽपि स्वसु-
यात्रा तौ परिवञ्चितुं किसलयं मारीचमायाविधिः।
शाखाजालमयो निजापहरणं तस्य स्फुटं कोरकाः
कीशाधीशवधोऽनुजस्य गमनं सख्यं तयोस्तेन च ॥१॥

एवं च रावणः सत्यामपि लङ्काविपत्तौ कठिनस्थितौ केवलं सुन्दरीम् सुकेशीम् सीतामेव चिन्तयति यस्याः सौन्दर्यं रावणमुखेन् कविः वर्णयति, यथा—

मुखं यदि किमिन्दुना यदि चलाञ्चले लोचने,
किमुत्पलकदम्बकैर्यद तरङ्गभङ्गी भ्रुवौ।
किमात्ममवधन्वना यदि सुसंयता कुन्तलाः
किमम्बुवहडम्बरैर्यदि तनूरियं किं श्रिया ॥८॥

ततश्च रामचन्द्रः ससैन्यः लङ्काद्वारि समागतः। तत्र तुमुलं युद्धमारभत। तत्र मेघनादलक्ष्मणोर्युद्धे लक्ष्मणो विमूर्च्छितो जातः। रामपक्षे हाहाकारो जातः। हनुमान सर्वेषां आज्ञा सञ्जीवनीमानेतुं हिमालयक्षेत्रे प्रस्थितवान्। ततश्च सञ्जीवनी शिलामेवोत्थाय आनीतवान्। तेन् लक्ष्मणः मूर्छां विहाय उत्थितवान्। तदनन्तरं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निर्णायकमन्तितं युद्धं बभूव, यत्र मेघनाद, कुम्भकर्ण, रावणः प्रभृतयः सर्वे निहता। सीता समुद्धारिता।

अन्ते च देवगणाः पुष्पवृष्टिं च कुरु। सर्वे देवाः ऋषयश्च आश्वास्ता अभूवन्, यथा—

आभ्यां ब्रह्माच्युतास्त्रस्मरणसुरभिभिर्मार्गणै राघवाभ्या
मूर्धानौ चिच्छिदाते रजनिचरपते रावणेश्च क्रमेण।
पश्चाद्रक्षः कबन्धो मृधभुवि विवशः सोऽपि रक्षोऽवरोधः
क्षीण्यां श्रीदाशरथ्या शिरसि च वियतः पुष्पवर्षं पपात ॥६३॥

अस्मिन् अङ्के महावीरारूपेण वर्णितस्य रामस्य युद्धकौशलं क्षमाशीलतां च वैशिष्ट्यं स्थानं भजते। सहैव यत्र मन्त्रिणो माल्यवतः चरित्रं यथा अस्मिन्नाटके दृश्यन्ते न तथा वाल्मीकि रामायणादौ वर्तते। प्रारम्भतेव मास्यवान निरन्तरं रावणं परांसति, रावणस्य कुकृत्येऽपि तस्य सुरक्षार्थं यतते। इत्थं व माल्यवतः चरित्रं कविना न्यूनिकृत अस्मिन् नाटके।

●

सप्तमोऽङ्कः

रावणवधानन्तरं भगवान् रामचन्द्रः स्वप्रतिज्ञानुसार विभीषणाय लङ्काराज्यं समर्प्य तस्या अधिपतिरूपेण स्थापयामास। विभीषणोऽपि राज्याधिकारं प्राप्य देववन्दिनां मुक्तं कृतवान्।

ततश्च अशोकवाटिकातः सीता सादरं रामशिविरमानीता। तत्र रावणगृहोऽसिता सीतायाः अग्निपरीक्षां विधाय विशुद्धां निष्कलुषां सीतां रामो गृहीतवान्, यथा—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पतिव्रतामयं ज्योतिर्ज्योतिषान्येन शोध्यते ।
इन्द्रमाश्चर्यमथवा लोकस्थित्यनुवर्तनम् ॥४॥

अर्थात् पतिव्रतातेजः अन्त्यतेजः परिशोधयति । किन्तु इन्द्रमाश्चर्यं यत् इदं सीतारूपीज्योति अन्येन ज्योतिषा-तेजसा शोध्यते । किन्तु इदं तु लोकमर्यादायाः पालेन रामेण कृतं क्रियते च ।

अत्र लङ्का अलका नाम्न्यो द्वे सख्यो परस्परं वार्तालापं कुर्वन्त्यौ कथयतः । लङ्कानगरीरूपा लङ्का कथयति यत् रावण-विनाशेन् वयं विनष्टा जाताः । तत्रात्मका कथयति यत् रावण विनाशेन पापस्य, अत्याचरस्य, उत्पातस्य, आतङ्कस्य विनाशो जातः । अथ च अत्र दैवीशक्त्यः समागताः । सर्वत्र शान्त्या सानन्दं अवशिष्टाः लङ्कावासिनः जीवनं यापयिस्यन्ति ।

ततः रामचन्द्रः सीतालक्ष्मण सहितः विभीषण, सुग्रीवाङ्गद जाम्ववान हनुमान प्रभृतिश्च साकं स्वेच्छागामिनं पुष्पकविमान-मारुह्य अयोध्यां प्रथस्ते । मार्गे च विमाजात् रामः सीतां तत्तत परिदर्शन् स्मारयन् च अयोध्यामिभयौ । मार्गे समागतं विशाल सागरं, किष्किन्धा, ऋष्यमूक, पञ्चवटीं, चित्रकूटं, तीर्थराजं प्रयागं, भारद्वाजाश्रमं च परिदर्शितवान । मार्गे विश्वामित्रमप्याश्रमः प्राप्तः । किन्तु विश्वामित्रस्य आज्ञा न रामः तत्र स्थितवान् । यथा—

बाणेनैकेन विद्धं विसलति पुरतस्तज्जरतालखण्डं
सोऽपि क्रीड़ाकपित्वं क्षणमिषुनिवहैरन्वभूदत्रबाली ।

सौमित्रिः पादघातादिह हि सुकुतुकं पाक्षिपत्कूटमस्थ्नां
कावन्धं दृष्टम स्मिन्हनुमति भवतैवोत्तरीयं च देव्याः ॥१६॥

तातस्य मित्रं किल ग्रिद्धराजस्तं पापमस्मिन्सहसानुवह्नन् ।
गात्रं जराजर्जरितं विहाय यशः शरीरं नवमाललम्बे ॥८॥

अनन्तरं रूपरिकरो रामः अयोध्यां प्राप्तवान् । यत्र नन्दिग्रामात् एव भरतः तदनुपस्थितः । अयोध्यायां तिस्रो मातरः, गुरुवसिष्ठा-दयश्च साश्रुनयनं सानन्दं सोल्लासं च सम्मिलितवन्तः । तत्रत दृश्यं च सर्वथा मनोहारि च अलौकिकं आसीत् । तत्र वसिष्ठस्य पत्नी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'अरुन्धती' सीताय्यै आशीर्वचनं प्रददौ। अरुन्धती प्रोक्तवती यत् अद्यपर्यन्तं लोपामुद्रा-अनुसूया-अरुन्धती एता तिस्र एव प्रख्यात प्रतिव्रता श्रेण्यां परिगणिताः सन्ति। किन्तु अद्यारभ्य तव सीतायाः नाम अपि तत्र संयुज्यते। फलतः अस्मिन् भूमण्डले अद्यारभ्य चतुस्रः पतिव्रताः सञ्जाताः, यथा—

लोपामुद्रानसूयाहमिति तिस्रस्त्वया सह।
पतिव्रताश्चतस्रोऽत्र सन्तु जानकि सांप्रतम्॥३६॥

ततः सशिष्यो विश्वामित्रः समागतः समुपस्थितः। वसिष्ठ विश्वामित्रं परस्परं सादरं सम्मिलिता। विश्वामित्रेणोक्तम् भगवन्, मैत्रीवरुणे किमद्यापि प्रतीक्षिते। वसिष्ठेणोक्तं यथोचितं विधियताम्। विश्वामित्रः प्रोवाच, संप्रद्यातां रामभद्रस्याभिषेकः तथैव सर्वे मुनयः समाचरन्ति। वाद्यध्वनयः सञ्जाताः। इन्द्रसहिताः सर्वे लोकपालाः तत्रोपस्थाय रामराज्याभिषेकं परिदर्शितवन्तः।

गुरोभिवादानन्तरंवसिष्ठविश्वामित्रौ रामं राज्ये अभिषिक्तवन्तौ, यथा—

रामभद्रगुणाराम भ्रातृभिस्त्वं पुरस्कृतः
इक्ष्वाकुमुख्यैर्भूपालैः चिरमूढाधरे वह॥

ततः आकाशात् पुष्पवृष्टि जाताः। तत्र विश्वामित्राज्ञया विभीषणसुग्रीवादयः पुष्पकविमानेन परावर्तितवन्तः।

विश्वामित्रेणोक्तम्—वत्स रामभद्र, त्वया पितुराज्ञा पालिता धर्मरक्षाकृता, राक्षसाः निहता, देवानां मनोरथाः पूरिताः। सीतयालक्ष्मणेन साकं पुनरयोध्यां प्राप्तं राज्यं लब्धम्। कथय अन्यत् किमिच्छसि? रामेणोक्तं इतोप्यधिकमस्ति किमपि श्रेयः। तथापि भगवत्पादप्रसादात् इदमप्यस्तु।

राजानः आलस्यं त्यक्त्वा पृथ्वीं रक्षन्तु, वारिधिः यथासमयं वर्षतु, राष्ट्रं सत्यसम्पन्नं भूयात्, कवयः प्रसादगुणयुक्तं काव्यं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रचयन्तु, विद्वद्जनाः अन्योन्य कृतिनां मनन कृत्वा आनन्दं प्राप्तवन्तु, इति मे प्रार्थनां, यथा—

क्षमापालाः क्षीणतन्द्राः क्षितिवलयमिदं पान्तु ते कालवर्षा
वार्वाहाः सन्तु राष्ट्रं पुनरखिलमपास्तेति संपन्नसस्यम् ।
लोके नित्य प्रमोदं विदधतु कवयः श्लोकमाप्त प्रसादं
संख्यावन्तोऽपि भूम्ना परकृतिषु मुदं संप्रधार्य प्रयान्तु ।।

इत्थं च रामराज्याभिषेकान्तं नाटकमिदं सुसम्पन्नं ।

अन्तेऽस्मिन् सप्तमोऽङ्के कविः प्रसादगुणयुक्त विशिष्ट रचनां परिदर्शितवान् । अस्मिन्नाटके विश्वामित्रस्य प्राधान्यं सर्वत्रावलोक्यते। कथायां तु महत् परिवर्तनं कृतं कविना इति तु पूर्वमेव यत्र तत्र मया विनिमेदितत् । वाल्मीकिरामायणादारभ्य भारतीय वाङ्मयस्य सर्वेषु रामकाव्येषु लङ्कातः अयोध्यापरावर्तनसमये मार्गे तत्तत्र विशिष्ट स्थान परिदर्शनवर्णनं सर्वत्र विद्यते तदनुरूपमस्मिन्नपि नाटके विद्योतते । इयं परम्परा इयं परा कविर्विभूतिना भवभूतिना परिपालिता । सर्वमाकलयतः मम विचारे नाटकमिदं रामकथावर्णने कामपि नूतनतामाधत्ते । सत्यपि नाटकीय वस्तुनि अभिनय दृष्ट्या यत्र तत्र काठिन्यं प्रतिभाति । महावीररूपे रामचन्द्रस्य प्रख्यापनं कविना कृत्वा नाटकस्य "महावीरचरितमिति" नाम धृतम् । तत्तु न तथा प्रेयस्करम् ।

यदि महाकविना यथा उत्तररामचरितस्य "उत्तररामचरितम्" इति नाम कृतं—यदुत्तररामचरितम् विश्ववाङ्मयस्य मुकुटायमानं विभाति—तदवत् अस्यापि नाटकस्य "पूर्वरामचरितं" इति नामकरणं सर्वथा श्रेयस्करं प्रेयस्करं च स्यात् इति मम मतः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उत्तररामचरितम्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कविर्विभूतिः भवभूतिः संस्कृत काव्याकाशे शाश्वत-देदीप्तमान नक्षत्रमिव विद्योततेऽनन्तकालपर्यन्तं प्रतिक्षणं नूतनतामादधाने द्योतिष्यते ।

महाकवि कालिदासानन्तरं रामकथा वर्णनं स्वकीय प्रशस्ते नाटकद्वये भवभूतिना कृतम् । यत्र महावीरचरितमिति-रामचन्द्रस्य राज्याभिषेकपर्यन्तं पूर्वचरितमस्ति "उत्तररामचरितं" तु रामचन्द्रस्य उत्तरचरित्रं-सीतापरित्यागयारभ्य सप्तस्वङ्केषु करुणारस परिपूरितं सीतासमागमपर्यन्तं वर्णनरूपं विराजते । नाटकमिदं संयोगान्तम् ।

नाटकस्यास्य वर्णनशैली-करुणरस प्रवाहः—काव्यकलापक्ष भावपक्षयोरुदात्ततेति सर्वं तथा मनोहारि चमत्कारपरिपूर्णं यद्विवरणं शतशो विद्वांसश्चिन्तकाः मनीषिणः तदाऽरभ्याद्यपर्यन्तं कुर्वन्तः आयते स्व स्व दृष्टया । समीक्षकाश्चासंख्य समीक्षां च कुर्वन्तोनान्तं जग्मुः ।

दृश्यकाव्यमिदं विश्वकाव्ये मूर्धन्य । यमानं दृश्यते विद्यते चात्र न कश्चन मतभेदः ।

अत्र मम उद्देश्यं केवलं कविकृत रामकथां वर्णनमेव । इत्थं हि मयाऽत्रातिसंक्षिप्तयाऽस्य प्रख्यात नाटकस्य कथावस्तूनामेव विवरणं प्रस्तूयते । नात्र मया काव्यकौशलप्रसङ्गे किमपि विचार्यते तथापि यत्र तत्र समागत कारुण्यपूर्ण विवरणं तु प्रदास्यते एव ।

प्रथमोऽङ्कः

भगवतो रामभद्रस्य (रामचन्द्रं "रामभद्र" इति शब्देनैव पितृ-मातृ-गुरू प्रभृतयः सम्बोधितवन्तः) राज्याभिषेकानन्तरं ऋषि महर्षयः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यथास्थानं प्रस्थिताः। राजा जनकोऽपि मिथिलां ययौ। तेन सीता विमना उदासीना आसीत्।

तदैव ऋष्यशृङ्गस्य पत्नी शान्ताया दशरथस्य पुत्रीरुपेण स्वीकृता आसीत्—सूचनां प्रेषितवती यत् सीता गर्भिणी वर्तते। गर्भावस्थायं, तस्याः विशेष परिचर्यायां तथा तस्याः इच्छा पूर्त्यर्थं रामेण ध्यानं देयम्। प्रायो रामभद्रः पारिवारिक व्यवस्थयाऽपरिचित आसीदत एव शान्ता सम्वादः श्रेयाम् सामयिकश्च। तन्मध्ये गुरू वसिष्ठेनादिष्टं यत् प्रजानुरञ्जनं प्रधानं राज्यशासने तदनुरूपमाचरणीयं भवता रामचन्द्रेण।

अत्र कविना सीतापरित्यागस्य पृष्ठभूमिः महता चातुर्येण निर्मिता। रामस्तु सन्देश द्वयं सुश्राव। उभयत्र तस्य ध्यानं केन्द्रितम्। लोकरञ्जनार्थं राममुखेन कविः कथयति—

"स्नेहं दया च सौख्यं यदि वा जानकीमपि
आराधनाय लोकानां मुञ्चतो नास्तिमेव्यथा"

तत्रैव लक्ष्मणः सीता मनोरञ्जनार्थं प्राक्तन घटनामय चित्रं सीतां परिदर्शमासीत्। तेषु चित्रेषु यदा सीतायाः अग्निपरीक्षा-कालिकं चित्रमागतं तदा रामेणोक्तम्—

"उत्पत्ति परिपूतायाः किमस्याः पावनान्तरैः
तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हति"

अर्थात् या सीता उत्पत्या-जन्मना एव परिपूता पवित्रा, तस्यै अन्यस्य पावन प्रमाणस्य का आवश्यकता ? यथा तीर्थजलमग्निश्च स्वयमेव विशुद्धौ नान्यतः शुद्धियोग्यौ।

एवं हि समस्तं चित्रजालं पश्यन्ती सीता स्थगना भूत्वा रामेण कथितवती यदहं वनवृक्षलतागुल्मवृतां भागीरथीं दृष्टुं तत्र स्नातु चेच्छामि। रामेण त्वरितमेव लक्ष्मणः समादिष्टः—सीतां रथे नीत्व यथोप्सितं स्थानं परिदर्शय।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वनप्रेषणस्येयं भूमिका पूर्वत एव निर्मिता तन्मध्ये एव रामस्य विश्वस्तः गुप्तचरः दुर्मुखः समागत्य सीता विषयिणीं लोकापवाद चर्चां व्यज्ञापयत् ।

तच्छ्रुत्वा एव रामभद्रो मूर्च्छितो सन् चेतनां प्राप्य सीतां वन विहारार्थं संप्रेषयन वने परित्यक्तुमादिशत् लक्ष्मणमाज्ञाकारिणम् ।

सीतां वने विसृजता लक्ष्मणेनोक्तम्—

"त्वया जगन्ति पुण्यानि त्वय्यपुण्या जनोक्तयः
नाथवन्तस्त्वया लोकाः त्वमनाथा विपत्स्यने"

अर्थात्—हे सीते, तव जन्मना चतुर्दश भुवनानि परिपूतानि, किन्तु जनोक्तयः लोकापवादाः त्वयि अपावनाः जाताः । भवत्था त्रयोलोकाः सनाथाः किन्तु भवती अनाथाऽधुनाजायमानाऽस्ति ।

करुणरसप्रवाहमयेऽस्मिन् काव्यनाटके कविना भवभूतिना यादृशः चमत्कारः प्रदर्शित न तु वर्णनातीतः ।

सीता-लक्ष्मण सम्वादस्तु गरीयान् येनायमद्भुतः । पूर्वमेव मया निवेदितं यत् नात्र काव्यस्यास्य चमत्कारवर्णनं मम लक्ष्यम् केवलं रामकथापरिदर्शनमेवोद्देश्यम् । फलतः सत्यामयीच्छायां नाधिकमत्र विस्तार्यते । यथास्थानं यत्र तत्र करुणरसपरिपाक दिग्दर्शनमेव स्थास्यति ।

इत्थं सीतां परित्यज्य लक्ष्मणः अयोध्यां परावर्तितवान् ।

●

द्वितीयोऽङ्कः

लक्ष्मणेन वने परित्यक्ता आसन्न प्रसवा सीता वाल्मीकिना स्वाश्रमे संरक्षिता । यत्र सा पुत्रद्वयं प्रसूतबती । वाल्मीकिना च

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तस्याः परिचर्यार्थं शिशुपालनार्थं च तापसी समादिष्टा। या च सर्वथा तस्याः योगक्षेमं महर्षिवाल्मीकि संरक्षणे कृतवती।

उभौ वालौ प्रतिक्षणं वर्धमनावास्ताम्। ऋषिणा स्वयमेव जातसंस्कारादारभ्य यज्ञोपवीतादि संस्कारान् यथाविधि सम्पादिता। इत्थं च कियन्ति वर्षाणि व्यतीतानि।

तन्मध्ये वाल्मीकेराश्रमस्थाः ब्रह्मचारिणो वेदाध्ययनवन्तश्च ततोऽन्यत्र गन्तुमुद्यताः यतोहि तयोर्वालकयोरध्यापन संरक्षणकार्ये ऋषिः व्यस्तततामाप्नोत्। महर्षिश्च ताभ्यां वालकाभ्या मानिवक्षिकी-त्रयीवार्तादयुनीतिप्रभृति विद्याः पाठितवान्। रहस्यमयजम्भकास्त्र ज्ञानं तु तयोर्जन्मत एवासीत्।

एतन्मध्ये वाल्मीकिरेकदा तमसा नदीतटं स्नानार्थं गतवान्। तत्र क्रौञ्चपक्षिणोर्युग्मे व्याधेनैकं निहतं दृष्ट्वा शोकोच्द्वासे प्रावोचत्—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः
यत्क्रौञ्च मिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

इदं श्रुत्वा सहसा वाग्देवता प्रसन्ना जाता। तयोक्तं प्रबुद्धोऽधुना भवान् रामायणं रचयतु। तदारभ्य स महर्षिवाल्मीकिः वाग्देवतायाः आदेशानुसारं रामायणरचनायामेवाधिकं समयं यापयति। अतएव अध्ययने बाधा समुत्पन्नम्।

यदा आत्रेयी बासन्तीमुखेन ज्ञाता यत् इयं पञ्चवटी तदा सा रामस्य पञ्चवटी निवासकालीन घटनां स्मरन्ति कथितवती—अधुना तु सीतायाः नाममात्रमवशिष्टं विद्यते तथापि सर्वं पूर्ववत् प्रत्यक्षं दृश्यते, इति महत्या करुणापूर्णावाण्या वेदमया उक्तवती।

(अत्रारभ्य नाटकस्यासि अन्तिम घटनापर्यन्तं महाकवि भवभूतिना कथाघटनाक्रमः संश्लिष्टः येन कवेः वर्णनचातुरी नूतन घटनावर्णनशैली अभिनयकलाकुशलता च प्रतिभाति। करुणारस परिपाकस्त्र तथा विद्यते येन भवभूतिरीत्या एकः करुणरसेव

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मूर्धन्यभूतः। अन्ये च तदङ्गभूता इति सिद्ध्यति। इतः आरभ्य लवकुशसहित सीतामिलनपर्यन्तं घटना सर्वथा वाल्मीकिरामायणतः भिन्नचमत्कारिणी-अद्भुता-अद्वितीया च।)

आत्रेयी मुखात् सीताया नाममात्रमवशिष्टं इति श्रुत्वा साश्चर्यं वासन्ती कथितवती—हन्तः! सीतायाः किं जातम्। आत्रेयी लक्ष्मण-द्वारा सीतापरित्याग समस्त घटना वर्णितवती सहैव इत्यपि कथितवती यत् ऋष्यशृङ्गस्य द्वादशवार्षिक सम्पद्यमानेयज्ञे अरुन्धती वसिष्ठाज्ञया कौशल्या प्रभृतयः सर्वाः मातरः अन्ये च तत्र यज्ञे गता। यज्ञस्तु समाप्तः किन्तु सीताविहीनायां अयोध्यायां ताः आगन्तुं नैवोद्यता।

तदा वसिष्ठाज्ञया वाल्मीकिये आश्रमं सर्वे गतवन्तः। तत्रैव आत्रेयी पुनः अब्रवीत् यत् रामचन्द्रः अश्वमेधयज्ञं कुरुते तत्र स्वर्णमयीं सीताप्रतिकृतिं निर्माप्य सा सहधर्मिणीरूपेण प्रतिनियोजिता रामचन्द्रेण। अश्वमेध यज्ञस्य यज्ञः स्वेच्छया भ्रमितुम् मुक्तं यस्य रक्षायां लक्ष्मणपुत्रः चन्द्रकेतुः दिव्यास्त्रं गृहीत्वा प्रतिनियोजितः।

एतन्मध्ये एव रामचन्द्रः शम्बूकनाम शूद्रस्य घोर तपस्या वर्णनमाकर्ण्य पुष्पक विमाने तम् अन्वेषयण दण्डकारण्यमागत्य तं शम्बूकं निहतवान्। शम्बूकश्च दिव्यरूपं धृत्वा रामसमीपमागत्य ब्रूते यदिदम् दण्डकारण्यम्। रामस्तु दण्डकारण्यस्य सर्वां पूर्वघटनां संस्मृत्य विल्पं अगस्त्यस्य मुनेराश्रमं प्रविष्टवान्।

●

तृतीयोऽङ्कः

अस्मिन् अङ्के तु सर्वथा कविकल्पिता नूतना घटना विद्योतते। अत्र मुरलानाम्नी एका नदी तमसानाम्नीम् द्वितीयां नदीम् कथितवती यत् अगस्त्य मुनिपत्नी "लोपामुद्रा" भगवती गोदावरीम्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नदीम् कथितुं गतासि यत् रामभद्रः सीतावियोगे अति दुर्बलो जातः। अगस्त्याश्रमात् परावर्त्य यदा पञ्चवटीं यास्यति तदा तत्रत घटनासमूहं स्मारं स्मारं विह्वलो भविष्यति। यत्र प्रतिपदम् तस्य रामस्य रक्षा विधेयात्। तमसा प्रोक्तवती, इयम् उदारतां श्लाघनीया यतोहि वाल्मीकेराश्रमे सीतां परित्यज्य यदा लक्ष्मणः परिनिवृतः तदा प्रसववेदनया पीड़िता सीता गङ्गाया प्रविष्टा। गङ्गायामेव सा पुत्रद्वयं प्रसूतवती। तत्र सहसा सीता माता भगवती वसुन्धरा तथा भगवती भागीरथी उभौ मिलित्वा तौ वालकौ संरिक्षवत्यौ सीता च पातालं प्रविष्टात्।

यदा तौ वालौ दुग्धं परित्यक्तवन्तौ तदा भागीरथी तौ नीत्वा वाल्मीमि समीपं समर्पितवती।

तदा रामचन्द्रः पञ्चवटीम् समागतवान् तदा भवगती भागीरथी सीताया सह गोदावरीम् दृष्टुं समागतवती तथा चोक्तवती यत् अद्य तव पुत्रयोः द्वादशवर्षपूर्तिजन्योत्सवो विद्यते अतोहि कुलगुरुं भगवन्तं भास्करं पूजयति। मम प्रभावात् त्वां देवाः अपि दृष्टुं न सक्ष्यन्ति का कथा मनुष्याणां। रामः पञ्चवटीम् आगत्य सीतासहवासकालीनम् स्थानं अवलोक्य मूर्च्छितो जातः। तत्र तमसाया निर्देशेन सीता स्वहस्तेन रामं स्पृष्टवती। रामः तेन मूर्च्छा तत्याज। तदा वासन्ती तत्रागत्य सोता वृत्तान्तं प्रच्छत्। वार्तालापकाले उभौ तमसा रामभद्रौ शोकाभिभूतो विलपन्तौ आस्ताम्। कथंचित् आश्वस्तः रामचन्द्रः रामभद्रः अश्वमेधयज्ञ परिपूत्यर्थं अयोध्यां प्रतिनिवृतः। सीता च स्वपुत्रयोः द्वादशजन्मोत्सवं द्रष्टुं गङ्गासमीपमागतवती।

यद्यपि पदे पदे करुणरस प्रवाहयुक्ताः सन्ति बहवः श्लोका तत्र एकमेव श्लोकं उद्धृत्य विरम्यते—

अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चतुर्थोऽङ्कः

वाल्मीके आश्रमे शिष्टानध्याय: आसीत् । इति प्रक्रिया वर्तते यदि कस्मिनश्चित् गुरो आश्रमे कश्चिन् महापुरुष: विशिष्ट: जन: समागच्छति तधि तद्दिने अस्मिन् आश्रमे छात्राणां कृते अनध्यायो जायते । अधुना वाल्मीके आश्रमे वशिष्ठ: अरुन्धती रामस्य तिस्रो मातर: तथा मिथिलात: राजा जनकश्च समागतवन्त: अतएव तत्र अनध्यायौ वर्तते ।

तत्र सर्वे परस्परं सीतावियोगे विलपन्त: शोकाकुला: आसन् । सहसा कौशल्याया: दृष्टि: एकस्य बालकस्य उपरि समायाता: स्याकृति बाल्यास्थायां रामभद्रेण तुल्या दृश्यते: कौशल्या तं आहूय अपृच्छत् सोऽब्रवीत् महर्षि: बाल्मीकि: एकं दृश्यकाव्यं निर्माय तस्य ज्येष्ठ भ्रातु: कुशस्य हस्तेन् नाट्याचार्यम् भरमुनि निकसा प्रेषयामास । तस्य कथाभारस्य ज्ञानं माम न वर्तते । एतन्मध्ये एव आश्रमस्था: बालका: रामचन्द्रस्य अश्वमेध यज्ञस्य अश्वं गृहीत्वा तत्रानीतवन्त: । अश्वरक्षक: तस्य विरोधं कृतवान् । किन्तु तत्र सहसा लव: समागत्य युद्धार्थं प्रस्तुतो जात: ।

●

पञ्चमोऽङ्कः

अयं स एव अश्व: य: लक्ष्मणपुत्रस्य चन्द्रकेतो संरक्षणे स्वेच्छया भ्रमितुं रामभद्रेण मुक्त: आसीत् । चन्द्रकेतु: वनशोभां पश्यन तत्र लीन: आसीत् यतोहि अस्मिन् वनप्रान्ते अश्वं कोऽपि निरोद्धुं न शक्नोति इति चन्द्रकेतो मनसि आसीत् । सहसा चन्द्रकेतु: ददर्श यत्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आश्रमस्य एकः वालकः रक्षकेण सह युद्धं कर्त्तुं समुद्यतः अस्ति। चन्द्रकेतुना उक्तं यत् अयं रामभद्रस्य। अश्वः लवेण विहस्योक्तं तस्यैव रामभद्रस्यायं अश्वः येन प्रच्छन्नौ भूत्वा वलि हतः।

एतन्मध्ये एव रामचन्द्रस्य वहवः सैनिकाः समागता। सहसा लवेण ज्रिष्भकास्त्रस्य प्रयोगः कृतः। त्वरितमेव इदं दृष्ट्वा चन्द्रकेतुलवयोर्मध्ये तुमुलं युद्धं समारब्धत्।

षष्ठोऽङ्कः

उभौ चन्द्रकेतु लवौ स्पष्टरूपेण दिव्यास्त्राणां प्रयोगं कृतवन्तौ। सर्वे विद्याधर किन्नरगणाः इदं युद्धं दृष्ट्वा रोमाञ्चिता बभूव। तदेव तत्र पञ्चवटीतः अयोध्यां गच्छन रामभद्रः तत्र समुपस्थितः। उभौ चन्द्रकेतुलवौ प्रणामं कृतवन्तौ। युद्धं स्थगितम्। चन्द्रकेतुना सूचितं यत् अयं बालकः ज्रिम्भकास्त्रस्य प्रयोगेण मम सैन्या स्तब्धी कृतवान्।

रामेणादिष्टं हे बालक जिम्भकास्त्रम् उपसंहर। लवेण आज्ञा स्वीकृता। एतन्मध्ये कुशोऽपि तत्र समागता। सोऽपि रामं ननाम। उभौ बालकौ दृष्ट्वा रामो मनसि चिन्तयति यत् प्रायः इमौ बालकौ सीतायाः एव। किन्तु तौ वालकौ सीताविषये न किमपि कथिवतवतौ।

एतन्मध्ये एव वालकानां कोलाहलं द्वन्द्वयुद्धं च ज्ञात्वा वाल्मीकिः, जनकः, वशिष्ठः, अरून्धती तथा रामस्य तिस्रो मातरः तत्र सहसा समुपस्थिता बभूवुः। रामभद्रः तां दृष्ट्वा शोकाभिभूतो जातः तथा तेषां स्वागतार्थं ययौ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सप्तमोऽङ्कः

यद्यपि समस्तम् "उत्तररामचरितम्" संस्कृत काव्य नाटकेषु मूर्धन्यभूतं किन्तु तत्रापि सप्तमोऽङ्कस्तु नाटकस्य प्राणस्वरूपो वर्तते। अस्मिन् अङ्के कविना सर्वथा नूतन पद्धत्या गर्भाङ्कस्य निर्माणं कृत्वा। लवकुश-सहित-सीतासम्मिलन-घटनां परिकल्प्य या चमत्कारिता प्रदर्शिता सा तु अनिर्वचनीया।

लक्ष्मणेन सर्वे जनाः सूचिताः यत् भगवता वाल्मीकिना दृश्यकाव्यमेकं रचितं यस्याभिनयः गङ्गातटे अप्सरसां द्वारा परिदर्शयिश्यते। वाल्मीकिना सर्वेषां पुरवासिनां जनपदवासिनां च आमन्त्रणार्थं समादिष्टं। तथा च स्वतपः प्रभावेन सर्वे स्थावरजङ्गम-प्राणिनः स्वरूपस्थापिता।

ममाग्रजः रामभद्रः रङ्गमञ्चव्यवस्थां कर्तुं मां आदिष्टवान्। मुनिभिः सह रामभद्र अभिनयं द्रष्टुं गङ्गातटं प्राप्तवान्। रामेण आदिष्टम् यत् तत्र यथा चन्द्रकेतु कुमारस्य स्थानं स्यात् तथैव लवकुशयोरपि स्थान तत्र तत् स्थानं भविष्यति।

ततः अस्य दृश्यकाव्यस्य गर्भाङ्काः प्रारब्धः। करुणाद्भुत-रससमन्वितस्य नाटकस्य कथावस्तु साक्षात् कृतधर्मा महर्षिः वाल्मीकिः दिव्यचक्षुषा दृष्ट्वा लिखितवान्। तत्र सीता निर्वासिनात् आरभ्य कुशलवयोः जन्मकथां सीतायाः पातालप्रवेशादिकं च सविस्तरं प्रदर्शितवान्।

अनन्तरं गङ्गा पृथ्वीं सीता च नाट्यरङ्गमञ्चतः प्रेषितवती। इदमवलोक्य रामभद्रो मूर्च्छितो जातः।

तदनन्तरं सीता साक्षात् गङ्गया पृथिव्यात् सह भागीरथी प्रवाहात् निस्त्रित्य स्व हस्तस्य शीतलस्पर्शेन रामस्य मूर्च्छां अपनोदिनवती रामभद्रः चेतनामवाप्य साश्चर्यं दृश्य इमं दृष्ट्वा स्तब्धः सञ्जातः। ततः भगवती अरुन्धती समुपस्थित जनसमूहसमक्षं रामभद्रं आज्ञापितवती यत् हे रामभद्र जगतपावनीं निष्कलुषां सीतां

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गृहाण। रामेण नतशीर्षा आज्ञास्वीकृता। कुशलवाभ्यां सहिता सीता रामेण सादर ससम्मानं च स्वीकृता। इत्थं हि सीतासमागमः समभूत।

एतस्मिन् सुखद संयोगकाले भगवन् वाल्मीकिरवदत, रामभद्र उच्चतां किं ते भूयः प्रियमुपहरां। रामः उक्तवान् अतः परमपि किमपि प्रियमस्ति। किन्तु यदि भगवान् प्रसन्नोऽस्ति तर्हि इदं भरतवाक्यमस्तु—

"पाप्मम्यश्च पुनीति वर्धयति च श्रेयांसि सेयं कथा
माङ्गल्या च मनोहरा च जगतो मातेव गङ्गेव च।
तामेतां परिभावयन्तवभिनयैर्विन्यस्तरूपा बुधाः
शब्दब्रह्मविदः कवेः परिणतां प्राज्ञस्य वाणीमिमाम्॥"

एवं हि रामकथाकाव्ये सुखद संयोगान्तमिदमभूतपूर्वं काव्यनाटकं सुसम्पन्नं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनर्घराघवम्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संस्कृत वाङ्मये रामकाव्य परम्परायाम् अनर्घराघव नाम नाटकम् प्रमुखतां भजते। नाटकमिदं वाल्मीकि रामायण कथामाधारीकृत्य एव रचितं कविना। यत्र तत्र कथावर्णने परिवर्तनं विद्यते यत् सर्वथा स्वाभाविकं नाटकीय दृष्ट्या आवश्यकं च।

अस्य नाटकस्य रचयिता "मुरारि" कविः वर्तते, यस्य विद्वता तथा प्रसिद्धा जाता येन "बालवाल्मीकि" नाम्ना अयं कविः प्रख्यातो जातः। अष्टम् शताब्दयाः अन्तिम भागे नवम् शताब्दयाश्चादि भागे आसीत् इति समीक्षकानां निश्चितं मतं वर्तते। अयं मुरारि कविः भाट्ट रहस्यादि मीमांसा ग्रन्थे समागत मैथिल मुरारि कवेः भिन्नो दाक्षिणात्य ब्राह्मण कुलोत्पन्नः महाकवि भवभूतेः निकट परवर्ती कविरासीत्। अतएव अस्मिन् अनर्घराघवनाटके भवभूतेः प्रभावो विशेषतोऽवलोक्यते।

अयं वेद धर्मशास्त्र वैशेषिक व्याकरण शास्त्रादि मर्मज्ञः, राजनीतिशास्त्र विशारदश्च आसीत् इति सर्वत्र दृश्यते। अनेन पाण्डित्येन साकं काव्यप्रतिभायामपि कविरयमप्रतिमः। भवभूतेः महावीरचरित् नाटकमिव अस्मिन्नपिनाटके रामवनगमनं मिथिलातः एव वर्णितं विराजते। अस्मिन् नाटके कतिपय विशिष्ट कथोपकथनं महत्वपूर्णं विद्यते। सप्ताङ्केषु विख्यातमिदं नाटकं रामचन्द्रस्य उत्कृष्ट चरित्रस्य प्रदर्शकम्। अतएव अस्य नाम 'अनर्घराघवमिति सार्थकम्। प्रत्येक अङ्कस्य संक्षिप्तकथा निम्नाङ्कितरूपेण विद्यते। यत्र तत्र कियन्ति उद्धरणानि अपि प्रदीयन्ते।

●

प्रथमोऽङ्कः

महर्षेः विश्वामित्रस्याश्रमे सम्पतस्यमाने यज्ञे राक्षसोपद्रव शान्त्यर्थं विश्वामित्रः दशरथसमीपमागत्य रामं लक्ष्मणं च ययाचे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनिच्छतोऽपि दशरथः विश्वामित्रस्यानुरोधं स्वीकृत्य रामं लक्ष्मणं च तेन साकं यज्ञरक्षार्थं प्रेषितवान् । महर्षिः वसिष्ठोऽपि वामदेवद्वारा विश्वामित्रस्यानुरोधं समर्थितवान् । यथा—

कौशिकोऽर्थी भवान्दाता रक्षणीयो महाक्रतुः ।
रक्षिता रामभद्रश्चेदनुमान्यामहे वयम् ।।

●

द्वितीयोऽङ्कः

विश्वामित्रस्याश्रमे समागत्य रामेण यज्ञरक्षा कृता। उभौ भ्रातरौ राक्षसैः साकं युद्धं कृतवन्तौ । विश्वामित्रस्याज्ञया महाराक्षसी ताडका निहता सुबाहुश्च निहतः । उपद्रवाः शान्ताः जाताः, यज्ञः निर्विघ्नः सुसम्पन्नः । विश्वामित्रेण रघुकुलवर्णनं सादरं कृतम् । यथा—

स्मेरा दिशः कुमुदमुद्भिदुरं पिबन्ति
ज्योत्सनाकरम्भमुदरम्भरयश्चकोराः ।
आः कीदृगत्रिमुनिलोचनदूषिकायां
पीयूषदीधितिरिति प्रथितोऽनुरागः ।।

कथमयं कुमाराङ्क विजय प्रत्यागतोऽपि ताडका हिंग्रहेण घृणीयमानः सहसा नोप तिष्ठते वत्सः । वत्स सौमित्रे, अस्माकयनेन वृत्तान्तेन् प्रदोष लक्ष्मीरियमनूद्यते पश्य । यथा—

निशाचराणां तमसां निहन्ता पुरोऽयमुद्गच्छति रामचन्द्रः ।
अथोल्लसद्भिर्नयनैर्मुनीनामयं कुमुद्वानजनि प्रवेशः ।।

•

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तृतीयोऽङ्कः

अस्मिन् अङ्के विश्वामित्रेण साकं रामलक्ष्मणौ मिथिलागमतवन्तौ। तत्र विश्वामित्रेण साकं रामलक्ष्मणौ अवलोक्य मिथिलाधिपति जनकः हर्षितो जातः यतोहि जनकेन सीता स्वयंवरस्य सर्वाः व्यवस्थाः कृताः। तत्र विश्वामित्रः जनकस्य जनकश्च विश्वामित्रस्य प्रशंसायां प्रथमं संलग्नौ सञ्जातौ। यथा—

लुम्पन्नदृष्टजामातृसंपदा शुचमद्य नः।
त्वदागमनजन्माऽयमानन्दः सुदिनायते॥

एवं च

यत्र त्वं ब्रह्ममीमांसातत्वज्ञो दण्डधारकः।
पुरोधाश्चैव यस्यासावङ्गिर प्रपितामहः॥
यजूंसि तैत्तिरीयाणि मूर्त्तानि वमति स्म यः।
स योगी याज्ञवल्क्यस्त्वां वेदान्तानध्यजीगपत्॥

तदनन्तरं विश्वामित्रः रामलक्ष्मणयोः परिचयं जनकाय प्रदत्तवान्। यथा—

ये चत्वारो दिनकरकुलक्षत्रसंतानमल्ली—
मालाम्लानस्तवकमधुरा जज्ञिरे राजपुत्राः।
रामस्तेषामचरमभवस्ताडकाकालरात्रि—
प्रत्यूषांऽयं सुचरितकथाकन्दलीमूलकन्दः॥

रामस्य परिचयं श्रुत्वा जनकः धनुभङ्गस्य स्वप्रतिज्ञायै खेदं प्रकटितवान्। जनकस्य खेदं श्रुत्वा विश्वामित्रः विहस्य अब्रवीत्—राजन् तवेयं चिन्ता व्यर्था। रामभद्र एव तव चिन्तां दूरी करिष्यति। यथा—

वालेन सम्भाव्यमिदं च कर्म ब्रवीति च प्रत्ययितो महर्षिः।
इति ध्रुवं मन्त्रयते नृपोऽयं दत्ते किमत्रोन्तरमाकुलोऽस्मि॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इदं श्रुत्वा जनकः प्रोक्तवान् यत् किं अस्माकं भागधेयं तथा वर्तते येन अस्मैः रघुकुलकुमाराय मैथिलीं प्रदाय सुचिरं कृतार्थी भविष्यामि। यतोहि शाम्भवं चापमारोप्ययोऽस्मानान्दयिष्यति पूर्णपात्रमियं तस्मै मैथिली कल्पयिष्यते।

एतन्मध्ये रावणप्रेषितः दूतः "शौषकलः" समागत्य रावणाय सीताप्रदानार्थं जनकं निवेदितवान् तथा च रावणस्य बाहुबलं महत्तां च कथितवान्। यदा दूतेन साकं जनकः वार्तालापं कुर्वन् आसीत् तन्मध्ये एव रामः शिवधनुः उत्थाय तत्र चापमारोप्य कर्णाकृष्टं तं धनुः बभंज। धनुभङ्ग ध्वनिना सर्वाः दिशः व्याप्ताः जनकः इदं दृष्ट्वा विस्मयं प्राप।

जनकः सानन्दं प्रत्युवाच भगवन् कुशिकानन्दन,

इयम् आत्मगुणेनैव क्रीता रामेण मैथिलीः।
स्वगृहव्यवहारस्तु लक्ष्मणायोमिलास्तनुः॥

विश्वामित्रेणोक्तम्—एवमस्तु, यद् अभिरुचितं भवते। पुनश्च जनकेनोक्तं मह्यपि किमपि पारितोषिकं ददातु भगवन् विश्वामित्र। विश्वामित्रेणोक्तम् यदिच्छसि तद् ब्रूहि तदेव मया दास्यते। जनकेन प्रार्थितं यत् कुशध्वज दुहितृभ्यां माण्डवी श्रुतकीर्तिभ्यां भरत शत्रुघ्नौ याचते अयं जनकः। विश्वामित्रः 'तथास्तु' इत्युक्त्वा दशरथम् आमन्त्रयितुं आज्ञापयामास।

इत्थं च इक्ष्वाकुवंशेषु मैथिलवंशेषु च ममाशीर्वादः फलितः इति विश्वामित्रेणोक्तं।

ततश्च रावणदूतः शौषकलः जनकं प्रति इत्युक्त्वा लङ्का परावर्तितवान् यत् अधुनापि समयो वर्तते। भवान् पौलस्त्याय रावणाय सीतां प्रदाय सुखी भवतु। कौशिकोऽपि ताडकावधजन्यम-पराधं रामयतु।

इत्थं च रावणदूतः प्रतिनिवृतः रामस्य विवाह सीतया सह सोत्साहं समुत्पन्नः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चतुर्थोऽङ्कः

अस्मिन्नङ्के माल्यवान्-शूर्पणखा मध्ये कथोपकथनं नूतनं परिकल्पनमस्ति। यत्र रावणायाग्रिम कर्तव्यस्य निर्णयो जायते।

अन्यत्र परशुरामः शिवधनुर्भङ्गवृत्तान्तं ज्ञात्वा मिथिलां प्राप्तवान्। तत्र रामपरशुरामयोर्मध्ये वार्तालाप क्रमे रामस्तु शान्तचित्तेन मधुर भाषया परशुराममुत्तरितवान्, किन्तु सुलभक्रोधी परशुरामो न शान्तो बभूव।

अन्ततः स्ववैष्णवधनुं साधातुं रामाय प्रायच्छत्। रामेण तद्धनु-प्रत्यञ्चा शरेण सन्धारिता। परशुराम संशयो भ्रमश्च दूरीभूतः। स हि रामायार्शीवचनं प्रदाय तपस्तप्तुं प्रतस्थे।

तदनन्तरं मिथिलायां सीता-विवाहोत्सवेन साकं परशुराम-विजयोत्सवोऽपि समायोजितः।

एतन्मध्ये एव अयोध्यातः कैकेयी दशरथं प्रति दासी द्वारा पत्रं संप्रेष्य रामाय वनवासं भरताय राज्यं च स्वकीय सुरक्षित वरदानद्वयं ययाचे।

इति ज्ञात्वैव सर्वे मर्माहताः सञ्जाताः। महत्तर्ववितर्कानन्तरं पितृभक्तो रामचन्द्रः सीतया लक्ष्मणेन च साकं ततो मिथिलात एव वनं प्रतस्थे।

पत्र संप्रेष्य स्वकीयसुरक्षित वरदानद्वययाचनाकथा तथा मिथिलातोवनप्रस्थानकथा भवभूतेः महावीरचरित नाटक कथावदमापि विद्यते। उभौ भवभूति-मुरारिकवी एव इमां नवीन कथा घटनां परिकल्पितवन्तौ। तत्र किं रहस्यमित्यनुसन्धानयोऽयम्।

मम मतेनुनेयं कथा परिकल्पना केनापि दृष्टिकोणेन शोभना ज़ाता न चापि रामकथायां किमपि वैशिष्ट्यं जातम्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तन्मे वरद्वयमुरीकृतपूर्वमेव
याचे विभर्तु भरतस्तव राज्यलक्ष्मीम् ।
वर्षाणि तिष्ठतु चतुर्दश दण्डकायां
सौमित्रिमैथिलसुतासहितश्च रामः ।।

एवं च,

पाणिगृहीतो रघुपुंगवेन देवः पुराणः श्वशुरो विवस्वान् ।
पिता स्वयं केकयचक्रवर्ती कर्मेदमेतादृशमाः किमेतत् ।।

●

पञ्चमोऽङ्कः

अस्मिन्नङ्के सीतालक्ष्मणसहितो रामोवनमामतः । सर्वप्रथमं चित्रकूटे तस्थौ । तत्रत्य शोभा पवित्रता च सर्वकल्याणकारिणी आसीत् ।

ततश्च रामचन्द्रः पञ्चवटीमागतवान् । रामस्यानुपस्थि तत्र रावणः भिक्षुकवेषे समागत्य सीतां जहार । रावणद्वारा मार्गे जटायुः निहतः । परावर्त्य रामः सर्वमवगम्य व्याकुलोऽभूत् । रामेण स्वप्रयोजनसिद्धयर्थं सुग्रीवेण सह मैत्री कृता । वालि वधं च कृतः । सुग्रीवाय राज्यं प्रददौ नात्र काचन नूतन कथा ।

●

षष्ठोऽङ्कः

अस्मिन्नङ्के सुग्रीवद्वारा प्रेषिता वानरसेना समुद्रमुल्लङ्घ्य लङ्कयामुपरि आक्रमणं कृतवती । तत्र भीपणयुद्धे सर्वे राक्षसाः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इन्द्रजित् कुम्भकर्णादयः निहताः । अन्ते च रावणोऽपि रामेण हतः । रामो विभीषणाय लङ्कायाः राज्येऽभिषिक्तवान् । इन्द्रलोकस्य वन्दिनः मुक्ताः, उच्चैश्रवा पुनः स्वस्थानं प्राप्तः, विभीपणस्य पक्षपातिनः कारागारा-मुक्ताः । कथं च लङ्का विजयो जातः । सीता अशोकवाटिकातो विमुक्ता वभूव । यथा—

नीयन्ते वनदेवताभिरमरक्षोणीरुहो नन्दनं
नीतो वल्लभपाकेन च निजामुच्चैःश्रवा मन्दुराम् ।
रक्षोभिश्च विभीषणप्रणयिभिः कारागृहान्मोचितः
स्वर्वन्दीवदनावलोकनिविडव्रीडो विडौजाः कृतः ।।

•

सप्तमोऽङ्कः

अग्निपरीक्षानन्तरं परिशुद्धां सीतामादाय सुग्रीवाङ्गद विभीषणादि सहितो रामः पुष्पकविमानमारुह्य अयोध्यां प्रतस्थे ।

मार्गे समागतानां नदी-पर्वत-वनवृक्षाणां वनागमनसमये समागतानां स्थानानां च विशदवर्णनं विद्यते । ततत् स्थान विभीषणो लक्ष्मणो रामञ्च सीतां परिदर्शयन्त आसन् ।

अत्रत्यं वर्णनं कालिदासस्य रघुवंशस्य त्रयोदशसर्गवर्णनदेवास्ति । यत्रायोध्यापरावर्तनकाले तत्तस्थानदर्शनपूर्वकं स्मरणं मधुमयमस्ति । अत्र कालिदास प्रभावः स्पष्टः, यथा—

सहैव सुग्रीवविभीषणाभ्यां सौमित्रिसीतापरिपूर्णपार्श्वः ।
उपैति वैवस्वतवंशवृत्तमेध्यामयोध्यामथ पुष्पकेण ।। ३ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यथा यथा परं व्योम विमानमधिरोहति ।
तथा तथाऽपसर्पन्ति परितः परितो दिशः ।।२४।।

विश्वामित्रमखद्विषे च वपुषा चित्रेण पत्युर्मुखा-
दप्याकृष्टविदेहराजतनयानेत्रारविन्दाय च ।
मारीचाय नमो नमः किमपरं यस्मै कुले रक्षसां
द्वौ वारौ विभुनापि दाशरथिना चक्रे ततज्यं धनुः ।।९७।।

जगदालोकधौरेयौ सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुत्रौ गोत्रस्य गोप्तारौ जनय स्वभुजाविव ।।१३९।।

तथापि यूयं सर्वेऽपि द्वौ द्वौ जनयतात्मजौ ।
यैरादिराजवंशोऽयममष्टशाखः प्ररोहति ।।१४१।।

श्लोकानामाधिक्यमस्मिन्नपि नाटके विद्यते यच्च नाटकीयाभिनय-दृष्टया न सर्वथा समुपयुक्तं । किन्तु काव्यरचनाचातुरी तु महत्व-पूर्णाऽस्त्यैव ।

इत्थं हि नाटकमिदं सुललितं काव्यसौन्दर्ययुतम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुन्दमालानाटकम्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(१) रामकथा काव्येषु "कुन्दमालानाटकम्" विशिष्टस्थानमावहति। संस्कृत नाटकेषु करुणरसप्रधान नाटकेषु प्रायो द्वितीयमिदं दृश्यकाव्यम्। प्रथमं "एको रसः करुण एव" प्रतिपादकस्य महाकवि भवभूतेः "उत्तररामचरितम्" तु करुणरसप्रधान नाटकेषु शिखरायमानं राजते नात्र मतद्वयम्।

(२) तदनन्तरं रामकाव्येषु करुणरस परिप्लावितेऽस्मिन् संयोगान्त नाटके सीतापरित्यागादारभ्य सीतारामाभिराममिलनपर्यन्तं तादृक् मधुमयं वर्णनं विद्यते यत्कस्य चेतो न हरति।

(३) प्रतिश्लोकं प्रतिवर्णनं भावपक्ष कलापक्षोभय दृष्टया लोकमङ्गलरीत्या च यथार्थतश्चमत्कारि।

(४) सप्तमशताब्दीतो नवम् शताब्दीमध्ये महाकवि "दिङ्नागाचार्य" रचितमिदं कुन्दपुष्पसदृशं सुकोमलं कुन्दमालानाटकं काव्याकाशे सुदीप्त नक्षत्रमिव विभाति। (अत्रेदं ज्ञेयं यदयं दिङ्नागकविर्न कालिदास-प्रतिस्पर्धी बौद्धोनिक स तु कालिदास समकालीन ईयातः पूर्ववर्ती आसीत्)

(५) काव्यरचना पटीयान् अयं कविः भारतीय पूर्ववर्ती कविपरम्परा क्रमे स्वकीय समयादिकं नैव लिखितवान्। केवलं समीक्षया विद्वद्भिर्विनिश्चितमस्य समयादिकम्।

(६) नाटकेस्मिन् षट् अङ्काः सन्ति। तेषु प्रत्येकङ्कगत संक्षिप्त कथा क्रमोऽधस्तनः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रथमोऽङ्कः

अस्मिन् अङ्के लक्ष्मणेनसहिता सीता रथमास्थाय प्रयाति इत्यततः एव तथा प्रारब्धः । गङ्गातटे रथमागते सती भूमिः निम्नोन्नता वर्तते अतएव लक्ष्मणः रथाद्रवतीर्य पादाभ्याम् एव चलति । गर्भभारपूरिता सीता क्षणं विश्राम्यति ।

ततो लक्ष्मणः राज्ञः रामचन्द्रस्याज्ञां श्रावयन् कथयति-अयं निर्लक्षणो लक्ष्मणः निरन्तर पवासदुःखभागी विज्ञांपयति, हृदय स्थिरी क्रियता ।

एवमुक्त्वा लक्ष्मणः रुद्धकण्ठो जातः । तदा ब्रूते आर्यस्य आदेशं यत्नतः वक्तुम् इच्छामि, किन्तु मम वाणी हृदयं गत्वा ग्रन्थिं वधनात् । सीतां पृष्टवती किं मम समादिष्टो वनवासः ? लक्ष्मणो ब्रूते एवमेव । पुनः लक्ष्मणः ब्रवीति किमपरं मन्दभाग्योऽयं लक्ष्मणः कथितुं शक्नोति ।

त्यक्ता किल त्वम् आर्येण चरित्र-गुण-शालिना ।
मयाऽपि किल गन्तव्यं त्यक्त्वा त्वाम् इह कानने ॥१०॥

केवलं लोकापवाद भीत्या नित्य परिशुद्धां भवतीमहं त्यजान् ।

ऋषीणां लोकपालानाम् आर्यस्य मम चाऽग्रतः ।
अग्नौ शुद्धिगता देवी किंतु लोको निरङ्कुशः ॥

सीता वज्राघातेन कठोरशब्देन मूर्च्छिता जाता । तत्र गङ्गाप्रवाहमिश्रित शीतल वायुना चेतनां प्राप्य उक्तवती लक्ष्मण मम वचनात् स राजा रामचन्द्रः विज्ञापनीय मां मन्दभागिनी अनुशोचन आत्मानं वाग्घ्रस्व सत्धर्मेण सशरीरे सावधानो भव । वत्स लक्ष्मण प्रणमतव्या त्वया मम वचनात् राघवकुलराजधानी भगवती अयोध्या, शुश्रू इहितव्यः प्रतिमागतो महाराजः, साधयितव्या शश्रुणां आज्ञाप्तिः समाश्वा सहितव्या प्रियंवदा मम प्रिय सख्यः तथा स्मरतव्या सर्वकालं इयं मन्दभागिनी ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इदं श्रुत्वा लक्ष्मणो ब्रवीति इदं सन्देशमाकर्ण्य क्षतेक्षारम् इवादितं दशामशिह्यां शोकस्य व्यक्तमार्ज गमिष्यति ।

तत्र गङ्गातटे लक्ष्मणेन दृष्टयत्

एते रुदन्ति हरिणा हरितं विमुच्य,
हँसाश्च शोकविधुराः करुणं रुदन्ति ।
नृतं त्यजन्ति शिखिनोऽपि विलोक्य देवीं,
तिर्यग्गता वरम्अमी न परं मनुष्याः ।।

ततो लक्ष्मणः तत्रत्य व्यज्ञांपयति—

आर्यं मित्रं बान्धवान् वा स्मरन्त्या,
शोकाद् आत्मा मृत्यवे नोपनेयः ।
इक्ष्वाकूणं संततिर् गर्भ-संस्था,
सेयं देव्या यत्नतो रक्षणीया ।।

पुनश्च लोकपालान्, भागीरथीं, मुनीन्, देवान्, हिंस्रजन्तुं प्रति स्वकीय निवेदनं विज्ञांपयति शुभलक्षणो लक्ष्मणः ।

(क) भो भो लोंकपालाः श्रृण्वन्तु—

ऐषा वधूर्दशरथस्य महाराथस्य,
रामह्वयस्य गृहिणी मधुसूदनस्य ।
निर्वासिता पतिगृहाद् विजनेवनेऽस्मिन्,
एकाकिनी वसति रक्षत रक्षतैनाम् ।।

(ख) भागीरथीं प्रति—

जातश्रमां कमल-गन्ध-कृताऽधिवासैः
काले त्वमप्य अनुगृहाण तरङ्ग-वातैः ।
देवी यदा च सवनाय विगाहते त्वां
भागीरथि, प्रशमय क्षणमाम्बु-वेगम् ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(ग) मुनीन् प्रति—

ये केचिद् अत्र मुनयो निवसन्त्यरण्ये
विज्ञापयामि शिरसा प्रणिपत्य तेभ्यः ।
स्त्रीत्युज्झिते, त्यशरणेति कुलागतेति
देवी सदा भगवतीत्यनुकम्पनीया ।।

(घ) हिंस्रजन्तून प्रति—

भो भो हिंसा भूमिरेषा भवद्भि-
र्वर्ज्या, देशो न प्रवेश्यः परेषाम् ।
मृग्यो मृग्यो विप्रवासे सखीनां
यूयं सख्यो, मा क्षणं मुञ्चतैनाम् ।।

हिंस्रजन्तून् प्रति इयमुक्तिः लक्ष्मणस्य "लक्ष्मणरेखा" वर्तते । यथार्थतः इयमेव लक्ष्मणरेखा ।

(ङ) अन्ते च—

सख्यो नद्यः स्वामिनो लोकपालाः
मातर्गङ्गे भ्रातरः शैलराजाः ।
भूयो भूयो याचते लक्ष्मणोऽयं
यत्नाद् रक्ष्या राजपुत्री गतोऽहम् ।।

एभिः उक्तिभिः दिङ्नागः करुणरसधारां प्रवाहयन् प्रार्थना व्यागेन पञ्चवटीवत् अत्रैव लक्ष्मणरेखां विधाय सीतायै सुरक्षां विहितवान् । वर्णनमिदं सकल रामकथा काव्येषु सर्वथा चमत्कारजनकं भावपक्ष कलापक्षोभयात्मकमभूतपूर्वं नात्र कश्चन् सन्देहः न चापि कापि विमतिः ।

ततः शिष्यद्वारा कापि परित्यक्ता नारी अत्र समागता इति ज्ञात्वा तत्र महर्षि वाल्मीकिः समुपस्थितवान् । सहसा सीतां तां दृष्ट्वा ज्ञात्वां च सान्त्वनां प्रदाय स्वाश्रमं आनीतवान् कथयति च—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(क) सोऽहं चिरंतन-सखा जनकस्य राज्ञः,
तातस्य ते दशरथस्य च बाल-मित्रम् ।
वाल्मीकिरस्मि विसृजाऽन्य-जनाऽभिशङ्कां
नाऽन्यस्तवाऽयमवले श्वशुरः पिता च ।।

(ख) इक्ष्वाकूणां च सर्वेषां क्रियाः पुंसवनादयः ।
अस्माभिरेव पच्यन्ते मा शुचो गर्भमात्मनः ।।

एवं प्रकारेण सीतापरित्याग वाल्मीकेराश्रमवासपद्धतिश्च सर्वथा नूतनां सरिंण प्रदर्शयति ।

तत्र सीता भगवतीं भागीरथीं प्रार्थयति यत् प्रतिदिनम् अहम् एकां कुन्दपुष्पविरचितां मालां भवत्यै समर्पयिस्यामि यावत् गर्भस्थित सन्तति प्रसवं सकुशलं स्यात् । इत्थं च "कुन्दमाला" नाटकम् इति नाम सार्थकं जातम् । कुन्दपुष्पविषये आयुर्वेदशास्त्रस्य मूर्धन्य ग्रन्थे "भावप्रकाशे" कुन्दपुष्पस्य वैशिष्ट्यं उपादेयतां च वर्णितं वर्तते यथा—

कुन्दं तु कथितं माध्यं सदापुष्पं च तत्स्मृतं ।
कुन्दं शीतं लघुश्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तहृत् ।।

अर्थात् कुन्दपुष्पं शीतं, सदापुष्पितं शिरोवेदनाहारकं, विषनाशकं, पित्तनाशकं सर्वथा श्लाघ्यं वर्तते ।

●

द्वितीयोऽङ्कः

अस्मिन् अङ्के 'यज्ञवती' एवं 'वेदवती' नामिके द्वे मुनि कन्यके परस्परं वार्तालापं कुरुतः । येन ज्ञायते यत् वाल्मीकेः आश्रमे सीता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुत्र द्वयं प्रसूतवती। तौ पुत्रौ क्रमशः वर्धमानौ इतस्ततः भ्रमन्तौ तथा पठन्तौ च तिष्ठतः।

श्रीरामचन्द्रः नैमिषारण्यमागत्य अश्वमेधयज्ञं करिष्यति। यस्य पूर्वव्यवस्था परिपूर्णा विद्यते। सर्वे ऋषयः तत्र आमन्त्रिताः सन्ति। वाल्मीकिः द्वयोः बालकयोः "कुशः" तथा "लवः" इति नामधेयं कृतवान्। उभौ बालकौ सस्वरं रामायणस्य ज्ञानं कुर्वाते। इयं सूचना प्रवेशकद्वारा प्राप्ता।

सीता खिन्नमना वर्तते यत् अनेन कष्टमय जीवनेन आत्महत्या एव वरम्। इति विचारेण सीता वेदवतीं निकषा गन्तुमुद्यता जाता। तदेव स्वयं वेदवतीं तत्राऽगतवती। वेदवती कथितवती यत् रामस्य दर्शनं शीघ्रमेव भविता, यतोहि स नैमिषारण्ये अश्वमेधयज्ञार्थं समागच्छति। एतन्मध्ये एव नेपथ्यात् रवः (शब्दः) समायातः, यत् सर्वे ऋषयः महात्मानश्च त्वरितमेव नैमिषारण्याय प्रस्थानं कुर्वन्तु। यतोहि रामस्य यज्ञे सर्वेषां तत्रोपस्थिति अनिवार्याः यथ—

तीर्थोदकानि समिधः परिपूर्ण-रूपा
दर्भाङ्कुरान् अविहतान् परिगृह्य सद्यः।
अग्रे भवन्तु मुनयो मुनिकन्याश्च
कुर्वन्तु मङ्गल-बलीन् उटजाऽङ्गणेषु॥

●

तृतीयोऽङ्कः

अस्मिन् अङ्के केनचित् तपस्विना सूचितं यत् रामलक्ष्मणौ तथा कुशलव सीता च नैमिषारण्ये समावेत्ताः सन्ति। लक्ष्मणेन साकं रामचन्द्रः वाल्मीकेराश्रमं प्रवेष्टुकामः गोमतीनदीतटे कुन्दपुष्पस्य एका माला तरङ्गाघातेन रामचन्द्रस्यचरण समीपमागता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तां पुष्पमालां दृष्ट्वैव रामो ब्रूते-लक्ष्मण, अस्याः मालायाः ग्रन्थनकला तु तथैव वर्तते यथा सीता मालां ग्रथति स्म। तदनन्तरं मार्गे गच्छन् रामः कथयति-इदं पदचिह्नं तु निश्चितमेव सीतामेव वर्तते। तत्रैव लताकुञ्जे पुष्पं चिन्वती सीता रामलक्ष्मणौ ददर्श। तथा च उभयोः भ्रात्रोः वार्तालापं श्रृणोति स्म। अनन्तरं सीता त्वरितमेव ततः प्रस्थितवती।

एतन्मध्ये एव वादरायणनामकः ऋषिः तत्रागत्य रामचन्द्रं वाल्मीकेराश्रमं नीतवान्। अत्र कुन्दमाला नाटकस्य श्लोकद्वयं तथा कियत्यः मूलपङ्क्तयः निम्नोद्धृताः सन्ति—

समानं संस्थानं निभृत-ललिता सैव रचना
तद् एवैतद् रेखा-कमल-रचितं चारु तिलकम्।
यथा चेयं दृष्टा हरति हृदयं शोक-विधुरं
तथा ह्यस्मिन् देव्या सपदि पद-पंक्तिर्विनिहिता॥

तथा च

(निर्वर्तितं सवनम, उपासिता संध्या, हुतो हुत-वहः, अवगाहिता भगवती भागीरथी, भगवतीं भागीरथीम् उद्दिश्य मम प्रतिपन्ना स्वहस्तग्रथिता कुन्दमाला समर्पिता। इदानीम् अहम् उन्नत-गम्भीर-शीतलं लताजालं प्रविश्य अतिथि-जनोप-स्थान-योग्यानि कुसुमान्य अवचिनोमि)।

तथा च—

प्रविश्य तरु-मूलानि नीत्वा मध्यंदिनातपम्।
अध्वनीना इवच्छाया निर्गच्छन्ति शनैः शनैः॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चतुर्थोऽङ्कः

अस्मिन्नङ्के कियत्यो नूतनाः घटनाः विद्यन्ते। तिलोत्तमा नामिका काचिदप्सरा सीतायाः रूपं धृत्वा रामस्य भावनां परीक्षितुमागता। रामस्य सखा कौशिकः (विदूषकः) इमां वार्तां ज्ञातवान्।

एतन्मध्ये तपस्विन्यः वाल्मीकिं निवेदितवत्यः यदत्र रामस्य अश्वमेधयज्ञं भविष्यति। तस्य दूताः पुष्पाय चयनार्थमत्रागमिष्यन्ति। तेनास्यां वाप्यां स्नाने जलविहारे चास्माकं महती बाधा भविता।

वाल्मीकिना प्रोक्तम्, मद्वचसाऽस्मिन् तडागे याः स्नास्यन्ति ताः सर्वान् द्रक्ष्यन्ति किन्तु कोऽपि ताः द्रष्टुं नैव शक्नोति। एतत् कथनानन्तरं सीता निर्भयं तत्र वापी तटे दिनं यावत् तिष्ठति। तत्र तटे शीतलपवनस्पर्शेण सीता जाड्यमनुभवन्ति चित्रकूटे मायावती द्वारा प्रदत्तमुत्तरीयकं धृतवती (आच्छादितवती)।

एतन्मध्ये एव रामस्य मित्रं कण्वस्तत्रोपस्थितः। राम वनशोभां परिदर्शयन् तत्र वापीं निकषा प्रापितवान्।

रामः तत्र वाप्यां नेत्र प्रक्षालनार्थं समागतवान्। वाप्यां सीतायाः छाया जले दृश्यते। परन्तु तत्र अन्वेषणानन्तरमपि सीता न दृष्टा। तेन रामो मूर्छितो जातः। त्वरितमेव सीता आगत्य स्वस्पर्शेण रामस्य मूर्च्छां दूरी कृतवती, किन्तु समक्षं नागतवती। रामः पुनः मूर्च्छितो जातः। ततः सीता स्वकीय उत्तरीय वस्त्रेण वीज्यमाना आसीत्। तेन पुनः रामं चेतनां प्राप्तवान्। परस्परं सीतारामयोः मध्ये अदृश्ये एव वार्तालापो जातः। रामः सीतायाः उत्तरीयवस्त्रं धृत्वा स्वपार्श्वम् आनेतुं प्रयासं कृतवान्। स्वकीय उत्तरीय वस्त्रं च सीतायाः उपरि प्रक्षिप्तवान्। सीता तं परित्यज्य आश्रमं गतवती।

रामस्तु कुन्दमाला रचनां तथा बालुकायां सीतायाः पदचिह्नं दृष्ट्वा सा सीता एव इति विनिश्चितवान्। अत्र केचन महत्वपूर्णाः श्लोकाः दर्शनीयाः। यथा—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैदेह्याः क्वापि गच्छन्त्या दीर्घिका-तीर-वर्त्मनाम।
अन्तर्गत-जलच्छाया मया सैवेति वीक्षिता॥

जनक-दुरितरं विहाय देवीं
यन्मपरं भुवने तथा प्रभावम्।
अहमिह न विलोकयामि यो मे
स्पृशति पटान्त-समीरणैः शरीरम्॥

अविदितम् अनुसृत्य चित्रकूटे
सुतनु, सुमाऽवचयाय निर्गतां त्वाम्।
कुसुममवचितं विकीर्य भूमौ
स्मरसि रसेन मया धृतं पटान्तम्॥

पञ्चमोऽङ्कः

अस्मिन् अङ्के रामचन्द्रः वापीजले सीताछायादर्शनादि पूर्वं घटनाचक्रेण चिन्तामग्नः अस्ति। रामसभायां कुशलवौ रामकथां श्रावयितुं प्रस्तुतौ वर्तते। राम सभायां प्रवेशार्थं सर्वे मुनयः समादिष्टाः।

विदूषकः कुशलवयोः प्रतीक्षायां द्वारि तिष्ठति। कुशलवयोः तत्रागते सति सादर प्रवेशार्थं रामेण आदिष्टम्। उभौ बालकौ प्रविशतः। रामः तौः अङ्के विधाय स्वसिंहासने उपवेशयामास। त्वरितमेव विदूषकः समागत्य विज्ञापयति—राजन्, इमौ बालकौ संरक्षताम् तथा सिंहासनात् अवतारयतु। यतोहि अस्मिन् सिंहासने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रघुकुलोत्पन्नः एव उपवेष्टुं शक्नोति । यदि अन्यः उपविशति, तर्हि तस्य शिरः शतखण्डं भविष्यति ।

रामः तयोः शिरसी पश्यन् अनुभवति यत् इमौ सीतागर्भोत्पन्नौ एव । तथा च तयोः आकृती सीता समाने एव रामेण दृश्येते । तथा च उभयोः अवस्थाऽपि सीतागर्भसमकालीना विभाव्यते । अत्र निम्नाङ्कितौ द्वौ श्लोकौ पठनीयौ । एतयोः भावार्थस्तु विवरणे एव विद्यते—

अतिप्रसादाद् असतीव तस्मिन्
दृष्टा मया वारिणि पङ्कजाऽक्षी ।
लम्बालकं पाण्डुर-पीन-गण्डं
प्रसाद-रम्यं वदनं वहन्ती ॥

तथा च

एतत् कुमार-युगलं वयसाऽन्वयेन
श्यामोन्नतेन वपुषा विपदाऽनया च ।
तां मैथिली-तनय-संभविनीम् अवस्थाम्
आदाय माम् अतितरां तरली-करोति ॥

●

षष्ठोऽङ्कः

अस्मिन् नाटके अयम् अङ्कः सर्वाधिक महत्वपूर्णः । अस्मिन् अङ्के राजा रामचन्द्रः वाल्मीकि सहित सर्वेषां ऋषिमुनीनां समक्षं भगवती वसुन्धरा द्वारा पुनः निष्कलङ्कप्रमाणितां सीतां स्वीकरोति । तथा च कुशाय अयोध्याराज्यप्रदानं, लवं च यौवराज्यपदे प्रतिष्ठापनं,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वयं च सीतयासहितः शेषकालं यापनार्थं तस्थौ, इति सर्वाः घटनाः सुखदसंयोगामिका विद्यन्ते ।

रामचन्द्रः कुशलवाभ्यां रामायण कथां सावधानेन धैर्येण च शृण्वन् आसीत् । कुशलवौ राज्ञः दशरथस्यविवाहमारभ्य सीता-निर्वासनपर्यन्तं कथां श्रावयित्वा मौनावलम्वनं कृतवन्तौ । तत्र कण्वः यः रामचन्द्रस्य पूर्वं सखा अस्ति, स सीतापुत्र जन्मनः कथां श्रावयन् कुशलवयोः स्पष्टं परिचयं प्रदत्तवान् ।

परिचयं श्रुत्वा एव रामलक्ष्मणौ मूर्च्छितौ जातौ । कुशलवौ च चेतनाशून्यौ वभूवतुः । तत्र सहसा वाल्मीकिः सीतामानीय सीताद्वारा सर्वान् चेतनायुक्तान् कारितवान् । वाल्मीकिः रामं भर्त्सितवान् तथा कथितवान् यत् सीता निर्वासनेन त्वया रामेण महान् अन्यायः कृतः ।

वाल्मीकिः सीतां स्वकीय पवित्रतां प्रमाणयितुम् आदिदेश । सीता सर्वान् लोकपालान् सूर्यादि देवान् तथा भगवतीं पृथ्वीं स्वकीय शुद्धतायाः प्रमाणार्थं प्रार्थितवती । सर्वे लोकपालाः देवाश्च समुपस्थिताः । सहसा दिव्यरूपा भगवती वसुन्धरा प्रादुर्भूता तथा सीतां निष्कलुषां पतिव्रतां प्रमाणयित्वा सहसा अन्तर्लीना जाता । आकाशात् पुष्पवृष्टिः पपात । रामः सीतां स्वीचकार । लक्ष्मणः क्षमायाचनां कुर्वन् प्रणामं कृतवान् । लक्ष्मणानुरोधेन रामः कुशाय राज्यं प्रददौ तथा लवं युवराजपदे अभिषिक्तवान् । इत्थं च सीतारामयोः पुनः समागमः विश्वेषां हितकारी श्रेयस्करः प्रेयस्करश्च सञ्जातः ।

अन्ते च वाल्मीकेः निम्नाङ्कित भरतवाक्येन परिपूर्णतां प्राप्नोति नाटकमिदम् । वाल्मीकिः कथयति—कुशस्य शासनकाले ब्रह्मा-विष्णु-शङ्कराः, सर्वाः नद्यः, दशदिक्पालाः, भूर्भूवः स्वर्लोकाः, चत्वारः समुद्राः, सम्वत्सराः, चत्वारो वेदाः तथा सर्वे कुलपतयः आश्रम-वासिनः तपोधनाः कल्याणं विदध्युः तथा गोवंशस्य वृद्धिर्भवतु ।

अस्मिन् अङ्के यद्यपि बहवः श्लोकाः सन्ति, किन्तु तेषु कतिपय श्रेयांसः श्लोकाः अत्र समुद्धयन्ते । एतेषां सारांशाः विवरणे एव प्रदत्ताः सन्ति । यथा—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सीतां निर्जन-संपाते चण्ड-श्वापद-संकुले ।
परित्यज्य महाऽरण्ये लक्ष्मणोऽपि न्यवर्तत ।।

ततः श्रुत्वा स शिष्येभ्यो वाल्मीकिर्मुनिरुत्तमः ।
स्वयं सीतां समाश्वस्य निनाय स्वं तपोवनम् ।।

कुश-लव-जननी-विशुद्धि-साक्ष्ये
पवन-सखा यदि देवता नियुक्ता ।
कथमिव भवता निरङ्कुशोऽयं
हृदि निहितो नु पृथग्जनाऽपवादः ।।

माममनन्ति मुनयः प्रणव-द्वितीयां,
मत्तः प्रसूतिर् अखिलस्य चराऽचरस्य ।
मय्येव सिध्यति तपोऽवनि-देवतां त्वं,
जानीहि, जानकि तवाऽन्तिकमागतं माम् ।।

ऋषयो दानवाः सिद्धा यक्ष-गन्धर्व-किन्नराः ।
मानवा लोकपालाश्च भवन्तु अवहिताः क्षणम् ।।

रामं दाशरथिं मुक्त्वा न जातु पुरुषाऽन्तरम् ।
मनसाऽपि गता सीतेत्येवं विदितमस्तु वः ।।

या स्वयं प्रकृति-निर्मला सती
छाद्यतेऽन्य-जनवाद-वारिदैः ।
जानकी भगवती त्वयाऽद्य सा
चन्द्रिकेव शरदा विशोधिता ।।

वाल्मीकिः—वत्स राम, अनेन गृहीता वैदेही । स्वयम् आभाष्य पाणिणा पाणौ संगृह्य नियुज्यतां यज्ञाऽधिकारे ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(रामो लज्जां नाटयति)

वाल्मीकिः—अलं लज्जया। यज्ञाङ्ग विना किं वाऽपूर्वम्-दाशरथेः सर्व-साक्षिकं पाणि-ग्रहणम् इति।

रामः—समाचारोऽयं गुरु नियोगश्च। (सीतां पाणौ ग्रहीत्वा) भद्रे वैदेही।

अपत्यमिष्टं च वदन्ति देवाः फलद्वयं दार-परिग्रहस्य।
पूर्वं तयोस् त्वय्युदपादि हृद्यं वहस्व वासे भवने द्वितीयम्॥

अविघ्नमस्तु यज्ञानां काले वर्षतु वासवः।
निरातङ्काः प्रजाः सन्तु सीता-राम-समागमात॥

मैथिली-तनयः श्रेष्ठः कुशो नाम महारथः।
अभिषिक्तोऽद्य साम्राज्ये मान्यतामस्य शासनम्॥

पुरन्दरस्य यत् स्वर्गे पाताले यच् च वासुकेः।
पृथिव्यां यच्च मान्धातुस्तदस्तु तव मङ्गलम्॥

त्वद्-दर्शनेन विधिना परिशुद्ध-वृत्ति-
र्जाता महाऽध्वर-सखी मम सैव पत्नी।
न्यस्तं च सूनु-युगलं भुवनाऽधिकारे
किं स्यादतः प्रियतमं गुरुणाऽभिधेयम्॥

स्थाणुर्वेधास् त्रिमाधा मकर-वसतयः पावको मातरिश्वा,
पातालं भूर्भुवः स्वश्चतुर्-उदधि-समाः सामन्त्राश्च वेदाः
सम्यक् संसिद्धि-विद्या-परिणत-तपसः पीठिनस्तापशाश्च,
श्रेयांस्यस्मिन् नरेन्द्रे विदधतु, सकलं वर्धतां गोकुलं च॥

●

॥ इति ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परिशिष्ट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

॥ श्री ॥

सीतापरित्यागसमीक्षा

विभिन्न रामायणान्तर्गत **'सीता परित्याग'** कथा भिन्न-भिन्न रूपेण विद्यते । बहुषु रामायणेषु न दृश्यते । अत्रापि संक्षिप्त विवरणं प्रदीयते । वाल्मीकि कालादारभ्येदानींतन पर्यन्तं निरन्तरं निर्वाधरूपेण विषयेऽस्मिन् चर्चा समीक्षा मत विभिन्नता च श्रूयतेऽवलोक्यते च ।

१. आदिकविना वाल्मीकिना **स्वकीय 'वाल्मीकिरामायणे'** सर्व प्रथमं 'सीतापरित्याग कथिता । तदनुसारिणाऽन्येन रामकाव्य-कविना विभिन्न शैल्यां चर्चा विहिता । महाराजः रामचन्द्रः गुप्त-चार द्वारा सीता सम्वन्धिनीं सामान्यालोचनां श्रुत्वा सर्वथा निष्पापां पतिव्रताग्निपरीक्षापरिशुद्धां धर्मपत्नीं सीतां तत्याज । इदमपि जानन् यतर सीता पूर्णगर्भाऽधुना विद्यते । वनभ्रमणव्याजेन लक्ष्मण द्वारा निर्वासिता सीता रामचन्द्रेन ।

राजतन्त्रेऽपि जनतन्त्र पद्धत्या राज्यसंचालनं कुर्वन् रामः सर्व जानन्नपि जगत्पावनकर्त्री सर्वश्रेयस्करीं सीतां निर्वासितवान् महाराजः रामचन्द्रः ।

सा वाल्मीकिना स्वाश्रमं नीता, तत्रैव पुत्रद्वयं प्रसूतवती । तत्रैव उभौ कुमारौ शिक्षितौ संस्कारसम्पन्नौ वभूवतुः । रामचन्द्रस्य यज्ञे महर्षिणा साकं तौ कुमारौ समागतवन्तौ, सीतां निष्कलुषां परिशुद्धां प्रमाणितवान् । सीता तत्रैव सर्वेषां समक्षं पातालं प्रविष्टा । विस्तृतेयं घटना वाल्मीकि रामायेण वर्णिता । रामश्च क्षमां ययाच ।

वाल्मीकि रामायणस्य उत्तरकाण्डे ९६, ९७ सर्गयोरिदं वर्णितम्; ततः पद्यत्रयमेवात्रोद्धृतम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाल्मीकिः कथयति—

इयं दाशरथे सीता सुव्रता धर्मचारिणी
अपवादपरित्यक्ता ममाश्रमसमीपतः ।।
बहुवर्षसहस्त्राणि तपश्चर्या मया कृता
नोपाश्नीयां फलं तस्याः दुष्टेय यदि मैथिली ।।

उ० का० ९६।१९, २०

रामः कथयति

ज्ञेयं लोक भयाद् ब्रह्मन्नापापेत्यभिजानता
परित्तय या सीता तद् भवान् क्षन्तुमर्हति ।।

उ० का० ९७।४

(२) **बाल्मीकि निर्मिते एव 'आनन्दरामायणे'** सीतापरित्याग-कथा भिन्न रूपेण विद्यते। लोकापवादं श्रुत्वा रामः जनकेन साकं परामर्शं कृत्वा सीतां बाल्मीकेराश्रमे प्रेषणार्थं लक्ष्मणमादिदेश। लक्ष्मणश्च सीतां वने विसृज्य निर्वर्तितः । तत्रैव सीता पुत्रद्वयं प्रसूतवती। ऋषिणा शिक्षितौ तौ रामयज्ञे बाल्मीकिना साकमागतौ, तेनैव सह सीतापि समागवती। तां दृष्ट्वा रामो विस्मयमाप्तवान् वाल्मीकिः सर्ववृत्तान्तं कथयामास, सीतायाः पातिव्रत्यं पवित्रतां च वर्णितवान् एतन्मध्ये सर्वेषां सभासदामग्रे सीता पृथिव्यां प्रविष्टा। ततो रामः पृथ्विवीं प्रति क्रुद्धो भूत्वा सीतां प्रत्यावर्तयितुमादिष्टवान् पृथ्वी तथैत कृतवती।

रामश्च सीतया सह अश्वमेधयज्ञं कृतवान्। ततश्च सुचिरं सीता सहितः पुत्रपौत्रादियुक्तः राज्यं चकार।

फलतोऽस्मिन् रामायणे **"सीता-संयोगात्मिका"** कथा दृश्यते।

३. वाल्मीकि निर्मिते **"अद्भुत-रामायणे" सीता परित्याग चर्चा न विद्यते।**

४. राजशेखरकृत 'बाल-रामायणे' कथा समुपलब्धा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५. हनूमता निर्मिते हनुमन्नाटकेऽपि 'सीता-परित्याग' कथा नैव वर्तते ।

६. भगवता वेदव्यासेन निर्मिते **'अध्यात्मरामायणे'** भिन्नरीत्या कथेयं वर्णिता। तथाहि लोकापवादोद्विग्नः रामचन्द्रः सीतया सह एकान्ते विचार विमर्श कृत्वा वाल्मीकेराश्रमे लक्ष्मणद्वारा वनं प्रेषयामास। तत्रैव सा गर्भस्थशिशोः प्रसवः स्यादित्यपि सङ्केतितं रामेण ।

पुनश्च वाल्मीकिना सहिता सीता रामसभायामागता । तत्र समुपस्थितानां देवानां ऋषीणां च समक्षमेव सीता दिव्य संकल्पवचसा मातरं पृथिवीं प्रार्थितवती, तत्क्षणमेव पृथ्वीं विदार्य दिव्य सिंहासनं प्रादुरभूतम् । तदुपरि सीता समुपविश्य पृथिव्यामन्तर्भूता ।

(७) महाकवि कालिदासेन रघुवंश महाकाव्यस्य १४-१५ सर्गे वाल्मीकि वदेव घटनेय मार्मिकरूपेण वर्णिता ।

(८) महाकवि भवभूतेः **'उत्तरः रामचरिते'** तू सीता निर्वासिन सन्दर्भे कारुणिकघटना इति विशिष्टरूपे विद्यते यत्र करुण रसधारा प्रवाहिता विद्यते । तत्रापि छायारूपेण सीता-संमिलनं जातम् अत्रापि परम्परया सीतारामयोः संयोग एव ।

(९) **कुन्दमाला नाटके**ऽत्यन्तकरुणरसधारां प्रवाहयन् कवि दिङ्नागाचार्यः सीतापरित्याग-कथां व्याजहार। किन्तु पुनः सीता मिलनपूर्वकं रामस्य यज्ञ सम्पन्नता **कथा सुखान्तमेव** वर्णिताऽस्ति ।

(१०) **तमिल भाषायं प्रसिद्धे 'कम्बन-रामायणे'** सीता नास्ति। तत्रतु युद्धकाण्डस्यैव पूर्वार्धोत्तरार्ध रुपेण लङ्कातोऽयोध्या प्रत्यागमन पर्यन्तमेव कथा विद्योतते ।

(११) **गुजराती भाषायां** प्रख्याते **'गिरिधर रामायणे'** रजक द्वारा स्वगृहे सीतासम्बन्धे समालोचनां विज्ञाय यद्यपि रामचन्द्रेण लक्ष्मण-द्वारा सीता वने निर्वासिता । तत्र च वाल्मीकेराश्रमे तस्याः **अवस्थानं**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुश लवयोर्जन्म-संस्कार पूर्वकं रामकथा ज्ञानं च विशदं विवेचितमस्ति। किन्तु वाल्मीकिना सह रामसभायां सीतागमनं रामद्वारा सादरं सस्नेहं च सीतायाः स्वीकरणं तया सह पुत्राभ्यां न सह अयोध्याप्रत्यागमनं कुशलवाभ्यां यथास्थानं राज्यप्रदानवर्णनं च सविस्तारं विद्यते। अन्ते च पुनः कैकेय्याः कपटेन सीतायाः पाताल-प्रवेश कथा चास्ति। इयं कथा आनन्दरामायणानुगामिनी दृश्यते। फलतोऽत्रापि **'सीता-संयोग' रूपैव** कथा विद्यते। यतोहि सीतायाः पाताल प्रवेशान्तरमेव सपरिवास्य रामस्य देहत्याग घटना वर्णिताऽस्ति।

(१२) **कश्मीरी भाषायां रामावतार चरित नामके** रामायणे सीता परित्याग कथा नैव विद्यते। किन्तु स्वकीय ननान्दृ (ननद) द्वारा समुद्वेजिता सीता सहसा तिरोहिता (अन्तर्ध्यानंगता)। त्वरितमेव रामोऽपि देहं तत्याज-स्वर्गारोहणं च कृतवान्।

(१३) **ओड़िया भाषायां 'वैदेहीविलास'** नामके सुविशदे छान्द-गीतात्मके रामकाव्ये सीता परित्याग चर्चा न विद्यते। ग्रन्थस्यान्तिमे भागे ४६ पद्ये कविता लिखितं यदियं करुण रसात्मिका घटना नैवोल्लिखिता यतोहि एतादृशी कथा विवरणं वर्जितमस्ति।

(१४) **असमिया भाषायं 'माधवकन्दली'** नाम्नि रामायणे उत्तर-काण्डे सीता परित्याग कथा, रामयज्ञशालायां वाल्मीकेरागमनं, हनूमद्द्वारा वनात् सीताऽनयन वर्णनं, सीतायाः पातालप्रवेशवर्णनं रामस्य पृथ्वीं प्रति क्रोध वर्णनादिकं प्रायः आनन्दरामायणवत् कथा विद्यते।

(१५) **मराठी भाषायां 'श्रीरामविजय'** नामके महति रामचरित-काव्ये सीतापरित्याग कथा तु वर्तते किन्तु पुनः वनात् सीतां प्रत्यावर्त्य रामः शान्तित्येमे इति वर्णितमस्ति। फलतः **संयोगान्तमिदं** रामकाव्यम्।

(१७) **बंगला भाषायाः प्रख्याते 'कृत्तिवास-रामायणे'** सीतापरित्याग कथा वाल्मीकेरामश्रमेकथा तथा सीता पाताल-प्रवेश कथा च वाल्मीकि रामायणवदेव विद्यते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(१७) **कन्नड़ भाषायामतिविस्तृते "तोरबै-रामायणे"** सीता-परित्याग कथानैव दृश्यते । राज्याभिषेकानन्तरं महाकाव्यामिदं सम्पूर्णम् ।

(१८) **मलयालम् भाषायां** लिखिताध्यात्मरामायणस्योत्तर रामायणे सीता परित्याग कथा विद्यते । वाल्मीकेराश्रमेऽवस्थान वर्णनमात्रमस्ति तत्र । नात्र लवकुश चर्चा नैव रामयज्ञ चर्चा वा ।

(१९) **मैथिली भाषायां** कवि कवीश्वर चन्द्रझा कृत **'मिथिला-रामायणे'** ।

वाल्मीकि रामायणवत् सीतापरित्याग-यज्ञ-वर्णनादिकं विद्यते ।

(२०) **गोस्वामिना तुलसीदासेन तु स्वकीय 'रामचरितमानसे'** रामराज्याभिषेकान्तमेव वर्णनं व्यधायि । तत्र सीतापरित्यागादि चर्चाऽपि नास्ति ।

इत्थंचोपर्युक्त**विंशति (२०) रामकाव्यानामतिसंक्षिप्त** विवरणैः काश्चित् जिज्ञासाः संजायन्ते । तत्सम्बन्धे मदीया समीक्षाधारणा चेयम् ।

१. चक्रवर्तिसाम्राज्यपदेऽवस्थितस्य महाराजरामचन्द्रस्य कठोरतमशासनक्रमे **'सीता-परित्याग' घटना वाल्मीकि कालत एव** महत्याश्चर्चायाः विषयेऽवलोक्यते । यस्मिन् महति वाल्मीकि रामायणे मूलतः कथेयं वर्णिता । तत्रापि स्वयं महर्षिणा वाल्मीकिना स्वकीय तपोवचोभिः सुस्पष्ट शब्दैः रामः प्रतिबोधितस्तथा अविचारितमसुं कार्यं प्रति स्वकीयाक्रोशश्च प्रदर्शितः । रामेण एतदर्थं क्षमां ययाचे ।

२. तदनन्तरं येषु राम काव्येषु सीता परित्याग-कथा दृश्यते तत्र सर्वत्र पृथक् शैल्यां वर्णिताऽस्ति । बहुषु रामकाव्येषु अस्याः कथायाश्चर्चाऽपि नैव विद्यते तत्रापि सद्यः परम्परया वा सीता संयोगात्मिकैव कथा विलसिता विद्यते ।

३. भारतीय काव्यपरम्परायां भव्यभावनानुरूपं **वियोगान्त वर्णनं नैव श्रेयस्करं प्रेयस्करं च प्रतिपादितमस्ति ।**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४. वर्तमान-परिप्रेक्ष्ये सन्दर्भे च विशेषतो घटनेयं महत्याश्चर्चाया: विषय: संजात: । तत्र च विविधरूपेण महान्तश्चिन्तका: मनीषिण: स्वकीयसमीक्षां पर प्रस्तूयन्ते प्रस्तुतवन्तश्च । जागरुकोऽयं प्रश्न: ? समाधानं च नैवसुकरम् । अत्र निश्चितरूपेण किमपि कथनं व वरम् । किन्तु समीक्षा क्रमे स्वकीय भावनामपि अभिव्यक्तं कर्तुमुचितम् ।

५. इदंतु सुस्पष्टतरं यत् **राजतन्त्रात्मके शासनेऽपि महाराज: रामचन्द्र: 'लोकतन्त्र-पद्धत्या' शासनं चकार** । केवलमेकस्यैव कस्यचिन्नागरिकस्य प्रतिकूलालोचनां गुप्तचरैरवगम्य लोकाराधनाय सीतां परित्यक्तवान् । महाकविना भवभूतिना कथितम् ।

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि
आराधनाय लोकानां मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा

६. यद्यपीदं कथितं रामस्य सीता परित्यागानन्तरं सर्वेषु रामकाव्येषु मर्मन्तुद-विरह वेदना-व्यथा-तथा कारूणिकी । यस्या: वर्णनं सर्वथा दुष्करम् तेनैव भवभूतिनोक्तम्

"पुटपाक प्रतीकाशो-रामस्य करुणो रस:"

एवं कृतेऽप्यस्मिन् दारुण-कर्मणि रामस्य परितापोऽवर्णनीयोऽसह्यश्च बभूव । एतावता रामेण शीघ्रतायां सुविचारितं बिना यत् कर्म कृतं तत्तु नैव शोभनम् । "अल्पस्य हेतोर्बहुहातुमिच्छन् विचार-मूढ: प्रतिभासि मे त्वम्"—कविकुलगुरो: कालिदासस्यास्मिन् प्रसङ्गेऽन्यत्र कथितेयमुक्तिरत्र संघटते ।

७. लोकानुरञ्जनमेव केवलं न राजधर्म: । तत्र तु सर्वविध पौर्वापर्य्य पर्यालोचनपि सदैवापेक्षितम् । येनाचरणेन "यावच्चन्द्र दिवाकरौ" भूमण्डले तर्कवितर्कस्यावकाश: स्यात्तथा च "आजीवनं तेन सदुष्करेण कर्मणा व्यथितं सुतपं जीवनं यापयेत्" इति नैव हृदयग्राहि जायते ।

८. भवतान्नम लोकरञ्जनं राजचरित्रोज्ज्वलता वा किन्तु सामान्यरूपेण मानवोचित कर्तव्यमपि तु वर्तते ! लङ्का परावर्तनकाले

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तरर देवादि समक्षमग्निपरीक्षिताऽकलुषा सर्वश्रेयस्करी सीता कथं सहसा वेगेन लक्ष्मणम् अध्यादेश (Ordinance) रूपे छलेन व्याजेन सीता परित्यागार्थमादिष्टो रामचन्द्रः इति न मनसि विभावते।

९. रामचन्द्र समक्षं तेषां पितामहस्य 'अजस्य' चरित्रं दृष्टान्तत्वेनासीत् यत् 'अजस्य' पत्नी दशरथस्य जननी 'इन्दुमती' सहसा दिवंगता। तस्याः वियोगे अजः अवधराज्यं स्वपुत्राय दशरथाय प्रदाय स्वयं वनं जगाम।

१०. यदि रामचन्द्रः वाह्याभ्यन्तरौ 'भय-विधिना निश्चितरुपेण जानातिस्म यत् सीता सर्वथाऽपापा निष्कलुषा पतिव्रताऽस्ति तर्हि कस्यापि कथनेन राज्ञा कथं-तथा व्यधायि इति चिन्तनीयः प्रश्नः ?

११. तिष्ठतु नाम विष्णोरवतारो रामः। तद्रूपेतु रामकाव्य परिशीलनं नैव विद्यन्ते। मर्यादापुरुषः कर्तव्यनिष्ठः सर्वगुणोपेतो महामहिमशाली दाशरथिः रामः इति बुद्धया एव कापी समीक्षा, किमपि चिन्तनं क्रियते रामकाव्य मर्मज्ञैः।

१२. आधुनिकैस्तु नारी प्रपीड़नोपेक्षा-परिप्रेक्ष्येऽपि यद्यपि घटनेयं दृश्यते विचार्यते च। किन्तु नेदं तथ्यं मम मते। न केवलं भारत भूभागेऽपितु समस्तेऽमिन् विश्वस्मिन् समुपलब्धरामकाव्येषु राम-द्वारा-नारी-समर्चा-समाराधना सुविहिता विद्यते।

मयातु सर्वथाऽनुमीयतेऽनुभूयते च यदियं घटना केवलं स्वोत्कर्ष-प्रदर्शनार्थमेव सहसाऽविचारिता विहिता राज्ञा रामचन्द्रेण।

१३. यतोहि रजकालोचना श्रवणानन्तरं **"यदि राजा रामचन्द्रः भरताय राज्यं प्रदाय सीतया सह स्वयमेव वनमगमिष्यत् तर्हि सर्वथा लोक-वेदोमय रक्षणं रञ्जनं चाभविष्यत्।"** नारी प्रपीडनो-पेक्षा-क्षेपोऽपि नायास्यत्। नापि तर्क वितर्कस्यावकाशः स्यात्। एवं हि चरित्रे च महती समुत्कृष्टतासमेधमानाऽभविष्यत्।

१४. इत्थ हि घटनामिमां सर्वथा स्तुत्य रूपेणग्रहीतुं समीक्षकाः मर्मज्ञाः सामान्यज्ञायुतः जनाश्चबाध्याः अभविष्यन् नात्र कश्चन सन्देहः। न च रामचरिते किमपि केनापि रूपेणलाञ्छनं स्यात्।

आद्याचरण झा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

SUBMISSION

(i) Bhartiya Vanmayeshu Ramkatha Varnanam-The Project's preception and the views of some scholars on the very project are given below in short.

(ii) Endlers liker sky and calm like sea, the project may achieve success only by the grace of Rama. There is no other way, no other helper.

(iii) I have observed in the preface that Ramkatha as found in Srimad Valmiki Ramayana is the main basis and in respect to that the analysis and criticism of other Ramayan's kathas will be presented. This was also approched by other scholars.

(iv) Any dissimilarity with Valmiki will be indicated with necessary references and reasonable explainations.

(v) In this way in the first phase descriptive account of the Valmiki Ramayana, Anand Ramayana, Adhyatma Ramayana, Adbhuta Ramayana, Bal Ramayana and Hanumantak will be given in volume-I in simple Sanskrit prose. This volume will also include a list of books related to Ramakatha.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(vi) This work is too vast, timetaking and expensive. Even then with my own limitations, I have began this project depending on his help alone.

(vii) Appeals to scholars, general citizens, educational institutions, University Grant Commission etc. to help the project have been sent, their response is awaited.

(viii) I start this great sacrifice (mahayaina) in the name if Karunanidhana, Adarsh Charitanayka Lord Ramchandra.

(ix) Suggestions are most welcome.

Adya Charan Jha
Chief Editor
&
Project Chairman

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Bhartiya Vanmayeshu Ramakatha Varnanam Project Introdution-Note

by

Adya Charan Jha

I am expressing my views regarding the Bhartiya Vanmayeshu Ramakatha Varnanam project—

In my early youth I got the opportunitmy of regading the Sundarakanda of Tulsi Ramayana, which was in the syllabus of ,Madhyama examination, The Dohas and Chaupais impressed me and a curiosing arose to read the whole Ramayana, and gradually read it.

After this, hearing form some respectable and virtuous persons that all the whises are fulfilled bythe recitation of Sundara Kanda of Valmiki Ramayana, I began the chaning of the Sundara Khanda of Valmiki, begining with only one chapter a day which was increased later to three every day. Later I could chant the where sundarakanda in a day and then I did about 25 times in my student days. The recitation of three chapters every day is continuining even now. - This is how I was attracted to the Ramakatha, In the protrauted journey of life. I have had the opportunity of hearing and reading hundreds

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

of Ramkathas in different languages, and my interest in Ramakatha this grow intensely.

I can't but refer to the interest which may take wise Indrakala. She had towards the Ramakatha for this work. This project there is also on attempt to give a permanent shape to her memory and to pay an affectionate reverence to her.

I have found that in different Indian languages Ramkathas are told in different ways while some are very extensive, Some are too concise, One has only to refer to different sanskrit epics, plays, stories begining from the Ramkatha, of Valmiki to Ananda, Adbhut Adhyatama and Bal Ramayanas. A part from these in Hindi since Tulsl's Ram Charita-manasa, it has been mentioned in hundreds of Kavyas, Khanda-Kavyas and stories. Along with these the Ramayanas and Ramkathas cover large part of literature in Bengali, Maithili, Marathi, Gujrati, Telgu, Kannada, Malyalama, Kashmiri and Tamil, The huge Kamba Ramayana in Tamil is full of qualities to Charm the world like Valmiki and Tulsi Ramayans. In Urdu and Persian also many Ramkatha books are available. A number of writtings are present in south east Asian countries too.

An idea aroused in my mind that a critical and analytical Ramkatha, which extends like ocean be written in simple and understandable sanskrit. That

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

will be good for myself and whole nation as well. Accordingly I decided to do this great and tiresome work which is challenging but not impossible. As first an article entitled 'Bhartiya Vanmayeshu Ram-katha Varnanam Pariyojana' was published in Vishwamanisha magazine of KSDSV and Sanskrit Sammelanam magazine published from Patna city.

Side by side I contacted persons interested in Ramakatha. My old friend, veteran critic and Director of A. I. R. Darbhanga, Shri Chaturbhuja told me that the Bhuvan Publications, Lucknow had published all types of available Ramakatha-materious in Indian and some of the foreign languages in thier original form with a translation there of in Hindi. Immediately I contacted them and recieved the reply within ten days, and purchased some important publications. In collection of these books, the sympathy of my Childhood friend Dr. Jaymanta Mishra who if the co-ordinator of this project, was with me and I am sure, will Continue with me. I also purchased certain books according to my financial suitability besides this.

I am the life-long subscriber of Manas Bharati, Basically a Ramkatha journal published from Bhopal. the aforesaid magazine was started with the help of my respectable friend Dr. Prabhudayal Agnihotri. After reading some sensitive articles related to Rama-katha, my deceassed wife requested me for life-long subscription, and I did so.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

I also continued some of the authors whose articles were published in Manasa Bharti.

In this way I, without consulting anyone, mentally decided to do this big work (mahayjna). Now it depends upon my brother, Sons, daughters and children, besides these if also depends upon the help and advice of my vast friend circle extending not only in this state but in the different parts of the country.

In brief, my conception is following :—

(i) Valmiki Ramayana is the basis of all Ramakathas of Gita developing in different branches.

(ii) Among the Ramayanas Valmiki R; and Bal Ramayana are important. In addition to these more than fifty Ramayanas are available in Sanskrit. The scattered Vast Ramakathas of these Ramayanas will be collected, Mentioning their dissimilarities. Minute Study will be given in prose form of sanskrit (With references of verese it needed) in Volume-1.

After this the collection of the Ramakathas from dramas, epics, Khandkavyas and stories which are the legacy of Indian sentiments will be presented. The second Volume should cover about 1500 pages.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(iii) Next, from Tulsi's Ramcharita Manasa and Vinayapatrika to present day's Hindi Ramakathas, written in sanskrit will be the third volume. This too will be of about 2500 pages.

Afterwards in volume IV a clarrified discription, in sanskrit, of Maithili, Bengali, Bhojpuri, Gujrathi, Telgu, Malyalam, Kannad, Tannada, Tamil and Kashmiri Ramayanas will be presented. The limitations of page-numbers of this volume has not been ascertained. This might be in several parts.

(v) And Volume V will contain the concised sanskrit version of the urdu and persian Ramakathas. It will also include the concluding version of the project and tenets to serve guideline of the journey of life. This if, in short, the Key-note of the project.

Finally, I may mention that by the grace of God and with the help and advice of you all this work will be like the symbol of-'Jani Vidhi Rakha Ramas."

Now remains the question of finance. Has anything to be done on state level ? I leave is to my friends and relatives of advise.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Proceedings of the Meeting of the Executive and Advisory Committee

An important meeting of the 'Bhartiya Vanmayeshu Ramakathas' project's executive committee and also advisory committee along with specially invited scholars was held today, 9.10.85, at 4 P. M. at the Darbhanga residence of Pt. Adya Charan Jha, the Pro-vice Chancellor, Kameshwar Singh Darbhanga Sanskrit University, On this occasion weaths were offered to the photograph of Pt. Jha's deceased wife, Mrs. Indrakala Jha from whose inspiration this project began.

The meeting started with the recitation of Vedic psalms by Dr. Upendra Jha, Assistant professor of presented a short description of the Vast project and requested the present scholars for further guidence.

Dr. Prabhu Dayal Agnihotri former Vice-chancellor of Jabalpore University the Vast project like this needs large amount of money, energy and time. There are so many literatures (prose, poetry, champu) related to Rama. In Hindi alone more than hundred Kavyas are written 'begining from Hariaudha including Rambriksha Benipuri's 'Sita Ki Katha.' If we publish only ten thousand pages, it will cost Rs. 5 lack. Besides, authors will be given

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

renumerations and the scattered Ramakatha materials should be prepared. Only anxiety will not fulfill the work. He further said that sanskrit lacks such type of critical approch which the readers want today. Furthermore, Ramakathas have many Variations and the co-ordinations of all views is no less difficult. Patiala has Mata Kausalya's temple, in Amritsar a Valmiki fair takes place. The people of Punjab regard Kausalya and Valmiki as Punjabies. The Buddhist of Sri Lanka beat Tamils and say the upper Villages Lanka in M. P. Dr. Agnihotri advised the collection of fund from different sources for this huge project and experssed his life long help to his project.

Dr. Vidhata Mishra, professor and Head of the P. G. deptt. of Vyakarana & Philology describing certain sources of Ramakatha said stress on the necessity of the collection of these materials. He informed that 28 Ramayanas were compiled before Tulsi. Recently Dr. V. C. Pathak of Gorakhpur University has worked on the different places depicted in the Ramayana. He said that help should be taken from the Indian literature, published by National Book Trust, New Delhi. He further advised to give stress on the illustrations of the merits of the character of Ramayana's personalities. Thousands of Kavyas had come into existence from different Ramayana's —three in Pali, in Prakrita and setubandha Ramayana in Appabhransha are available. In Bengal we have 6-7 Ramayana excluding that of Krittavas Ojha. In Assam we have found Smkardeva's Ramayana. Dr. Kailash Chandra Bhatia, under the

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

U. G. C. Scheme of Meerut University, has recently surveyed the Ramakavya in 8 years. Dr. Vidya Niwas Mishra (Agra) has surveyed the Ramakavya of Thailand and other countries.

Sri Chaturbhuja, Director AIR, Darbhanga, after describing different Ramakathas said that the literature related to Rama is an ocean and stressed that we should take a row within which period we should complete the project. Whether it will be for the general reader or for scholars must also be decided prior to the publication of the first volume and accordingly a list of contents be published. He also advised that a summery of Ramkathas of different langauges should be given in Sanskrit in the first volume. He said that the people want to know what is there in kannada of Malyalam Ramayana ? In Kashmiri Ramayana, the description of more than 300 wives of Lakshmana is given. According to this Ramayana, Ayodhya, Lanka etc. were in Kashmir. Sita is believed to be Rama's daughter in their Ramayana, Mandodari says to Rama that sita is her daughter and asks him to take her away from Lanka soon. Sri Chaturbhuja advice was for the curtailment of the project and for publication of first volume. He suggested that further planning to be done after the publication of first volume.

Dr. Nagendra Prasad, the Regional Deputy Director of education, Darbhanga division said that this work should be done for the benefit of general readers. Now, this is not that age when any book

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

should be written only for the scholars. People of different communities have adopted Rama and other character of Ramakatha according to their system, Jain Kavi Suyambhu and mahakavi Vimalsuri have mentioned sports (libas) of Rama. Suyambhu has depicted Rama in the lane of whores. Rama and Sita are described brother and sister in one of the Buddhist Jatakas viz. Dashratha Jatak, A riot had occurcd in Jabalpore when theraist Acharya Tulsi wrote some new things about Rama. He advised such type of books should be written which can entertain the people and increase the knowledge as well. He thanked the Pro-Vice Chancellor who has dedicately decided to jump high at the young age of 66. He informed that the image of Hanumana at Patna museum in somewhat different from that of general conception and in Thai Ramayana, viz. Ramakiyan Hanumana means a strong man. One part of Ramayana i.e. Sundarakanda is after the name of Sundara, one of the names of Hanumana.

Describing the importance of Ramayana in the Indian Astadasavidya, Prof. Ram Sevak Jha, head of the deptt. of philosophy, requested for the greater evaluation of Rama stories. Which is Sadvritti that I duty, he added, Jaimini has accepted tatpary artha as Vakyartha. The goal of Vidyas is to crase asadvritti, and this type of work will be for the public welfare, he commented. At the time of writing Raghuvansha, Kalidasa had some doubts that the characters whom he was mentioning were the

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

descendants of Surya (sun). He had al/o doubts about-the success of Raghuvansha. Dr. Jha suggested for the removal of prejudices (kusamskaras) among the people through the large scale practicing of Ramakatha.

Dr. Udayakanta Jha, head of the Sahitya deptt. said that the atmosphere had become religious due to the talk of Ramakatha. Rama was the Upasaka (devotee) and the Upasya was Shiva. Describing the legends about Rama, he said that still there is an island whose people call themselves the descendants of bears. Appaya Dikshit has said that Rama had this power due to the devotion towards the Shiva. He hoped that this Ramakatha Project would be fruitful.

The former principal of Shokhara (Barauni) Sanskrit college, Pt. Diwakar Shastri said about the importance of Ramakatha in Indian literature and culture and pointed out the difficulties which will come in the way of the completion of this project. He indicated that this project would be for the general people. We should present the summaries of all Ramayanas in simple and understandable sanskrit. We should not mean it to be a research work. Immediately if we take up 5-7 works and publish a summary of 800 pages of each of them, it will become a magnum opus. We take the original story of Rama in Indian language as central theme. Expressing his views about the expenditure, Shastriji said that we can take the advance money from the buyers if possible.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Agreeing about the utility of Project Vidyavachaspati Pt. Ramachandra Mishra expressed his views that list must be given in the first volume about all the Ramakathas of different languages.

Renowned grammarian Pt. Arjun Jha stated that Ramayana is above the logic. Describing the difference between birth and incarnation, he said that the depiction of Ramakatha is a difficult task. Tulsi has himself said that there are hundred of crores of Ramayanas.

The retired principal of Govt. Sanskrit College (Bhagalpur) Pt. Phulkumar Jha mentioned some vital incidents of Ramayana—like Rama's banishment and Hanuman-Stuti as the incarnation of Sankara. We should know all the sports (lila of Rama and a collection thereof should be there in Sanskrit. When Krishna lifted the Govardhana mountain, the cowherds also lent support through their sticks. So should we all contribute in this mighty project.

Pt. Upendra Jha, Upacharya of Veda-Dharmashastra said that Ramayana is in various languages. A comperative study in Sanskrit in short be presented because people do not want to read books. His opinion was that the portions of Ramakatha be published in small books so that the story of Rama can be popularized and characters of Ramayana can be highly lighted.

Dr. Sachchidanand Choudhry, the Registrar of KSDSU, who earlier welcoming the guests invited

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

their opinions again expressed his own views that this project has become very huge. He also doubted about the finishing of the project. He opened that this type of project can take 50 years or reffering to a series of 13 volumes published by Nagari Pracharini Sabha, he said that this type of work is possible only by institution. Showing the instance of Belgium-origin Father Camile Bulke, he said even after his life long attachment to the study of Rama-katha something remained incomplete. He further said that at first a bibliography of the scattered Rama literature should be prepared with a short description of each book. After that any comperative study can be taken up. He said when Terner compiled the dictionary and Girierson surveyed the part dealing with Indian languages and dilects, then everything can be done if there is dedication.

Summing up, the Vice-Chancellor of KSDSU, Dr. Jayamant Mishra, presented a list of rare books of Rama literature and said that Rama and Krishna were such type of incarnations who were always respectable. Both were adorned with splender and sweetness. Querying how we shall show Rama in our project, he answered that Rama of Valmiki should be or ideal. We shall go with the speciality of Valmiki's Rama, the representative of tenfacets of Dharma. If we accomodate the available materials in the first volume that will be a magnum opus. Commenting on the monetary problems Mr. Vice-Chancellor announced that at present we have

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

managed 30 to 40 thousand rupees and when the work will start further amount will be managed. He informed about the donations of Rs. 5000- given at the meeting place by Sri Shweta Nath Ojha, the Principal of Sanskrit College Dhauri (Bhojpur). Mr. Vice-Chancellor gave the assurance of the constitution of a five man body to give the project a concrete shape.

The meeting ended with a vote of thanks proposed by Pt. Adya Charan Jha.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

॥ श्रीः ॥

संक्षिप्त परिचय

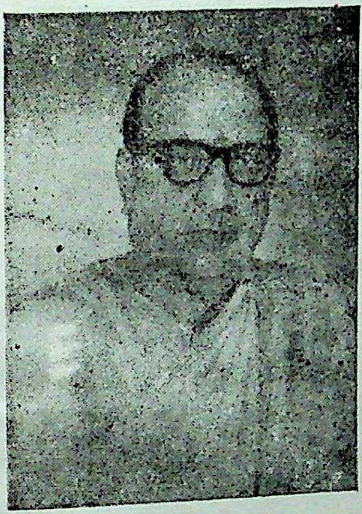

नाम—आद्याचरण झा

जन्म स्थान-तिथि—मंगरौनी (मधुवनी-मिथिला विहार) १-१-१९२०

पिता—स्व० पण्डितताराचरण झा

शिक्षा—व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य आदि सभी प्रथम श्रेणी

अध्यापन—१-७-१९४२ से मार्च १९७३ तक शिक्षक, प्रधानाध्यापक, प्राचार्य, विभागाध्यक्ष के रूप में विहार राज्य के विभिन्न विद्यालय/महाविद्यालयों में।

प्रशासन—अप्रैल १९७३ से अक्टूबर १९८५ तक विहार राज्य के संस्कृत शिक्षा के सहायक निदेशक, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति।

सम्मान—(क) भारत के राष्ट्रपति द्वारा संस्कृत विद्वानों के लिये शिखर सम्मान सम्मानपत्र (Crtificate of Honour) (राष्ट्रपति सम्मान) मार्च १९९० में प्राप्त।

(ख) मध्यप्रदेश शासन द्वारा मार्च १९९० में तुलसी सम्मान प्राप्त।

(ग) संस्कृत सेवासंघ, राँची द्वारा १९९० में "संस्कृत रत्नम्"—सम्मान प्राप्त।

(घ) हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग (इलाहाबाद) द्वारा सितम्बर १९९१ में पूर्व राष्ट्रपति मा० डॉ—ज्ञानीजैल सिंह द्वारा 'सम्मानपत्र' प्राप्त।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(ङ) भारत के सर्वोच्च मैथिली संस्थान चेतना समिति, पटना द्वारा १९९० में 'ताम्र-पत्र' प्राप्त।

प्रकाशन—(क) अमरवाणी (बाल संस्कृत पुस्तक)

(ख) संस्कृत रचना संग्रह (शास्त्रीय निबन्धों का संग्रह)

(ग) 'मनोरमा शब्द रत्न प्रकाशिका' व्याकरण शास्त्र के कठिनतम ग्रंथ का विश्लेषण। इसका विमोचन २९-८-१९८५ को बिहार के महामहिम राज्यपाल जी ने किया।

इस पुस्तक पर उत्तर प्रदेश शासन ने प्रशस्ति पत्र के साथ २०००/– दो हजार का नगद पुरस्कार प्रदान किया।

(घ) भारतीय वाङ्मयेषु रामकथा वर्णनम्।
इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का विमोचन भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा ने ९-८-१९८९ को किया।

(ङ) प्रख्यात तमिल 'कम्ब-रामायण' का संस्कृत गद्यानुवाद। भारत में यह ऐतिहासिक प्रथम प्रयास है।

(च) भारत राष्ट्र की विभिन्न संस्कृत संस्थाओं से सम्बद्ध सैकड़ों शास्त्रीय निबन्ध मुद्रित एवं सम्मानित।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विनम्रनिवेदनम्

सत्यामपि सावधानतायां, शीघ्रतायां मुद्रणजन्याः कतिपया अशुद्धयः त्रुटयश्च संजाता एव। विद्वांसः संस्कृतानुरागिणो रामभक्ताश्च गुणैकपक्षपातिनः कृपया संशोध्य पठन्तु इति भृशं निवेदयति।

प्रकाशकः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

या
णो
ृशं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

या
णो
णं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.